हीकेंगायोहै वैकुंठकोवसैयाप्यारेहि बेकुंठअरुऔरबैकुंठकाहाऊसरोबनायोहै।।९।। बड़े
पापजोजेबड़ोपापषईयेपाजे कुलफलतोरिसुधडारेगोसोफारेगो हुडबोहमारेआयोतारिबोतिहारे
आयो बूरुबोजकुरबन्मोतारेगोसोतारेगो निपटनिरंजनरह्योसकलघटभरि देषोटेकआपअ
पनीटारेगोसोटारेगोसो हमतोहैंपतितउमपतितपावनहो पतितपावनतेंहारेगोसोहारे
गो।।१०।। निकटनिकटसबकोकहै निपटकहैनहिकोइ अंतरपटजबनाहै निपटनिक
टतबहोइ।।११।। निपटनिरंजनकेनित्यगुनगायप्रगटस्वरूपघटघटसबजानैके दीनकेह
यालहोवेसुदानबंधदानानाथअधमउधारनहोव्रतबजावैके करमतिहारेसबकरमहे
तिहारे कर्मरमहेतिहारेपविहारेसोनिजाहेके अपनेहीकर्मकरि जंहांहोतरोगीपारहो
हांकिरतारकिरताररामकाहेके।।१२।। निपटजगतमेंआयकें काहाधरिरह्योएंठि सोहाक
रिबेपारकों उविजातिहैपेंठि।।१३।। हमइतडारेउमउतडारे इतडारिउतडारिऔरकेतीक
उरिडारेगो हमतोहरिहारेयेंतिहारेहिनिहारेहारेतेहारहीकेसंगहरिहारोगेपेंहारोगे।
निपटनिरंजनबनावहैबिचारहीकेएकहीबिचारकाहाऊसरीबिचारोगे मोसोनपतित
तारोतोसोनजगतजारोमोहिजिनतारोबेकुंठविगारोगे।।१४।। वेहीनैनवेही बैनबेहीबा
लरवनीकेचेंनवेहीलपटपटीसोताकामनीअरुकंतमें वेईरविवेईससिमीनमृगतामेसेई
बनवेई घनमोताजरतनचौंतमें निपटनिरंजनसकलकविचाउराएयोंहिपुस्तिहारे सकल
उरानकेपंथमें हमहूनेदेषिबेकोंप्रगटदिषाईदेत देषोनेप्रगटकाहादेषोगेगरंथमें।।१५।। तो
रेजेतेडारताकेमारबेकोंकेलीबारयहस्तुनिच्चत्रपतिरसमनधरेनहीं अंगरसाजिबेदेवांगनामी
बेवोआय तोगकैंप्रकारजाय तोगमेंपरेनहीं निपटनिरंजनप्रकारनांनायंवाम्हतेसबेसुष
आगेआंनिमनउतरेंनहीं पायोहेपरमेसरपायपरबेकीबार चाउरीसराहियेजोआउरीकरेन
हि।।१६।। बरुलताषरलधरैबेमतारलहिमोहि प्रेमउदहेहै प्रघमसुरफावजे सासासोसरी
रजामेंबीसबेसेमेलिमुद्दिमहिपटलेप साधसंगतिहिनाइये निपटनिरंजनहैमायातोप्रचं
ड्वालज्योंज्यौंनिकरेंआगनितोंसोंसुरकाबले एरेसंतज्योंलोहेटटपारोहोतहैअवाराजाय
मनमारातोरसायनीकाहायले।।१७।। एसोजिस्यापापनीनजांनेसुक्किआपनी रामनामलैबे
कोंलैडीअलसातहै उगलीकोवोकसबलाकबडीलरिबेकों षाबेकोंषटरससवादिहि सोंषा
तहै कहिबेकोंकपटनिपटनेकहूदेआंनिबोलिबेकोंऔगनअनेकजालजालचिलजेवाउ
हे घातहोंकोबातहोतोल्यायकेंबनायकहेफगीरसोंहनकोंआगेंचलिजाउहे।।१८।। आउतो
अलपतामेंजिआसोचपोचकरजानेकहुकोजीयेसुकाहाकाहाकोजीए पारनउरानकोंकरें

नकोतोअंत नांहि बांनीतो बिविधिसों तिकांहां चितदीजीये कविकीकलाअनंतछंदकोप्रबंधघ
ह्नत रागतोरसी लोकांहांधोरसपीजीये सोबातकोएकबात निपटबताएजांत सबतें सयांनोजो
पंरांमनांमलीजीए ॥१९॥ जोहैमदमातोतोराउअररंककहादीनी हैजोदेहतो निर्तयअरुत्यक
हा औत यकेजांनेतेपढोअनपढोकहा हितचितलगोतोतारीअरुलोकहा निपटनिरंजनके
विधिनांनिषेधकछु सेबरसबम्हतबउंचनीचहैकाहा मित्रसेमिलनतबस्वर्गअरुनर्कके से
देषबोहरसतबगोरोसांवरोकाहा ॥२०॥ महामदहके तेंअचक तेंनिचकहोत निचकचेच
के तेंघुमक मत घुमारीको - दिननिसनि सदिनयहे सुछिआवतहैसावउपवारएहिसाहि
बखमारीको निपटनिरंजनमरनकोअमरनांमएकवारमारिहावहै आवैनउवारीको होतो
मतिवारेंउचेमदकोनलेन हारोमरकरिपिआलोराखोरिरहीनउमारीको ॥२१॥ जेईहोतिआ
दिमतितेईहोतिअंतगतिआदिअंतमध्यमेंउमंजबेकोआयोहै एकलोउदासीतातेंबोलिबोव
नायोजगजगमेंजगतयुरुजोउतरमायोहै निपटनिरंजनवाएकमेंसकलकला उसरोविचा
रकहोकोनबदगायोहै साहिबतोसेवकबिनांनकोऊसाहिबीहै साहिबसरूपआपसेव
ककोल्हायोहै ॥२२॥ आपअकायकें बीहिरें नवावत गाकरसोवृदानांमबिचारो फूलचटाय
तवासनालेगयो योंवसुदेवसदाअधिकारोघंटबजायअयुगेदियायकैंजीमगयोनिपटारस
सारो सेवकरेकनित्तवनजानत देवतेंदारघन्नहारो ॥२३॥ निपटफांदकोफांदमेंतईअ
टककयोर बदतबदतसबबदगई नदानिपटकोगेर ॥२४॥ देषतअनतउपलहतनेनकासु
घ रूपकोभ्रमनजेसोलमनमकोरकोसीतघांमनांगेपयपेटनमरेउवायुसंकटमिटापक
योगकरसुवेराकोअनुकनलह्योअवेघनिपटनिहारिदेषिइनोइरूतेपतोकजांनतन
वोराको मानसतेंदेवतयोतोहिसवजगनयोअजगनजस्योतोलहेगोसिरलोराको ॥२५॥ गक
रसेउकरसेचाकरसेठकरसेअरषविविनलसेगायबेलतेंसहै बांदरसेहूदरसेफरसचक
उधरसेसूकरसेसूकरसेबिलावबकरीसेहै इंडकसेचंदक्रसेचिटियोगयंदकसे व सत
सकलमेकुलनडारिबेसेहें जेसोकोकहोयतासेंतेसीरूपराषेनिपटजेसेभ्रमेजेसेभ्रवुते
सेहीमेंतेसेहै ॥२६॥ फांसोसोलगोटाकियेंडुटोसोपियालोहथिकांधेपरिगोदरीसोचोघरसें
लदीहै जेघलगेतेषतहांअनकोनिवासनहीजांहाजेगप्पासतांहांनालाओननदीहै गेबके
भजांनेंअरुगेबकेउजकसाथपस्चतोहजारकिसामनसपतसदीहै निपटनिरंजनपारे
मनमेंमगनरहो करनाफकारी तो दिलगीरीकिनबदीहै ॥२७॥ पाथरके नगवारेजोंजोंएर

जगत मो जिनके हरि हीरा सो सांचो गुरु बाल है ज्ञान योग लक्ष सो लषावत न लागे बार औ सो
पद देत तहां पो हैचे न काल है तिन को दर्सन देवतान कों दुर्लभ अति सुंदन प्रकास घट तेष
संको ढाल है अगम अषंड अविलोकित गरीबदास दासन के दास अरु लालन के लाल है ॥२८॥
जाके पाए सिव सनकादिक अजर भए गोरष मछंद्रनाथ मांन पान गावै है लोमस समरीर के ल
षि बगदाल तत्ती षमम अष्टावक्र हनुमान लोरु लावि है बलि अवतार स्वरूप पावार जिसे पर
सरा मु औषध रसायन तें जोग का हाथ घाटि है सुरन प्रताप गुरु गोविंद गरीबदास पारो हटता
लसब याकी एका फाटि है ॥२९॥ गिरु कां हां पंची सो सद्दसद संदेह राषे पसु योग साधइ यामें
नस नमो नि है नाग कुरोग यो नर का गर्भ हजार जीव में डकतो महायोगी सुर जीव औने है एहि
तो तयो है विषया के बसि तातें तरिबो कियो है लागि मति औरन की तान है जागत स्वप्न सुषु-
प्ति ही में रहति एतें परिक रहत पंडित स्यानें है ॥३०॥ जोई हो ति आदि मति सोई हो ति अंत गति
आदि अंत मध्य षेल षेलबेकों आयो है एकलो उदासी तातें बोलिबो बनायो जगि जग में जगत आ-
रु जीव तर मायो है निपट निरंजन वा एक में सकल कला दूसरो बिचार कोहा कौन विधि गायो
है साहिब तो सेवक बिनां न कोऊ साहिबी है साहिब स्वरूप आप सेवक कहायो है ॥३१॥
कवित्त सिवाजू के॥ गढ़नि सजाय गढधरनि तजाय दै केंदीने छोड़ि धरमद्वार दै तिषारी से साहिके
समत साहि सिंघ सिवराज किये केते उमराव औ बनाउ बनवारी से हमन बषांने केते दीने बंदी-
षांनें से षसस्य दहजारी गहि रहियत बजारी में महिते सेषगल मालाजन से माहाराजा जीने लूं-
टि पकरि पगंन पटवारी से ॥१॥ आगें को नजानो देवी देवतान मांनो जबें सांचि पहचांनो हों कहत बा-
त तबकी आगें पतिसाहन को वाहि हती हिंदुन की साहिजादा नागी रकोनक हैत बकी अ-
कबर औ बब्बर हमाउ हदि बांधि गए दोउनकी राह के तरकी कासी हूं की कला गई मथुरा मसी-
त तई सिवाजू न होतो तौ सुनत होत सबकी ॥२॥ तेज बलि विक्रम करन के सो कलि मांहि फिरंदहि
सिवराज जस आरजा कलसक देहों कह औबेर समसेर बरसा हाबीर लूटिक टिकी ने मोरपरजा
विरच्यो हजार फौल मांहि एक भोजदी सो देषत दिलेस के नमांने नेक बरजा रहत यो तारथ कथा
नव लेपार षकी तेरो भरषार षजांहों न जपै स रजा ॥३॥ जादिनि रषत हर स्व औरन रूप स यो तिरूप
को स्वरूप तेरो जो तिमें जपो कलसक हैहै रूप साहि के सस्तमनि तेरी मनि दे षे धनी जोधव रको वग्यो
तीत रघक सलषां नें औ हवीशमांन हतो हत मां ममहा बीर बीर से सोप ग्यो मीर लागे वा कर से कोट
पर औट सम छतनां सोछत्र लाग्यो छोटो च छक्के लग्यो ॥४॥

अथ बंक चित्र सारो लिष्यते॥ अथ मंगलाचरण॥ चित्त लगि निनायका को वचन सषी प्रति॥ कवित्त॥ मुकरतन भाल-
मुकुंद लसन कवजकपोल गोल कुंडलन में छयो कवजंक नैनन में सैननमें सैन करे कवज्ज अधर ग्रीव भुज
विवलसयो कवैयजुंष ऊनतलनपजानु जंघा कटि किंकनी निधि निसुनि रंगतो हिकैरस्तो वनमालि हारी च-
वि हेरि रहीगलि मेरो मन माई री वहि छवि को ससातयो॥१॥ सवैया॥२॥ गुरु जो गनहि एकको अटको अरि एम-
टुबानि परारटको अजमाब जमें बजपोरनिमें वनमालगरें लटकें टको सिव दुसजु तां यमु तायर गुउन गैल-
गहें यमुनातटको सुधिकु छिसबे सटको पटको अटको छवि वापिय रेपटको॥२॥ एक दिना मफरा कनिमें
रस पांनि लयो कछु नोमकुमारो ता दिन तें यरबैरनिसा सषि लोकिती किये घंप निदेत दुआरो हो तुव वारव वजाय
सौं माहरी भ्यौ तरिस्रंफनें लेदि मेंप्यारो बात परी अब हौं वक्यो हियरे अटक्यो पियरे पटवारो॥३॥ ओच कायके जी-
वन वेलिन कों गई कती फजनके अंबबेकों हारि तरि वाउरी मालती के पेर तरें तर फिर पिछयो दुकाटको लटकि
मकि चित बावरी कदंब हरनिम निमर तिमनें जगनि सक्ठ हिनुठी अवक हे कित जाकरी पापकू बेका री बाकों
अंबर हौ पीरि मो दिफा रो पारो सकै का लकुल तहों बावरी॥४॥ सषि को बचन सषि सौं॥ नैंनी नितलैन धावे दोहनी लै
दैन धावे आगि के कतर कोटि कोतिकरतीहै कालिंदी सकाककेवि लोकिबेको रेतआयपेषिपेषि मपेम के मक्क मनि
करतिहै करतिहै ओटी बकीबात निको नंदकेमंदिर प्यारी छल बल अंगियबेकें मोतिवितरतिहै छोहरे पिलावनको
आवे नित जावनको नेहमन तावनको सावरे तरतिहै॥५॥ कमा सुनि वेकों बैठी पतिसंभगा टिजो रिजा मेंगवि
और लोकलाजजब मिबोकरे काजी दास पास वेगो तासमें मुरारि आनि रूचि मफपानके वचिलोचा पेषो करे यट-
नटनागरकी हुर तिरही समाहिएक ओर घंघट ओटत कियो करे अटक्यो त्रिया को मन नवल सुजोनिपरिवाल
रोषरो हित भरान बकको करे॥६॥ परामें ज्ञान भेमीलार गरावटीमे तक्षिता कि और चकिर लोनडनंडहै काली-
दास विवनि दराव निकिवा विवी विच विकी मराच निकी कजकथ्यमंडहै जो फदे पिस रमेंकाहा भौ या घरमें रगम
गोजगमग्यो भतिनको कंडहे लालन को भालहे के ज्यालनको मालहै कैं चामा करपंचपलाकें रविहै कैंर्य छहै॥
७॥ टोका देषो तरु सुहितवहीं तैं गई तई अतिया कुलनधीरज धरत है महर का सपासन धाय धायसुद्धतिहै का-
लगति तई कछुभानी नपरतिहै आधिराति तई नव को किलयवा जदई लहकि लोयन अंसु आटरतिहै चोर
तये मिलि भौ वाहि मोहन मनोज रत रे कालिके उपासीनें न पारनो करतिहै॥८॥ रलोउदासचितवेक निरास प्रति
दीरघ उसास लेलें नैंन नित्त रवदे फंजा एक पाऊ वालरसिकरसिक यपाल लाल तयेरी विहाल हाल मदिवानें न
परउहे तलपमें तलफत लपतनका सोनिसदिन कलपलधीर सुधरत है फूंघट की ओट मांफि नेंननकी
चोट तई ओटन कहूं लतरुभौं लोटिबो करउहे॥९॥ सवैया॥२॥ गोधन गावत गोधन लें जबतें यह मारग कै निक-
सौ तबते कुलकानि की तीक करी यह पापी जिया जल सो जरसो आवतो न तईन तई सी तई नहलोग-
अजांनहसो पेंहसो यहपीर न जातन जानत सो जिनके जियमें रस सांनि वस्यो॥१०॥ हैसजनीय हरयारको

श्रीव्दरायाअनमधेनुचरायगयोहै मोहनीताननगोधनगायकेंबीनबजायरिझायगयोहै तादिनतें
तादिनतेंरसमांनिकबीकरि दोनोसोंहियसमायगयोहै कोऊनकाहूकोकानिकरे सिघरीरुअबीर
विकायगयोहै॥११॥ किरनप्रभालज्वालगरेमेअलावमाल भुनरीभुसोहैलालभुनरीभुनाएकीच
चस्वबेलीचोत्रा कोकमाकसुरपांन मधुमेरे०मधुवासुआगेंआयधायकें कहेकविगंगहोतोंन
जनकंकितेंगईमोहिओरुमोहनेहै मोहनीसीलायकें केसरसेवरनि किसोरीऔसीगोरीगोरीहोरी
केसीफरपिकरोमेफांसिआयकें॥१२॥ मृगनेंतेंसरस बिराजतिबिसालदृग औसोइतिराजतिका
पोलनकेदलमें गंगधकतिहांमनीसी सीतनमें लसनलागीपातोंबरचविहे पिकेरहीहोंविकलमें चि
तेंचपवाहिपरे सोताकेसमुद्रमांहि रह्योनसंतारिगति औरत्तईपलमें॥१३॥ जबतेंमेदेषीनेनतबा
तेंनजीयचेनमांस्यामधिमेंनअरबडेडपदेगई वाहिविलुनिसदिनमोहिनसुहायकछु बिरहकीबे
लिमेरेहियमांलिबेगई कहतसुघररायसोरहसिंगारसाजि सेपिअधमध्यनपामालासिकेंचितेंगई
आईयमुनाकेतीर गोरटीपहरिचारिसारीकाकरवीकीकरेजाकोदिलेगई॥१४॥ तेरोरूपरंगदेद
षिमेंनकाममनोजनारि सोरतनरंतालेसगईलजजायकें नमसिपआनंदकेसागरमुककोरगादी
अंगरवानिककहोकाहाबनायकें विधिनांनरवीऔर नारिनकोसीसमनिसनकसेसुनिगनगए
लुलजायकें॥ कहतसुघररायस्यांमसोंहीबार२ देषननपाएनेंऊनेंननिअघायकें॥२०॥ बिलुगिरं
धरधीरदेषेंनधरतधीरचितअतिबिरहकीपीरमेरेतनकों आगेंजामुदेनदिनआननअानिबातआ
ननाथमिलनकीरषाएकमनकों कहतसुघररायऔसीजोतियानकोऊस्यामकोंबोलाइलेंजा
मधुबनकों तापनिरवारनकोंप्रेमनिरवाहनकोराषेंगरेलाइसुपदाईस्यांमघनकों॥२६॥ सापनी
सीसासुसोंउसासनिगनतिरहेमाईनसापरोसनिपरानहोतपासतें जालिमजिठानीअनषांनीरह
तभुरीनाहुरसीननदकलतोरतआकासतें ईदरीबधोरानीदिनदाटबोकरतपयुनेवरनधरतसु
रदेवरकोत्रासतें बेरागरुजनीकोकोहोरीजायबलतसेंसुपनेंहीआयमिलोअपनेंअवासतें॥२७
देषादिलजांनीचीराबांधेहैसहानीषोलिकाहेलाफरांनीमोतीनाकमेंअलूवहे आवताहेतावताहे
चसमेंचलावताहे मनकोंमिलावताहे साएसिकेभुबहे होताभुसियालकधीआवताहेलालबीच कर
ताबेहालसोतोहिलकादबुवहे कांमसेनत्रपांमसे तयाहेदिनामिलनेकों आषद्क्योंसुफयेंपिनमेरा
मह्बूबहे॥२८॥ जमकीसाजीवलेतहेजिगांनी जपदेतदेषोरानीघोरदेषतजरोरमें ननदद्देनिगो
डीनीकेंनिरषेननैंनतरिसासुकोसुताउयहेफवीलायकेंलरे कहेदेयादेवकोरहोतकलकानि
कीयेंलपोमनलालवीसोंऔसेंकेसेंकेंवरेंवाहतहे सबेसषीयाकेंहुकेंहुकरोरीफिडककेरहीसोढकर
कोकरे॥२९॥ चंचलऊकरंगनतेंअंबजनरोकरहे छुटेहगऔवरतें उनोंउपदेगए डाढिहीनीफासी।की

धौं औ विलोनी गासी। कि धौं क्षै गए बिसासी री बिसारा बीजवे गए हा नपर लवंद लौं है थकु तें उधोरां मवं
कपरे सा बित अव तो औ सोके गए पारथके बांनतुन घायलकरि गो फिजाते नेंनतनको बचायु मन
घायल करले गए॥२०॥ उरजकु रजओट कंज नके कोट मध्य फंघट कपाट लागे गढ़ेको नगे लकों।
कनक किनारी सेत सारी बारि बारि रंगनी उधोरां मआडि बारी आगहे जको औ सो है घडासलामें व
यो है मेंवा समन सो तो हासी ही मेडुटे हग्गुटेरी हवे लकों लगालगी कैंकें सरबरु नाके दैकें बांधि लेगु
२१ ए कलाकनें नांमोमन पटैरुकों॥ कांमकं केवन मांफि जोवन नउरंगवडो तक्रदी कवांन जि हिय पजाई
पायले नेंननि बिलो किवांके मासों तिरछो दै वीर घायल पसोरोंऔ रनी कैकं केघायलै बहोस्योंनि
हारिए हो सुघर अहेरी जन कहैक विनाम पीरहिय की हिरायले प्रेमघाय मोरि हलपाडो रिताव जी
न छुतकी नो है सिकार तो सिकार वंध लाइले॥२०॥ नायका सु ग्याय अज्ञातजोवना॥ दूतीको वच
न नायकासों॥ ग्वारि एक बारी वैस षेलति कुमार निमें नेन कैस नेहको न जाने रंगरतियां मैनवा
को मूरति मनोज तामें गमन कीयो मेंनता सोम सकानि टेढी तई गतियां सो चिरकैं सकोचि सकु चि
त फिरे तिरछे बिलोके विलपाइ करें बतियां तानितने कंचुकी उतारे करें करुना सोंप्यारी को उरो
पधलगाई ओ मेरी छतियां॥२३॥ सषीको सिष्या नायकासों॥ उरतें उतरे है कंचु सकु चिस्यों न वे विरहे
जोवनके लाव जवकल जलवा हंगी संगछ सेदेली अलबेली सो आगें चली अंजनको सुघ्ठिके छु
कदेतें रिसाउंगी बेरि रंजनतमें बेर बेर वनि जो तिहारी एक बेरनी कें करि कें सैबेर पाउंगी टे
रद्रंगी मझ्यार अरे बाअरे तइया जोक बंक है ये ज्युकें पाजेप रिजाउंगी॥२४॥ नायको वच
न सषा नेतें॥ निधरक नो हिधर किर गाती करे लोजवे ये जो उसंग पानि लिये पांनिपें बतिरसक
रति देरति रसको चोंप नोहि कहलाहि मयाको जे मोसा चअजानि पे आजरको गई छुकफेरि कें जु
म्यतो जी मंदाकन रहुटी उपटांनी उरओ नेंपे डरी नागजानि फिरआ भक्त तें थकआइ कोरिही सु
आनिवारें ऐसी अजानि परि॥२५॥ दूतिकाको वचन नायकसौं॥ माननी मुगधमेरे म नकी न जाने
कछु के सेंकरि लाउ मन मोहन विचारियें अरुहरि अजानि उरजानतन प्यारे जाल भाममें धिगा नोक
रै यातें चतिडरी भे हगक नजो रिजानें सुमकं नमो रिजानें निपट अकारनवर नतो रिमरी ये पा
य सरका मके मनजोंनती तिहारी प्यारी रसको न च सको सो व सके सैंकरियो॥२६॥ दूतीको व च
न॥ का रे को आजर होत हो को कजी मीपतमी पतमी पेगी प्यारी वेसबटेगी अझ छिपटेगीय रूपक दे
गीय सुधि समारी सिंगार करेगी हरेगी सु तो मन ध्यान धरेगी न हो यगी न्यारी हिलेगी मिलेगी फिलेगी क
ञमू अकु तो सुजांन नई नविचारी॥२७॥ दूतीको शिक्षा वचन नायकसौं॥ बारवार बात न बन
य के विविधि विधि ऐसें समुझाई जेसें समुझाइयतु है। पायनको परवो मनाय सवता तिन सों
अनसु नो अजना घजा हि लाइ यतु है नेंन जिन धरो नीर धार जधरें हिवनें का हाकजि जोपें वि से रो

हमैंपीयकेमिलिबेकीललीसुधिदैदै॥ आलमआगेंघनोघनैहूमनकेगरजैतैंघनोऽपपैहै॥
२७॥ जोतोहोगनकुतोतनकपरीकपरिआऔदेषोसगनोंतीअउगोआगेंसूरपीवालमबिदेसदै
संदेसोकछुआयोनांहि कविमतिमन्दहैमहाप्रवीनमेंजषी वेदहोऽरावरतोमेरोसासूआफरीहै
ताहिउपचारकोजेकाह्नुनांहिनेसपीऔसेंसुसकोएवानमूतसयानपसों आहोएवटोहीबलि
वेदहोकैंजोतको॥२८॥ ननदहैन्यारीसासुमायकेंसिधारीतेसेंअंधियारीरैनसूझतनकरहै बे
सकोनबेलीसेजरहतदोइकेली ताबेंएकोनसहेलीसाथजाईमेंनसरहै बालिमकोगवनआतिसू
न्योपसोलवनदारूवलेपोंनतातेंजाईमेधकरहै॥ नईआधीरातिमेरोहियरोलरातिजाउजायरेवा
टोहिरहोचोरनकोडरूहै॥२९॥ आजरकन्हैयाजूपैंबालजुरिआइआवकहैहोकन्हैयाजूकछु
हमपैंदियाइयेंफूलदीजेगोदलीजेनाकहूंपिनायोमोतीपाननकोपातरीजूतासनणासलाई
ये उयेसेजरीमिलेकेंमोहनबैठाउमोहिरतिपतिकोमूरतिचलोसेजजाइये नंदकेकुमारबारीना
हिउतरतोएकदोनोउकतिविशेषकहैकोनतांतिआइए॥३०॥ बिरहनीनामकागोपीसंवाद॥
आउनतोलोगलेतऔरनकोजोगहेतसावीकहीमधूपकतकाहाजातुहै नईनईप्रीतिकरे
बाजनिकेमनहरेकालेरूफूलनमेंफूलोनसमातुहै हमहींकोंप्यांनथ्योनसीप्योहैसबेंसयान
तुमहींसयानेकिधोंऔरकोकरतांतिहै॥३१॥ तलेजूगेन्यायोंन्यायोआगेंदेतिहांसोधौमासको
पयेयाबाघयासघाहायाउहै॥३२॥ जादिनमेंमधुरावैसाईब्रजनाथजाइतवतेंवयारिब्रजवस्
नवियोगकोहारीसुद्दिगोपिकांनिकलनाबिहारीबिउतापरिपगाईहरिपातीजपिजोगकी उब
ज्यासेंमिलिकेंऊभाहितईकाहूजूकोउधोजूसिपावनिकोंआएमतिसोगकी उमतोहोसयां
नेसिधारेफिरियाहिनेरेअनुकूलेंत्यासाहमरामतदेतोगकी॥३३॥ उधोजूयहदेपोकेसीअसौ
समुझिदेषिस्यांमनिरमोहिसोंसनेहबांधियतुहै राधिकावाकलपलकजनबिहारीबिउसुमोउ
जहरिबानसाधियतुहै हमसबगोपिकाकोंआयकेंअनंगबांध्योवाकेगेजआनुपररसराधिय
तुहै॥ स्यांमनिरमोहिमोहिगोपिकासकलमोहिराधिकासीमोहिकवजासीनाथवितकें तासोंरहि
मांनेरतिबाहिकोईहतिहमेंरतिसोंसरीरसबपोयोसोवनितके तापरबिसारीजूपगयोयोगयोग
नांहिउधोयोगहीजैजाकोवाहतहैहितकें बावरीतोनांहीजोपैंबावरीसीहैंनआयेंबावरीसीबातेंको
होकहेहरिमितके॥३४॥ जबतेंबिसारीब्रजबालासबैंघनश्यामतबतेंतवनहमेंवनसोलगत
तनकोनसुधिमांनवजयेकोंतकतिगुहैबेरोअीमदननिशिबासरदगधहै मैंओपलपलचिती
तनितबिहारीसोंतोंध्यानबिरहकासकलगतहै एतेपरातिउमओंगहैगगनआएउधोजूतिहार
गोकोऊनरगातहे॥३५॥ गोपिब्रजबालाएकरतेंबेसालारूपजिनहींकोप्रमदेषैंलाजेपतिरातिको

तिनकौं पठायो जोग लिषिकै बिहारीलाल जू रैंन दिन स्यांम बेउ सुषमें सौं बिहात कौ ऊधव ज्याके कछु परि रीझे नं
दलाल जाय कैसैं कैसुहावत ऊहाल वाके गात कौ कारत पलंग किधौं षोदति धर निनाष लागत अवं सो
हमें उधो याहि बात कौ॥४१॥ आवन की औधि बीती वंडिका मलीन भई पातियां लेआए उधौ कारी रासा जर
षसी बारि तई आई सब बाल्हि जसी अपिय नि बिरह बल बनिता गवाह कौं कछु गष अंमी मधिक मनोज कौ
जमान गोप बधू तई ह्वामनि उकाई बारे धाय सरह घसी॥४२॥ ऊधव ज्याको षाउ काटि ताको मग आलि
सजो के सवाके सुडि तासो सेली अघितेजिये ऊधव के बिलुति बैठा हगन को डेलामाल पिंजर की किंगरी
ले गावसौ गक्किजीए सी सकु कोष पर औक बकोबनाए को लीवार कौं केव स्वर तगवा रंग रैजिए जोग को
सजोनी जोपै ऐसैं करि स्याउधो तो हसि रजोग ऐसें कै अगे जिए॥४३॥ रेषता॥ कांटे परि जैंन उम आए हैं
उगावने कौं उनकों तो नेह हूक रहा है नबुझा है ऊधव जनैंन के लिकाती जाय ऊधव ज्यामैं रख्या हमारा उनौं
कौं ऐसा सूझा है हमनां उमेद उमंदिन मैं नई माधो जि सदिन सें जाय वाकी बेलि मैं अरुझा है हजा
दिला सा कछु ककर बेकरार है नो है उधोजा सिधारो तां तिबाजा राग झूला सा॥४४॥ दिलमें करार नहीं सोर
है दिमाक बीच जुनंत परेसांनी सेती देह हम भई है उतो पैगाम ल्याया औ रहीम ब कदर सेती ताई रे आ
बेतनाघ अजब बात तई है पेमका पिया ला हम एक साथ बेठि पिया उसका भमारा सैं वियोग पीर का
हा है दिल तो था एक सो षे तोज गा उनक दमौं सें जोग कोन करे ऊटन अकल तेरी गई है॥४५॥ ह
री तरह जिमी जोर जबर जरायत की सिर पर आया श्ववसा वन सुहावना हाडर बाछर मोर स्याय तले
आवत है उनकौं तो लगा परदेसी के साथ्यावना औरतो सांषे सब हिंडोरे मैं झूलती है हमकौं तो तयार है
तवन आनषावना अरे ताई पंछी जो उजाता है घर का कोंसु कनत हमारा एही बणमकौं सुनावना॥४६॥
साषिको बचन सषी प्रतें॥ सरसे बरसे घन रसांवन कौं सिगरी मही सिंधु समांन तई जितही तित देषियें म्र
विपरै लित हिं ति तिदेषियें मीचिपरीं ति तही तित देषियें नीरमई अहतेउ ठि बाहिर गादा तई ललना
बिरहै तन तापत ई छिरक्यो न गयो उनकौं अंगना बरषा अध बिच हि सूकि गई॥४७॥ गावत बधाई ब्र
ज नारी सुरसांनी मिलि गावत है ग्वालि सबैं तरुणा अरु बारे है गेर गेर गाढे बिरमावत देवंदीजन पा
वत सुलछ लछ गायक बिचारे है पत्राके विधान लषि ब्या सजोक हतचै सेता नलोक तार नव ह अध
मओ धारे है गोकुल के चंद सुषकंद कवि दयानंद ऐसे नंदनंदन कौ बंदन हमारी है॥४८॥ गुंजा की
मार गरैं रूणझुण मगपाउ धरैं औ गोपिन के कुंजन में डोर तिहि तैं रह्यो काहां प्रभु नारद त्रिलोकगामी होऊ
तहै ऐसो सुष झांकि कैं ए संकर कितै रह्यो पारथ के काज एतो सारथ बनावे गो कौरो कोषोय ऊलपे उव
हितैं रह्यो युनको घर्मे झली सुमंझली न पेलत है देषि ग्वालि मैं झली कमें झली चिते रह्यो॥४९॥ आओ ब्रम्हा
लोक तें सुमनमें गुमांन धरि कांक कोन उज्ज तोमि लूपति स्तै रह्यो जैनकौ परिश्रा दरिगयो था अब था कै

रितांहांतै सोदेषि मनचकता सौं फैरत्यौ। षिवलिषिरं षिषं बिचारु चितथाकदेष्यो ब्रजके महातमकौव
तन बितैरह्यो। देषि ब्रजकटकं फलपीता बरको सो तापै देषि म्यालि मंफली क मंफली चितैरस्यो॥५०॥ मो(र)
न मूरति कामकी सुंदर कोटिक लाछ चितैं सुफलाजै। मोरकोपक्ष धरे पटपीत द्विजो का हाथु पटो लरदीजै
आवैं अचानक मंदिरमें पग धोय दोऊ चरनोदक लीजे जान नदेउं गामंद लला दिगबैविरहो सुपदेषवो।
कीजै॥५१॥ मोरको मुगट तामें पाग को बनाउ सो है हीरा नगपेचपेंच सो तार सतिजीए प्यारीके रच्यो है सी
स सीस फूल चंद्रिका है बंदनी बना औ पै बनैया लफिजाए हसि उर बसी कटि किंकनी जुगल पदनूपु
र सुफेरि आनवारि दीजाए कहत कविकासीराम कामसेन केरि देषि देषि केरि देषिवोई कीजाए॥५२॥
गोपी को वचन ऊसो हासौं॥ हलनी सो लरि काषफ रिकाउघारि जाइ द्धथकंदुराय जाय सनेआयघरते याते।

॥ सो तुगमारे सदेली केहाथ लिये लिलते वेदे लेइ ते आपनो पासो परे और की सारी कल मंदिमे लेहे से
पीऊड बावरी के सो तो दाक परे बिनु दाउसके लो गोरमे खेलत को काउ पे सु उतें चित दे इत को परि मे
जे॥ ६९॥ एक समे हरि दंपति होडि परी उलही अक सुंदरता है इते हक वारि की हारि की हारि बदी उ
तमेडे नलाल को लागो न लाहे जीत को दाउ परस्यो पिय को सजनी नें कही हम ही जु बे हाहे लाल रहे
अंगियां तन वा दि ति या सुरस का पूंदी या तन वासों र ७०॥ नायका रूप गर्विता॥ नायक उतें वचन॥
रसो वस्यो सर विसा स्यो घर मेरे लाल इं पति हो हां मनी जो घटा घन घोरती नीके हम जान तहों जे
सो उरस्यो आन्यो रु तो मेरी ओ तिहारी ओ चितो नि एक ओरती रस राज के सो जस्यो होता उरस्यो गन में कं
जु सका यसु वमोरि चित वोरती गिरधा स्यो ग्वाल का हामार तहो गिर तो गिरस्यो प्रत्जु ज तो हनि मरो
रति॥ ७१॥ मघवा का मांन हस्यो सांपको पिलौं नांकस्यो तब बजकं संडस्यो सुनि बात व्रजरेया की
कहत घनस्याम उमही हो मेरे प्रान मदिमा का हा लों कयें लोक तीन केतरे या की बाजते दमामे ता
री गावत हे नर नारी करे आस्तुति बलन्त जज्रके नयेकी बार हाथ ह्र बति यड नाथ जी के जैतहें बेले
यामेया गिरके धरे या की॥ ७२॥ भूरित रे अति सुंदर स्यां मजी ते सीवनी अकसुं दर चोटी खेलत पात फि
रे अंगना पद्दर पग पीजरी पीरा कछोटी नंदकहें नंद नंदन ऊपरि वारों कल निधि कोटिक कोटी का
कको ताग का हा लोंकहें हरि हा बते लेगयो मां षन रोटी॥ ७३॥ जब लोंन एको पीर आपतन आपने उर
तो लोंप राई पीर कैसें उर आनि हो मेरे जान्यों आजि लौ लग्यो है नेह काहू सों न जान प्यारे चित चित सों
लगे ते जानिहो कहत चतुर कवित बमेर कहूं बकी एकोन रहेगी जो समुफि उर आनि हो जैसे
तुम मोहे नीके लागत हो जान प्यारे वैसी कोउ तुमें नी को लागिहै तो जानि हो॥ ७४॥ जा सौरभे वे ना सो
रावे प्रेम पैनता जैकावे जब लोमन का तब सांवेन परत हो कहे कविगंग तुम फू वे हो हमारे ताए
सो हे आए सो दे षाए तब के सें नि बहति हो वाघर ते वा घर मे वाघर ते वाघरमे न जेर मस्यो मो
बावरी तरलि हो छल तें उमकि आए इतते उघरि गए कारि के से मे हनेह का हिकों करत हो॥ ७५
नायका परकिया त्ति सारिका॥ तम सौसया नो ता तें हा तो कर तदीप देजरी के जाधें पगजाये छप
पावती सुधे बिनु धावे न जा वेम घमन लमें मन धरकेमा थे मनि हाथ ते छिपावती जे हरा को नासु
नि चकित होत काक काल के हराको नाद सुनि कानन जानन स्यावती चांद देषि वो करती सु नाहपे चली
देत्रासु नाहर निहारे नेक नां हिडर पपावती॥ ७६॥ गहरि रंगा जि बादर ससु हसा जि महरिर
मेघवर घउघरिया बालक स्वेता की छवि देखि बेको रूपमा रूपमग वावल मलार गहे कहूं बको ड।
उहरिया फहर फहराति भा तमको पितंबर लहरि करे प्यारी को उहरिया॥ ७७॥ वसंत वर्णन॥
होति पतिफारि जब होती री संतारि सपि ओर करू आवनले को रिल घिपावतः फलेफूलेफूल देषि॥

तल तोनहमें ईस को ऊएकतान ले द्विोरे सुकी गावतो कोकिलाकी ऊकनव सुनतो पराएदेउ
पारोंवोरपारते मरेवाओ धावतो और देखा ओर रति से तजोनी आलीवहो हो तोरी वसंत वो हमा
तिं आनमने आन वेनेसोव समेंसी
ओंकहि मरैया तौं लौंएं किजा ति
ीनों सोतो सीनो गावरसकी वि
लीरसकुरिहारियें॥२॥ विसम
रुउ किजेदै फिरिकवनेनगो दै
रकोनमानो ये रूमानेंगी तो लोग्र
ाहापांनहै जुपाकें रस वटैगो॥
जुकोरें लागदे कहे दयादेव दे
कहीमांनि लकै तोउ कें आंनि
थौ
तेरपाइन लगाउ प्यारी मानु सर आ॥३॥ कोजीएसथा॥ नकाहादां नहै जु कियेज सुज
गिदै॥३॥ सुलोदै सयांनी पें अयां नीलकी वात सुनि मेरी माहै कोन सकुफाहितो दिकैगो कहे
दयादेव विनु जाउ जे सैंजात तुहै जाभिजनजो नितसों हवुतो हि ददैगो प्यारे पाइ लागें मनमे मही
सांपागे तऊ रून अनुरागे औसी कामनकी कोसहैगो मांनकी तोमांन आली मानतें रहत मांन माउका
हातान है जु लागें रसुदैगो॥४॥ लालन मनावे मो सों सपी मनावे तऊ तेरे मन नाय रसरो सुगति
यउदै हरिसें हित सों हिलियत मिलियत किधों सोह निआमे विगे सें एगिरह्रियउदै कहैद
यादेव जैसी करतो है तैसी मैं जो करोंगी तो सो तिनकों कादा चाहियउदे मनको तोशान आली मा
निवोकहावे तातें मानकहियउदै॥५॥ मानले कपारी लेउ सपी सकुफाहहारी तेरो तोन मन नउर
रसताजियउदै कहे दयादेव तेरी एई अटपटी वाते सुनि सुनी लानें कोन जसचीनी यउदै हम
तोनहेरो मे सो है सुकामकामनी को आकुलयजो उयहै कांमकीजीयउदे प्यारो आइ पाइ परें प्यारी
हांसिरी सुकरें और का हामानको जमां नलिजीयउदै॥६॥ चंपेके सी वेली सदेली कमि लाइ रही
कलीसी फिरत सौं तें चलायत चामके कहे दयादेव आनमनके भवउअंग को रंलागि रहे कांनवि
वसि वे धामके हतलो अनोपी अनपाइ लऊ आन पाती जोकछे जनावति है का देयार घांमके दा स
हसिवो लि वालि चां हि हे छवीलीमोह मोकु गरू वाहु विनु चुटे वो नकामके॥ ॥७॥ उऊलम हे लजा
गमगत उचकैया कंजउंज तमधप कुंजमा ते मकपानके नागर नवीनकल वो सहि मवीन तेरे आग
रसलीन नंदनंदन आयो नकें हियेसों हिलोउ वलि कयसौं मिलाउ आलीकहै ५॥५४

रे प्रानकैं जो पै तेरो मान न्हीं सौं मांन्यो मांन मांन नीतो हा हा मो रिझा तु सौं पिमांन न्हीं अमां नकैं ॥ ८ ॥
आछे ए अवास आछे कमल विलास अत्री सौ घेनकी वासु मिलि मफकर गान सौं रूपकेति
धान आपुको क्र सुजान आ एक हे दयादेव भेलि विविध विधानसौं तनको सिंगारु करि मन
को अधार करि राषि प्यारी प्यारी करि प्यारो करि प्रान सौं जो पैं बिलुमानु मनु मान मान नीतो मा
निक ल्यो मेरो मेरी मानक रिमान सौं ॥ ९ ॥ हित करि मानो ताके मृदु हित करि मानो हित होय जा को
तासों हित कीवता है ये आए हे गुपाल उ विदा जे अक माल बलि सो नो सो सलोनो तन नाहक न ता
हये कहे दयादेव तें सताइबो ई सार करि समझ्यो पैं यालू मांनि आदि उ आताइये माखु करि
जे सैं मनमोहन सताइये तौं माखु के न काहें सब सो तिन सताइये ॥ १० ॥ कैसी ना को जो कृ कैसो तो
नके सोपों न देषि के से निके सेती कुच कैसी वासु फिरे फैलिये कैसे एविछौंने तन सौं कैसे सलोने
कहि कोनें एसी बदी त्यइ नि परस असे लिए कहे दयादेव होक हि लो मिलो पै लो हसी उनको नमांनौ जे
मिलावे वो लिपैं लिए प्यारी लं को मांन प्यारी प्यारे को न प्यारो लागे परली जो पर छोंडी मोतामं को मिलिए
॥ ११ ॥ चीने लेर बलि बेर कीयो लयो वास बना सको को कुल हाके ए रफना बृज पीजन होत हे सोहे
करो जाप रो घन फिकें वारे गोपाल संतारे वनें अबहो रषवारे सदा अवनी कें घोरेगु नाहे अना है कचा
रत आए बलौंह क गाइक्री कें ॥ १२ ॥ वांसुरी बिसारी नो ताब्रजन बसे गोकछु विधि विधि वा सुरी के व
लक रि दीयहें आलम कहे हो न्यारु डषि तेन मेंन ताबे कांन सुनि का कुअसी तन मतये यो कि एहे चि
तन चितावे तामें सुस का तिंह तिरी कि रमुरकाइ के ति गिर गिर गई हे हमें लगी गांसी ओ ये सा स लंक
आस नांही सामरे को हासिन सों सांसी औ रत्त ई है ॥ १३ ॥ अटपट चाए सुधे वा बाकी सौं कहो कान्हा
कोने दान लीबो बतें दांनी को कहायो है कि धोंजनि मंग लके राल केन्ह वाषे आतु कि धोंय हे सेको
ति कोग हन तुग हायो है आन बरतुग हो के सो डा इ न मांगो का साकाहा लगजा वनए उघम मवायो
है देषो माई कैसे नेंतो षेजन सेना केहे लान को लज सो हामे या पाइका हाजायो है ॥ १४ ॥ जो पै आ
तु सावे उमल षे हो बिहारी लाल जी जे बलि पीजें हल्यो जे तो मन नतायो है आलम गोपाल ओ कही लौ के
वे कस्यो पाइ ल लिता जू आनि माइ री ले सुषनायो है औरक छु पिय तहां जाय के लेआउ वलि आवे
आध रात लौं सजायो में लमायो है बाबाकी सौं कह्यो कौन के सो मो वोला गउ है तारी है सही हमको न्ह
डहकायो है ॥ १५ ॥ षरक निय देषे पुरहे कुंज फोलि फैलि देषो कुमवेली वेल मनक बिजाइबो सुनोरम
नाथ सब रपीन तरवरत कि सामुक हे को कुरपांमु सुंदरपे जाइबो ग्वाल नि गवार निहे का हा बूनषं जे हे
ब्रजहि मों वे विबजनाथ क कोगाइबो ब्रिजचो हिजायें ब्रजनाथ के बियोग रूप काज के वियोग रूप को
न सुष गाइबो ॥ १६ ॥ डरियेइ न तें जितहि हरि हे नितु जैपर पाद नु षोल ज है अति ईतरु है इतरा इच ल कु
नियों हि चितैं तनु डो ल तहें कवि आलम और तो आयु रहे स पिहें षोइते परु वो लउहे चलरी मव लासों

मानानगरनि फ्रामर्को म॰निका [illegible]
दीम [illegible] वानक मदिरमपथु[illegible] [illegible]
वाको[illegible] मास्पुगन्नाम [illegible] वनो [illegible]
समका[illegible] बदकौबनीछापव [illegible]
[illegible] भानवारिटीनोथ कद[illegible] विकासी[illegible] कामसोनप [illegible]
[illegible] तर्पारणवका [illegible]
वाक्मोजो [illegible] रकादननो[illegible] आयपरीसात्रचात [illegible]
नेहकोकहसासमटानिडर्लीनर [illegible] सनापतिपाही [illegible]
[illegible]

सजनतुमदरसबिनहि प्रांनरहितनहीधीर॥१२॥ मनबचक्रमकरिरावरे ज्यागीरमहाराज सोतुतिहा-
रेकंकमबसि तलेसोपियोकाज॥१३॥ समाचारइकजांनियो रूलतिनहाहिनराति ज्ञांनकथापंडित
मिलित करततिहारीबात॥१४॥तुमतोकागदनांलिष्यो हमतोतुमकोंबाहि कलपवृछसमजांनियोबो
वेतुमरीआंस॥१५॥तुमतोअतिहिसुरहो सबकबिसिरताज तायेंअपनेबिरदकीबनेनिबाहेलाज॥१६॥
धनजोवनअरुईसता रहैनएककहीकोर तायेंअपनेमित्तकोसदासुकरियेगोर॥१७॥ सतपदसजन
नरचले मिलिकाहूकेसंग ताकोसेकरजोपरे मस्येअपनेअंग॥१८॥ बीतबातलिषतनबने षोराकहि
नजाय जैसैसुतकहतलषि मनमेंपितुसुरकाइ॥१९॥ बिनचंदनबनबनफिरत मिलतनरूपदसुबासा
श्रीकचतुरबंकुलवन देषलहोतनदास॥२०॥ जिहिमुरलीकीफूंकपरि गिरवरराष्योतोल सोअपनोसोई
सदा करिहैसाचोबोल॥२१॥ जिनजगकीबिनतीसुनी चढिआएषगराज सोमरणकरिहैप्रभुरुषसक
लमनकाज॥२२॥ निजधुवदीनोअचलपद ब्रजबनिताकोप्रेम निश्चैसोप्रभुराषिहै अपनेमनकोनेम॥२३॥
कैसपक्षस्येभंचथे रवनलागीबार बात्योअपनेचित्तको करिहैसोकरतार॥२४॥ पानीपरिपावरतरे जे
ग्योरावनराज निश्चैकरिकेंराषिहैसोप्रभुअपनीलाज॥२५॥ जिनकुबजाकमनीकरी केसीमास्योजारिको
टिकलपनाचित्तकीसोकरिहैनिरधार॥२६॥ जिनप्रल्हाददुकारसुनि थंतकोयोदेरुका सोनिजतनकां
नकी चूकेनहिअचूक॥२७॥ जिनपतिराषीद्रुपदी करिकेंधरमसहाय सोअपनोपनराषिहै चिंताछांडिमि
टाय॥२८॥ तंडलले नवनिधिदई कीयोसुदामाईस अपनीचिंतामेटिहै जगसाषीजगदीस॥२९॥ अजामे
लिअनकोअधमको नेअतिहिअनीत सोप्रभुबेगेंमेटिहै अपनेचित्तकोचित॥३०॥ जिनपनराष्योपांडवनदई
बनोअनलंक यहैतरोसोराषिमन रहियोसदानिसंक॥३१॥ कैसेपावधारे आपुरावरेहोइहिमोरिअनता-
सिधारेकिबसतइहिपारिहो ग्वारकाकगोपकेधरेहो सबगुजायोनिओझनोनजांनोतुमसबहोकेंयुरुहो
आलमसुकविमेरेमयाकरिआंनिबेवेचित्रजसुरायलीनोनिपटबतुरहो निकटबसतुमऐसोनितुराइ
गई अबहमजांनेकाहूनिपटनितुरहो॥१॥ मायाकरिचितेकेंचित्तचोरलियोचाहिचाहिहितुकरिचितयोसो
यहैसोचनिठुहै आलमकहैहोपरबसमेंब्रजबासी तिहोनेसकोनचाहनिराबासरचकित्तुहै देषेटक
लागेअनदेषेपलकोंनलागेदेषेअनदेषेलोगींषेलोगींनेनोनिमषरहतुहै सषीतुमकोंकहिजेहो आंनकी
नचिंताहमदेषेंछांड़िषितअनदेषेछांड़िषितहै॥२॥ जोवनकेजोरजगजोंनतिहेंतिनकहूनेनचितयेतो
तेरोकोहागंघटिजाइगो अंगअंगआलमरंगनोबिचित्रिदेषिदोरिकिनजाइकोउकालमारिजाइगो सोने
सीसवारिआलीगनतनओरकछुउरहेचकोरसुषचंदछूडराइगो बालककेरूपलालललचीहहैलागे
स्यांमनेहनचुरतिअतिकाहिडरिजाइगो॥३॥ अंगअंगघनकोतिमोतीमालाबगपांतिबनमालइंद्रधनु
सोतासीनछीनहैदामनीकोदमकनिपितांबरचमनिमुरलीलाघोरमोरनाचेरंनदिनहैं रंदाबननां
षरीफिरीफिरेषंकोंनकस्तुरीफिकोंनकोमकोरीफदानेबिनुहैधरनितेबईकालेसीसधरिगिरधा
रीहसिबोलेंमोरमेरेमाथेतेरोरिनुहै॥४॥ पांनिपकोमोतीयहरातजैसेनषघर तैसेइचपलदगपर

कनि घोरी है बचन रचन और सौ हनि अगाउ जो नि सजति सठु फिरी फि आपताइ तेरी है आउ
मसुक विमानों उरते उतार आइ पान सो पउ हिक टिआसि ओं निजो री है फी ने अंग फल कि उरोज कों क
सा वक मैं जाच क जाइ पाइ पाक सी गोरी है॥ ५॥ आजु अज बनिता गई है ब्रजवनि वनिरह कुंजा तिव
लि बैचन कौं महि यो कुंडल करन कर लकुट मुकुट सी सकाछनी के काछे पाछे आगे है कै रहियो।
सुक विरही मचउराई की निकाई यह और की बचाइ दीवु पाइन कों गहियो कोर कोर जोरे । जोरि लाप
लाप त्यों तिन सौं मेरी जै युपा जवा बाधु पाल जू सों कहियो॥ ६॥ सो वतिबा जरु तीए हिमं दिर गाच लिलाउ
नु जो उयु जागे उसु तनें उविआर व दीव लिप्यो मों त्यो जित दीति तलागे बेनी यह ही मग नैनी कीना एस
पिस पिसों कहि कै अनुरागे नागनि सी कर लैरस्यो नाग कु गरू कुरी सौ गरुर ध्रु जलाजै॥ ७॥ विरह वसंत
यह ज्यों तक सौ कंत विनु अंत कको है आ बालाजिय नियरा ति है राती राती पाती बिनु बाती सी क नला
गी पाती दून आवे कोम आती चे द्यात है ले ले चाली खोरि डारे फूली अनफूली बेली तुलि फिरें आलि
ए न्याई सुरझा ति है डरा डरा रहे हरा घरी घरी कहै हरी हरी बेली देखें मरी मरी जाति है॥ ८॥ चितकरि चि
तयो तौ चित को स्यो हित करि हित करि चितयो तौ यहै सोच नित है देखें टकु लागे अनरे घे पल कौं न ल
गें रे घेनें ना निमष नेर हित है सुषी होउ उमें कान्ह आंनकी न चिंता हम दे यें ही छुपित अनदेखें छु
पित है॥ ९॥ कनो तलो सुपथ कुपथ पैं न कनो तलो सुनो तलो गेहूपें न पल संग करिए आन लको लपट
यो दुपट ना हरकी तलो कपटी के पें कपट तें डरिए यहै जग जीवन पर मधुर सार यहै परच
र जायफ रिर स सों न करिए हरि मानि लीजे पें न नीच सों न याकु कीजे सरव सही जे में न परव सन॥
परिए॥ १०॥ सुतरन दी रिपे जो पिक च्यांब मो होर पें जो मोर घन सो रपें जो करे नित कूक है श्रवन सु
नतो न पें जो ज्ञानी गुनग्यानपें जो जोगी मन धान पें जो निपट अचूक है बारी पर मीन जो नवीन पे नव
न जो करा मक वियामें मीन मेप न कछु कहै अलि मकरंद पें जो पपी हा स्वाति बूंद पें जो तेरे मुख चंद पें
करे जाइ कहुक है॥ ११॥ जब तें अपियां अपियां न लगी तब तें अपियां अपिया न हिलगी एहि लवा लगी
यांन के ध्यान में आपिन कौं निसि जान है जागे आंषि तो है उन की अपियां अपिया न हि सु फति आपि कें आ
गें घा पिन के रस आपित ई बस आंषि के लागे तें आपिन लागे॥ १२॥ हो क बदे मुहो वेण ॥१३॥ परदेश तें प्री
तम सुंदर आए जलास विलास बढे सिगरे उर कंवल गाइ लई जल नागढ़ि गाटे आनंद सौं अंकन तें
न रकी है तनी दरकी अंगियां मनि मानं तें छुटि परे मानों पी के मिलें तियके हिय तें अगरा विरहागन बूंदि
करे॥ १४॥ स्यांम संदेस अंदेस बिना उपजे से जरी जै सें कांम करा कें जो हुरि या कर थावत ना हिरी सो
उरियां गई मोरख रा कें आलमलाल बिसरी तई जो लौं आयप एपिय हार घराकें कैबर ही में जु यों
जलसे मुगए ध्रुव छुटि तरा कि तरा कें॥ १२॥ १५॥ गोरी तेरी दे षिगति

मनमोरवहरातहै फंघटकीओटमों फिनैननसौंचोटकरै जाकैलगैंसोतोलोटपोटव्हैजातहै तोनै
सोसुधारसारसोंअंभैसोंन्यारेतारेकोवेतेवागानकेनिसानसेकासावतहै कंधुकिसौंकसेगाढउतैपोरि
जैसैंमदेसुरंक्तन्वदेमेंगाढभ्रांतअंककोतोरहैं॥२०॥मोलोमुकिवारउमकोहोएतीबारहरिनामहैंहमा
रोवसेकोननपहारमें माधोहेमांननीतोकोकिलाकेभावेंलागिनोहनेहोमैहनीफिरोमंक्रउपचारनें
रागीहोरंगीलीजाउकोऊजातपास तेगीहोअबवाकीजाउपेंबेसुपतारमें नायकहोनमंसीतोरियोंका
नलाहेजायमेंहोयनतपामप्यारीबरषोंपहारनें॥२१॥चपलानवमककीचमकहैवियारनकीबोल
ततमोरबंदीसयनसमाजकें जागतहाैगाजतनवाजतनेदमोंनांदीरदिननदिषाइदेतरहैमार
लाजके चलेव लचेंसुखीसांवरेसषापेंबोसुषकाजके सोदासऔरसुमसाजिके चढिरपव
नउरंगनिगगनयनगर्जितवासतफिरतवेंदुजोधातमराजको॥२२॥चितकेविनोदनितकरतअ
दीनचढिऔचकहितईतेतडगरमेंगोदकें निकसेरसाफ्टेकनैननिछिपायपाइनातेगजकालगितिः
उतहीकौंलैकें चाहैंकछुकहेचितउमयोरसोनजान रहैपेंसंतोरिहैंसुजानेजोकदैहके उमभिष
लैहैकैसे होतहैवहाम्वहीपेंजानपरेसहिआसुरसमधकरानहलो॥२३॥किधौंकलानिकलंककलानि
धिकीहेकलाकिधौंनईकंदकलोअवलीहै गोकुलसौकविरूपकंचनमेंरचिविविधवाचरमदनपंले
कसोटीकसीहैं किधौंअलकलेसोवाटपायपरस किधौंसोपीलसोकरेरसरसीहै सुरउरमेंसुसु
नियउयाहीउरवसीसोंनउरवसीमेंरखेहिउरवसीहे॥२४॥अंजनसंतपरकिनकलानेंडकारितो
औरेनिरदईहेतोनेकडरिरे प्रांनतकेप्रांनओतिबिनहोनिहोंनयनगांनतानआनिबिनतीकोकानधरि
रे विकलोविवेतोनिसोतेनेकमधोरोगऊमयदछदरततरतनकेडारडारिरे जीवनकोजीवसुनि सांमहु
मप्यारेलाउकबकहूतोबलेंदमनारासुधिकरिरे॥२५॥सोताकोसदनतनुमदनप्रवेसकोतोंचाहेंवदनके
आगेविधिलागतसहैनदै देषेंप्यातियाकेंसुधिबुधिनरहतवाकेऐसोनुवजाकेनकजोवनलहैउहै को
हैरतिरांनीकाहाकोकिलाकीबानीसोहैतागिवेतत्रांनीआनीजापैनहैंनहैंऊहै कोवोकेंअनंदसुधजी
बोकेंसुगनिलेगहोबोकेंदरसमोहैंधर्मकोदहलरहो॥२६॥सोताकोसदनवालविफलोवदनतोनें
वासिदेमदनसुधोसकेधरेउहै अरुनअधरपवैहैसुमदुसकवदसनिसुजासजोतिमेंसेतिन
पसरिहे श्रीगोबिंदकबधोसपाकेयादेहगनिकेतोचनिकटाछितरिनेरोडकहरिहै कौसईसब
गसीसबेलिकनकलोसीमरंगरमेंमोछिसुलकेरेलिकवकरिहैं॥२७॥

॥ॐनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः अथश्रीकविकेसोदासकृतरसिकप्रियालिष्यते॥१॥
एकरदनगजवदनसदनबुधिमदनकदनसुत गवरिनंदआनंदकंदजगवंदचंद
जुतसुखदायकसुकृतिगननायक खलघायकघायकदरिद्रसबलायक
गुरुगुणअनंतभगवंतभवभगतिवंतभवभयहरन जयकेसवदासनिवासनि
धिलंबोदरअसरनसरन॥१॥ श्रीवृषभानुकुमारिहेतश्रृंगाररूपभय वासहा
सरसहरेमातबंधनकरुनामय केसीप्रतिअतिरौद्र बीरमारोवत्सासुर भयदा
वानलपाननपीउबीभत्सबकीउर अतिअद्भुतबंचिबिरंचिमति शांतिसंततसोचिचि
त कहिकेसवसेवहुरसिकनवरसमैंब्रजराजनित॥२॥ नदीबेतवैतीरजहांत
रथतुंगारन्य नगरओड़छोबहुबस्यो धरनीतलमैंधन्य॥३॥ आश्रमच्यारबसैतहां
च्यारिवर्णसुवर्णनिकर्म जपतपविद्यावेदविधि सबैवेदधनधर्म॥४॥ अपनेअप
नेतहांबसैंसदासुपकारि जासुदेसंधिदेसके रहेंसबैनृपहारि॥५॥ न्योविर॥
चिविचारितहं नृपमनिमधुकरसाहि गहरिवारिकोसीसुरवि कुलमंडनजग
माहि॥६॥ ताकोपुत्रप्रसिद्धमहि मंडनकुलरामसाहिजीततांको अनुजसकल
धर्मकोधाम॥७॥ दीनीताहिनृसिंहजु तनमनरनजयसिद्धि हितकोउठिमनरोम॥
ज्यूं वदीराजसोंवृद्धि॥८॥ तिनकविकेसोदाससों कीयोधर्मसोंनेह सबसुखदे
कैयोंकह्यो रसिकप्रियाकरिदेहु॥९॥ संवतसोरहसैवरसबीतेअठतालीस

अति कहे नांथ लीजे रति स्याते तन गति परिणमन तिण विषे जे मति तिका एकत्र करि कै रखुवं

कातिक सुदि की सप्तमी वार बरन रजनीस १० अति रति गति मति एक करि विविधि
विवेक विलास रसिकन कौ रसिकप्रिया कीनी केसोदास ११ ज्यौं विनु डीठि न सोहि
ये लोचन लोल विसाल त्यौं हि केसव सकल कवि विनु बानी हि रसाल १२ तातें रु
चि सों सोचि पचि कीजै सरस कवित्त केसव स्याम सुजान कौं सुनत होइ वस चित्त
१३ अथ नव रस नाम ॥ प्रथम सिंगार सुहास रस करुना रुद्र सुवीर भय वीभत्स ब
खानही सांत सुअद्भुत धीर १४ नो हूं रस के भाव बहु तिनके भिन्न विचार सब कौ
केसवदास कहि नायक है सिंगार १५ अथ श्रृंगार रस लछनं ॥ दोहरा ॥ रति मति की
अति चातुरी रतिपति मंत्र विचार ताहि सौं सब कहत है कवि कोविद श्रृंगार १६
सुभ संयोग वियोग अरु है सिंगार की जाति पुनि प्रछन्न प्रकास करि दोऊ द्वै द्वै
भांति १७ प्रछन्न संयोग वियोग श्रृंगार ॥ सो प्रछन्न संयोग कवि कहैं वियोग प्रमा
न जानै पिउ पीया सखी होय जु तिनही समान १८ कवित्त अथ प्रछन्न संयो
ग श्रृंगार ॥ वन में वृषभानकुमारि मुरारि रमें रुचि सों रस रूप पीयें कलकूजित
पूजित काम कला विपरीत रची रति केलि कीयें मनि सोहति स्याम जराय जरी
अति चौकि चलै चल चारु हीये मषतूल के फूल झवा तके केसव भानु मनो स
नि अंक लीयें १९ अथ प्रकास संयोग वियोग श्रृंगार ॥ दोहा ॥ सो प्रकास सं
योग अरु कहै प्रकास वियोग आपुन पै चित्त में जानै सगरो लोग ॥ २० कवित्त

केसव एक समै हरि राधिका आसन एक लसै रसभीने। आनंद सों तिय आननकी-
दुति देषत दर्पन त्यों दृग दीने। लाल कीलाल में बाल विलोकित हीत रिझौ बन नाल
लैन लीने। सों सन पीय सवासन सीय जु तासन में मन आसन कीने। २१। अथा-
प्रीयाजू को प्रछन्न वियोग शृंगार। कोउ ज्यौं कार तक्रा न निकारू सु मानज मैं का-
हि आवत ऊनो। नेकु अटपट छुटित आंषि सु देषत है। कक्को अजसूनो। ताहि वा-
ले सुनि के चुपि फेर दहे नीके हिके सब एक न हूनो। काहे कं कालके कों जेपर पाव
जी जेरी जो अफेनाक देवूनो। २२। अथ प्रकास वियोग शृंगार॥ कवित्त॥
सीतल समीर टारू चंद चंदिका निवारु केसोदास ऐसें होती हरषि हिराउ है। क-
लनि फेल झार झारि फारि नारू यने सार घनसार चंदन को नारू चित चोग नो पिराउ
है नीरहीन मीन मुरझाइ जो वैनी रहीपे छारके गिरके कहा धीरज धराउ है। पाई
है तैं पीर कित ऐसोंही उपचार करै आगि ही को दाधो अंग आगिही सिराउ है। २३।
श्रीकृष्णजू को प्रकास वियोग शृंगार॥ बात कहे न सुने कछु काहू सों देहे नदी-
कल कैसे लहेरो। पाइक न्हू न पीये कछू के सेंबि लु औनक चफ़ूर कों रोकरे रो। म-
लि उठी ब्रज बैठी कहा उठि आव जु वेगि कहो कैरि मेरो। ज्ञानै को मारुक हा सयो
कां न को योग संयोग वियोग के तेरो। २४। श्रीराधिका को प्रछन्न वियोग शृंगार॥
केसव रूपि रह्यो उमहा सों कि धंसत यका कलके ता तत यों है। वेमो है फासके हां
घ किनाघ किधों उमका जु केसाघ दयो है। मरी सों मोही सों मान जु वेगी रह्यो मनु है॥-

नायक दास भयो है सा वीर दोऊ हरिदास्यो है का फसैं कामदस्यो केउ रायगयो है
२५ यो प्रकास प्रछन्न सब बरने योग वियोग अब नायक लछन कहौं गूढ अगू-
ढ प्रयोग २६ इति श्री रसिकप्रियायां प्रछन्न प्रकास संयोग वियोग वर्णनो
नाम प्रथम प्रस्ताव॥१॥ अथ नायक लछन॥ दोहा॥ अभिमानी त्यागी तरुनि
कोक कलानि प्रवीन भव्य क्षमी सुंदर धनी सुचि रुचि सदा कुलीन २७ ए गुन
केसव जासमें सोई नायक जांनि अनुकूल दक्ष सठ धृष्ट पुनि चौविधि ति
हि बषांनि॥ २८॥ अथ अनुकूल लछण॥ प्रीति करै निज नारि सूं पर नारी प्रतिकूल
केसव मन बच कर्म करि सो कहियै अनुकूल २९ अथ प्रछन्न अनुकूल॥ और केहा॥
सविलास न तावत साधन को यह है सुष सतावै बात कहै जु सदा निबहै हरि कोक
कहो कछु सुख न पावै आसन बास सुबास न भूषन केसव क्यों ऊ यहै बनि आवै मे
बिनु पान जु षात न कान्ह कूबेरि किधौं यह प्रीति कहावै॥ ३०॥ प्रकास अनुकूल ल
छण॥ कवित्त केसव सुधे विलोचन सुधी विलोकनि के अविलोक सदाई सुधीय बात
सुनें समुझें कहि है सु हिये बत सुधीय बात सुहाई सुधी सी हासी सुधानिधि सो मु
ष सोधि लई बसुधा की सुधाई सुधे सुभाव सबै सजनी बस कैसे कीये अति टेढी
कन्हाई ३१ भेर तो नाहिन चंचल लोचन नाहिन केसव बानी सुहाई जानै न भूषन
भेद के तावनि ष्लूलि जंमे न हितेहि चढाई सोर जनौ चित यो हरि उर सों घेरो करै हर २
हितात तिजुमाई रंचक तो चतुराइ न चित्तन कान्ह तए बस कोह है तेमाई ३२

॥श्रीवृंदसकसंदग, [illegible]
नजैवनमानु॥३३॥अथसहलतकृष्ण [illegible]
मनदानिकरिदियजन [illegible]
सीताम्‌, [illegible]
कौसकलीमावी [illegible]
सदीन [illegible]
कतैभादितालिक [illegible]
नतमऊ [illegible]
श्रापन [illegible]
[illegible]
कायमनीवचनमन [illegible]
[illegible]
छकनितादि [illegible]
[illegible]
सिया [illegible]
सादितवी [illegible]
नमसमान [illegible]

लेदो तन आनन मन आनन कपट निधान को कहि सकै कहो मेरी आन काहे को फिराने हो चेतो
देखि कीनी हाथ मेरे होति हा रे हाथ तुम ब्रजनाथ हाथ कौन के बिकाने हो ३९ अथ धृष्ट
लक्षण ।। लाज तगारि कुमार कछु दई अधिक सब त्यागि देख्यो दोष न मानई धृष्ट सु के अब
रागि ।। ४० ।। अथ धृष्ट कवित्त ।। नेकु लजै है साजत लाजन कौं तन गोनें दधि उधमी गई
मारि दयै तेहु सैं बरजे घर आवत है अनुबोल पठाए आज की और कहा कहौ के सब जे सु
नियै वसवें युनव्याए मा मा पा ये हन कौ मेरी माइ कौ देह रि आव है गांठि अकाए ४१ मा
नसा वा वाक रमना विहरी अनिचित वनिपेल चलन चातुरी आतुरी आठै गांठि वि शेषि
४२ ।। अथ सठ कवित्त ।। सो हकी सोच सकी चतुराई चको मोल लखु साल सयेक रिचारी दे
ननि कं वक ताइ सखी सति नैनन निके संग फेन तनोरी लाज करेन करे हित रानितें आनि
आसे जिय जानि के तोरी नाहि तिनके सब साथ जिते बकि अ अनिसों उपवे सुषकारी ४३
दोहा वरने जु कवि नायक सबै नायक इहि अनुहार से बयुन जायनायका सुकि अब
बजत प्रकार ४४ इति श्री रसिक प्रिया यां चतु विधि नायक वर्णनो नाम द्वितीय प्रभाव २ १
अथ नायका जाति लक्षण ।। दोहा ।। प्रथम पदमिनी चित्रनी सुवति जाति प्रमाण औरसंषिन
हस्तनी के सवदा सव जानि ४५ ।। पदमनी लक्षण ।। सहज सुगंध सुरूप सुत पुण्य प्रेम सुप
दान तनुत तुलाज न रोस रति निद्रा मान वषानि ४६ सलज्ज सुबुद्धि उदार मृदु हाव ता वस्त्र २
चित्र अंग आमल अलोम अनंग रु पदम निहारि करग ४७ कवित्त दसलक हत यात कछु
लोफर त जात गुटिसुरि हाव ताव को कछो कोकारिका पन्नगी नगी सवारि आसुना सुर
३५ नायक की नायका प्रवेती न परि मांगा सीया पर की
या अव रु सामा न्याहि प्रमोग

निहारि वारिफेरोंकिन्नरीनरीगवारिनारिका तापैंहौंकहांकैजाउबलिजाउंकेओराइ सर्व १
विधिएकब्रजजोवनकीतारिका तोंरसेतंवतब्रातिलापतांतिदिमवपेकेसीकलीरूपतांतु
कोकुमारिका ४७ चित्रनीलक्षणं॥ नेसगीतकविताक्ष्वै अवलचित्रवलहर्ष्ट वदिरतिर
तिअतिसुरतजलमधसुगधकीसष्ट॥४८॥ विरललोमतनमदनगंध तावतसकलसुवास
मित्रचित्रप्रियचित्रनी जानहुकेसवदास ४९ कवित्त॥ वोलिवोवोलनिकोसुनिवोअवनो।
कनिकोअवलोकनिजोतैं नाचिवोगाइबोवीनवजायवो रातिराराईकोजानतितोतैं रागवि। वो
रोगनिकेपरिरंतनहासविलासहीतेरकोतैं तोमिलितोहरिचित्रहीकोंसपीअमेवरीचजेचि
त्रमेंहोते ५०॥ संपिनीलक्षण॥ कोपसीलकोविदकपट सजलसलोमशरीर अरुनवसनतनप
होनरुचि निलजनिसंकअधीर॥५१॥ वारगंधसुतमारजल तमतरितगहोइ सुरतरताअ-
तिसंपिनी वरनतहैकविलोय॥५२॥ जातनहीकदलीकीगलीनतलोविधिलेवदरीसुदलावै-
आदरसोंअतिआदकेपातवसोरुवदेदेरुचिकोउपजावै जोकोऊकेनवनागलवगलतालव
लीअवलीनिवरावै पारिवायपवाशारदहरिकंटजकंटकटेरायोतावै ॥५३॥ अथहस्तनील
छनं॥ दोहा॥ स्थलअगुलीवरनमुप अधरस्तकटिकटियोल मदनमदनरदकथमद वालवलो-
अतिलोल॥५४॥ स्वेतमदनजलछिरदमद गंधितलरिकेस अतितिछन वजलोमतन नति।
हस्तनीहदिवेस॥५५॥ सबदेहदईउरगंधमईमतिअंधतईसुमपावतकैसें आलतलोम।
किमालमदेश्रुतिलाफ कनकेसवराइअनेसें आलिसोंमलिनीनलिनातजिकें करनीकिमणे।
लनिमंहितेसैं वहितियाकेराजमिनीवसपापनिरेपदुराजविराजतिजैसें॥५६॥ इतिचित्रनी- २

नायकालक्षण।। ता नायककी नायका अवती नपरमान स्वीया परकीया अवरु गनिती सरीसमा-
न।।५७।। अथ स्वकीया लक्षण।। दोहा।। संपति विपति सु मरन लौं सदा एक अनुहारि ताहि स्वकीय २
जानियहु व्यारि अनुहारि।। ५८।। मुग्धा तांमभेद।। दोहा।। नवल वधू नव जोवना नवल अनंग १
नाम अरु लोधी कविक हत हे लज्जा प्राय सुवाम हु९।। नवलवधू लक्षण।। दोहा।। तासों मुग्धा
नववधू कहत सयाने लोग दिन रहनाउ तिवढे वरनिक हे कविकोग।।६१।। कवित्त।। मोहि
बोमोह नकी गतिको गति हि पढ़ो वेनकहा धौं पढेंगी। उपजत रोजनिकी उपजे दिन काहे मढे आभिम २
न मढेंगी नेननकी गति रुच लोच नकेसव दास अकास चढेंगी माई कहा यह माइगी दीपति
जो दिन द्वे रहि तो ति बढेंगी।।६२।। अथ नव जोवन रूपिता मुग्धा।। सा नव जोवन रूपिता मुग्धाके २
यह वेस बाल दसानिक सैज हां जोवन को परवेस।।६३।। कवित्त।। केसव फूलि न चाल लकुटीक
ति लूटि नित बलई उबरु काली बैननि सोच सं कोच सुनैननि छुटि गई गति कोवल चाली द्यौ सका
धीरधरो न धरो अबलों मिलिकें जमको बनमाली वाको अथानु निकार नकों उर आए हैं जोवनकेमें
अबताली।।६४ मुगधा नवल अनंगा लक्षण।। दोहा नवल अनंगा होयसो मुग्धाके सवदास पे
ले बोले बाल विधि हसे त्रसे सविलास।।क वित्त।। चंचल न ज्यों नाथ अंवरनें वोहाव सोवे
नेकुसारिकाऊ सुक तो सिखायो जू मंद करो दीपउतित्वं दमुपदे षिय त्यों रिके डर आउरा
रसोंदी षाबोजू मग जमराल बाल वाहिरें बिहारिदेउ तावें उमें केसव सुमो हमन ताओ जू बलो
केनिवास त्रसें बचन बिलास रुजि सोयनो सुरत जौं स्यांम सुपपायो जू ६६ लज्जाप्रियरति मु ४
ग्धा लक्षण।। मुग्धा लज्जा प्राय रति वरनत कवि इह रीति करें जो अति रति लाज सों प्रति हि बढ २

वेनिलिं॥६७॥ खेलतनहोरि ब्रजबाल न्हहीं हरिपाइ परे अरबरि लिखी। केसव देखि वे कोतुक रिझं कहुंअ
रहते जकमें नहीं ठौरी सखी चितवे कौ केतो कियो। सिखा पितवाइ अंगुरि तिठौरी में तरि खिला
तउं चितए नरहीग हिनैनति लाजनि गोरी॥६८॥ मुग्धाको सयन॥ दोहा॥ मुगधा सोइ रहै नहीं
पियसंग सुनेजु सुजांन ज्यों कौलत सोवे सुपी सुषन दीसमांन॥६९॥ कवित्त॥ पाइ परें मनुहार
सुलैं सनु हारकरें पतिकापरि पाइ थस्यो तयती ने सोइगइ कहिके सब केसें जु कोरि हि कोरि
कसौंह निकीने सा हसुके सुपेंले छिनमें हरि मांनि सबें सुपलीने एकउ सांस नहींके उसरे सिग
रै ई सुगंध बिड़ाकरि दीने॥७०॥ मुगधाको सुरत॥ दोहा॥ मुगधा सुरत करै नहीं सुपनेंजु सुप
नमांनि बलबलकीने होत है सुपमोंन न कोहांनि॥७१॥ कवित्त॥ सुपदे सघानि वा विदे केस १
देधाइके पवाइ कछु स्वाइ बसकानी वसवंतु है कोमल मृणालिका सी मल्लिका की मालिका स १
बीलिका सुकुमारी मांहि मानु सके पसु है जांने न क्रितातित्तयो केसव सुनेंको बात देष्यो जे नुरा
गउ तयो किधौं अउ है विचित्रा राधा यह चित्रनी विचित्र गति कहौं धौं न ए रसिक यामेंको
नरसु है॥७२॥ मुगधाकोमानु॥ दोहा॥ मुगधा मांन करै नहीं करै तो सुनजु निदांन यों ठरपा
रहु जाइ ये जैसें ठरपै अगमांनु॥७३॥ कवित्त॥ बोलेनबाल बोला वतजु नपरे पलिपेतु
वे पेम परेपो आपनो हाथ बिलोकि बिलोकि कहीं तबकेसब बुद्धि विसेपो, गोरी घरी विधि रेष
उपी सुगंध सुकारेपसें कौंन सुलेपो प्रेमतें बोल सखी नपस्यो अकुलाइ कपोल पीयके सें
हीं देष्यो॥७४॥ इतिमुगधाभेद समाप्त॥ अथ मध्या॥ दोहा॥ मध्या रूढ़ जोबना प्रगल्भ बचना ऊ १
नि प्रादुर्भूत मनोभवा सुरत विचित्रा जांन॥७५॥ मध्यारूढ

ढजोवना॥ आरनजोवनवंत लागसुदमानरी सदा लावति हे मनकंत॥७६॥ कवित्त॥ चंदके
सौंसो गत्तालस्त्रकुटी कमानजैसी मैंनकेसे पैन सर नैनन विलास है नासिका सरोजगंधवा
हसे सुगंधवाह दारयों सेदसनकेसोवालसीसोहासहै लाईओ ग्रीवा सुजपान सोउ
दर अरु पंकजसेपाइगति हंसकी सीजा सुहे देपादेंगोपाल एकदेवता सी सोने सरीरा
सबसौंधेकीसीवासुहै॥७७॥ मध्याप्रगलभवचना॥दोहा॥ वचनप्रगलभजो निति हि व
रनें केसोदास वचननिमांहि उराहनो देइदिवा पावे त्रास॥७८॥ कवित्त॥ कोक कलेज
लेदगलोग रलिलेहो नेंननिके रंगरागे जानत हो सबही तुम जानत आपुसे केसबला
लबलागे जाउजू नही अहो जाउजू चाले हरि जात जितै दिनही वनि बागे देपि कहा रहे धोषे परे उ
लटेकसे देषिके देषजूआगे॥७९॥ प्रादुर्भूतमनोभवा मध्या॥दोहा॥ प्रादुर्भूतमनोभवा
मध्याकहे वपानि तनमन तृषित सो तिजे केसव काम कलानि॥८०॥ कवित्त॥ आजुमेंदे
षी हेगोप सुता इकदोरन ऐसी अहीर की जाई देषतही रही मेंबलिदेहकी देषतें औरन
देषी सुहाई एकही बंक बिलोकन ऊपर वारोंविलोकति लोकनिकाई केसवदासका
लानिधिसो वरुजुराएकौ मुकि मेरो कन्हाई॥८१॥ विचित्रसुरता मध्यालक्षण॥दोहा॥
अतिविचित्रसुरतासुतो जाको सुरत विचित्र बरनत कविकुलऊं कविन सुरतसुहि वोमि
त्र॥८२॥ सोरहईसिंगारि सुत सोरह सुरत समान बुद्धि विवेक बल समझियौ केसवरा
इसुजान॥८३॥ कवित्त॥ प्रथमवसकाउ सुचि मंजन अमल वास जावक सुदेसकेसपास
कोसुधारिवो अंगराग भूषन विविध मुषवास राग कज्जल ललित लोल लोचन निहारिवो बोलन ह
सन चितचातुरी बलि नचारु पलपल प्रतिप्रति ब्रत प्रतिपारवो केसोदास विलास करि जू

कुंअरि सरि धिर इह विधि सोरह सिंगारनि सिंगारि वौ ॥७४॥ अकं पकौ थोलि ष्यते॥ कवित्त॥ केसौ
दास सविलास मंद हास सुत अवलोकनि आलापनि कौ आनंद अपारु है बाहिर रत सौ सौ-
अर्स अंतर तम्रात सुनि रति विपरीतिनकौ विविध विचारु है वृटिजात लाज उर छंत अपनं सु-
देज केस छुहिजा उर सब मिरत सिंगारु है कुजि रत और रति कूजनि मैं सुनि पग सोई तौ सु-
रत रूप और विवहार है ॥७५॥ दूहा॥ आलिंगन चुंबन परस मर्दन नषरद दान अधरपान
सो जानियौ बाहिर रति प्रमान सुजांनि॥७६॥ इति बहिरता थि तितिर्यक् सन्मुष विमुष अध उरध
उतान लात अंतर रत सम्रुफियौ केसव सकल सुजान॥७७॥ अथ लज्जकोयौ॥ अथ मध्याको उदा-
तांत कवित्त॥ सुंदर ता पयसा वक जा वक पाक हिओ नरच्यंदन एहैं चंदन चित्र सुधा विष कौल
नइ हित सुवैन निहार गए हैं केसव नैननि नीद मई मदिरा मद घूंमत मोह मए हैं केलि के नागरना
गरि प्रात उजागर सागर वे मत्त एहैं ॥७८॥ मध्यातिहं॥ धीरा अधीरा धीरा त्रिहु॥ दोहा॥ सिगरीम-
ध्यातीन विधि धीरा और अधीर धीराधीरा ताम री वरनत है कविधीर ॥७९॥ धीरा बोलै वक्र वि-
ष वान विषम अधीर पीय सौं देह उराहनों साधीरा न अधीर॥८०॥ मध्याधीरा कवित्त ज्यौं
ज्यौं जलास तौं केसवदास विलासनि वास तहि ये अबरेष्यौ त्यौं त्यौं बढ्यौ उरकंपकछु त्रमस्त
तत यो किधौं सात विलेष्यौ सुद्धित होत मपी वरहे मेरे नैंन सरोजनि साखुं के लेष्यौ ने जु कस्यौ-
सुपमोहन कौ अरविंद सो हैं सुतौ चंद सौं देष्यौ॥८१॥ मध्या अधीरा कवित्त॥ लालकौ सो गात स-
व बल बलवीर कौ सो भाउ कौ सो भुषमहा मोह मन तावो है पलसो अवलसी लज्ञानि लोवलवि-
तो लसो अमल तेज तेजकौ लगायो है केसौदास वस्तत्र अकासके प्रकास प्यो मनारिन रघ
रषे रो धनौं गायो है रति को और ति ताषरूपर तिना वको मोर ईकामो

केसौ

९२॥ मध्याधीराधीरा कवित्त॥ का मन तलेसु तलीस में फाई हो मोह समुद्र में बैठ में हो केसव
आपनो मानिक सो मन हाथ परयो दै कौने लए है हो नैननि हौ मिलबो करौ ये अब बैननि कैं मिल
बे सुर रहे हो जाइ कह्यो उमजै सौ सखीनि सों एहो गुपाल में ऐसे कहे हो॥९३॥ इति मध्या भेद॥
अथ प्रौढा नाम भेद॥ सुनज्यु सकल रस कोविदा चित्र विचित्र मा जाति अति आक्रामति नायका
लब्धायति सुरतांति॥९४॥ सो समस्त रस कोविदा कोविद कहत बषानि जो सैं सतावें प्रतिम
हि ताही रसकोविदा नि॥९५॥ कवित्त॥ देषी है गोपाल एक गोपिका अनूप रूप सोने सो सलोनी
वासु सौंध इतें सवाई है सोता के सुताई अवता रती यो घन स्याम किधौं यह दामनि सों कान
तो कै आई है दैवा को ऊदौं नवी मान वान होइ ऐसी मान हाव भाव भेद तारती पढाई है केसो
दास सब सुभ साधन की सिद्धि यह मेरें जान मैन हाथ मैन का की आई है॥९६॥ अथ चित्र विचित्र मा
हा॥ अति विचित्र विभ्रमा सदा प्रौढा प्रगट बषानि जाको दीपति दूतिका प्रिय पहि मिलावें आ
नि॥९७॥ कवित्त॥ है गति मंद मनोहर केसव आनंद कंद हिए उमए हैं तौं हिय के जाइ निकाम।
उल्हास न अंग सुबासनि गाढि गहे हैं बंक बिलोकनि को अवलोकि सुमार है नंद कुमार रहे हैं
ए इती कामक बाण कहावति फूलन कै विधि सूलि कहे हैं॥९८॥ आक्रामति नायका प्रौढा॥ दोहा
सो आक्रामति नायका प्रौढा कहि दें चित्त मनसा वाचा कर्मना जिन वस कीनो मित्त॥९९॥ क
वित्त तो हित गाइ व जावत नाचत बार अनेक सिंगार बनायो जाक्ह में आन को भानिबो बाम्यो
पंते से लउ न सोमन लायो ताबि सो नं करिबो करि तांमनि तामा वहे बस के प्रिय पायो का न्ह सैं सु
धो सु वाहि तिलनी हि सों चाहि तहे अब पायन लगायो॥९९॥ लब्धायति प्रौढा सो लब्धापति ना
यका केसव प्रगट प्रवीन कानिकरे प्रतिकूल सबे भ्रतु ता भ्रतु हि समान॥१००॥ कवित्त॥
आजि विराजित है कहि केसव श्री वृषभान कुमारि कन्हाई बानि विरी विवहि कुमकौं मखौले

कही सो व भूनि वनाई -अगुवि लोकि तिलोकमे ऐसी कोनारिनिहारिन नारिन वाई मरति वत स्रिगार
सुनी पूसिंगार कियै अङ्ग सुदर ताई ॥१०१॥ प्रोढाधीरा भेद ॥ आदरमाहि अनादरहि प्रगट करै दि
दखि इ आकृति आउ ड रावहि प्रोढाधीरा दोहा ॥१०२॥ प्रोढा साद राधीरा कवित्त ॥ आवत देषि उए
उ विआगे के के स व आउ हो आसन दीनो अउ हो पाय मपारिषसो जउपानको ताउन आनिना
वीनो । सो रावनायक के आगे धरी तव हो कर कोमल वा जनु छीनो बाहु गहो हरि ऐसे मे कत्थ्या द सि
मे तीर ती अपराधन कीनो ॥१०३॥ प्रोढाधीरा आकृति गुप्ता ॥ चित्त वो चित वाएद माएद क्रोध चाला
एकेके ते रहो नित मोनें सो हुअ नेक नै आवत अक करो रति को प्रति रैन कांगेने यवाएत धाउ वा
नाहू विरा जउ आइहो आजिहि केसव गोने मोहन के मन को मोहनी सु कहो यह धा सिषई सिप
कोनू ॥१०४॥ कवित्त ॥ हितके इतदेष्यो जद देप्यो सबहित वात सुनो सुनी सब हो द मानु को यो अप
मान करौ तो यह लोक सुओ रस व दे सब ही अरु सो एकरो व करी सुनहीहै सहुक्का इक हो समफे
हु मकि सब कवा सवे हम सो जु कहीहै मानु को यो अपमान करौ तो एसो अवलो एम वे कीर हो हे १०५
प्रोढा अधीरा ॥ दोहा ॥ पतिको अपराध गति हितन कहे हित माति कहत अधीरा प्रोढ तिहि केसव दा
स कुजानि ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ है सुपमा इसिया इरही सिय सा पितरा सिप न जु सिपाई म व जोन वेड पार
उ देष्यो पै केसव के सेउ ऊटे बन जाई दरुद एवितु साक निजा सपि वृत्ति क्या पलक को पलताई दया
जु देमक को उ ट कोटि मिते न घटे विषकी विपताई ॥७॥ प्रोढा धीरा अधीरा ॥ दोहा ॥ रूपरूपी नाताक
रे जीय मे पी यकोरस वीराधीरा जानी पें मै सी मोगी कप ॥८॥ कवित्त ॥ हो मन मेले न जो हुक शुक्र
व वाफिज वो लिवो वो लहि । सो है के सव और निआरसरा स स्यार सवादस वे हम मैं ५
एक वार सको च न आरम ने वन आर सि मो हैं आएज अमेदि भाज मोआउ

रसिका सौं है ॥९॥ इति स्वकीया ॥ अथ परकीया ॥ दोहा ॥ गुप्त रूप पीवा तें करै सबतें परपर सिंह जग
ता को प्रिया जु होइ परकीया ता सौं कहै परम सुधरौं ने लोइ ॥१०॥ परकीया ना भेद ॥ दोहा ॥ परकी
या है तौं तिहु निऊढा एक अनूढ जिनही देषि सुनि होत सब संत तमूढ अमूढ ॥११॥ ऊढा अनूढा लछ
ण ॥ दोहा ॥ ऊढा होइ विवाहिता अविवाहिता अनूढ तिनकि कहैं विलास सब गूढ अगूढ ॥१२॥ ऊ
ढा कवित्त ॥ बेठी स्यामलिका सों है सत्ता सब हीके सुनेन नि मांहि बसे [illegible] तें बात बनाइ कहै मनही
मन केसव दास हसैं षेलति है रत षेल उतें पिय चित्त चिलावति यौं विलसे को ऊ जांने नहीं जिगवो
र करै कितहै हरि आंनन छैनिकसे ॥१३॥ अनूढा परकीया कवित्त ॥ बेवाजंती व्रजनारिन
मैं वन भीत छ पत्ता षेउ अद्भुतावन जागी षेलत है सषी वो परिवार रमई तिहि षेलषरी अनुरागी
छ पावें ते केसव वो लिउठे सुनिके चित बावरी आतुर जागी जानीन का न कवें हके गुर मार्ग
हास रस जागि लागी ॥१४॥ अथ ऊढा अनूढा विलास प्रछन्न ॥ काहू सौं न कहै कहं वाल अमुत
गूढ संषी सहेली सों कहै ऊढा गूढ अगूढ ॥१५॥ केसवराइ कौ सौं हक के कछु एकनि आंगमें होइ
परी एक चितें सुसक्यात रतें उत वात कहै बहु भाइ भरी जोवन चास्त्व को रनिता सब कोदिसतें
अतुरी पसरी सषी आज गई जंती गोकुल हूं सब हूं मिलि हूं जु कोवोद करी ॥१६॥ दोहा ॥ जुगनाय
क की नायका बरनी केसवदास तिनके दरसन रसिक हूं सुनहु सुगुन प्रकास ॥१७॥ इति रसि
क प्रीयायां तीय प्रस्ताव ॥३॥ अथ दरसन ॥ दोहा ॥ दोऊ दरसे दरस तें होइ प्रकास मत सरीर द
रिसन च्यारि प्रकार को वरनत है कवि धीर ॥१८॥ दरसन नाम भेद ॥ एक जो प्रगट ह्वां देषीयें अ जो
र सन चित्र जौ जो सुपनें देषीये चोथो श्रवन निमित्त ॥१९॥ साक्षात दरसन ॥ दोहा ॥ नंद रूप द्रुति
देह की गई सुन तही जाहि को जांने कैहि कैहि केसव देषे ताहि ॥२०॥ प्रिया जु को प्रछन्न दरसन कु

त्रिश॥ केसवश्रीवृषभानकुमारिसिंगारसिंगार सवै मरिसै हासविलासथितहरिनायक त्यौं रति
नायक सायक सै वरसै कयकुंडरिदेपत दुर्पनमें उपमा सुषकी सुषमा परसै जनु आनंदकं
द्रुसंदरनचढ ड स्योर विमल जमेदरसै॥२१॥ प्रियाजूकोसाक्षातदर्शन॥कवित्त॥ मधि लेत जित्र २
रस्त आरसिदेषि घरी कघसै घनसार हलि उनिऔं ठिगुलावतिलौ विक्रलेल अगो थेमअगो ठनि-
कै कहिकै सव भेद जवादसो माजेइतेपर आजेमै अजहदे वक्र रौ डरिदे मानो विपाकछुअपी-
गुजतो जोवन लागि ये हे॥२२॥ श्रीलालजूको प्रछन्न साक्षात दरसन॥ कवित्त॥ लाल घरी
मनलाल जटे लपटी जरमोतिन की सुषदेनी तौहि विलोकति आरसी लै कर आरसको अति म २
रसनैनी के सव राइ डरै दरसै पर सो उपमा मति की अतिपेनी सरज मल जैमनमी मानिधनी 'मैंकल
जांनुताहि त्रिवेनी॥२३॥ श्रीलालजूको साक्षात प्रकाश दरसन॥कवित्त॥ एकतौ ऊरु तंगज
अनुपमतै सेमनोहर हारमहारी चित्त चले मरुनी निजकौ तकनेतु कि के सब बातकहारी हित
मोहितकी कहि आवत है परिकौ लागिहो जरीको उकहारी अचलदै नइलाल विलोकन रीवधि
नैषा विलोकन हारी॥२४॥ प्रियाजूको प्रछन्न चित्र दरसन॥ लोचन ये विलिए इनकौ मनकी मति के २
यय पिने हत हाहै सो तौका एकाहि ये कहिकै सब लाज सबुझै मझि रही है आनन आइगए अ
म सौ करें सौ मनौ उविकपगही है चित्रजु मैं हरिमित्र दिदेपत यौ लकवी जनु चाह गही है २५ प्रि
यजूको प्रकाश चित्र दरसन॥कवित्त॥ के मोहन के चक्रवा दीपक सो जोइ के मै जोति ही के ध्यान-
तेज तम हान भए है ओं पिन के वाधे अनत काहू की भुजानी त पपानाको कहा नीरानी प्यास कोहु
फाई है एरी मेरी इ डसुमी इंदीवर नैनी लिपैइंदरा के मदिर में संपति सिधाई है अंसे दिन अंस हा
ग वाव ति गवारि कहा चित्र दैपै मित्र कौ मिले को सुषपाई है॥२६॥ श्रीलालजूको प्रछन्न चित्र दरसा
न॥ रूपिये कौ उठि वे कौ मजसु सकाइ कै विलेतिकै को लेइ कहु कह्यो नपर उ

लेखनि बोलनि के सुने बिनु हि लनि मिलनि बिनु मोहि कैसी सरत है। को लखि अलोनो रूप ष्याहिर
राखो लेख बिन देषे मन के अधीर अधर भइ है चित्र नी षि विवकीलना केरौ खितये मन चित्र में ये चि
त्त्यो गुनो जरत है ॥२७॥ श्री कृष्ण जू को प्रकास चित्र दरसन कवित्त ॥ अंतरिछ गाचनी सु उ निजि
छुनि स उछीननि आवी आवी अवनी निछ विव मनी यहे किन्नरी नरी सुनारि पन्नगी नगी
उमा रि आसुरी सुरी निकं निहारि न मतायहै तो तिनको कामनी कि देषे धरें दामनिक को
महा को कामनानि ऐसी कमना अहे चित्र जमे चित ही चुरावति है को के सो कुसुमसर के
आ रमणी रमा सो रमनीय है ॥२८॥ अथ स्वप्न दरसन ॥ दोहा ॥ के सव दरसन स्वपन को अस्ता
उ स्पो ईतो र कबहु जगत न जानीये यह जानै सबा कोय ॥२९॥ प्रियाजू को स्वप्न दरसन
कवित्त ॥ आउर योउ विदे मेरी अली उन आउर ज्यो गहायो सुगरालो कहो मेरी रानी का हान
यो तोहि हौ बूझ तिके सब बूझिये ज्यो नाहि लगी कि धौं चेत लगी कि लग्यो उर सोत मजाहि
रायो आंनन सो कर सो कहिये अधसो वत तें अकुलाइ उठी ज्यो ॥३०॥ श्री कृष्ण जी को स
प्न दरसन ॥ कवित्त ॥ पदुन पद वाको पाव पद चोपदी न एको विसेउरव सो उरमें न आनवी लो
मस्ते उलोम जानि स्वलि है ति ठौ त मान मेनका समान मनमें न कामु मानवी जानीये न को न जाति
अब ही जगाये जाति सो वन तो जानि हो जो ता हि पहचानवी चातुर कल्ली बानी महा माय सोलवा
नी किधौ के मोदा सरति मेरती कुजाति जानवी ॥३१॥ प्रियाजू को प्रत्यक्ष दरसन कवित्त ॥
मोह दिवाइ स्त्री एक बारि कानन निआनि बसाए जानै को कैसय कानन तें कितहु कबनेनन
मांहि सिधाए लाज के साज धरें सब नैन मिलै मन ताही मिलाए केसो कहो अब क्यों निकसैं री हरें
हिलें हिहियें हिरि आए ॥ प्रियाजू को प्रकास प्रत्यक्ष दरसन ॥ कवित्त ॥ को जो पै हों कन्हैया रू
प को हूं के है प्यास केसो दास का सोन नयन तरपो जइ वार का सो मेरा वारवारा है हे उ वारो सो

विवेकुरैनीजई वरसकमांझि यद्द वेसखलवेळीवीतेबेहस्वयसपिनिकौं अवसीनदीउजर्ई ए
राउन वावरी अहिरिओसोहफनोहै नांहीसों सनेह कोजे नाहीं मनकोउर्ई ॥४३॥ कान्हकौ
नाभवनदरसन लोघडहै लोकलोकलीकनउलंघी नाहु सबसीहसमुझावे तोहिसमझावेको
गाउडकदत तन२केनवूहै लाजधनमीडराषि दोऊकोविदकहावेको सेवकौ नंदकोसुत
कोश्रवपविमपंथके सोदासएककालएकेजउधावेको जयसुपजराजरां नरिसतेमेरेमनजे
कौसुनीतैसी तोहिआं पिनदिखावेको ॥४४॥ कान्हकोप्रकासश्रवनदरसन। निपटकपटकु।
श्रेमकौं वकस्फरुवीस विसिवसाहिकरुके सैंउरआंनियै कांमकोप्रहरपतु कांमनाकोवर
यतुसवअजांनीये किधंकेसोदासमहिमोहनीकोरूपतहै किधौंव्रजवालिनकौनपतुवा
मांनीयै सुनतहीवृष्योधांमु बनकोलेरपांमुराधेतेरोनामुकिउवाटमेंन मांनीये॥४५॥ दरसर
मणनरमनाथके कहेपरमरमनीय प्रगटप्रेमप्रस्तावअव कहूंकहौंकमनीय॥४६॥ इतिरा
सिकप्रीयायां प्रच्छन्नप्रकासदरसनांमचतुर्थप्रस्तावः॥४॥ अथनायकचेष्टावर्णनं॥तिनके
चितकौ जांनिअपि पियकुंकेस्वनाह कहैअपानीमांगीतीमे आडनतें अकलाइ॥४७॥ राधिका
कीअपाकोवचन सखनप्रतें॥ कालिकीपालितौआजुकौंनसंत्तारतिकेसव केसैंफंदेहै स २
राकैफातिउठकचलं जरिजाउरह्योकिरहीरुचिरहै कोरिविचारिरतिहै उपचारिनकेवरके
सपीमेहैं कान्हरोजिनमांनोतिहारीचितोकनिमेंविसुवासुविसेहै॥४८॥ कान्हकोवचनराधि
काकोअपाप्रतें॥ ष्पासखेरहीउदासजाकीजुपगहिआसकेसोदासनींदजंकीनींदानितवांनीये
मतिकोमतोनलेइ घेद्याकाविदाईदेइ सोमामुकोमेईअवसुपमानाहै विसुसेळगतिगी
तकेलिकानपरतीत प्रातिउरपाजंनासी पविपरुचांनीहै तोविनुकहैकोगाइ धीरतानतासे
नाथ मोहिकोमिळावेकौ हाथ लाजकेवाकानीहै॥४९॥वो॥ प्रियसौंप्रगटहिसातिकजं जित

नेकर छिपाइ तैसवि केसवदास अब बरनौ सवनि सुनाइ ॥४०॥ जबचितवै पीउ अनंतही त
बचितवै निरसंक जानि विलोकति आपसौं अलि हिलगावै अंक ॥४१॥ कवहूं अति कंठ करै।
आरस सौं औंगाइ केसवदास विलास सौं वार वार जंभाइ ॥४२॥ फवैकछु हसि रहवै कहै अपी औव २
त औसै मिसही मिस प्रिया पिय हि दिखावे गात ॥४३॥ यो हि पिय पीयाति प्रति आप आपनी प्री
ति सों प्रछन्न प्रकास करि बुधिबल करत समीति ॥४४॥ राधिकाको प्रछन्न चेष्टा चोरि२ चित्र चितवा
ति मुषमोरि२ काहू तें हसति हिये हरषु वढायो है केसोरायकी सौं तुजज्ञाति कहा बार२ बीरा षा
हमेरी वीर आरसु जो आयो है औंगमो औंगाति अति अंचल उमातु उर उघरु र जाउ गातु अ
विद्यायो है॥ फूलि२ रहे टति रहति उरफूलि२ रुलि२ कहति कछु तें आज पायो है ॥४५॥ राधिक २
को प्रकास चेष्टा॥ मेरे मुजं चुमें तेरी ऊरी साधि हुमेवकी बात उरस असु क्यो सिरात प्यासन ठाढे है बोट
र करमेरे कहा ब्राव ति बवीली बाती छाव जाके छ्याइवेकों अति जाम बाढे है पेलन जो आइ होतो षे
लजे सैं षेलि जउ केसोराइ कीसौं तेए कोन षेल काटे है फूलि रहेट तिहे मोहि कहमेरी लटु से टतिन
जाइ जावे सेति वेको गाढे है ॥४६॥ कृस्न को प्रछन्न चेष्टा॥ कोरि२ बांधो पाग आरसस्यो आरसी लै अ
नत हि आंन ज्योति देषत अपने सेही तोरि२ मारत तिनुका उमको न परतपाउ वाव रि ज्यों औसे होकवहूं कौं नं
बुहकि देत चट किछु जाबी का न मट क अैंगानु जुरी ज्यों जंभात तैसे हो वारि२ कोंन परदे तमन नैन
लोमो हिगावत कछु को कछु आज का काके ऐहो ॥४७॥ कृस्नको प्रकास चेष्टा॥ जो लगि लाल चलुगाइनि
दे दिन ना वन न चावत सांझ पहांउ केसव मेन करो बस कार कहार कजैत कहां लौं गनाऊं हारिर देहा
रि के फिर मिलि नीनि मि लांऊं औ ता हितै मांग सो पाउं गाढी के जांनी वे जाय मिलों उमको रक हू करि यों का
रिसांउं ॥४८॥ अब स्वयंदूतत्व लक्षण॥ दोहा॥ जो क्यो हूं नमिलै कहूं केसवदास ऊ रव नवतो अपा ए
ने आपही बुधिबल होत वसीठ ॥४९॥ राधिका को प्रछन्न स्वयंदूतत्व लक्षण॥ बुवो जिन हाथ सौं एधा

हिये पलही पलया हतश्रे मकला॥ मिलवे न जानी ये जामे कहा वसि जाय चले जुनिके सब को नवला तले।
जंतजे निवहे जुजलीय हदेपिवे कंकी हया ई जेजा मिलेमन तो मिलवो ई काल मिलवो ई कौ नग्रलोक
हो नंदकला॥५१॥ इ हरि तें देषिवे को कहो दीन मनाऊ नती लिखिहीलि खि चीठी देषें मिजो मन हो नंमि।
लो मिलि घेलि वे लंको मिलीम ति मीठी ऐसे में ओरवला इहो के मव के संलं काक ऊमा नंद हीठी तो छे
नवार सुसार के ता सों दू टैगी लाल है मैं उमर रही प्रियाजु को प्रकास स्वयं दूत॥ माइन ही वरदाइ पा
रोसुंर आइहै आई किआंपि वहाऊ मोरियै आवे रत्यों घरतें परऊं चउसुनें सुमहाडु पपाऊं का ज्ञनि
वेरजंन्मायन यो यह आलनि को लगि सें वहराऊं मो नंगए सक सो वन आए वे कि हो इननै नकेसंग।
सोवन जांऊं॥५२॥ श्री कृष्ण स्वयं दूत प्रछन्न॥ आपने ही नायके ए सो हत सरी के सचे के मादासद
मिजों चलत स्वितदाती है
नेहं प्रिया कों सुनाइहै
आदजे वो वन वा स्यो हम पेलिवे कों संग सखा सापा मगका नि हैं॥५३॥ स्वतको प्रकास स्वयं दूत्यौ च
वनजे जैवलो को ऊगांनी है के सव हो उ नंद उआरी अरिसों कयु खेलि एपे ल न आव तआ जहीत्व मान
तु मो गैरं परिहों हित दे हि यमें किधों नाहितऊ हि उनां हि हियतो लला लरिसों इन में यह हलाय के
ओकही जु कही तो कहा जुकहा करिहों॥५४॥ के सो दास घर स्नावत फिरत गोप एक परे वधितेम
रेइगनि यउ है वाकुनी किवसायल दाक्रतए सखा सव संगले को जैए रूपकी सु कनिय है मो हितो
गए हो वनें दाइदा पमा जाजाय गाइन सवारिवे कों पिउ जुनी यउ है जो वन सो नें न लेउं वा वरतए हैं
सव परकपरें ई आजु अहो सुनियउ है॥५५॥ अथ कटा अकला वन अपी प्रतिदृत॥ कटाक्षनि
इ हि मांति है वज विधि हि तनि जनाइ आउ निदीलें लाज मति पिय हि मिलें जो

रूपजमनोरथरथनिके कैसोदासजुगलगजैसैंगाएगीतमें पवनविचारचक्रचक्रमनचितवै चढिके
नअंककासतवैचांमजलसीतमें कोलौंराषैवइषिरवापी रूपसरसमहरिपिजनुकीनै बजवासम
वेतितमें प्यांनगिरिफोरि तौरि लाजतरूजाइ मिल्योआपहीतें आपगाज्यों आपनिधिप्रीतमें॥५७॥ अ
रूढासवयंदूतत्व॥ जातितईसंगजातिलेकारतिकेसबहेरूजमोंहितरूचो गर्वगयोगुनजोब
नरूपको सोतोसबैपललहौपलछबिओ कांतिदारीयेआंनिकीयेकहोंलाजकोनाकेसो नांतोईदु
ओ बाध्योसबैंदूसहेरिउम्हेउमपैंतनको कपटोनहि बूझो॥५८॥ दोहा॥ अधिकअनुढा लाजतें पि
यपैंजायनआप क्योंलंकरिसषीएकरे ताकोउरकोताप॥५९॥ अथअनुढाकेमनकोतापसषि
तें सषीकोवचन॥ जानेकोकेसबकोलैंकह्योकबकाजहमारे हिलिलनिकले पांननपाइनपांनीपि
ए तबतेंतरिआंपिनलेतसमूले जाजनहाचलिकेबलाइज्यौं लेजसंकेलकहाइतरहले जोनत
हो वहकांमकली कुमिलाइगएं बजस्यों फिरिफूले॥६०॥ अथप्रथममिलनस्थांनवर्णनं॥ दोहा॥
६ जनासहेलीधाइधरि सूनेंघरनिसिप्यार अतितपउबवाधिमिसि न्योतोविपनविहार॥६१
इनतहांवोरनहोतहे प्रथममिलनसंसार केसवराजारंककों करिराषेकरतार॥६२॥ जनाके
घरकोमिलन॥ कवित्त॥ वेषकेकुमारिकाको व्रजकाकुमारकानि मांफिसांक केसोदासत्रासपग
पेलिकें कामकालतासी बलपेमफांसीसी अमलराधिकाके बुधिबलकंवलजमेलिके डोरिरू
जरिरउरिरअतिलाप रतांतिके अनूपरूपकेलिके जनाके अजीरआजुरजनीमें सजनीरीसा
वीकोलास्यांम वोरमहवनीषेलिकें॥६३॥ सहेलीकोघरकोमिलन॥ नैंननिकेतारिनमेंराष्योप्या
राहतरीके मूरलीज्योंलाररापोदसनवसनमें राषोभुजबीच बनमाली बनमालकरि चंदनज्यों १०
चढ्उरस्वच्छहराषोतनमें केसोसहकलिकंवुलाके करमकरक्यों आंनोहे छिनमें चंपककली

राषेकरिरकवुलाकैं छुवनमें

सीज्यौंकान्हसंधिरहेवद्रासीलेऊमेरेलालऐसेंमेलिराखोमनमैं॥८३॥धायकेघरकोमिलन॥कवित्त॥एस
लयेव्रतपेखुमंदतईस्वेंदइतिकहेलकलौनीअरुउरुलपटेलेजाल केसोदासनींदवसिअपनेंघरिरह
रेंउठिगएबालिकासकलबाल योरिउब्योमगगनसघनघनवरषेदिसिउविवलेकौराधारहीलितघि
नितिकाल आधीरातिअधिकअंधेरीकेसेंजैहैराधिकाकीआधिसेजसोइरहीप्यारेलाल॥८४॥ सु
नैंघरकोमिलन॥ देषतहीचित्रआजमुतीचित्रशालाबालारूपकीसीमालाराधारूपकसूताएरी
नूपुरकेसुरनिअकुपरूपलोनेलेतपगतलतालदेतअतिमनसाएरी ऐसेंमेंदिषाईदीनीआनकलं
कुंअरकान्हजैसेसतगाततैसेजातनवताएरी केसवकहैनपरैअलकजसलकसैवेजलकंसलो
चन जलदुरसेहैंआएरी॥८५॥ निसिचारकोमिलन॥कवित्त॥ एकसमेंसंवदेषनगोकुलगोपी
कुपालसन्तुहसिधाए रातिकेआईचलेघरकौंदसलंदिसिमेघमहाघिरआए जमरोबोलतहामत
फैनदीकसंवयौंवितिमेतमगाए ऐसेमेंसांमवियोगविदाकैलईउरलाइकौयोमनताए॥८६॥आ
तितयकोमिलन॥ जानाआगिलागीहपतानजुकेलौनमछिदौरिबजबीचटेविझुदिसिधायकें जहां
तहांसोरतारीतारनरनारिनको सबहींकोबुटिगईलाजहायहायकें ऐसेंमेकुंअरकोकान्हसारी
रूआवारिकें राधेजूजगाइऔरउवतिजगाइकें लोचनविसालचारुचिबुककपोलब्रुचिचंपाकी
सीमाललाललीनीउरलाइकें॥८७॥ उत्सवकोमिलन॥ वलकेवरसगांठिताकीरातिजगिक
वेकोंआईब्रजसुंदरीसबरिलनसोनेंसो केसोदासतारतईनंदजूकेमैंदिरनिमधिअधकरववा
षानकरौंकोनोसो गावतवजावतनाचतनानारूपकरि अहोलहोउमगतआनंदकौऔनोसौ स १
मकीअकिउसेजसोवतहीराधिकाजूसोएआंतिसांवेरुमानिमनगोनोसो॥८८॥
मिलन॥ सोधिनिदाननिदानदएउपचारविचारकाएनिधिरानी वेदकोसासनत्या
कुलासनसंनहिरानीलैसबवेगचलोचलिवौलनिदान लईहूंपत्तानकी

करिकैं याको त्याग तनैं कयहू पी प्यारी नी ॥६७॥ स्यांनमिलिकै को मिलन ॥ कवित्त ॥ स्यांनके सु लाई आ-
ता सरी रूप नाम को जे चेकों ज सादा रांना आनी सी मवारिकें नो जन के छवन विलोक वे कों पांन पा
त रूप रिस कें लोगई आनं ड विचारिकें दपनर द मित्ता वनकों दपित्ता जी दारिगही व्याल आवें
नार रमारिकें तेहा तरि अंक मनत्ता यो करयां प्यो म नके सरसं मांगो ठई व सरि कता लिकें ॥६७॥
चन विहार को मिलन ॥ कवित्त दृष्टि बा स्ताई कहि दनपमा रजे आलि तरो कानि फेरी गोको
मही मगु यांग्या ज, यापै नुमाय विलोकन ला जलपेटी वान संतासिक हा सु निदै को कजानत होयचपा-
कोन को चेरी जानन यों वृषसा नुकी दे परि नाहि न जानत कोन को चेरी ॥७१॥ कवित्त प्रकीपको
यो ॥ हरि रा धिका मांन सरोवर के तट यांद रा दायं सांग्या त्रठिए पिय कि सर पाग पाया सु गंग छटा-
वा जतिमा लक लनन हो य कहि के सब का बनि सेन कहे म बदी तन चंद न पोरि को ते निकसे
जु बीर सम रुज तें संग श्री पति मांन जुं श्री हो जाय ॥७२॥ जल विहार को मिलन ॥ रितु ग्रीषमकै
प्रति वासर कम पिल उ हे यमुना जलमें इन गोप सुता उनपै गोपाल विराजति ग्वालनिके गनमें अ
तिहू बनहे गतिमांनन की मिलि जाय कं व आपने बलमें उहि ना तिमनो रवम रिदोऊ जन हरिज हरि
रहे वविसो वलमें ॥७३॥ दो० इन निधि राधा रवन के वरनें मिलन विशेष के सब दास विलास वसु
इदिव लखी जु देषि ॥७४॥ सब मिलन सब लमें कहे आपनी मति अनुसार हाव तोव वरनन करूं
सुनि अव बजन प्रकार ॥७५॥ इति श्री रसिक रनी या यां पंचम प्रस्ताव ॥५॥ आंनन लोचन ब्वनमु
गि प्रगट तन मन की बात ॥ ताहि सों सब कहि तु हैं नावक चिनके तात ॥७६॥ ताके रूप पांच प्रकार के सुनि
अनुभाव वित्ताव स्याई स्वातिक कहतु हैं चित धारी कविराव ॥७७॥ विनावल श्वनं दोः जिनतें जग
त अनेक रस प्रगट होत अनयास तिन सों सुमति विभाव कहि वरनत के सोदास ॥७८॥ सो विभा
व है तो निके अत्तवदास वपानि अवलंबन चहु उत्तरो उदीपन सम तु मांतु ॥७९॥ जिनें आतम्भा-
इति रस को आदि औ र जत रसनी ती सरा जनें औ केरी इति रस में विरसन बुझाय कहत रसिक सिरमौर ॥८०॥ एरावा-
जिस नी ना य न ता वनी मति अनुसार जे सब दास च यांनी य कवि मल म्योच प्रकार ॥८१॥

तुर्यचलं वयत सोऽत्रिवलंबनजांनि जिनतैं दंपति होति है सो उद्दीपन बखांनि ॥८०॥ अवलंबन स्फा
नैनैं वैनि ॥ दंपति जोवन रूप जाति लच्छन सुत सखी जुत कोकिल कलित वसंत फूल फल दल अंकि
उपवन जलचर जल सुत अमल कमल कमला कलमरा कुर चातक मोर समद्द तडित धनु अं
बुद अंबर सुख सेज दीप सौगंध मृदु पांन मांन परिधांन मनि नवन सलेद वीना दि सब अवलंब
नके सन बरन ॥८१॥ उद्दीपन तां मकपत ॥ अवलोकनि आलाप छुनी परिरंभन नख दांन चुंबनादि उद्द १
पै मर्दन परस पमोन ॥८२॥ अनुभावलछण ॥ आलंबन उद्दीपके जे अनुकरन प्रधान तेऊ है ॥
तै अनुभाव सब दंपति प्रीति विधान ॥८३॥ स्थायीभाव दोहा ॥ रति सुहास अरु शोक पुनि क्रोध उ
छह जांनि भय निंदा विस्मय सदा स्थायी भाव बखांनि ॥८४॥ सात्विक भाव दो० स्तंभ स्वेद रोम
स्वरभंग कंप वैवर्न अश्रु प्रलाप सोए सबै भाव आठ सु तब बर्न ॥८५॥ भाव जो सब ही रस नमेउ
जल के से सब आइ तिनतें अब तिनसों कहत विभचारी कविराय ॥८६॥ विभचारी भाव लछण ॥ दो
हा ॥ निर्वेद ग्लानि शंका तथा आलस दैन्य सुमोह स्मृति धृति व्रीडा चपलता श्रम मद मर्ष नाको ह ८७॥
गर्व अहर्ष आवेग पुनि निद्रा नीद विषाद जडता उत्कंठा सहित स्वप्न प्रबोध विवाद ॥८८॥ अपम
मारि मति उग्रता त्रास सकल गि अति व्याधि उनमाद क मद मदन रय व्याधि वा रुसु ममाधि ॥८९॥ अव
हावलछन । दोहा ॥ प्रेम श्री राधारमन को ॥ है जातें शृंगार ताके भाव प्रताप तें उपजत हाव विलास
अथ हाव नांम ॥ हेला लीला ललित मद विभ्रम विहित विलास किलकिंचित विछित अरु करो विवेक
प्रकास ॥९१॥ मोट्टायित कुट्टमित बोधकादि व्रज हाव अपनी बुद्धि बल बरनत है कवि
राय ॥९२॥ अथ हेला हाव लछणं ॥ प्रगट प्रेम प्रताप तें तजत लाज समाज सो हेला जिहि हरन कि
य राधा श्री व्रजराज ॥९३॥ श्री राधा जू को हेला हाव ॥ कवित्त ॥ अवलो
जं पासि तउ गल मेलौ रूप इ अवासउ भइ मिश्रवह जन की मनि मांके

ऐसें सबके सब राइ करी रसरीति मनेही वे नेम है पत्तानु सुता सुपदी हरि को हरि लेख गइ हि हेली॥
५७॥ श्रीकृष्णजूको लीलाहाव॥ बेनु सुनाइ बुलाइ लई तब तोन तुलाइ के लोलित लली को रूलिग।
यो मन रूप्यो विलोकति के सब कानन रास बली को अधरा रस प्याइ की यो परिरंभन कुंबन कैसु
मकाम कली को हेल हे श्री हरि नागर आजु हस्यो मनु श्री वृषभान लली को॥५८॥ अब लीलाहाव लच्छ
न रस लज्जा हाव तिनको जो लम प्रिया बनाइ उपजत लीला हाव लिहि बरनत कब राइ॥५९॥ राधा
जूको लीलाहाव॥ पाइनि को परिबो अपमान अनेक सो केस बनाइ नमनेबो। फूल गुहते बीरा पवाइबो पे
बो विसेष विजंदि सिचो कि चिनेबो चौर ऊचालनि कूपरि पोढ़बो। पालहा के परके उठि बैठेबो चा
खिन मुंदि सिखावति राधिके कुंजन तें प्रति कुंजन जैबो॥६०॥ श्रीकृष्णजूको लीलाहाव॥ जो खिफरे
खनमें मन देखहि ऊचे आवासन देख न धावें निं दिन गोप चरित्रनको कहि के सब ध्यान धरें सुनग
वें चित्रत चित्तमें आजु नजो अवलोकत आनंद सों उरलावे आंगन ये घरमे घर ये फिरि आंगन बा
सर को सखा यो बिरमावे॥६१॥ अब ललित हाव जामें बोलनि हसनि विलोकिवो चलन मनोहर
रूप जैसे तैसे बरनीयें ललितहाव अनुरूप॥६२॥ प्रियाजूको ललितहाव वर्णन॥ कवित्त॥ को
मल अमल मन विमल सो सखा साथ कमल ज्यों लीने हाथ कामल सनालके नूपुर का धुनि सुनि
तोरें कलि है सनके चोकि परपरें चारु वेणु आमरालके कंचन के तार ज्वतार नि अंवतारनि
मकि खिजुब कि ज्योति कटि तिलटि बालके हेरें बोलति विलोकति हसति हेरें हेरें चलति हरति
मन लालके॥६३॥ श्रीकृष्णको ललितहाव॥ चपला पट मोरकिरीट लसे मघवा धनु सोंत बढ़
वत हे मृदु गावत आवत बेनु बजावत मित्रन मधुर नचावति है उविदेखि सदु तरि लोचन चात्र
कवित्तको ताप बुझावति है घनरूप मघवा घन वेष सो केसो बने बनते ब्रज आवतु है॥६४॥
अथ मद तन लीवलच्छन॥ दोहा॥ इरस्यवमे मद मापते मार बढे बजनाव तिनके तरुन विको।

रन रूप जतहै मद हाव॥२॥श्री याजूको मद हाव॥ कवित्त॥ वृक्षिसों विलोचपतो तुको कंचरि आ जिरहां
तोधरि मांन रूप मदछकिकै मार हूतें सुकमार नंदकोकुमार ताहि आयोरी मनवान मोर सुभ्रूवा
देकिधोंकिकै हसि हसौंहै करि मायपरि के सोरायकी सोंतब रहा जियजजिफें तारी मेमें ज्यो
घेरे नघोरघेरिदांमनिसी धाई उरलगीधन स्यांम तनतकिकें॥३॥ स्वम्नीजूको मद हाव॥ मदि
मोहिनीमोहिसकेन सपी चपलाचलचित्त वपांनत है रतिकोरति क्यो कंनकानकर भ्रमिचक्र
लोघतिजांनत है श्र रुकेसवैवा तकहै रमनीयरमाजु नमानतहै रूपसाउसुतादि तिमनम
नोहर और हाविन आनव्है॥४॥ अब विभ्रमहाव॥दोहा॥ वाकविलसनभ्रमतें उहारहार
विपरीत दरसन रसतन मनर सित गनि विभ्रम केगील॥५॥श्री याजूको विभ्रमहाव॥दो
हा॥ कंसिकेतस्हारलेपरिली योकजकिं किनलेऊर सोऊर माईकरनूर उर सोपगगोंची
विनोअंगी आसुधि अंचलको विसराई करिअंजनरें जितभारूकपोलको यो सुनजावकनें
ननिकाई सुनिआवतश्री ब्रजरूपनें रूपतही उठि देपनधाई॥६॥श्री सम्यूको विभ्रम
हाव॥कवित्त॥ नंदनंदनपेलतहै वनजातवनी यचिचंदनकै जकी रूपसांउकुमारि विा
लोकतिही रूविचित्तमें विभ्रमकी फलकी गिरिजातनपांन निपात विरा करि पंकजकेदि
ठके विहसी सवगोपवधू हरिसौं तकिलोचनमंदिहगंचलकी॥७॥अब किलकिंचितहावलछ
नं॥दोहा॥ बोलनलंकेसमयमें बोलनदेतिन लाज विक्रम हासवासों करनत केसपक वि
जनराज॥८॥कवित्त॥ मेरेकहे दाहिए सुतऊ फिरियोपमज्यों हवकावदहोगी परिवंप्रेमसमु
इपराए कहा एकोए रूतज्यौं निवहैगी हौंसमैरें सजनी सिगरी कवहैं हरिसोंदमिवा नकहें
गी पियकै चितकी चित्तसारी वही चित्रसुतरासी लईकोलैरहैगी॥९॥ स्यनको विकृतहाव
केसं वराइ आजि सपी रूपसांउकुमारउरांहनोदीनौं गारीदई अरुमारि दई॥
मों मनुकैहितलीनौं सापदई सुपपाइलई उरलाइ सुगंध चवाइनवीनो

दऊ मार कठु सिर ऊँचे तें नीचे तें कीनौ ॥१०॥ अथ विलासवर्णन ॥ दोहा ॥ मिलत बोलत हँसत अरु
चितवत चलत प्रकार। जु लषि लक्षक सब हास कहि उपजत हाव विलास ॥११॥ प्रियाकौ विलासहा
व ॥ चार अँठ सौंजे जाति वातें करि सौंह निमैं चित्त मैं त्यौं नरसे हँदाने है लोचन निसों चनि सकौ
चनिन बावलि है दृग आनन मकि दीन्ह कित चितवनि है मंद हास मुख वास आन वास दास करि लीते
के ऐसें के सौराह यद्यपि न बैनि है मोहन के तन मन मोहि बेकों मेरी लटू तेरे मुख सुष ही आनंत ब्रत
लीने है ॥१२॥ श्रीकृष्णजूकौ विलास हाव ॥ जिनन निहारे तें निहारति तिहारे वेकौं कान्ह न निहारे
तिनके संगजू निहारे है ॥ना॥ सुर नर नागन वकनन निके प्रान पति पति देवतानजू के हिय निवसारे
हैं हरु विधिके सौराह सांवरे असेष अंग उपमान उपजौ विरिंचि पचि हारे है रूप मद मोचन मदन म
द मोचन है तिय मद मोचन के लोचन तिहारे है ॥१३॥ अथ कलकिंचित हाव लक्षनं ॥ श्रम अभि
लाष सगर्वता क्रोध हरष सभय ताव उपजत एक ही बार जह सो किलकिंचित हाव ॥१४॥ कृष्ण
सौ दाहरण ॥ कलकिंचित हाव ॥ कवित्त ॥ ऐसी है गोकुल को कुलकी जिन देखि नैननकरे अनु
कूले पंजन से मन रंजन से सब हार विहार लता लगि फूले बौंरु को नकु को नहि बोले फिरै
विकु के सहिए मद्रि फूले रूप तय सब के विससे अहो कान्ह कसोर सको नके तूले ॥१५॥ अथ र
सधका या ॥ कोने रसै विरसे लषि कौनहि का पर कोपि के तों स्व द्यावे सुलतला जलटुक बचं
कब सांझ सुष औ वल दई डरावै कौन को लेन बला यबला इत्यौं ते रेंद सकहि मोहनि आवै ऐसौ
बसत बहान लई अब तोहि दई जनि वाइ लगावै ॥१६॥ अथ विवोक हाव लक्षनं ॥ रूप प्रेम के गर्व
तें कपट अनादर होई तहं उपजत विब्बोक रस यह जानें सब कोइ ॥१७॥ श्रीराधाजूको विब्बो
क हाव लक्षनं कथ ॥ आवत जानि कें सौंह रसी हरए हरि वेवे न जाति जगाई साहस कें उर मध्य
धस्यौ करजा गत रोम की रोवजनाई नीवी पिमांवतवो कि उवी पहिनानिकौ वतियां कहि वाई

...गीरस्वरावृतआवतहै निशिसे जपराई॥२०॥ श्रीराधारस॥ एक समै एकगोपीकृष्णके सब
कै सैं[illegible]सीकीवातकही जोकछुनातदई तजितासिकह्यो लगमोस्यारीतिनई॥२१॥ श्रीकोपतिकृत
रहेई सषी इगआसुनको अवलोउमही उरलाइलई अक्रुलाइतक अधरानकलोदिलकातरहु
विविवितहावलखन्नो॥ रुपनत्रपितकोजहां होय अनादरयानि तहिविषितविचारीय केसा॥
चैनंनि स्थाहेजाके सुतोपैसिंगार उतारनजाहीं सवहोतेसुगंधनिहोतसुगंधरमेजातमुताई
रुपनदेसवतोहितैरुपित रुपनतैंभमतरुपितनाही॥२२॥ श्रीकृष्णरस॥ पानपातनपागरवीउपन
पदचित्तकहाधरिकै कंठसिरीवनमालमनोहर हारउतारिधरैगरिके चंदनचित्रविचित्रनिलो
पिसुजोवनलोलनिसोलरिकैं अंगसुताइसुवासप्रकासितलौपिहोंकेसवक्यावरिकै॥२३॥अथ
मोरायतहावलखनं॥ हेलालीलाकरिजहां प्रगटितसात्विकताव अभिलरोकनसोतिए सो
मोरायतहाव॥ कवित्त॥ पेलतहेहरिवागेवैनें जहांवेगप्रियारमितेंध॥ तिल्हनी केसवकेसेकुं
पाविमैंनाहिपराऊवकुंकुमकोरुधिरोनी माउसमीपिउराइतलेतिन सात्विकतावतिकोगतिहो॥
नी रुरिकमरलैहरिविलोचन कंधिसरोरुह उंदाउदानी॥२४॥ श्रीराधारस सोजनकेंहपलानस
नानसतामहैवेवेहेंनंद सदासुपकारी॥गोपथनेवजवीरविराजैनपातवनाइविराजिरवारी
राधाप्रिफांपीफरोषनिहैरिके सवराज्ञिगिरिहैं विहारी सोरतयोसमुझेसउन्हे रुरु आइका
रुपी उपजितहेतहकहमितकाहिकैसवकवित्तया॥२६॥ प्रियाको उहमिन हाव॥ पहिलैहवकह
विवलोउविपीवहैमेचितईसपी तैनंजमारी धाइधरीहरिमुसुलुजानितें वृति
कुमारी. कुचपीकतदंतनरवडात अंवनवैरिनकीमेरजादनपारी

उलटी चकचौंधति कौ री तसबीरी ॥१९॥ अथ प्रकास ॥ देषत ही जिन सों न रहै । उनि सों लत सों क
बोल उचारे सो है कौंयें जु तमौं हकौ यों मनुहार परपे न सधे निहारे हाहाके हारि रहे तैंऽ नैं
पाइ परे जिन लातन मारे मंहृत है मुपता हि को अंकलै है कछु प्रेम के पावनि नारे ॥१७॥ अथ बो
कहाव लक्षन ॥ दोहा ॥ गूढ भाव के बोध जहँ केसो समुझत कोइ ताकु बोधक ताव सो कहत
सांने लोइ ॥१८॥ प्रियायी बोधक हाव ॥ वेवी जुती इषतान कुमारि सषीनकी मंडली मं ॥ म
वानी लै कुम्हिलानी सो कंज कं पाय के पाइ लगाय गुआलि नवीनी चंदन सों छिरक्यो बजबार
पान दयेक रुनार सतीनी चंदन चित्र कपोलनि लोपिके अंजन आंजि विदा करि दीनी ॥२०॥ अ
सुकलस ॥ सषि मोहन गोप सला महिं गोविंद वे वैज तेउ तिको धरिकें अंबुके सव छरन वद
चित मिश्र चकोरनि को हरिकें तिनको उलटा करि आनि दयो सषीनारजनारनये सि
कहे का हितें नीके निनिहारि मनो हरफेरि दीयो कलिका करिकें ॥२१॥ साधारा धारवनके कौ
यथामति हाव डाघ्यौ केसवदास कौ बवियाल्क बिराव ॥२२ इति रसिकप्रीयायां षष्ट प्रभा
॥६॥ अथ अष्टक नायका लक्षन ॥ दोहा ॥ एसव जिततनी नायका वरनी मति अनुसार केसवराय
षानीये तेस कआव प्रकार ॥ स्वाधीनपतिका उक्ता वासकसज्जा वाम अतिसंधिता बषानीये
और षंडिता नाम ॥२४॥ केसव प्रोषितप्रेयसी लब्धा विप्र उआन अष्टनायका एसकल अ
सारिका सुजान ॥२४॥ अथ स्वाधीनपतिका लक्षन ॥ दोहा ॥ केसव जाके गुन बध्यो सदा रहे प
संग स्वाधीनपतिका तासु कहु बरनत प्रेम प्रसंग ॥२५॥ प्रछन्न स्वाधीनपतिका ॥ कवित्त ॥ व
सकजीवन जो ब्रजको अरु जीव हिते अतितात हितावे जापर देव अदेव कुमारनि वारलमा
नवार लगावे ता हरि पै उ अहीर की बेटी महावर पाइ फवाइ दिवावे हो तो वचा रसि हंसी नव
औं सेंऔ रजो देषत कत स्यावे ॥२६॥ प्रकास स्वाधीनपतिका ॥ बोली कोसो पान तो हि करत

योरिबोई कुंजनमैं नीनोद्दामो हिम्रूरति समांनी है तेपातिवकंदेवतापपायो पतिके सौंराइ पतिनीव
ऊंतपति है वस्रावपानी है तेरे मनोरथतागी रथरथपावै रु ऊलतगोपालमेरे गंगाकों मापानी है
सुधौंकोन बानी जो नमानी सुनि मेरी सांनी उनके नातेरी वानविदकी साबानी है॥४७॥ अथ उ-
त्कोलथन्न॥ कहिते न दि आद्यो प्रीतम सपीमम धांम ताकों सोचति सोच जिय केसा उत्कामोम
प्रअन्नउक्का॥ कवित्त॥ किधौं गेह काज किधौं मेंहदीकों काज किधौं किधौं कुधौं नसपासमाज किधं
आनुभ्रत वासर वितातते द्यौ नाते न सोधकि धौं काम सौं लयो विसेष उपजोमबोधकि धौ उक्का
वनतैं सुषमें नंदेह किधौ मोहा सौं कपटनेज किधौं देष्यो मेज अति हरे मथरा तितें किधौ मेरी प्री
तको प्रतीत लेव के सौराह अजकंत आए मनसयो कौन वात तैं॥४९॥ प्रकासउक्का॥ सपिरु
लिगह रुलए किधौं काम के लेई मील तवाटन पाई लाल लए किधौ केसव काम सौं तेट तई
कोऊ तामनि ताई आव तेरे किधौं आइगए किधौ आव हिंग सजनी सुषदाई आए न नदकु
मार सपी कधौं कौन विचार अवार लगाई॥५०॥ वासकसज्जालछन॥ दोहा॥ वासिकसि-
ज्जा है सो कहिके सव स विलास चितदे रति गृह द्वार त्यों पिय आवन की आस॥५१॥ प्रछन्न
वासकसिज्ज्या॥ चंदन विरचव कोमल अमल दल वलित ललित लता लपटान वंगको केलो।
दासताने डरा दापकासी सिपादोरि डरावति तीलवास डलि अंगरकी पांनपांनी पंपीप सुवास
मैं सवड तिज तिततिवोकि रवा है वौं पसंगकी नंदलाल आगम विलोकिकै ऊजा लवाल गति-
तिहि काल लई पंजर पतंग की॥५२॥ प्रवासवासकसिज्ज्या॥ कवित्त॥ सापति है सुपचे न सपी-
निसौं लाप हिये अति लापन जो है कोमलहासन नैंन विलासन अंग सुवासनि के मन मोहे म-
रतिवंत किधौ उरसी उलसी अति दीरति मूरतिकौं है कुंजविरा
ऊकूटी मंहि सौं है॥५३॥ अथ अतिसंधिता लछिन॥ दोहा

अपमान हतो उपतिन बिनु लहे अतिसंधितावषानि॥४४॥ प्रछन्न अतिसंधिता॥ बारबोले जब
बोलीन तबोलाए तब बालिक जों बोलवेको कतविलषात है ज्यौं ज्यौं परे पाइन त्यौं पाइनते पीछुतान
यो है तकहा अबकीने मोपन सौं गाउ है केसोदास सबकी फिकियो रुषहासो है उतोज बोकि
जियजियै बिनु कहा जाउ है ऐसे प्यारे या पसंतें मांन्यो न मनायो तब औसीता दिष्टु क्रियै जु पीछे
पछितात है॥४५॥ अथ प्रकास अतिसंधिता॥ पाइ परें कंत प्रीतम सों कहि के सब केसों राग
नदीनी तेरा सषी सिष साषी न ए को सुरोष हिकसी षसी षि मे लाल चंदन चंद समीर सरोज वरे
उपदे लाई सुषहीनी॥ मैं उलटी जुकरी विधि मोकहं न्याइ नही उलटी विधि कीनी॥४६॥ अथ
षंडिता लछिन॥ दोहा॥ आवन कहे आवे नही आवे प्रीतम प्रात तासों कहौ वे षंडिता कहै सो
षसी बात॥४७॥ प्रछन्न षंडिता॥ आषि निजो स्रम भुन का ननि लो सुनियत केसोराइ जैसें तुम
लोकम थपगाए हो वेसकौ विसारि सुधि काकरौं अनुतल फिरौ ह्वै सो वे सा वे सो व सबदा व हु
मवाए हो उरि स करत ही दोरि रगहो पाइ ज्यौं नौ नकु औरऔर ज्यौं निजी यपाए हो काको घर षा
लिकौ कहा वेस घनस्याम घूंघु ज्यौं धक सत प्रात मेरे घर आए हो॥४८॥ प्रकास षंडिता॥ आज
कछु अषियां हरि औरसी मांनो महावर मांहि रंगी है मोहन मोहसी लागत मोहि इतेपर मोहन
मोहि लगी है मेरा सो मोहि सुमांनत जु वे पिहिए रस रीस की रीति जागी है मेरे वियोग के तेज तवी
किधौं के सब काल के पेम पगी है॥४९॥ अथ प्रोषितप्रेयसी लछन॥ दोहा॥ जाको प्रीतम देस
वषि गयो कोन हुं काज ताकों प्रोषितप्रेयसी कहि वरनत कविराज॥५०॥ अथ प्रछन्न प्रोषितप्रेय
सी॥ केसव के से कछु हरबहु न्यसि स्यो मनस्यावतो लागत स्योरी जांने को माई कहा तयो क्यौं यहु जु
औधि को आधु एकु घरी सट स्यो री ताकु कांहुन ओ ओह सिबोल इ तउ मेरो मोहन पाइ पस्यो री को
लजतें दव तेरी क गोर इते विरहा न लही लज स्यो री॥५१॥ प्रकास प्रोषिता॥ ओधि दिन आए उ।

सोहै सो घनश्याम त्रिकायु वालकी। चंदके समान ज्याकुल भाइ सोंवही फिरि मन हरिकें तिहारे मनमैं नेकु मको पालको
कोजे पयपान ज्यों रूपैजे पान प्राननाथ आई है ज्यूं आजि अलबेली ग्वालि कालिकी॥ ६२॥ प्रछन्न गर्वातिसारि
का॥ कवित्त॥ लाजिलीला लीकलोरी छरी कजु गलबु केकहा आगि लगाइके आसुत उके सबके सेजा
के लगलगन देतिन देष जु आइके वेगि चलो उवि आहलि बाउन दोरि अकेली यहो अकुलाइकें लुले
ज्यों गोकुल गांउमें गोविंद का जैं गरुर न गाइ बराइके॥ ६३॥ प्रकास गर्वातिसारिका॥ कवित्त॥ चंद ज्यों
उदार वारु अंबरको उरहार सुमन सिंगार सोहै आनंदके कंद ज्यों वारौं कोटि रतिनाथ वानमें वजावै।
मगज्यों मरालसाथ बानी जवंद ज्यों चोकि रचकई सी मोतिनकी छतावली सोतें तई दीन अरविंद उतिमं
द ज्यों तिमिर वियोगल्लु लेलो चनचकोर फुले आई व्रजचंद चंद्रावली चली बंद ज्यों॥ ६४॥ अथ प्रछन्नका
मातिसारिका॥ कवित्त॥ उरझति उरग चंपति फल वर न निदेषति विविधि निसिवर दिसि वारिके गनति
न लगत मुसलधार सुनति न झिल्लीगन घोष निरघोष जलधारके जानति न भूषन गिरत पट फाटता
न कंटक अटकि उर रजो वारिके प्रेतनिको पुछे नारि कौन पैतें सीष्यो यहु योगको सोसार अतिसा ६
र अभिसारिकैं॥ ६५॥ प्रकास कामाभिसारिका॥ गोप बझे बैठे अथाइनु केसब कोटि सतत्रा अवगाही॥
खेलत बालक जो लगली निमें बाल विलोकि विलोकि विकाही आवत जात लुगाइ विजो दिसि घुंघट
में पहचानि तिवांही चंद सो आननका दिकछावली मुझिलहे कहुं तो द्विकिनो ही॥ ६६॥ केसवदास
सु तीन विधि कही सुकीया नारि परकीया वैसो तिकानि आवे अनुहारि॥ ६७॥ उत्तम मध्यम अधम
जु तिता निरविधि जानि प्रगटती नसे सावितीय केसवदास वषानि॥ ६८॥ अथ उत्तम नायका लक्ष
न॥ दोहा॥ मान करै अपमान तें तजै मान लै मान पिय देषैं सुष अति लहे ताहि उत्तमा जानि॥ ६९॥
कवित्त॥ होइ कहा अबके समुझे समुझे न तबै जब है समुझाए एक हि बेर कबिलोकत मोहि
अनेक भामो उविवेक बिकाए आवप लो न जनावनु जुन नमा वचिलो उन जानि है पाए वावेधनो॥

हुरकन्हाकन्हलेके सनास्वच्छआसउणो सधानायका॥छोण॥ मींउ करैलफदोषतें जोर्सेवर्जेत नि-
ग्राम के सवदास वपांतीये ताहि मध्यमावास॥७५॥कवित्त॥ रुलैर्ज सुषेनही चितयो इनेंकीयो। - कौम
लषि लालचकेती हाहाकेहारि परेउ निकेसवपाइ परेई रहे तो होंतो यहें तवही कोविचार ति-
होंतो गुमानक्यों याही तो एतो लांवी उठैं अकपातरी देइ जोनें कवनी विधि आषिनदेती परीदोहा॥ धि
रुवैंवारही वारजों रुठवेवेही काज ताहीसों अधमासवें कहिवरनतकविराज॥७२॥ कण॥क २
होकंपह जो का जालौं को जेरी वांरो वोलऊवो लकआई फारो सो घंघटो ओट असे सोई मोहिक
लै अथको सुषसाई। के सव ऐसी सषी नको मारो सिषे किकरै हितको सुहसाई वारही वारको
रूसनो वारो वहाऊं सोवुफि वियोगवसाई॥७४॥ दोहा॥ इहि विधिना यकनायका वरनौं सहित
विवेक जातकाल वयतावलें केसवजांनि अनेक॥७५॥ तजितजनी संवंधकी जानि मित्र हि
उराजि रापिलेई उपपत उपतें ताकौ तियतें स्ताउ॥ अधिकवर्णन अरु अंधेगवटि अंतऊ अनो-
कोनारि तजि विधवा अरु रजिता रमियऊंरसिकविचार॥७७॥ यह संजोगसिंगारकी केस-
ववरनोरीति विप्रलंभसिंगारकी रीतिकहौं धरि प्रीति॥७८॥ इतिरसिकप्रियायां अष्टनाय
कावर्णनं नामसप्तमप्रभाव॥७॥ अथ विप्रलंभसिंगारलछनं॥ दोहा॥ विछुरत प्रीय प्रीतमहि
हो तजुरसतिहिठोर विप्रलंभसिंगार कहि वरनतकविसिरमोर॥७९॥ विप्रलंभतेदकथना-
विप्रलंभसिंगारको चारिप्रकार प्रकास प्रथमपूर्व अनुराग पुनि करुनामांनप्रवास॥८०॥
अथ पूर्वानुराग॥ दोहा॥ देषत हिउपजिदंपतिहिं उपजिपरतअनुराग विनुदेषेंउपदे पीये सोपू
रवअनुराग॥८१॥ प्रीयाजको प्रकासपूर्वानुराग॥ कण॥ केसवकैसें हूं इ विनिमा विकौकौ कि प-
रैं अति ईवककाई तादिनतें मन मेरेंको आनिनई सो तई कहि क्यो दिनजाई हाहगी हांसी जोजे २
ल्लौ ते कल्ल कहि जानि हिं अंव हलत आई केसें मिलेरी मिलें विनु क्यों रहौ नैंननि देवदीये हौं-

रुमाई ॥८२॥ प्रियाजूकौ प्रछन्नपूर्वानुराग॥ फूलन दिषाउ सूल फूलति है हरि बिनु डारि कारि मा
लबाल ज्वाल सी लगति है बबर बनाउ तन बिजन ढुलाउ लागे केसव सुगंध बाउ बाई सी लगति
है। चंदन चढाउ जिन तापसी चढति तन कुंकम लगाऊ अंग आग सी लगति है बार बरजति बा
वरी ह्वै वारौ ऐसी आनि वारी न षवाऊ बीर बिष सी लगति है॥८३॥ कृष्णकौ प्रछन्न पूर्वानुराग॥ एका
समै वृषभानुसुता सजनी गन में जननी संग बैसी जो तिन्हें चितयो तिहि रीति सुनी तिहि ये का
हि लजायन तेसी। ता दिन तें जग की जुवतिनि की लाग तिके सब तातिअ नैसी वाहि फिर्यो चित चक्र
चढ्यो न कर्यो न कछू गति देषिये आमुष कैसी॥८४॥ कृष्णको प्रकास पूर्वानुराग॥ तांति तली वृ
षभानु लली जब तें अषीयां अषीयानि सुं जोरी सो हब ठाई कहूं रपाइ बुलाइ लई हसि कैव
सतोरी केसव का सत्यों ता दिन तें रुचि कैं न बिलोकनि केतनि द्वारी लोलति है सब ही के सिंग १
र अंगार निज्यों चित्त चंद चकोरी॥८५॥ अवलोकनि आलाप तैं मिलन बिकै अकुलाइ हौल द्रस्यादस्स
बिनु मिलें केसव क्यौं कहि जाय॥८६॥ अथ दशादशा॥ अभिलाष सुचिता गुन कथन स्मृति उद्
गप्रलाप उन्माद ब्याधि जड़ता तय मरन होत भनि आउ॥८७॥ अथ अभिलाष लक्षण॥ नैन बैन
मन मिलि रह्यौ चाहे मिल्यो सरीर कहि केसव अभिलाष यह बरनत है कवि धीर॥८८॥ राधिका
को प्रछन्न अभिलाष॥ सुधि बुधि घटी जु तिदे हमिटी दिन ही दिन वा हिये सी कछु केसव आपने पे या
ट को पीर ज राव तिपे मुष कान तिसा बिसर्यो सुष रूप सषानि सिनीद परी चित चाह तन्या उठतं सी ग
यो कहुं गांठि टिलै बृति बवा लि सुका हैतें मोल लिमाठ तिस्री॥८९॥ राधिका को प्रकास अभिलाष॥
जो कहौं देषें लगे दिषसाथ दिषा वन नेही दिन ही पेहौ याही मके सब देषि ये हौं देषि सषी अबके हौ 5
यो उनिको ऊपर देषि हौं देऊ ज्यौं आवनो दे जून देषिन देहो। देषि बेऊं बहरावति मोहि सुहौं बकता ए
कहु देषि हिले हौं॥९०॥ ललकौ प्रछन्न अभिलाष॥ पाइ परी बलि जाउ मनोहर आवन सौं नकरौ अ

कितहीं कियै उलिकत हो हि जो निपरी दसि वोलन लीतर लागिगई अव जो कित मोहि हु फिरवे को ऊकल
गी है काल्हि के सब के रूप विरूप लिलोही गोरस को सो उ वाको सो तो हि किवार लगाव कहि मेरी सौं कोई
॥१६॥ प्रच्छन्न को प्रकास प्रलाप॥ मोहन मराविका सो हा सघन सार को सो वासु सु परूप को सीरे षा अवदा
त है केसवदास वेनी लो त्रिवेनी जी वनाई गुही जामें रमनो रघ सु निसि अक्कात है ने हु उर के से नैन देषि।
को विरूफो रस सिविफु को लीतो है उफ के से उरझात है देवी सी वनाई विधि को न की है जाई व हलेरे घरत्र
र आनु कहे के सी बात है॥१७॥ अथ उन्माद लक्षनं॥ तरकि उवेवु नि उवि चले चित तर है मुझ देषि औ।
उन्माद नु गाव रही रोवे द से विद्रोषि॥१८॥ राधिका को प्रकास उन्माद॥ केसव सु बुधि सिद्धि हरि भ्रम
विनु विधा अगाध राधिका हा वाढी कूदी लट उत्कति कति तिलज चित वनि कि को किकरि वाढी तरा
कति तकि तो रति तनु तलफति अति अपार उपचार निमाढी सकल सकाति लै ले सास अचेत सुवे
त जु प्रेम प्रेम गहागाढी॥१९॥ राधिका को प्रच्छन्न उन्माद केसव चौंकति सी चितवे वतायां धरि कै तरके
त किवांही वुझि ये और कहे सुजु और रई और को उ रतई पल मांही वां को विलगा किधी वाइ लगी
म तु रूलि प सो क वजु कवु वांही फं घट कौ पट की हरि आनु कवु सुधि राये के नांही॥२० प्रच्छन्न को प्र
का सउन्माद॥ सजल चकित चितवत चितव लं दिसि चाहि रहे सुष चपल वलत धाइ सोव त सैमन
र के पतत पत तन के औदा सरोवत हल्सत उविगाइ र। वलिहि दिपाउ तो हि देष तहां स यो मोहि लये
सुक हन आइ तो सो अलि अकुलाइ जै सेंक बु आकुवाक वकत है आजु हरि तें जिनि नांउ सुजो
काल्हि को निकसि जाइ॥२१॥ प्रच्छन्न को प्रच्छन्न उन्माद॥ गूढ अगूढ प्रकास तत बात नि लोक अलोक की वा
त सरीसी रोवत है कव हूं हसि गावत नाच तला लकी वारि वरीसी॥२ का हको सोव संको चु नको
सव देषत आवति दे हमरी सी वात किवाइ कि कांम कि वांम कि है हरि को मति काल्हि हनी सी॥२२ अंग
वरन विवरन जहां अति उचे उस्वास नैनन नीर परिताप वक्र व्याधि सु केसवदास॥२३॥ राधिका की व्या
धि वेतु लज्यो उनवानतें वोलै न वै न विलोके न कुछि लगाहे वैन सुनें समुझे न हवात किरे तलपो कि

किधौं प्रीति जगी है केसव वेतो दीयो जरै हैर है तो द्रिसै तै उनही कौं लगी है वैतपै पौनन पानी नसी
सुतै का क्न वगे किरु का क्न ग्गी है॥२४॥ कृष्णकी माधि॥ कांउ निके तनै लाप निता पियै त्यों कनकै उ
पचार कुरैयै कांउ निके उठिजे उसासनि त्यों इनके आसुवानि क्रैयै केसव एह पता न ललीने। नि
दलौ जनि ऐपैं निदान नपैयै एक ही वेर कृष्ण निक हनयो मान्है री वा लिन्है देपै करैयै॥२५॥ अव जंता
ता॥ चलि आय सुषि द्रिजसों सुधु डुधु होइ समान तासों जंता कहतु है केसवदास सुजांन॥
२६॥ राधिका की जंता प्रछन्न॥ परे उपचार घरी सियरी सियरे तें घराइ परोत हु दीजे औसे में औ
र कायै तें कहु उपजे तौ सकेलि कहा हमलीजे देषत ही यह कांम कली औसे ज्हां नी यै जाति काह
अ वकीजे कौन पै जाऊं कहा करौं केसव कैसें जीये यह क्यों हम जीजे॥२७॥ राधिका को प्रकास
जंता॥ अपियां निमिली सषीया निमिली पतीया वतीया निमिली न जिमो नैं ध्यांन विनां न मिली
मंन ही मन ज्यौं मिले न ऊमनो मयसानो केसव के सजं वे मिमिलो तन नैं है वदे हसि जो कहु दीनो सुर
न प्रेम समाधि मिलै मि लं जेहै ओंहे मिलि हों तव कोंनो॥२८॥ कृष्णको प्रछन्न जंता॥ पलही प जल २
तल हो तुलु होउ सरा रवि वार सवै उपचार निघांने जो करीये तन मैं न नयं कन विन कहु सुयड
स्वन औनें केसव कां न्ह सों सम्ुझैं नही रुजाये कौन हि कोय हमांने योगजोयो के वियोग हु को न
कौ लेषु कहा इन रोग नि जांने॥२९॥ कृष्णकी प्रकास जंता॥ को क्र कै आ सन वा सन ही न
जंता सन मीत कौ मास नु कीजे कैसव इंद्रिय साधि सवैं मन साधि समाधि निके रस तीजे जौ
लौं तएं हरि सी हम सि हन लों लौं विलोकि अलोकन कीजे देवी करे तपु तौ लगि वचर हानु न।
जौ जिय दां नुता हीजे॥३०॥ वनैं नक्यों कि मिलु वज हु उढंव जकेन्न च दाम सुर न प्रेम प्रतापा
तें मर न होउ वान यास॥३१॥ मरनो कुल वडो सेपं वदुन्यो जाइ तमिज्ञ- आम .
कह्यो केसें प्रेत वरित्त॥३२॥ रतिउपजे रमनी निकं पहिले केसवदास

षि करि तसु प्रेम प्रकास ॥३३॥ अति आदर अति लोलतैं अति संगति तैं मित्र साधनि हू के होत है
केसव वेचल वित्त ॥३४॥ सुनत गदुसा दृसा में कही उपजी सरव राग जिहि विधि उपजै मान मैं मन
वरनौ सुउ सताग ॥३५॥ इति रसिकप्रियायां अष्टम प्रस्ताव ॥८॥ अथ मान ॥ सरन प्रेम प्रतीमतै
उपजि परउ अनुराग ताकौ विकि होत सो केसव कहियउ मान ॥३६ अथ मान तेद ॥ अगटही
पिय प्रति मानिनी गुरु लघु मध्यम मान अगट हि पिय पियान प्रति केसवदास सुजान ॥ अथ गु
रुमान ॥ आन नारि कौ चिन्ह लषि अरु सुनि श्रवनि निनाउ उपजत है गुरु मान तह केसव
दास सुताउ ॥३८॥ राधिका कौ चिन्ह दरसन गुरु मान प्रछन्न ॥ आजु मिले वृषभान कुमारि हि
नंदकुमार वियोग विते के रूप कौ रासि रसो रसु केसवदास विलास निरासु रितेके वाग केत १
लरदेषि हियेन षेनेन नवाइ रही सुइ तेके फूल ही मैं भ्रम फूलि किधौं सकुचे सरसी रुह वृंद
विते के ॥३९॥ राधिका कौ नाम स्रवन गुरु मान प्रकास ॥ बुझत ही वह गोपी यु पाउ हि आज
कहूं रसिकेसु न गावहि ऐसे मैं काहू कौ नाउ सषी कहि केसे धौं आयौ कुजनावहि पौनि पवावै
तही सु विरी सोर ही सुह की मुकुता षवकि ढावहि आउर कैउनि आषिन तें अंसुवा निकसे अष
रानि की सा षहि ॥४०॥ रूस्न कौ गुरु मान प्रकास ॥ लोक लीक उलंघि कबु ज्यौ याकहे जब बैन
उपजि परउ गुरु मान तब प्रीतम के उर ऐन ॥४१॥ आपन सौं आमने ही आगे कहियत कि
धौं षोरि के षजानि षोरि नमें बोलियउ है डोवायो तोरे कियति जोर कहों जाइ केसो और
कहा नैन लेकु राति बोलियत है । वेई घनस्याम जिन्हु बिनु घनी घरनीनि घरी कमें घने घन
सार बोलियउ है बोलति हो कैसें ऐसें बोलो जैसें बोलियउ मोल ललउए सो ऐसें बोल बो २
लियउ है ॥४२॥ रूस्न कौ प्रछन्न गुरु मान ॥ ऐसी ऐसी रति रावे सौं हनि के सावे रूपंम

देपौआनिवीथिकेधौकौनकौएवौगहै सुनऊसुनमाईस्वरीहीपागमाफकागहैरूपकाऊआ
गिकौअंगीवहै जौनतहीयेहीमगपायौहैजनमुजगलोकमेंअलोकनिकीवीथी तुमहीवहै क १
हैकौं कहावऊकटुककालकहुसीएकद्योहरिहरेहसिह्मकौं तोमीवहै॥४४॥राधिकाको
लछमांनप्रकास॥ देपतकाह्ननारिसौं देपहअपनैनैन लहऊपजे लछमांनकं सुनैसंपीपैं वै।
नै॥४४॥ कुवैह्मांनरुकिजैरीहैवसोंइतौकहावनेकमीविपाविदेतईवकौनकेअकेली। कालि
केतौमोसौं यालिनेदलाऊ जानिकरैकालिहानआईम्वालिजौपैऊजलीतली आऊलऊवीव।
परीयाविपातिवेकोमाई आनरंगआनजीयमोकनेरकीकली तेरेहीकहैकिकोऊसापिदऊ।
कुजोयेरादेपायेरीआपिसाधि कुंजिवेकीकावली॥४५॥ राधिकाको अथनालछमांन॥ काह्नतिहा
रावाप्रांनपीयारीके सयानअथान सवैनहमारीमाऊं किधौंअपमानअवयहमानसपेअनुमानन
जाही सुपऊसुनके सवजानिपरे समुझेरिसहासीनहोंअऊंहोंनी यो।विनहीसियरीपिनतातीहो।
जैौवहलैवदलानिकोवांही॥४६॥ सखकोलछमानप्रछन्न।पियकोकह्योकरेनऊह प्रियाको।
नहाजाऊ उपजऊहैलछमांनतह वरनिकहैकविराज॥४७॥ आगेकहाकरिहौअवहीताहून।
श्तौऊपदीनौकह्यौ।विऊकीनै कैसवकौंनजंगाजकोलाकतेसुलिआईतौसएहितहीनौ नैटनही।
तरिअंकललातरिजासनयोलेजुवोलनवीने देपेनहीकवलांतरिऔपिन आखुहैकेमें यलेधिजु
जाने॥४८॥सखकोप्रकासलछमांन॥ वोलिजौआपसोंवालतनाहिनैमातेकहाकहुवकनिधरीके
सयकैसंग देपैसनैविनुजानिकहाकोऊजाकीपिहारी पारिसिरछनजानतपाइनईयकस,पकीनाति।
निहारीकावीहीदापहिचाहतवायोसुअततऊजमअंजविहारी॥४९॥ राधिकाकोमध्यममानप्रकास
[illegible] नकैन्या।
स. [illegible]

जाहां न मानै मांननी हारै पी के मनाइ उपजन उनमान तह मान मध्यम आह ॥५२॥ मांन हि मांन ते मांन निके सा
य मांन सतैं कछु मांनट रैगो मांनि लए सुजन मांनौ नता पठि मानु न पंगुरिति मांन मरेगो कहै हांसि हंसी समा नतवे जब सो निनमें
अपमांन करैगो आपमना यह मांन तजौ बहोस्यो रमना बनताहिपरे ॥५३॥ राधा राधा रवनके बरनें मांन सुमांन ति न
हि के सव आपनी जांघ उघारि के आवदी जैजनि कौ मरई इकतो सवतें व्हर एह रिहे आवदो उके हार
रिलै दरइ ॥५१॥ राधिका को मध्य मांन ॥ कहो कौ कहां सिगरी निसि ना सी सुतो उमहो कछु वा
हतही हियवें वक री तनमें तनु रमलि पी कि हिके सव कंटक को ननगाहत ही कछु राती सी आंषि कहा
नई तातीति हारे वियोग कि दाहत ही हिय वंचकरीति रचाज व स्वक जोर लई उरना हतही ॥५४॥ कृष्ण
को प्रकास मध्य मांन ॥ वारख वसुजीमें सार ससार समुपी आर सी लेदे पिमुख आर समें वो रिहे सो ताके
निहोर लैं निहार तिन ने करत उहारी है निहारि सव काज करत मोरि हे सुषकौं निहोरो सुनमांन्यो सुन
जो करी तें के सो राइ को सौं अवजो अमनमो रिहे नाह केनि होर कि न मान हिनि होर तिहोंने हके मि
हार फिरि मो हि जन निहोरि दे ॥५५॥ इति श्रीमन्महाराजकुमार श्री इन्द्रजीत विरचितायां विरतनस्रं
गारे विरह वर्णन मानन वमप्रस्ताव ॥७॥ अथ मान मोचन ॥ मांन तजन हि प्रीतम प्रीया कहि केसव ता
करि आति वरनि सुनाय सुनहि सब जिनमें सुनिषटरीति ॥५६॥ सामदान न तनिति इक्रान ब्रनतिउपे
क्षा मांनि अरु प्रसंग विध्वंस सुनि इंन हो इरस हानि ॥५७॥ साम लछन ॥ ज्यौं क्यौं झूं मनमो हिये बुद्धि
जाय जिहि मांन सोई सांम उपाउ कवि केसवदास वषांनि ॥५८॥ राधिका को है सांम उपाउ ॥ केसवदास
सदा कौ ये आरस है सुषकी रूपता हितदी जे ताकसुं रोसन मानी ये मांनि निसु जिन आपनो मानि सुली
जे हो उमहो उमहौं सुनि सुंदर मूरति हो जियए कहा जोज मांनु है ते इकौ मुंह अनहा अपने सपने सौं
सपने सन न कीजे ॥५९॥ अथ कृष्णको कर सामउपाव ॥ कहि आवति हैजो कहा वति हौं उमनां हीतो
ताकि सके रमसो ही लिहि पैं कहा वलिये कव कौं नहि कौ टोलगे पगपार तैं रंजसो ही आलि कम्हे के की
जे है जई समहोत उम्हे अंगुरी पससौं ही कोजे कछु यह जानि के केसव हौं उमहो उमतो हरि हो ही ॥६०॥
अथ दान लछन ॥ के सवकौं नहीं व्याज कछु दे सुष भुगावे मानु बचन रचनमों हे मनहि तासौं कहि जि
दोउ ॥६१॥ राधिका को दान उपाय ॥ कोमल अमल दुजडी नेह कमल तव चारु न वसन प्रफुल्ल कोसु

...पनीयस्य स्कर्वाक्तिनप्रा - प्र ... [illegible]
सुगकनयानकमी ... [illegible]
न र्हिकमनवेनवनकमनिक ... [illegible]
विवाम्या पानतर्जितनामक्तुं ... [illegible]
न्दीप्राप्रानि ... [illegible]
कहीवानबेनका ... [illegible]
मनापङगमाइक ... [illegible]
इक्तादिव्यवस्थानादृ ... [illegible]
नानदववनाडाङपा मायकल ... [illegible]
नीमाडकलहानन नवनीति ... [illegible]
मामनमानका मन्वमा ... [illegible]
इनवननव ... [illegible]
डाइकम ... [illegible]
गा अवधनीति ... [illegible]
प्रनीन यानिद्व ... [illegible]
दा माद ... [illegible]
आरम्नदि ... [illegible]
काकाधनीन ... [illegible]

परयो पाइ समुझि सषी सब देति हैं जौं सुवती जिहि कारन। स्वेदु भ्रम फिकै कंप उवाइ लगाउ कहा ला-
गि है बिश्रका सुनिवारन कौने लए नख हैं दिन ए दिन रूंदा लगी कबु उ उर पार न॥७१॥ राधिका-
को प्रगति अपराधते॥ केसवदास उदास भई दर माई दे साउ षयो सुत स्योरी। रातित एअ धरा तक
जौं बिनु बजुबंध वधूनि क स्योरी धाइ लही समुझाइ कहुं न सषी निज के सिष देत स स्योरी का हुते मान्यो
नमानि नितो लगि पाइ नजो लगि नाजु पस्योरी॥७२॥ पिय हि मनावै पाय परि प्रिया परम हित मानि नेअप-
राधन को मत बरनत हो रसहानि॥७३॥ अथ असमाकोप्रनति॥ नार हो तो बिनु मीन सरे चकु मीनकेनीर
हाके जाय जीजे जाविकु औरसु हायन के सब ताहि सुहायतो सबको जे जो लगितो पग लागि रहै सु ला-
गी पग अंक लगाइ न लीजे होसि पउ अपने सपने हुतो आवत छबि के वाकु न दीजे॥७३॥ अथ उपेक्षा॥
मान मुवावत बातत जि कहियो और प्रसंग बुद्धि लाइ जिहि मान सो करे न उपेक्षा अंग॥७४॥ राधि-
का को उपेक्षा॥ चपला न चमकति चमकत्यार न कौ बोलत न मोर बंदी सयन समाज के जहत न हगा
जंत नवाज तद मां मेड़ा हदेत न दिषाई दिन मनि तीन लाज के चलि खंद सुधि स्याम बेसषा वेमि सुषक-
ज केसोदास औरी सुषका ज के चढि रपवन तुरंग नि गगन घन बाहत फिरत चंद जो धात मराज के॥७५
रस को उपेक्षा॥ केसोदास दिन राति के उकी का तावे तांति जियमें बसति जाति नैनन ति मेन ललि नी माध-
वा को पिये मधु सूक उन अंधक हुं सेवती सेवन कहि सई गंध फलिनी और हो कहत बात का है कों
लजात का हूं ऐसो तो पिस्याइ सुनु हो रमन मलिनी देषो न ही प्रान पति ना लजअली की गति मा-
लता सों मिल्यो चाहै लोने साथ अलिनी॥७६॥ अथ प्रसंग विध्वंसन॥ उपजि परे लय चित्त लषु लुलि जा-
य जिहि मान सो प्रसंग विध्वंस कवि केसवदास वषानु॥७७॥ राधिका को प्रसंग विध्वंसन॥ कोकिल के सा-
वका मक किंकर बोलत को लत देत दुहाई का मनि साइक कामनि को उरि साइ गीता करै को हैरि साई।
गाजि तन्यो हिन मेघघटा सुनि बाजति फिलि फिसषी सुमुचाई सोर नये फिरि का वो अबोलो हो बोलिये॥

धिकाकोप्रकासकरुनाविरह॥ दरितरहारहेर तहियेहरत हारीहो हरिनिनेनीदरिनकफलहों व
नमालीव्रजपरवसतवनमालीरहरिकृष्णकेसवकैसैसे हो अपघनघनेस्यामघनहोसेहोतघनस्या
मघनहीसेहोतघनस्यामनिधोंसघनस्यामबिनुक्योरहो हृदयकमलनैन देषिकेकमलनैननकोयेत्र
लिकअलकमें मनुमिलेमिलेनैननकेसोदासमविलासबविआसरुलिरहे कपोलफलकमें नैना
मिलेमिलोगाउसकलसयानुसजिलजिअतिमानरुप्योतनककोफलकमें तेसेंबलबलसाधिरा
धिकेमिलनकजुबाहतकियोपयानुप्रानरूपलकमें॥ ६२॥ कृष्णकोप्रकासकरुनाविरह॥ देखरु
नाईतरंगिनिहरअधरबधरबरागरंगेपय केसवदासजलांजमनोरथसंभ्रमविभ्रमेंतरत तर्कत
रंगतरंगितरंगतिमिंगिलस्कुलविसालनकेलय कालकुबुकरुनामयदेसषितेहिकायोंकरुनाव
रुणालय॥ ६३॥ अथप्रवासलक्षन॥ केसवकौनहुकाजतेंपीयपरदेसहिजाय तासोंकहतप्रवा
ससबकविकेसवसुषदाइ॥ राधिकाकोप्रवासविरह यथा॥ हुंकरिहे कहिधौंकवगोंनहिनंद
कुमारतोगोनकोपाईमोहिमहाकरुलउरकौनरहेलटिलेजिनिकेधोंजायाई॥ ६४ अथप्रकासविर
हराधिको॥ कोनकेनप्रातेकोनप्रातिमहिविछुरतयाहाकेअनोपीपतिब्रजगाईयउहे जतबुकरेहो
तलेंआवेहाथकेसोदासओरकहापबिनिकेपाविधाइयउहे उविवलोजोनमानेकाहूकोबलाइ
लोनेमानसेंजपहिबोने ताकेंआइयउहे इनकेतोयहेआजुमिलोकिमरिजाउआगिलागेमेरीप्रा
लीकोहामेजपाइयेउहे॥ ६५॥ अथविरहतयसमुराधिकाको॥ कोकिलकेकिकूलाहलहालि
उविउरमेंमतिकीगतिछूली केसवसातसुगंधसमीरगयोउरिधीरजयोंतनजूठी जामिनिकेबिछि २
रनकोजामिनियाउषदेषिसबेसुधिछूली क्योंजीयोकेकेसीकरोविस्नुसावजस्योंविसनीविस्वास
तिफूली॥ ६७॥ कृष्णकोप्रवासतयसमु॥ जिनबोलेसुबोलअमोलसबैअंगकेलिकलोलनिमोलो २
लीये जिनकोचितलालचीलोचनरूपअनुपपीयूषसोपीजेजाये जिनकेपदकेसवपानिबियेंसु

औसीनउठायेकेसवतोहिबिबीस्योजवाचविवीसुवियाहो तेरेहिजीयमायेजिनकोजिउरेजियतविनतरंकजोयोई॥ ६५॥ उ. २॥

...तसवडपड़रिकौ। तिनकौसगद्ददहीकि दूरफटिकौटिकद्दकत्तयौनहियै॥९८॥ कृष्णकौश्या
सविरहप्रकास॥ केसवक्योंनंचलै चलिकौरिसंदेसककैहैअनिपठकरूपर॥ आगेधरेंअपनोसोकू।
साहसुपाठैहांपेलिपरेपगत्अर होतजहांनहींगद्दलवहै सेचलौनकउज्यौपरेकाम्रदिलपर,तौ।
रूकौलाजकिस्योनपरैपैमिलानकरेइसकोसकरूपर॥९९॥ कमलकौप्रफुल्लप्रवासविरह॥ प्रन।
.कौनारिजौंतास्यअनेकन्चढाइवलीचितवैवलंघातौ कोटिनिसीफकरेकरकंजनिकेसवसेवउसा।
वैतउतातौ नेटितिहै वरहीअवहीनोवसाइगईलीसुयसुपसातौ कैसीकरौं कहिकेसवचावउ
स्यौनिसिआईकायैमुजरातौ॥१००॥ राधिकाकानिद्रा॥ आयेंतैंव्योवगीआपिनआगहिंकलेगामं
ह्रंमोलगईहै सोउंनसोवनदेउनजौंनवसोवनमैंइनसाधदईहै मेरियत्छलकहाकहो केसवसो
कहौतेसहेलीलईहै स्यारघहीहिउहै सवकैपरदेसगएहरिनांदौगईहै॥१०१॥ कृष्णकानिद्र १
केसवकैसैजंकौरिउपाइनआंतिसुतौउरलागतिहै चकचौंधतिसीचितवैचितमेंचितसोवतिसौं
महिजागतिहै परदेसत्रियापलमोहिपसातिनजानैकोयाकीकहागतिहै तजिनैननियीदुनवो
दवधकलगआधीकरंतितैंलगतिहै॥१०२॥ राधिकाकोसपीकापत्रीकृष्णसौ॥ केसवकंध्यारएप
तांवकौकंध्यारि वनदेवताजौंवनउपवनिविहरतिहै कमलाज्यौंघिरनरहत कमलएकवारकमल १
उजामैं कमलनितैंजरतिहै कालानजौंकेउकौकेफलरुचैसीताजौंगानिसवरघुपचंडदेपंभ्री
करतिहै पदुनउघारतहीं मदनजोधनहांशोपदाजौंनाउकुजंतेराईरहतिहै १०३ राधिकाकौस
माकापत्रीकृष्णसौं तौरनिजौंजवतिरहति वेनवाधिकानिहंसनाज्यौ मडलमना ज्यिावहतिहे।
पाविरहदतिरहति चितचोतैंकीजौंवंडवितैंवकर्ईजौंउपरेरहतिहै हरानीज्यौं देर तिनकेसरि
केकोननहिके कासुनिवालाजौं विजानशंकहतिहै केसवअप्ररको कविरहति हरेंसेसीर्छ
तिनराधिकाकौमूरतिगहतिहै॥४॥ कृष्णकैसपकीपत्रीराधिकाकौ द्वारपद्दरनिव

के सर ज्यौं के सरि को देषै बनु करि ज्यौ कपत है॥ या सरस की संपति उठि क्यौं न चितवत चकवा ज्यौं चंड
चितै चोगुनौ चपत है॥ केका सुनि व्याल ज्यौं विलात जात घनश्याम घन निघनघोर जी ज्वा से ज्यौं तपा
त है॥ तम रज्यौं सवत वन जोगी सौ जगत रैनि साकत ज्यौं ऊरपा सुन नासु तेरो हास जप तु है॥४॥ केसोदास
प्रवास को कह्यौ यथामति साज राधा हरि बाधा हरन वरनो सषी समाजु॥५॥ इति श्री रसिकप्रि
याया संतोगश्रृंगारे प्रवास वर्णनं नाम एकादशः प्रभाव॥११॥ इति वियोग श्रृंगार समाप्त॥ अथ स
षीजन वर्णनं॥ धाइ जनी नाइन नटी प्रगट परोसिनि नारि मालनि वरइनि सिलपिनी चुरहेरि सुनीसु
नारि॥६॥ रामजनी सन्यासिनी पटुरवा की बाल केसव नायक नायका सषी करहिं सब काल॥७॥
धाइ को वचन राधिका सों॥ मोहन लायक हानि सिद्धो सरदे सतसंग हाली मिसि बेठी केसव क्यों हो
सुने मदतारी तोराषि है री घर हीमह पेठी हांसि पिउ सुधु दुसि षितो हितै सों श्वचतार कैं ताको अमवी
कोनलकै तो सुरूपन कोपैं उहाकत जाति अकाल दिवैठी॥ धाइ को वचन सषी सों॥ धोरी ओसु छ
सवे सदा रघनयन के संगोरी ज्यौं गोरी तो रात व जु को सासारीसी साचे का सीढारी अति सुग्य
मि सुहार कटि केसोदास अंग अंग ताइ कैं उतारी सी सोधे की सी सोधी देह सुधा सौं सुधारी पाउ धा
री देवलोक तें कि सिध तें उधारी सी आ जु या सौं बोलि चालि हसि मिलि लेउ लाल काल्हि ऐसी या
लि सों उ कोसु को कुमारी सी॥९॥ जनी को वचन राधिका सों सोता को सघैन दनु मेरो घनश्याम मु
नित नई रुचि तन देरत हि राइये केसोदास सकल सुवास को निवासु करि विविधि विलास हास
रास विसुराइये ऊपर सुकेत कमुक पर सुनी वी दैपीद पर को पेता धानी जाको नियराइये चोरी
चोरा नैन नि चिराये सषु को न जो लो पिय मन माहि मनु मिलि न चराइये॥४००॥१०॥ जनी को वचन
सषी सों॥ ऐसी बात ऐसें दीधो कैसें हो कही पर तिजाको मति गति लाजपाट सों लपेटी है मेरे हीन
आवै मेरी बार एती बेर षेती जांनति हौं धाइ हूं के संग जो हिलेटी है ऐसी तो है बीरनि को चेरी वाको के

सोरठ जैसी उमदा हाकरि पाइ परि लेंटी है जो नतिहों नंदजू के ढोटा है जजो नैजा जउ नहीतो बेली र
म ताजु जू को वेरा है ॥२२॥ नाइन कौ वचन राधिका सूं॥ अब हों तो गए पुनि पौर जू जौन ए वो लन जा
हिरा पाये हो जागी करि देत व के सौं परायें जो टोट हिके देक जुनि सि यो सक जागे जो नर ह्यौ परे को
सब के सैं जूं देषत हां सु षस्याम सताग तो देति हौं जानि क्यों रापलि का है न आरसी येक रिझो पित आ
गे ॥२३॥ नाइन कौ वचन कृष्ण सौं॥ व को जियजा न व मो ठर आलि व का लज गायें व ले विड लौ ने व की र
अंषि व का व वि सें चित वैव की विर व को सुषदा नै व हे हा विवारु व को रुचि के संक्यों मिलौ तो मि
लो हमहां नैं व का निलं सो तो व हे डपबोले इलें व डे मा उ व को मन कीनें ॥२४॥ अथ न टनी को वचन
राधिका सों॥ ज्यों हो दिषावन तो ह्वि गई रातो मेरी यह्यो व यहां फिरि माइ आजु कहा दिम सा ध लगी है
दिपाउ गी नाइ तो वेई कन्हाई देषै तं सारी जो तिन डु आन देषे जैरै सुयहैं अधिकाई राति को वेग नि
थो सको ए अहो तेरा ष वात निवाज हि आई ॥२५॥ नटा को वचन कृष्ण सों॥ जहीं र हरे त हो औ हा
थे सो जगमगौ के से कंजो के सब डराऊ लि मे रंग की मचन के पंष आली अलि ते कपा छ आली अलि
न सौं लागी फिरे जिनें साथ संग की निपट अमिल व हउ में मिलि वे को जक के सें कैं मिलो जू गति
मो वैन चि हैं ग की र कुतो उ स ह उयदे तिजं तिडु तिन ले वा सवि से विसु वा सल ई वा के अंग को
॥२६॥ अब परो सिन को वचन राधिका सों॥ माइ पर पलिका पर सो सु लगी रति तो लन मैं लि रतो हैं
सों हे की यो सुज सो हो कि यो अब लो उमपै गति ऐसी न ली है। के सब के सें मां देष न कं जिन्हें तो रई
तोरी जैं आनि दसी हैं पान मचा वति हा तिन सु उ मराति कहा सतरा ति सती हो ॥२७॥ परो सिन को व
न कृष्ण सों हा सामें या त कन्हा सौं कहा हँसि वे हां कही सु हाषे करि लेषो आपि मिला न मिली सपी यां
मिल वो इस के सब क्यों अवरेषो विचारि मेरे सुउ साधें कि चाउ क स्याति सो मं हो अवे सु विशेषो।
आजु हा क्यों वह आवति है जिहि आगि लै गैं न आंगन देषो ॥२८॥ मालनि को वचन राधिका सों-

ज रि है क्यों रूपन वसन द्युति जोवन की देह ही की जोति होति द्यौस ऐसौ राति है नाह को सुवास सु लागे तैं

फो है केसी के सव सोना वही की वास सौ रत्ती फारे पाति है दे पिते री मूरति की सूरति विसूरति हौं ता

लन के हग देपि कौ ल लचाति है चलि है क्यों चंद मुषि कुचनि के भार नये कचनि के भार तौ लचकि का

ति जाति है ॥१८॥ मालति को वचन सषि सौं ॥ घेरी जनि मोहि घर जा न देहुं घनस्याम घेरी कों मेलागी उ

र देषि वी ज्यौं दामिनी होइ कौ ऊ ऐसी वैसी आवे इत उत के सब व ह रूप ता न ह्र की वे टी गज गामिनी आ

दित को आयो अंत आवो वनि वलि जाउं आवती है वेउ वनी आई अरु जामिनी कामके कहर नित म क्रो

धु गह्यौ के सो राइ तौ र निके तार तय तो नु गह्यो उ हितां मिनी ॥१९॥ वारा री स्त्री को वचन राधिका सों

में तु ऐसो मन मृदुल मनालिका के सूत के से सुरक्ति मन निहरति है दासी को के सवीज दंतपाउ से आ

सरु नउ व के सो दास देषि हग आनंद रति है एरी मेरी तेरी मोहि लागति नत ठाई तातें तू कहति हों तो

हि और तू कतिकर ति है मापन्नु सी जात मुषकंज से कोंवरे कहि का वसी कवे ठी वात के सें निकर

ति है ॥४२०॥ वारा री स्त्री को वचन सषि सों ॥ नेननि नि वा वो नैक अति ही अनीति करें जां न तन त्रम

जैसें ब्रज जानियत है चंचल चरित्र चित्र चेट कच टकि लावौ चोरि के चितनि अति सार सों पियति है

एक निके उर उर फिर राजनि मे उरफे तके सो दासके सेत जियत है ऐसौ कसा होति है जु वालनि

के चोरि २ मन स म धु वत्त के चाक हाव वेवी य त है ॥२१॥ सिलिनी को वचन राधिका सों ॥ अव हो

छु निबौ लिरी बोलि लगी जक पौ रि सों लौं उ विजो न नदीने मेरे ही जान नहु लटी भ्रम हाव सके सें चे एक

रि लीनें जो पें इतो रूप पावति हो तल फे हगमीन मनो फलफी ने तो क ति बांनति हो विनु एकर सो कि

न चित्र सो हाव ही लीनें ॥२२॥ शिलिनी को वचन सषि सों ॥ पाहु नरी जि मष्ट दुरदे मदि ठौर कवौ रतिजो

नि न जाउं लाज न आवति मारे सता जन लागे अलीक के ताज नेता सु कोरि विचारि विचार हूं के सव २१

दे षजु तू कहि है सब कोस नेह ही के फिरि लागहुं संग न नैन नि को सपु उ र नियाम ॥२३॥ अथ उर है

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धा वालि ज्यो बिद्दा समुप लाज्जसो॥२४॥ अरदार कौ वचन ज्ञल सो॥ [illegible] हा
नाहिं कहा कव होइ पदी जै। जा बिन और सुहाइन के सब ना हि सुहाइ सुता सब को ज तमा वक अ
रवी जमसे बहुतो बिरचाइ कहो कहा लीजै और रसजाइ ता जै जैमन भावन ना नो हम असिराइ नपीज
॥२५॥ सुनारि कौ वचन राधिका सौ॥ [illegible] लिक सो पट वा लिकर्कर।
पानिप सौं अति पैने रसाल विसाल बने मन लावत मेर केसव वा कने वा गुन वाप चिन कत एरहि
न्या इनि वोरे सोऊ सको बन आरति रोचन धार सुमो बत ज्यौं बन ने तेर॥२६॥ सुनारि कौ वचन [illegible] सो
हांसी में हसै तें हरि हरे कैं ऊकति मनु हरि हसति हेरि हिये अनुरागी है प्रेम की पहेली गहजान।
ति ज्यौं ना बति हौ आजु अध रात कलो मेरे माव जगी है अब ज्यौं ज्यो धरा धीर तैसे दिन इक और धरो गिर
धर उमतैं को बक ता गी है ता बता ति हारी यह कालि हात के सो राइ फा मकी कथा कहु का सुदे नला
गी है॥२७॥ रामजनी को वचन राधिका सो॥ कोमल कमल वेतो अमल पति लच लम लिन नलिन
मव्वाल के से पात है सबे साध सुह वेतो करि लकर मए तौ के सब पर म वो रम स्म कि रात है पाइकं
परिकरि तब पाई है नके सं लं औरो रा अथि लात एता अति अखिला न है बर ज्यौं ति क्यों नुहा कव को क
हत मेरे मेरे मो हन के मनैं तेरे नैन छेछे जात है॥२८॥ रामजनी को बचन हसत सौं॥ फों न मनु ती पक हा।
स्यो के सब का मनि को टिक सौं हि गाटे रचन साध सधे सुप को बिनु राध कौ आधो ऊनो बन गांठ
कैं पपरा सीतल ना ऊकरे ऊज ज्यो रत पी घन सार के साटे जान चे हाथ रहे ब्रजनाथ पंथ्या महुमा
तिन चोस के बाटे॥२९॥ सन्यासिनी कौ वचन राधिका सौं॥ नहुटि है हुमा अजब करि है धाक

तबके सो दास अनयास पपा सरूप तागि दे मेवुत लिजाइगो त्रुकाइगो न विज्ञ्वेति कबु न सुहाइगो।
रेति सिदिनु लागि है तातितें तपति हनी सोरितें सोरितें सद सयुनी उपजि परेगी और औसी एक आगि है औ।
रसो औं मा हिज निअं चवुउ गाउ वो लिफो लति हौं का रूकी मुफी विउ फि लागि है॥४२७॥ सन्यासिनी को वच
न रूलसें॥ सीतलजं हीतलि तिहारे नव सखि वह उ मनतजति तिन्तु ताको उरतापगोज आपनो जोहीरा।
सोपरायेहाथ व्रजनाथ दैकै तौ अकाथ सावमें तअै सो मनलेज एतिपर कैसोराइ जम्हे न प्रवाहि वाहि वहे।
ज रूकलागी लागी रूप अरूस्नु मोगजंमी मिस्तु हबांध्यो विन बलनि बवीले लाल अै सीतो गवारिनि सोउ महा
निवाहै नेजू॥४२८॥ अथ परसनि को वचन राधिका सों॥ याही सुमेरी अ साइ निमें पहिले मिलइ वतियां छ
[illegible]ली वातें मिले अपीयां मिलई सपीयानि कौ आंषिनि पारि कै अैलौ आंषि लगे मन लागि रहे मन भेजु जमि
लेव गहे हमगे ली मिले मनु माई कहा करि हौं मजदी के मिले तो कियो मनु मेलो॥४२९॥ पटइन को वचना
रदन सों॥ वामगननी ज्यों और निकनु जगावत हो मुष अैसे न रूजे सो नई सी सुनपीत तरि दाइ तो कै सव।
केसैरू हाथ नवू जे आउगिरायु बुजो सिपवे तक को कनको किल ज्यों कलरूजे सुदर स्याम विराम
करो कबु आंबको साधन आंवलो रूजै॥४३०॥ वयन अयन सुषमयन कर कहे सषिनि के नमे केसव को
हौं कबु कअव तिन के को विदक मे॥४३४॥ इति श्री रसिकप्रियायां सषीजनवर्णनं नाम द्वादसप्रभाव।
॥१२॥ अथ सषीजनकर्मकथनं॥ सवैया॥ विनय मनायवो मिलवहि करहि सिंगार क्रकिअ रूदे रु
राहनो यह तिनको व्योहार॥४३५॥ राधिका को सिष्या॥ नाज लगे सुष सों तिद है डषनां है लोग झपदे
जइहै गो नाहि अब सुषदे ति है कै सव नाज सदा सुषदेत रहेगो नांही तेनां हारी नांही तलाई तजो
सबु नाह दही तप्पपें कहै गो नाह सों नेज निवाहिं बलाइ ल्यों नांही सों नेज कहा निबहेगो॥४३६॥ का
ल को सिष्या॥ कुंकुम उवटि कमक माके कवार जवु सो धोंसि रलाय याही लाएक हारा समें वंद २६
नवदाइ रूलि रूवपहराइ तलि वेदा का जि आंषि मांजि कीनाहै मका समें केसव कस्र रवुरि का

दृ कोपवावोपानजोपेमनमगनहे औ सेईविलासमे ।तौ वांहिनमंनीवादरिहा हाकरि पाइपरि सवईसुवा
से जाकेमुपवासमें॥ ३०॥ राधिकाकोविनञ्ञा॥ औसेंहीक्योंचुप केंरहिहौ मधिहौसहिहौ सतराइहमोतें
क्यों सरि है मिलि वे बिनु तोहि तऊ मिलियमिलि हुए दिनमोलों केसवकोरिकराइ पवारुमिलको कहिलि २
लिहे सुपुतौ ऊँ दुपिधौ औगनिआरसौ लेमिठि हैं पयसों मनहीमनकोलों॥ ४७॥ अथकस्लको विनञ्ञा॥ सु
मकेसेफूलनैनदास्यों सेदसनऔन लालकिस फरस्यौ सुअधा गों सुधास्यों है वेनी पिकवेनीको॥ ओवेनी
सीवनाईवीरचारुसोंवारीकरिहाकरिकोंहास्योहे कौनकुवअमलकमलपतरके सेफूलके सोंदासयो
तं विधियुगधवि वास्यो है देपोनयपोलसपिमेरोकोसरोरुसञ्ञोनेमो भवारिमञ्ञेतुसो मवास्योरु २
राधिकाकोमनाइवो॥ राकिरिफाइफेंसोयनिफोपिरही मुपदेपिदिपाइ सुतांही चाननओयञावालत
ई अवकेसवऔसो होमेनसुहाई मेंवेलनेवसरसहहे तोसारी झवहरावतिमाहिटयाही पहीसय
नसदायलिहौं हरिसौं हसि हांकरीमोविम्रनोही॥४४॥ कस्लको मनाइवो॥ जो जानों ओगुननि
गनत्युतगन जोहौं गनोगुनतोर औगनकेगुनमें केसोदासऔसीप्रीतिछपावतिवलनिमें तेसैं वविवहि
२ससिविपेथनमें तारोहेतिवरनिसिसोहैं कोतयाभगीनसुक्योवसेथरुलोकापाउवस्यावनमें चेयतेउ
वावेउविवलेनैंमवलिरहे सोईभास क्यों न कोहे जो हेतेरेमनमें॥ ४२॥ कस्लको मिलिवो॥ सिपेहारीम
पानरपाइहारीकोहूविनोदोमनोदिपाइहारो हिसि अधरातको कौंकिरहारारतिमारिहास्योमाक
नहारीफककोरत त्रिविधि विधि वावकी दईनिनदईया हीकाहै औसीमति जारतघुरेनऔनिदिञ्ञे
सागातकी केसे ल्लंनमानेंमनाइहारीकेमोराइ वोलि हारीको किलावो लाइस्यामभानकी॥ ४८॥ रा
धिकाको सिंगारु॥ दानोंमेपाइ फवाइमहावरु आलोमेंअञ्ञनआपिसुहाइ तुपनलपिलकानेमेंके
संवमालमनोहर मेंपहराई दुप्पनलेञवहापति देषि सपी सवअंगसिंगारसिधाई

अंकुलेपानषवावेको काकं कुमारकीनारि ४४॥ कलको सिंगारु॥ पागबनी औरु वागो बन्यो बटुवापर्लके १
कटि राजतनीको। सोधो बन्यो अतिवास वढावतहो स्वन्यो उरलावतोजीको। बारा बन्यो मुंजपातमनोह
र मोहिसिंगारु कलमें सवयकीको। लालतली विधिजैसे तुमपालकीयो उहिवालवनाइ नटीको॥ ४५॥ राधि
कासोरूकिवो॥ फिरिरिफेरिफेरि फेरुवोमें हरिकोमनु मनुफेरे फेराकनिलागको तलीधरीपलउफाइनप
रतजंली जिनके सुपस्वोपीक तेरपाइपीकेपाइहोपरी वकोरवकनिकीवको औबनाई मेटिकेसोदास
वकनिमें जोरवनाकरी हो तोजानुमनायोंते मेरोमनमानिहै मेंयाहीकोमनाई तेजुमोहीकोमनीधा
री॥ ४६॥ कलसोरूकिवो॥ तासों वसाइकहाकहिकेसबकोमललतातरुतें झरई विधिकोलिषजो
पानजाइ औलेकिकलेमनिसीसरुजंगदई अपनोमुंजदेषजूलोरसीलेपुनिवालकहोपरिमांन।
लई दूषनतांजु सुतापर औरसुहागिलिवाउजहांलगिजोलगर्ई॥ ४७॥ राधिकासोउराहनो॥ केसो।
दासकेनवकोरूपकुलकांनिपे अनो पाएकेतेरा पढायनकुंडरवोलिये आपनेसमानकालमों।
नसेनमांनेकयुमानकेविमानचढि आमनमनलोये औरसा औराइ अतिअवकुउनाह औसी बढि
औरदेषीचितबनि निरमोलिये दोनामनहाथजिहिंहारासोहरिपिकेताहरिसो हरिननैनीलै
लतोबोलीये॥ ४८॥ कलसो उराहनो॥ सोहनिकोसावुनसंको वुकाकवावकोकोपोबोप्यारे
पिक उमलोवनकिनारको। माषनकावारीको वे घारारमोजू सुधजानतवहीकिसोरीजोरा देउ
वारकी मेरीहै कुमति औरकहाकहोकेसोराइ लागतिहै दाईजानुलाजहापाउधारकीएती
देढिगई औबहोरु गईवह थारा उतोकूटीनांदीपाइनकेपारको॥ ४९॥ आधीसोधाइहैदा
ईदिवारीसीदा सिनके उपदेहदहीहै तापकेउलतेमोर तिमारनिनाइनिनहकेनाहनहीहै २७
तेरीसोंतेरीसोंमेरी सषीसुनितेरी अकेलीहा आसरहीहै काकमिलाजकेमोहिनपाईहे औ।

प्रेनेजा कौमें तो सौं कहौ है॥४५०॥ हरि विधि स्याम सिंगार रस बरनें विधि बरनन जुगल हरि आरव स्तुति
जंगम आश्रम दोऊ कहत सुनत सुख होइ॥५१॥ इति श्री सपीऊ नवर्णतं नाम त्रयोदस प्रताव॥१३॥ समा
प्तोयं श्रृंगार रस॥ अथ हास्य लछनं॥ नयन बयन कछु करन जब मन की मोद उदोत बचनबिलाप।
हिय विनमो तहीं हास रस होत॥५२॥ हास भेद॥ मंद हास कल हास पुनि कहि के सब अति हा
सु कोविद कवि बरनन सबै अरु बोधी परिहास॥५३॥ अथ मंद हास लछनं॥ विकसाहि नयनक
पोलेनकछु दसन दसन के बासु मंद हास तासौं कहत कोविद के सब हास॥५४॥ बरनन वादपं
ति हि कहे नके सब दास औरों रसयौं हि जानि अज सब प्रचन्त्र प्रकास॥५५॥ राधिका को मंद हास
उनिको पान धयावति क्यों कुंगई लगि अंगुली हो बनवाने न बितयात वहीं तिहितातिरी लाल लो
चनलौलि सेनीनि बात कहा हरयें दसिके सुनि मे सकुचि बिमहा रसतीन जानति पायक जिय
के आति आपसबैं परिहरत को नै॥५६॥ पुनः राधिका को मंद हास॥ ते दुको बासु नंतक दुबा
हमास कौ तें सु सक्यों न लगि है। वै चितिहै तिन में हरि के जिनको जम सों मलिं पमपगी है जानति हों
नंदराज कुवें निकी हं तक बार सरंग रंग्यो है श्री जी साथ सब सुपकी बेकताग की कसब जानि कों ह
स्त कौ मंद हासु॥ दुसन वसनम हिदु रसें दुसन उति बरसिम दन सर करत अैयन है। फाइं फल
कल लोनलो यनि कपोलनि मैं मिलि लेत मनक्रम बचन समत है। तौ रकं हेदुन ताव सुन मरा तावर्नि
के लावनी छवी केलि लमान कौ न देत है। केस व प्रकास हास हसिका हाल जंग जैसे सी हो हा
स नितो हिंबे हरि लित है॥५७॥ अथ कल हास लछनं॥ जहँ सुनाय कल कौन कंठ विम
लें विलास केसव नाम नमो हिये बरनन्ज कवि कल हास॥ ना
सित कोउ निके सब पातु रीजा पतरानि विवारी को निकर हो

निहोरो बाजत है मंद हास मृदंग सदा पति दीपति को उजियारो। देपत सौंह हिंदे पिउ औरे यचहोत
सु औपिति हीमें अपारो॥८९॥ कमल को कलहास॥ आजु सपी हरि तो सों कछु वकी वार लौं बात।
कही रसतानी में लिगरें मदु का उनि के सब हारि हायेम नु हारि सा कानी। मो हिं अवलो महा सुह
हा कहि वा स कहा वजवार निलानी तें सिर हाव दये उनि के उनिगाधिक हा हसि अंवलसानो॥
९०॥ अथ अतिहास लक्षन॥ जहां हसहि निरसंक है प्रगट हि सुपसुपवास आधे आधे वरनप
हु उपजि परउ अतिहास॥ ९१॥ राधिका को अतिहास॥ ते सिजि ये जग जोति सी सं कुलनिका
फलक तुति लुक तरुनि लेरे ताल कौ ते सीये दसन उतिद मकति के सो दास ते सोई लसउला सु
कंठ माल को। ते सीये वमक वारु चिबुक कपा उनिको फलक उतेसी नकमोती व ज बाल वने
हरें हहसि तें कवउर चपल नैनन चित वक बोधे मेरे मदन गुपाल को॥ ९२॥ कमल को अति हास॥
गिरि रउ विरी फिर लागे कंठ वा वन्पारि होत छवि न्यारी न्यारी सो आपु समै अकुलाइ आवे आध आध।
रनि आ बार बातें कहै आ बार एक बारी सों सुनत सु हाय सब समुफ परें न अब के सो दा सकों सों रु
हरि है पे हैमे सारी सों तरनि तन जाती र तरवर न कु वडि ता रे दे दे हसत कुमार कान्ह प्यारी
सो॥ ९३॥ अथ परिहास लक्षन॥ जहां परिजन सब हसि उठे तजि दंपति की कानि केसव क्ये २
बुद्धि बल सो परिहास सवषानि॥ आइ है एक महावन तें त्रिय गावत मोनों गिरा धरे पयु धारी।
सुंदरता जनु कोमन को कामिनि बोलि कह्यो हपता नु दुलारी गोपी कहे लाइ यपालहि वे अकै।
लाइ मिलो उवि सादु रत्तारी के सब ते तति हा तरि अंक हसी सब वाक कहे तो खी आय कुमारी।
॥९४॥ अथ करुनार स लक्षन॥ प्रिय के विप्रिय करन तें आनि करुन रस होत ऐसो बरनब २।
जानि जै जैसो तरुन कपोत॥ ९५॥ राधिका को करुन रस॥ तेज सहर से अपार चंदमा सेस।

कुमार संभुसे उदार उरवर धरि जैहै इंद्र जैसे प्रभु अरे रामजू से रन मैं न कोन जैसे कछु अरे हियें ह
रियत है॥ सागर से धीर गनपति से चतुर अति औसे अविवेक के से दिन तरियत है नंद मतिमंद
महाजसोदा सों कहां कहों औसो सतपाय प्रभु पालक रियत है ॥७५॥ करुनकोकरुन रस॥ चंप
कीसी कली लली किसव सुवा सतरी रूपकासी मंजरी मकपमनरूपै दैवकीसी वानी अतिवानी तें।
सयांनी दिवराजकी सी रांनी जांनी जगसुपदा ह्वै कामकी कला सी चपलासी कामधेनु वलासी है।
ह्वै रही रैयुपपासु है कौने कीनें निपट कुजाति जाति घालि औसी राधिका कुंवरि परि गोरसु विक्रा
इये॥७६॥ अथ रौद्र रस लछनं॥ दोहा॥ रौद्र रस क्रोधमय विग्रह उग्र सरीर अरुन वरन वरनत सबै
कहि केसव मतिधीर॥७७॥ राधिका कौ रौद्र रस॥ के हरा की हरी कटि करी मृगमीन फनि सुकपि।
कंकंजपंजरीट वकुली नेह मंडल मृनाल विंव चंपक मराल वलि कुंकुम दाडिम कहू न ठहरा
हो नौ है जारउ कनक तनकुरस सिवकउ अधर रविफजीव गंध हीनौ है केसोदास सदा सनये २
को विदुकुम्हर कांकराधिका कोवरि को तु को न परिकी नौ है॥७८॥ सलनकौ रौद्र रस॥ मा हि
मा सोकलङ्क वियोगमा स्यौ वारि के मेरो तिमा सो अतिमोंतु तास्यो तहुतो न्यो है सवकौं सुहायो
कखुराउ छलिलानौ दीनो राधिका कुंवरि कहु सबरूप सोन्यो है कपटु कपटि कों स्यौ। निपट के
औरनि सों मेंटी पहचानि मनमैं न पहचान्यो है जाम्या रतिर वमयो मन मथ कों को मतु के सों राद
कौन कहौ रोस उर आन्यो है॥७९॥ अथ वीर रस लछनं॥ दोहा॥ वीर उत्साह मय गोर वरन डुति।
अंग अतिउदार गंभीर कहि केसव पाइ सुसंग॥८०॥ राधिका को वीर रस॥ गति गज राज सी
जे हू की दिपति वाजि हावरषत ता वपति राजन्व लचालसी केसोदास मंद हास्य असि कुवता
रतिरै स्तेहि तुंय प्रति तरसालेन फजा लसी लाजसा जकुलकानिसा

तानिबानलोचनविलोसोसो ॥ प्रेमकोकवचकसि साहसुसहाइ कलेजोतिरतिर लग्योकिमइ
नगुपालको॥७३॥इतिकेवारस रस॥ अथसोउदारिहोकिवकर्योविदारिहोजूकसुकेलोकिके
सोराइ केसोजोपमारिहो॥ हरिहोंकिप्राननाथमूतनाकिप्राननिज्यो वनतेकिवनमालीकालीजे १
निकारिहो करिहोविमडछनवीहनजोघनस्यामकालसुनहारे हरियाहीसोंस्योहारिहोवेहा
कामकामवरव्रजकीकुमारिकातिमारखहेनंदकेकुमारकवमारिहो॥७४॥ अथसत्यानकर
सलछनं॥ होइरूयानकरससदा केसवस्यामसरीर जाकोदेषतस्वनतही उपजिपरेरूयतीर॥
॥७५॥ राधिकाकोरूयानकरस॥ लुकमरुतमंफित केघनघोरउवेदि विमरुलमंफिगटी घहरा
तिघटाघटवातकेसंघटघोषघटेनघटीटघटी ॥ दसउंदिसिकेसवदामनिदेषिलगीपियकोमति
केवतटी उजुपंथदीपाइ उरंदरकेवनपावककीलपटेफपटी॥७६॥ कृस्नकोरूयानकरस॥रिस
मेरसकेवोलविसलेसरसहोउ जानेसुअवलपितदापजिकूवापीहै केसोराइडपदीनेलाइकूरूए
वडम आकुलउ जोमेजाकोआपेअतिलापीहै सुधैवसुधारिवेकोआएसिषवनसोहि सुधैतुमे॥
सुधीवातेमोसुउनिरापीहै ॥ असेमहाकेसवजाउडरिहोधादेषोनाइकामकीकमानसीचढाईराषि
राषीहै॥७७॥अथविस्तसरसलछनं॥निदामयवीसत्सुरस नालवरनवछतासु ॥ केसवदेषतसुन॥
तहो लनुमनुहोउउदासु॥७८॥ राधिकाकोवीतसुरस॥मातादीकोसोस्रुतोहिलागतहैमीवेमु॥
हपीवलपीताकोलोकलेकनिअधाउहै रेयानिकिकउनिकोकाटतनकसकतितेराह्नियाके॥
सोहेउकहतसिहातिहै जवरहोतितिटमरीतहूतवरओसीसोहैदिनउविधातनघिना॥क्षतिहै
श्रेतनीपिशाचनीनिसाचरीकाजाईहेउकेसोराइकासोकहतेरीकोनजातिहै॥७९॥ कृस्नको॥
वितसुरस॥ छूटेगटफंनयनेधुमधुमसेनसेनैफायुरबीगोफिसांपवीवीनविलोलासजू कंटा २९
ककलितत्रिनवलिवजिगंधजूतनकोतलपतलताकोलउबाउजू कुलटाकवीलगाउ अथ

ई तादिनतें उनि राधी उवह समे तसुभाव सुभाकी मिठाई ॥८७॥ दोउ जमां उ उजी कमलबकु।
लाजतिकोपस्यो ईरहतउजदकालसो समरुहै अनंत अजर अज अमेरो मरत परि केसवनि।
कासिजांनैं सो ईतो अमरुहै वजउ अवनसुनि समुझि सब हु करि वंदनको वाउ नहि सिवा।
कोमरुहै तागझरे तागि तई या तागनि जो ताज्यो परे सबकेसव नमांझि तयको तव रुहै।
॥८८॥ इहि विधि वरनउ वरन वउ नवरस रसिक विचार बांधउ वृत्तिकवित्तकी कहि के
सव विधि चारि ॥८९॥ इति श्री नवरस वर्णनं ॥ नाम चउदहसमप्रभाव ॥ १४ अथ वृत्ति वर्णनं।
प्रथम कोसिकी भारती रचति आरभटि तातिक हि केसव सुत सात्विकी बउरचउर वि
धिजाति ॥१॥ अथ कोसिकी लछनं ॥ कहि ये केसवदास जिहि करुना हास सिंगारु स
रलवरनसुत्त सावजह सो कोसिकी विचारु ॥२॥ मिलिवेकों एकमिठ फिरे … तिकानि
मिलि मन मनहि विलास विलसति है वोलिवेकों एकवाल वोलसुनिवेको औरु वालि वोल
तीरघनि व्रतनि वसति है देषिवेकों एकफिरे देवतासी दोरी … देवता मनाइ दिन दांन मनस
ति है कोजे कहा कल्हा करमको इहि रूप मेरी माई ए तो मेरे कान्हजूके नाव हीह सति है ॥३
२ अथ भारती लछनं ॥ वरनी ये जामहि वीर रसु अरु रसमें अद्भुत हासु कहि केसव सुत्तर
अर्थ जह सो भारती प्रकासु ॥४॥ काननि कनक पत्र लमकत चकवा रु …
फलकति अति सुषदाई केसव छवीलो लखु उसासमकुलु सारथी सो केसरि की आन अधिरा
धिका स्यों वनाइ नीके हानी के ईमे नीको नाकनी को मोती उरजत एक हो विलोकति युपा
लतो गए विकाइ लोचन विसाल ता … राहु की को मानो चक्रोमीन निके रथमें नम
घराइ ॥४॥ अथ आरभटी लछनं ॥ केसव जामहि रुद्र रस भयवीभत्स जानि आरभटी
आरभट्य ह पद्य जमक वषांनि ॥५॥ घोरघनै घनघोरत सजलउ जल कजलकारुवि
[illegible]

रचैकै लेफिरैई तसैमेनयौंइ कमावनकोपछिनीतिथियेपांसै वोमें अंधातोंफिरनौं ऐंठफेरकर
मैं वनिता कहिके सब सात्वैजानिमनो अजरा अविना अजऊपर कालकूट विमिनांवे॥१ंइ
अव सात्विकी॥ अद्भुतरूप सुवीररसु समर व सवरनि समानि सुननहि सकुफनतावत।
नि सो सात्विकी सुजान॥५०॥ केसोदास आपलापतांतिनकेअतिलाप वारिद गंगावरी
नवारिहायोईरासी राधिकाइस्किप्रीतिसवतें अधिककजानिरतिरति नाथरूपके प्रगुए
जौनौरतिघोरासी तिनमहि नेइनसवानीलपेपास्यौजाइ सारथमेंताएवीकीनारवीह
तोरासी एकैगतिएकैंमतिएकैप्रानु एकैमतु देषिवेकोंदरूटेंदनेननकोभोरीमी॥५०॥ इति
श्री चव्रविधिकविन्नवर्णने नामपंचदसमप्रस्ताव॥२५॥ अथअनरसलछनं॥ प्रत्यनीक
निरअविरसु केसव दुस्संधानु पात्रदुष्टकविनकहिं करैसुकविवर्णोनु॥५०॥ अ
थप्रत्यनीकलछनं॥ जहांसिंगारकवित्तसु तयु वीरहीवरनैकोइ रोद्रकरुना मिलितहीप्र
त्यनीकुरसहोइ॥५००॥ हसिबोलतहीसुहंसेंसबुकैसब लाजलगावतलोकनगे बातचल
वत घेरु चलैमनआनतहीमनमथअंग अगुकहूपहतीमनमैरेलजानियेनहि योअम
गे हरिसोंनेकफिविपसारतही अंगुरीनपसारतलोरुलगै॥१॥ अथनीरसलछन॥ जहां
दंपनसुजहीमिले सदारहेवहरीति कपटरहेलपटाइमन नीरसरसकीप्रीति॥२॥ गा
हतसिंकसयाननके जिनकीमतिकीअतिदेहदहेली मोहिलमीउपदाकेंदईतिनलैसे
जनावतिप्रेमपहेली जानीहोजांनीमिलाप्रजहीहियनाहियतावतिगर्वगहेली आजनं,
कानतिरांनसुनीसुनोदेषिचलीहमसौंतिसहेली॥२॥ अथविरसलछनं॥ जहांसो
गमहि नागको वरनकहैकविकोइ केसवदासुजलासमौं तर . . .
दासपात्रगात्रुपात्रुपांत्र मोमांत्रगवांपातुसयोप्रांत्रपातिके

सिकतातनयहजबबहवालदेषतही सबसुभुज मदित विछिहे ॥ ऐसी सोवसीगसीठीवी ठीअतिबी
ठीसुनेमीठीरवातिनसुनी केहोमेंनीछिहे ॥ ऐसिनि सोहटीरगातोकेसी काकोअगीठीउधीजाकेउरमें
सुकेसेहसिरीछिहे ॥५॥ अथडुस्संधानरस ॥ एकहोइअनुकूलजो जहां जो प्रतिकूल केस
व डुस्संधानरसु सोरउहांसनुमूल ॥ हैदधिदानोउधारहो केसवदानुकहांअरुमोलळेपैहैं ही
नेबिनातोगईसुगईतेगईघरहो फिरिजेहगी हिउवैरुकियोहिउहोकबवैरुकोयोबरुनीकेहे
रेहे पैरुकेगोरसुदेवकोगोअहो वेव्योनवेच्योनोहारिनदेहो ॥११॥ अथपात्रदुष्टरसलछन ॥ जैसो
जाकहुबुझीये कह्योतासोदुष्ट विचविचारजो वर्नीये सोरसपात्रदुष्ट ॥१२॥ कपटरूपानीजो
नीप्रेमरसजपटानीगंगाजलकेप्रानतिकेपांनीसममानीये स्वारथनिधांनीपरमारथकीराजधानी
कांमकोककहांनाकेसोदासजगजानिये सुवरनअरूपानीसुधासोसुधारिआनीसकलसयान
सानीगानीसुषदानीये गोराउगिराजानीमोहमनिगुडम्पानी ऐसीबानीमेरीरांनीमुखकैवषा
नियेः ॥१३॥ केसवकरुनाहासअरु बीरसुसिंगार बरनतबीरतयानकहि संततवैरुबिचारु
॥१४॥ तयउपजेबीतरसतें अरुसिंगारतेंहासु केसवअद्भुतबीरतें करुनाकोपप्रकास ॥१
इहिबिधिकेसवदासरस अतरसकहेबिचारु बरनतरसनपरीजहां कविकुलकलसुधारि
॥१६॥ जैसेंरसिकप्रियाबिना देषियेदिनदीन त्योंहीभाषाकविसवे रसिकप्रियाकरिहीन
१७॥ बाढैरतिमतिअतिपढे जानैसवरसरीति स्वारथपरमारथलहे रसिकप्रियाकीरीतिप
१८॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमार श्रीइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायांरसअनरसवर्णनं
नामषोडशप्रभावः ॥१६॥ संवतसयमतगतयन सोरहेसेसनतार सावणिवदितिथिसप्तमीरो
हणिप्रतिसुतवार ॥१॥ प्रसिद्धनयरिअमरावती मव लोकौपरसिद्ध बावककिसनसुनिंदसि
ष्य रसिकप्रिया लिषितोयं ॥२॥ इतिसंपूर्ण ॥ श्रीरस्तु लेषकपाठकयो चिरंजीवीस्वस्ति याव

सम्यक दृष्टी की स्तुति भेदविग्यान जग्यो जिनके घट सीतल चित्त भयो जिम चंदन केलि करै
सिव मारग मैं जग मांहि जिनेसर के लघु नंदन सत्य सरूप सदा जिनके प्रगट्यो अवदात मि
थ्यात निकंदन सांत दसा तिनकी पहचानि करै कर जोरि बनारसी वंदन ॥६॥ अथ सम्यक
दृष्टि की स्तुति ॥ स्वारथ के साचे परमारथ के साचे चित साचे बैन कहैं साचे जैनमती है काहू के
विरुद्ध नांहि परजाइ बुद्धि नांहि आतमगवेषी न ग्रहस्थ है न यती है सिद्धि रिद्धि वृद्धि दीसै घ
ट मैं प्रगट सदा अंतर की लच्छसों अजाची लच्छपती है दास भगवंत के उदास रहैं सुषीया
सदा ऐसे जीव समकिती है ॥७॥ अथ सम्यग वर्णन ॥ स० ३१॥ जाके घट प्रगट विवेक गन
धर को सो हिरदै मैं हरषि महामोह कों हरतु है साचो सुष मानै निज महिमा अडोल जानै आपही मैं आप
नो सुभाव लै धरतु है जैसें जल कर्दम कतक फल भिन्न करै तैसें जीव अजीव विलछन करतु
है आतम सकति साधै ग्यान को उदै आराधै सोई समकिती भवसागर तरतु है ॥८॥ अथ मिथ्या
दृष्टि वर्णनं धरम न जानत बषानत भरम रूप ठौर ठौर ठानत लराई पक्षपात की भूल्यो अभिमान
मैं न पांउ धरै धरनी मैं हिरदै मैं करनी विचारै उतपात की फिरै डांवाडोल सो करम के कलोल
मैं ह्वै रही अवस्था सु बघूला कैसे पात की जाकी छाती ताती कारी कुटिल कुवाती भारी ऐसो ब्र
ह्मघाती है मिथ्याती महापातकी ॥९॥ दोहरा ॥ बंदौं सिव अवगाहना अरु बंदौं सिव पंथ जसु
प्रसाद भाषा करौं नाटिक नाम गरंथ ॥१०॥ कवि वर्णन स० २३ सा ॥ चेतन रूप अनूप अमूरति
सिद्ध समान सदा पद मेरो मोह महातम आतम अंग कियो पर संग महातम घेरो ग्यान कला उपजी
अब मोहि कहौं गुन नाटिक आगम केरो जासु प्रसाद सधै सिवमारग वेगि मिटै घटवास बसेरो
॥११॥ अथ कवि लघुता ॥ ई० जैसें कोऊ मूरष महा समुद्र तरिबे कों भुजानि सों उदित भयो है त

जिनावेरो जैसें गिरिऊपरि विरपफलनौ रिविको वामनउरूपको ऊंउगेउनावेरो तैसें जलऊंन
मेंतिरपिससिप्रतिबिंब ताकेग्रहिवेको कोकरनौ वाफेनैवावेरो तैसेंमें अलप बुद्धि नाटिक आर
तकीनो गुनीमोहिहसैंगेकहैंगेकोऊ वावेरो ॥२॥ सवईया ॥ जैसे काहूरतनेसोंवाधाल्हे रतनतो
मेंकोऊ सूतेरे समकीमोरीपोइगईहै तैसें बुद्धि टीकाकारनि नाटिकसुगमकीनो तापर अलपबु
द्धि सुद्धि परिनईहै जैसें काहूदेसकेपुरुष जैसीलापाकहैं तैसी तिनहूंके वालकनिसीपिलईं
है तैसें ज्योंगरंथकोअरथकस्योगुरु त्योंहमारीमतिकहूंवकोसावधानतईहै ॥३॥ सवईया ॥
कवहूं सुमतिहैं कुमतिकोविनासकरे कवहूंविमलज्योतिअंतरजगतिहै कवहूंदयालव
नकरतिहै यालरूप कवहूंसुलालसा केलोचनलगतिहै कवहूंकआरतीकहूचसनमु
पथावैकवहूंसुतास्ताकेवाहरि विगतिहै धरेदसाजैसीतवकरेरीतितैसी ऐसीहिरदेहा
मारेंतगवंतकीलगातिहै ॥४॥ अथ नाटक वर्णनं ॥ सवईया ॥ मोपवलिवेको सोनकग
मकोकरिवो नजाकेरसतेंआनंदधरलोनयोंक्लतहै गुनकोगरंथनिग्गुनकोसुगमपथजा
कोजसकहतसुरेस अकुलतहै याहीकेजुपछीतेउकततम्पांनगगनमे याहीकेविपछीि
जगजालमेंरुलतहै हाटकसोविमलविराटकसोविसतार नाटकसुनतहियफाटिकसो
खुलतहै ॥५॥ दोहा ॥ कहोंसुद्धनिहचेकथा कहोसुद्धविवहार मुकतिपंथकारनकहों अ
नुभौकोअधिकार ॥६॥ अथ अनुभौ वर्ननं ॥ वस्तुविचारतधावते मनपावेविश्राम रसस्वाद
तसुपऊपजे अनुभौयाकोनाम ॥७॥ दोहरा ॥ अनुभौचिंतामनरतन अनुभौहेरसकूप
... अनुभौकेरसकोंरसायनकहत
... रसाकेंहोंवसाईपार

सा।सो ऊरधकी दौर है अनुभौ की केलि यहै कामधेन चित्रावेलि अनुभौ को स्वाद पंच अमृत
को कौर है अनुभौ करम तोरै परम सौं प्रीति जोरै अनुभौ समान न धरम कोऊ और है॥१९॥ अथ
षटद्रव्य वर्नन॥ दोहा॥ अथ जीवद्रव्य यथा॥ चेतनवंत अनंत गुन पर्जय सकति अनंत अल-
ख अखंडित सर्वगत जीव दरव विरतंत॥२०॥ अथ पुद्गल द्रव्य यथा॥ दोहा॥ फरस वरन रस गंध म-
य नरद पास संठान अनरूपी पुदगल दरव नभ प्रदेस परमान॥२१॥ अथ द्रव्य यथा॥ जैसे स-
लिल समुद्र में करै मीन गति कर्म जैसे पुदगल जीव को चलन सहाई धर्म॥२२॥ अथ अधर्म य-
था॥ ज्यों पंथी ग्रीषम समै बैठे छाया मांहि त्यों अधर्म की भूमि में जड़ चेतन ठहराइ॥२३॥ अथ आका-
स द्रव्य यथा॥ संतत जाके उदर में सकल पदारथ वास जो भाजन सब जगत को सोई दरब अका-
स॥२४॥ अथ काल द्रव्य यथा॥ जो नव करि जीरन करै सकल वस्तु थिति ठानि परावर्त व-
र्तन धरै काल दरब सो जानि॥२५॥ अथ नव तत्व वर्णन॥ समता रमता उरधता ग्यायकता
सुखभास वेदकता चैतन्यता ए सब जीव विलास॥ अथ जीव तत्व यथा॥ तनता मनता वचनता
जड़ता जड़ सम्मेल लघुता गुरुता गमनता ए अजीव के खेल॥२७॥ अथ पुण्य तत्व यथा॥ जो वि-
सुद्धता वनि बधे सहज अधोमुष होइ जो सुषदायक जगत में पुन्य पदारथ सोय॥२८॥
अथ पाप तत्व यथा॥ संकलेस तावन बधे सहज अधोमुष होइ दुषदायक संसार में पाप
पदारथ सोइ॥२९॥ अथ आश्रव तत्व यथा॥ जोई करम उदोत धर होइ क्रिया रस रत्त करषै
नूतन करम को सोई आश्रव तत्व॥३०॥ अथ संवर तत्व यथा॥ जो उपयोग सरूप धरि वरतै
जोग विरत्त रोकै आवत करम को सो है संवर तत्व॥३१॥ अथ निर्जरा तत्व यथा॥ जो पूरब-
सत्ता करम करि थिति पूरन आउ षिरवे को उदित भयो सो निर्जरा लषाउ॥३२॥ अथ बंध तत्व

त्वयथा॥ जोनवकरंमउरांनसो मिलेमांछिदि द्रव्यइं सकेतिवटोवबंसकी बंधपदारथसोइ
२२ अथमोक्षतत्वयथा॥ थितिसरंनकरेजोकरम पिरेबंधपदजोनि दंसआंसउकाउकरे ।
मोषतत्वसोजांनि॥२४॥ अथनाममालासबुद्धिकामात्रलिष्यते॥ अथसमुच्चयकेनाम सावा
पदारथसमयधन तत्ववितत्वसुदर्वइ विणअरथइत्यादि वस्तुवस्तुनामएसर्व॥२५॥ अ
थशुद्धजीवद्रव्यकेनांमसवैणइ॥ परमपुरुषपरमेसपरमज्योतिपरब्रह्मपूरनपरमपर
धांनहे अनादिअनंतअविगतअविनासीअजनिरद्वंदमुकतिमुकंदअमलानंद निर
बाधनिगम निरंजननिरविकारनिरकारसंसारसिरोमणिसुग्यांनहे। सरवदरसीसर
वगसिधसांईसिवधनीनाथईसजगदीसभगवानहे॥२६॥ अथसंसारजीवद्रव्यकेनां
म॥सवइण॥ चिदानंदचेतनअलपजीवसमेसारभुदरूप अवद्धअंगपयोगीहे चिद्रूपा
स्वयंभुचिनमूरतिधरमवंतप्रानवंतप्रानीजंतभूततवसोगीहे गुनधारीकलाधारीवि
द्याधारीअंगधारीसंगधारीजोगीहे चिनमेंअपंडहंसअक्षरआतमरामकरमकोकर
तार परमवियोगीहे॥२७॥ अथआकाशकोनाम॥ दोहरा॥ खंविहायअंबरगगन अंतरि
क्षजगधांम व्योमवियतनभमेघपत एआकाशकेनांम॥२८॥ अथकालकेनांम॥ ज
मसमतांतअंतक त्रिदस आवत्तीमृतथांन प्रानहरनआदिततनंय कालनामपर
वान २९॥ अथपुन्यकेनांम॥ पुन्यसुकृतऊरधवदन अकररोगसुवंतकुसं सुपदायक
संसारफलताराबद्दिगुरपधर्म॥३०॥ अथपापकेनांम॥ पापअधोमुषएनअघ कंप
रोगदुषधांम कलिलकलुषकिलविषदुरित असुभकरमकेनांम॥३१॥ अथमोक्षके
नांम। सिद्धकेनांम। सिद्धपेत्रत्रिभुवनमुकट शिवथलअविचल चे

ऊंच सिव पंचम गति निरवांन ॥४१॥ अथ बुद्धि के नाम ॥ प्रग्या धिषना सेमुषी धी मेधा मति बु
द्धि। सुरति मनीषा चेतना आसय अंस विसुद्धि ॥४२॥ अथ विचक्षन पुरुष के नाम ॥ निपुन
विचक्षन विबुध बुध विद्याधर विद्वान पटु प्रवीन पंडित चतुर सुधी सुजन मतिमान ॥४
कलावंत कोविद कुसल सुमन दक्ष धीवंत ग्यानी सज्जन ब्रह्मवित वेदग्य गुनीजन संत ॥४५॥
अथ मुनीस्वर के नाम ॥ मुनि महंत तापस तपी त्रिक्षुक चारित धाम जती तपोधन संयमी
व्रती साधु रिषि नाम ॥४६॥ अथ दरसन के नाम ॥ दरस विलोकनि देषनौ अवलोकन दृग
चाल लषनि दृष्टि निरषनि जुवनि चितवनि चाहनि भाल ॥४७॥ अथ ग्यान के नाम ॥ तथा चा
रित्र के नाम ॥ ग्यान बोध अवगम मनन जगत भान जगजान संयम चारित आचरन चरन वृ
त्ति थिर वांन ॥४८॥ अथ सत्य के नाम ॥ सम्यक सत्य अमोघ सत निसंदेह निरधार ठीक यथा
रथ उचित तथ मिथ्या आदि अकार ॥४९॥ अथ झूठ के नाम ॥ अजथारथ मिथ्या मृषा वृथा
असत्य अलीक मुधा मोघ निफल वितथ अनुचित असत अठीक ॥५०॥ इति श्री ना
टक समयसार ग्रंथ नाममाला सूचिका ॥ अथ समयसार के बारह द्वार नाम कथन तस्य व
र्नन सवैया ॥ ईका० जीव निरजीव करता करम पुन्न पाप आस्रव संवर निर्जरा बंध मोष स
रव विसुद्ध स्यादवाद साधि साधक दुवादस दुआर धरे समैसार कौ षढ़ै दुर
नयोग दरवानुयोग दूरि करै निगम कौ नाटक परम रस पोषै है ऐसो परमागम बना
रसी वषानै जामै ग्यान कौ निदान सुद्ध चारित की चोषै है ॥५१॥ अथ ग्रंथ अंत को नम
स्कार दोहरा ॥ सोभित निज अनुभूति जुत चिदानंद भगवान सार पदारथ आतमा
सकल पदारथ जान ॥५२॥ सवैईया ॥ जो अपनी दुति आप विराजित है परधान पदा
रथ नामी चेतन अंक सदा निकलंक महासुख सागर को विसरामी जीव अजीव जिते

गमैंतिनकौ उनमायक अंतरजामी। सो निजरूप परसै सिवथानक ता हि विलोकि न
मै सिवगांमी॥५२॥ जिनवानी वर्णनं॥ सवैया तेईसा॥ जोग धरै रहै जोग सौं भिन्न अनंत गुना
तम केवलग्यांनी। तासु हृदै द्रह सौं निकसी सरिता सम ह्वै श्रुतसिंधु समानी। यातैं अनंत
नयातम लछन सत्य सरूप सिधंत वषांनी। बुधि लषै न लषै दुरबुद्धि सदा जगमांहि जगै जि
नवानी॥५४॥ अव जीव द्वार लिष्यते॥ कविव्यवस्थाकथन॥ छप्पै॥ हौं निहचै तिहुकाल सु
द्ध चेतनमय मूरति। परपरनति संयोग भई जड़ता विसफुरति। मोहकर्म पर हेतु पाइ चेतन
पर रचै। ज्यौं धतूर रस पान करत नर बहुविधि नचै। अव समयसार वर्णन करत परम सुद्ध
ता होहु मुझ। अनयास बनारसिदास कहि मिटौ सहज भ्रम की अरुझ॥५५॥ आगम
व्यवस्थाकथन॥ निहचै मैं रूप एक विवहार मैं अनेक याही नै विरोध मैं जगत भरमा
यो है। जग के विवाद नासिबे कौं जिनआगम है जामैं स्यादवाद नाम लछन सुहायो है। दरस
नमोह जाकौ गयौ है सहजरूप आगम प्रवान ताके हिरदै मैं आयो है। अनै सौं अपंडित अ
नूतन अनंत तेज ऐसौ पद पूरन तुरत तिन पायौ है॥५६॥ अथ निश्चै विवहार कथन॥ सव
तेईसा॥ ज्यौं नर कोउ गिरै गिर सौं तिहि सोइ हितू जु गहै दिढ बांही। त्यौं बुध कौ विवहार भलौ त
वलौं जवलौं सिवप्रापति नांही। यद्यपि यौं परवान तथापि सधै परमारथ चेतन मांही। जीव
अव्यापक है पर सौं विवहार सु तौ पर की परछांही॥५७॥ अथ सम्यकदर्शन व्यवस्था॥ सव
३१ सुद्धनय निहचै अकेलौ आप चिदानंद अपने ही गुन परजाइ कौं गहतु है। वि
ग्यानघन सो है विवहार मांहि नव तत्वरूपी पंच दर्व मैं रहतु है। पंच २
दर्व न्यारे लषै सम्यकदरस यहै और न गहतु है। सम्यकदरस जोई

मेरे घट प्रगटो बनारसी कहत है ॥५८॥ अब जीव की अवस्था ॥ अग्नि दृष्टांत ॥ स०३१
जैसे त्रिन काठ बांस आरने इत्यादि और ईधन अनेक विधि पावक में दहीए आकृति विलो
कित कहावे आगि नाना रूप दीसे एक दाहक सुभाउ जब गहिए तैसे नव तत्व में भयो है बहु
भेषी जीव सुद्ध रूप मिश्रित असुद्ध रूप कहिए जाहि छिन चेतना सकति को विचार कीजे ता
हि छिन अलष अभेद रूप लहिए ॥५९॥ अब जीव अवस्था बनवारी दृष्टांत ॥ स०३१ जैसे
बनवारी में कुधात के मिलाप हेम नाना भांति भयो पै तथापि एक नाम है कसि के कसौटी ली
क निरषे सराफ ताहि बान के प्रवान करि लेत देत दाम है तैसे ही अनादि पुदगल सों संयो
गी जीव नव तत्व रूप में अरूपी महा धाम है दीसे उनमान सों उदोत बान ठौर ठौर दूसरो
न और एक आतमा ही राम है ॥६०॥ अब अनुभव अवस्था सूर्य दृष्टांत ॥ स०३१ ॥ जैसे
रवि मंडल के उदे महि मंडल में आतप अटल तम पटल विलात है तैसे परमातमा को अ
नुभो रहत जो लों तो लों कहूं दुविधा न कहूं पक्षपात है नय को न लेस परवान को न पर
वेस निक्षेप के वंस को विधंस होत जात है जे जे वस्तु साधक है तेउ तहां बाधक है बाकी
राग दोष की दसा की कौन बात है ॥६१॥ अब जीव व्यवस्था वचनद्वार ॥ अडिल ॥ आदि अंत
पूरन सुभाव संजुक्त है पर सरूप पर जोग कल्पना मुक्त है सदा एक रस प्रगट कही है जै
न में सुद्ध नयातम वस्तु विराजे वेन में ॥६२॥ अब हितोपदेस कवितबंद ॥ सदगुरु कहे
त भव्यजीवन सों तोरहु तुरत मोह की जेल समकित रूप गहो अपने गुन करहु सुद्ध अनु
भो को षेल पुदगल पिंड भाव रागादिक इन सों नहीं तुम्हारो मेल ए जड प्रगट गुपत तुम
चेतन जैसे भिन्न तोय अरु तेल ॥६३॥ अब ग्यान विलास ॥ स०३१ ॥ कोउ बुद्धिवंत नर ४
निरषे सरीर घर भेदग्यान दृष्टि सों विचारे वस्तु वासतो अतीत अनागत वरतमान मोह

२॥रा॥ग्यावंदानदलेषै वंधमैविलासतौ वंधकोविदारिमहामोहकौसुभाउडारि आतमकौ।
ध्यानकरै देषैपरगाससौ करमकलंकपंकरहितप्रगटरूप अचलअवाधितविलोकै।
देवसासतो॥८४॥ अवगुनगुनीअभेदकथनव्यवस्था॥सवैईसा॥सुद्धनयातमआ।
तमकीअनुभूतिविग्यानविभूतिहै सोई वस्तुविचारतएकपदारथनामकेभेदकहावत
दोई ज्यों सरवंग सदालखिआपहि आतमध्यानकरैजवकोई मेटिअसुधविभावदसा
तवसुद्धि सरूपकीप्रापतिहोई॥८५॥ अथग्याताचितवन॥स्वरूपकथनसवैईसा॥ अप
नेहीगुनपरजाइसौप्रवाहकरिपरिनयोतितिहूंकाल अपनेअधारसौं अंतरवाह
रपरकासवानएकरसषिन्नतानगहै भिन्नरहैभौविकारसौं चेतनाकेरससरवंगत
रिरह्यो जीवजैसेलौंनकांकरभरयोहैरसषारिसौं पूरनसरूपअतिउज्जलविग्यान।
घनमोकौं होउप्रगटविसेषनिरवारसौं॥८६॥ अथद्रव्यपर्यायअभेदकथन॥कवित्त।
छंद॥जहांध्रुवधर्मकर्मछयलछण सिद्धिसमाधिपदसोई सुद्धपयोगजोगमहिमंडित।
साधकताहिकहैसबकोई यौंपरतछपरोछरूपसौं साधिकसाधिअवस्थादोई।
दुहुंकौएकग्यानसंचयकरि सेवैसिववंछकथिरहोई॥८७॥ द्रव्यगुणपर्यायभेदका
थन॥कवित्तछंद॥ दरसनग्यानचरनत्रिगुनातमसमलरूपकहिएविवहार।
निहचैदिष्टिएकरसचेतनभेदरहितअविचलअविकार सम्यकदसाप्रमानउभै।
नयनिर्मलसमलएकहीवार यौंसमकालजीवकीपरनति
र॥८८॥ अथव्यवहारस्वरूपकथन॥दोहरा॥एकरूपआ

सग्०३१॥ जामेंलोकालोककेसुभावप्रतिभासेसब जगीग्यानसकतिविमलजैसीआरसी द
रसनउदोतलीयो अंतरायअंतकीयोगयोमहामहामोहलयोपरममहारसी सन्यासीस
हजजोगीयोगसोंउदासीजामेंप्रकृतिपंचासीलगिरहीजरिछारसी सोहैघटमंदिरमेंचेत
नप्रगटरूपऐसोजिनराजताहिवंदितवनारसी॥८०॥ अथनिश्चयव्यवहारकथन। कवित्त
छंद॥ तनचेतनविवहारएकसेनिहचैभिन्नएकनमानेंकोइ ताकारनतनकीअस्तुतिसे १
जिनवरकीअस्तुतिनहिहोइ॥८१॥ अथवस्तुस्वरूपकथनदृष्टांतकरिदिढावेहै॥ सग्०३१
ज्योंचिरकालगडीवसुधामहि लरिमहानिधिअंतरगूझी कोउउषारिधरेमहिऊपरि।
ज्योंदृगवंततिन्हेंसबसूझी त्योंयहआतमकीअनुभूतिपगीजडभावअनादिअरूझी।
नेजुगतागमसाधकहीगुरलक्खनवेदिविचक्खनबूझी॥८२॥ अथभेदग्यानस्वरूपक०
धोबीकेदृष्टांत॥ सग्०३१॥ जैसेकोउजनगयोधोबीकेसदनतिनपहरयोपरायोवस्त्र
मेरोमानिरह्योहै धनीदेषिकह्योभैयायहतोहमारोवस्त्रचीन्होपहिचानतहिंत्यागभ
ताबलह्योहै तैसेंअनादिपुदगलसोंसंयोगीजीवसंगकेममत्वसोंविभावतामेंवह्योहै
भेदग्यानभयोजबआपोपरजान्योतवन्यारोपरभावसोंस्वभावनिजगह्योहै॥८३॥ अथ
निश्चैस्वरूपकथन। अडिल्ल॥ कहैविचक्षणपुरुषसदाहौंएकहौं अपनेरससोंभ
स्योआपनीटेकहौं मोहकर्ममममनांहिनांहिभ्रमकूपहै सुद्धचेतनचेतनासिंधुहमारो। ६
रूपहै॥८४॥ अथग्यानअवस्थाकथन सग्०३१॥ तत्वकीप्रतीतिसोंलख्योहैनिजपर।
गुनदृगग्यानचरनत्रिविधिपरनयोहै। विसदविवेकआयोआछोविसरामपायो।—

आछदी आपतासरा ह्रो सो थिलयो है कहत बनारसीगहत पकपारथ कोमहज स्तु तातें सावि
तावमिलिगयो है पन्नाके पकायेते जैसें कंचनविमल होत न सस्तु द्रवतन भकासरूप तया
है ॥८५॥ अब वस्तुस्वरूप कथनपात्र केद्दष्टांत सवइया ॥ जैसे कोऊ पात्र नवनाऽ व क्रआनर
त आवत अपारनिसि आडोपट करिके उर्मं उदंदा वति सवा लिपटन्ह रकोज सकल सत्ता
के लेमहै पैंडिगे छिथरिके तैसें ग्यांन सागर मिथ्यातग्रथतें दिकरि वतम्पा प्रगट न्हेंकोनिकं
लोक तारिकें ऐसो उपदेस स्तु निवाहिर जगतजीव सुइतासंतारे नगजा ज्ञांनिकरिकं
इतिश्री नाटिक समयसार को जीव द्वार समास ॥ दोहरा ॥ जीवतत्व अधिकार यह कह्यो
प्रगट समुझाइ अब अधिकार अजीवको सुनहुं चतुर मन लाइ ॥८७॥ अब अजीव द्वार
ग्यानकी व्यवस्था ॥ सवइया ॥ परम प्रतीति उपजाइ गनधरकोसी अंतर अनादिकी विभावना
विदारी है तेद ग्यांनदृष्टिसौं विवेककी सकति साधि चेतनकी दशा निरवारी है करम
कौ नासकरि अनुतौ अभ्यासकरि हिये में हरषि निज उद्धतासंभारी है अंतराय नासतयां
सुद्धपरगासत ग्यांनको विलासताकों वंदना हमारी है ॥८८॥ अब परमारथ सिक्षा कथन
सवइया ॥ भैया जगवासी तो उदासी व्है जगतसों एकछमहीना उपदेस मेरा मानु रे और
संकल्प विकल्प के विकार तजि वैठि एकंत मन एक ठौर आनु रे तेरो घट सर तामें तूही है
कमल ताको तूही मधुकर व्है सुवास पहचानि रे प्रापति नव्हैंहै कछु ऐसो तूं विचारतु है
कहै प्रापति स्वरूप यो ही जांनि रे ॥८९॥ अब वस्तु व्यवस्था ... चेतन
अनंतगुन सहित सुआतमराम यातें आन मिल और सब पुद्[illegible]
[illegible]

अनुभवप्रसंसा॥कवित्तछंद॥जवचेतनसंभारिनिजपौरुषनिरषैनिजदृगसौंनिजमर्म
तवसुषरूपविमलअविनासिकजानैजगतसिरोमनिधर्म॥अनुभौकरैसुद्धचेतनकौर
मैसुभाववमैसवकर्मइहिविधिसधैमुकतिकोमारगअरुसमीपआवेसिवसर्म॥८१॥
अथअनुभौप्रसंसा॥दोहरा॥वरनादिकरागादिकयहरूपहमारोनांहि एकब्रह्मनहि
दूसरोदीसैअनुभवमांहि॥८२॥अथवस्तुविचार॥षांडोकहियेकनककौकनकम्यान
संयोगन्यारोनिरषतम्यानसौलोहकहैसवलोग॥८३॥निहचैववहारविचार॥वर
नादिकपुदगलदसा॥वरनादिकपुदगलदसाधरैजीववहुरूप वस्तुविचारतकरमसें
भिन्नएकचिद्रूप॥८४॥निश्चैस्वरूपकथन॥ज्यौंघटकहियेघीउकौघटकौरूपनघीउ।
त्यौंवरनादिकनांमसौंजडतालहैनजीउ॥८५॥अथसाक्षातस्वरूप॥निराबाधचेतन
अलषजानैसहजस्वकीव अचलअनादिअनंतनित प्रगटजगतमेंजीव॥८६॥अनु
भवविधानकथन॥३१॥रूपरसवंतमूरतीकएकपुदगलरूपविनुऔरयौंअजीवद
र्वदुधाहै चारिहैंअमूरतीकजीवभीअमूरतीक याहीतेंअमूरतीकवस्तुध्यानमुधाहै
औरसौंनकवहूंप्रगटआपुआपुहीसौंथिरचेतनसुभाउसुद्धसुधाहैचेतनकोअ
नुभौअराधैतेईजीवजिन्हकौअषंडरसचाषिवेकीछुधाहै॥८७॥अथमूर्तिवर्ननस
तेईसा॥चेतनजीवअजीवअचेतनलछनभेदउभैपदन्यारे सम्यकदृष्टिउदोतविचछ
नभिन्नलषेलषिकैंनिरवारे जेजगमांहिअनादिअषंडितमोहमहामदकेमतवारे ते
जडचेतनएककहैतिन्हकीफिरिटेकटरैनहिटारे॥८८॥अथमाताविलासण॥सणते

याघटमेंभ्रमरूपअनादिविसालमहाअविवेकअखारौ। तामहीऔरसरूपनदीसत
पुग्गलनृतिकरैअतिभारौ। फेरतभेषदिखावतकौतुकसौंजलिएवरनादिपसारौ मो
हसौंभिन्नजुदौजडसौंचिनमूरतिनाटकदेषनहारौ॥१३॥ अबग्यानविलासकथ
नस०इ३१ जैसेंकरवतएककाठविविधिषंडकरै जैसेंराजहंसनिरवारैदूधजलकौंत
सेंभेदग्याननिजभेदकसकतिसेतिभिन्नभिन्नकरैचिदानंदपुदगलकौं अवधिकौंधावै
मनपर्यैकीअवस्थापावैउमगिकैंआवैपरमावधिकेथलकौं याहीभांतिपूरनसरू
पकौउदोतधरैकरैप्रतिबिंबितपदारथसकलकौ॥१४॥ इतिश्रीनाटिकसमयसा
रकोअजीवद्वारसमाप्त॥दोहरा॥ यहअजीवअधिकारकौप्रगटवषांन्यौम
र्म अबसुनजीवअजीवकेकरताकिरियाकर्म॥१॥ अबभेदग्यानमहात्मवर्ण
नाह॥सव०३१॥जाहिसमैंजीवदेहबुद्धिकोविकारतजे वेदतसरूपनिजभेदतभरम
कौं महापरचंडमतिमंडनअखंडरसअनुभौअभ्यासपरगासतपरमकौं ताहीसमैंनर
हैविपरीतभावजैसेंतमनासैभानप्रगटधरमकौं ऐसीदसाआवैजबसाधककहावैत
वकरताह्वैकैसेकरैपुग्गलकरमकौं॥२॥ अबग्यानसामर्थ्यवर्णनमाह॥सव०३१ जग
मेंअनादिकोअग्यानीकहैमेरोकर्मकरतामैंयाकोकिरियाकोप्रतिपाषीहै अंतरसु
मतिभासीयोगसौंभयोउदासीममतामिटाइपरजाइबुद्धिनांषीहै निरभैसुभाउलीनौ।
अनुभौकोरसभीनौकीनौव्यवहारदिष्टिनिहचेमेंराषीहै भरमकीडोरीतोरीधरमको।
भयोधोरीपरमसौंप्रीतिजोरीकरमकोसाषीहै॥३॥

सए ॥५३॥ जैसें जे दरब ताके तैसे गुन परजाइ ताहीसौं मिलै न काहू आनसौं जीव वस्तु चेतनक
रम जड जाति भेद अमिल मिलाप ज्यौं नितंब जुरै कानसौं ऐसौ सुविवेक जाकै हिरदै प्रगट भ
यो ताको भ्रम गयो ज्यौं तिमिर भाग्यो भानसौं सोई जीव करमको करता सो दीसै पै अकरता कह्यौ १
है सुद्धताके परवानसौं ॥५४॥ अथ जीव पुद्गल लक्षन भेद कथन ॥ छप्पय ॥ जीव ग्यान गुन
सहित आपगुन परगुन ग्यायक आपा परगुन लखै नाहि पुदगल इहि लायक जीव दरव चि
द्रूप सहज पुदगल अचेत जड जीव अमूरति मूरतीक पुदगल अंतर वड जव लग न
होइ अनुभव प्रगट तव लग मिथ्यामति लसै करतार जीव जड करमको सुबुद्धि विका
स यह भ्रम नसै ॥५५॥ अथ कर्त्ता कर्म क्रिया स्वरूप कथन ॥ दोहा ॥ करता परनामी दरव
करम रूप परिनाम । किरिया परजैकी फिरनि वस्तु एक त्रय नाम ॥५६॥ कर्त्ता कर्म क्रि
या स्थापना ॥ दोहरा ॥ एक करम करतव्यता करै न करता दोइ दुधा दरव सत्ता सधी ए
क भाव क्यौं होइ ॥५७॥ अथ कर्त्ता कर्म क्रिया व्यवरन ॥ सवैया ३१ ॥ एक परिनामके न करता
दरव दोइ परिनाम एक दर्व न धरतु है एक करतूति दोइ दर्व कबहू न करै दोइ करतूति
एक दर्व न करतु है जीव पुदगल एक खेत अवगाही दोउ अपने रूप कोउ न टरतु है
जड परिनामनिको करता है पुदगल चिदानंद चेतन सुभाउ आचरतु है ॥५८॥ अ
थ समकित मिथ्यात अवस्था कथन ॥ सवैया ३१ ॥ महा धीठ दुखको वसीठ परदर्व रूप अंधकूप
काहूपे निवार्यो नहि गयो है ऐसो मिथ्याभाव लग्यो जीवको अनादिहीको याते अहं
बुद्धि लिए नाना भांति भयो है काहू समै काहूको मिथ्यात अंधकार भेदि ममता उछेदि ८
सुद्ध भाव परिनयो है तिनही विवेक धारि बंधको विलास डारि आतम सकतिसों जग।

षारीजी तग्पांनवयीये तैसेंघटपिंडमेंचिंतावंता अग्पांनरूपग्पांनरूपजीवतेद ग्पांनसैंपरष १
ये तरमकोकरतादै चिदानंदरव विचारकरतारसावनांषीये ॥१५॥ अथकर्तेववरन॥
दोहरा॥ग्पानसरूपीआतमा करैग्पांननहीऔर दर्वकर्मचेतनकरै यहविवहारीदौर॥
॥१७ अथशिष्यप्रश्नकर्त्तेवकथन॥ स०तै० पुद्गलकर्मकरै नहीजीवकहातुममेंसमझीनही
तैसी कौनकरैयहरूपकहो अबकोकरताकरनीकहूंकैसी आपहीआपमिलेविछुरै-
जडक्योंकरिमोमनसंसयऐसी शिष्यसंदेहनिवारनकारन वातकहैगुरुहैकछुजैसी॥
१९ अथगुरुउत्तरकथन॥दो० पुदगलपरनांमीदरव सदापरिनमेंसोइ यातेंपुदगलकर-
मको पुदगलकरताहोइ॥१९॥ अथशिष्यउवाच अडिल्ल॥ग्पानवंतकोभोगनिर्जराहेतुहै अ-
ग्पानीकोभोगबंधफलदेतुहै यहअचरिजकीवातहियेनहीवुझैको शिष्यगुरुसमझावहु १
२०॥ अथगुरुउत्तरकथन॥ स०ई०॥ दयादानपूजादिकविषयकसायादिक दोऊकर्मभो-
गपैं दुहूंकोएकषेतुहै ग्पानीमूढकरमकरमकरतदीसै एकसैपैपरिनांमभेदन्यारोर-
फलदेतुहै ग्पानवंतकरनीकरैपैंउदासीनरूपममतानधरैतातेनिर्जराकोहेतुहै वहै
करतूतिमूढकरैपैंमगनरूप अंधभयोममतासोंबंधफललेतुहै २१ अथमूढकर्त्तेवका
थन॥कलानदृष्टांत॥ छप्पय॥ ज्योंमाटीमहकलसहोनकीसकतिरहैध्रुव दंडचक्रचीव
रकुलालवाहिजनिमित्तहुव त्योंपुदगलपरवानपुंजवरगनाभेषधरि ग्पानावरनादिकस्व
रूपविचरंतविविधपरि वाहिजनिमित्तवहिरातमा गहिसंसे अग्पानमत जगमाहिंअहंकृ-
तभावसोंकरमरूपहैपरिनमत २२ अथसुधानुभवमहात्मकथन स०तेई०॥जेनकरैनयप ९
विवादधरैनविषादअलीकनभाषै जेउदवेगतजेघटअंतरसीतलभावनिरंतरराषै जेन-

जैनग्रनीमुनतेद्रक्रियारत आकुलतामनकीसवनाशे वे जगमेंथरिआतमध्यांनअपंडितपांन-
सुधारसवाखे॥२३॥ अथनिश्चेअवव्हारनयप्रमांणसापेक्षकथन॥सं०ई०॥विवहारदृष्टिसों
विलोकतवंध्योसोदीसेनिह्चेनिहारतनवंध्योयहकिनहीं एकपक्षसोंअवधसदाहेकपक्षअ
पतेअनादिधरेईनही कोउकहेसमलविमलरूपकोउकहेचिदानंदतैसोईवषांन्योजसोजि
नहीवंधोमनिकलामांनेउभंनेकरतेहुजानेसोईरूपानवंतजीवततपायोतिनहीं॥२४॥अथ
समरसीभावप्रसंसाकथंसं०ई०॥अथमनियतनयज्योविवहारनयदुहुंकोफलावतहेदुफले
हेज्योंज्योंनयफलैत्योंत्योंमनकेकलोलफलेचंचलसुभाइलोकालोकलौंउछलेहे असीनय
कक्षाताकोपक्षतजिग्यांनीजीवसमरसीभएएकतासोंनहिटलेहैं महामोहनासिसुद्धअनु
भौअभ्यासिनिजबलपरगासिसुषरासिमांहिरलेहैं॥२५॥अथसम्यकस्वरूपलक्षण॥सं०
ई०॥ जैसेंकाहूबाजीगरचौहटेबजाइढोलनांनारूपधरिकेभगलविद्याठानीहे तैसेमेंअ
नादिकोमिथ्यातकीतरंगनैतिसोंतरंगमेंधाइवजकाहूनिजमांनीहे अवग्यांनकलाजागी-
भरमकीदृष्टिभागीअपनीपराईसवसौजपहचानीहे जाकेउदोतपरवानऐसेभांतिभा
ईनिहचेमेंहमारीजोतिसोईहमजांनीहे॥२६॥अथसुधानुभवस्थितवर्नन्यांनचित्तसं०२०
जैसेंमहारतनकीयोतिमेंलहरउठैजलकीतरंगजेसेंलीनहोइजलमें तैसेंसुधआतमद
रवपरजाइकरिउपजैविनसैथिररहेनिजथलमें ऐसोअविकलपीअजलपीआनंदरूप
अनादिअनंतगहिलीजेएकपलमें ताकोअनुभवकीजेपरमपीयूषपीजेवंधकोविलासडारि
दीजेपुद्गलमें॥२७॥अथअनुभवप्रसंसा॥सं०ई०॥द्रवकीनयपरजाइनयदोऊनय
श्रुतग्यानरूपश्रुतग्यानतोपरोषहै सुधपरमातमकोअनुभौप्रगटतां

मांन अनुतौ अदोषद्दे अनुतौ प्रवान तगवान ३ रूप ३ रांत ग्यानघन महासुषदे परम पवित्र।
यो अनंत नाम अनुतौके अनुतौ विनान कर्त्तौ और गौर मौपद्दे २८ अब अनुतव को दृष्टांत सव
इण॥ जैसे एक जल नांना रूप दरवानु जोगत यो वजूत्तौ तिपद्दि वानो न परत्र है फिरि काल पाइ
दरबानु योग हरि होत अपने सहज नीवे मारग दरत्र है तैसे यह चेतन पदारथ वितावतासौं ग।
तियो न तेप तव तावरि नव त्रहै सम्यक सुतान पाइ अनुतौके पंथ धाइ बंध की जुगति त्याति मुक्
ति करति है॥२९॥ अब मिथ्यादृष्टि लक्षन का सव दोहरा॥ निसदिन मिथ्याभाव बहु धरै मिथ्या।
ती जीव। तातै तावित करम कौ करता कह्यो सदीव॥३०॥ अब मूढ कर्म को कर्त्ता ग्याता अक
र्त्ता ग्याता अकर्त्ता यह कथन॥ चौपई॥ करै करम सोई करतारा जो जानै सो जाननहारा जो करत १
नहि जानै सोई जानै सो करता नहि होइ॥३१॥ अब ग्याता अकर्त्ता कथन॥ सोरठा॥ ग्यान मिथ्यात
न एक नहि रागादिक ग्यांन महि ग्यांन करम अतिरेक यो ग्याता कर्त्ता नही॥३२॥ अब जीव द्रव्य क
र्म को अकर्त्ता कथन छप्पै॥ करम पिंड अरु राग ताव मिलि एक होंहि नहि दोऊ तिन्न सरूप व
सहि दोऊ न जीव महि करम पिंड पुग्गल वितावर भावादि मूढ भ्रम अलष एक पुग्गल अनंत किम ले
धरहि प्रकृति सम निज निज विलास पुत्त जगत महि यथा सहज परिनमहि तिम करतार जी।
व जड करम को मोह विकल जन कहहि हिम॥३३॥ अब सम्यक्त प्रस्ताव कथन छप्पै॥ जीव
मिथ्यात न करे ताव नहि धरै त रम मल ग्यान रस मरमैं होइ करम्मादिक पुग्गल असंख्यात प
रदेस सकति जगमगै प्रगट अति चिद विलास गंभीर धिर विमल मति जब लगु प्रबोध घटि महि उ
दित तब लगु अनय न पिष्यिये जिम धरम राज वर्तंत पुर जह तह नीति परिष्यियै॥३४॥ इति श्री
नाटिक समयसार कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार समाप्त॥ दोहरा॥ करता किरिया करम को प्रग। १०
ट बषांन्यो मूल अब बरनौं अधिकार यह पाप पुन्य सम तूल॥३५॥ अब ग्यांन बंधकाजावतौ।

.वर्नन॥कवित्तछंद॥जाकेउदै होतघटअंतरविनसैमोहमहातमरोक सुभअरुअसुभकरम
कोउविधा मिटैसहजदासैअरुषोक जाकीकलाहोतसंपूरनप्रतिभासैसबलोकअलोक
सोप्रबोधससिनिरषि बनारसीसीसनवाइदेतपगधोक॥३६॥अबसुनोसुतएकतीकरनस
ई०॥ जैसैंकाहूचंडालीजुगलपुत्रजनेतिनएकदीयोबाम्हनकूंएकघरिराष्योंहै वांमनकहा
योतिनमद्यमांसत्यागकीयोचंडालकहायोतिनमद्यमांसचाष्योंहै तैसैंएकवेदनीकरम
केजुगलपुत्रएकपापएकपुंननामउनिन्तनाष्योंहै दुहमांहिदौरधूप दोऊकर्मबंधरूप तांत
ग्यानवंततिनकोकछूनहिंचाष्योंहै॥३९॥ अबशिष्यप्रश्न॥चौपईछंद॥ कोउशिष्यकहैगुरुपं २
ही पापपुन्नदोऊसमनांहि कारनरसस्वभावफलन्यारे एकअनिष्टलगएकप्यारे॥४०॥अ
बशिष्यकवचन॥स०॥३१॥ संकलेसपरिनामसोंपापबंधहोइ विसुद्धसोंपुन्नबंधहेतुभेदमांनी
यै पापकेउदैअसाताताकोहैकटुकस्वाद पुंनउदैसातामिष्टरसभेदजांनीयै॥ पापसंकल
सरूपपुंनहैविसुद्धरूप दुहूंकोसुभावभिन्नभेदयोंवषांनिये पापसोंकुगतिहोइपुंनसों
सुगतिहोइ ऐसोफलभेदपरतक्षपरवांनीयै॥४१॥ अबगुरुउत्तरवचनयथा॥ स०ई०॥
पापबंधपुंनबंधदुहूंमैंमुकतिनांहि कटुकमधुरस्वादपुग्गलकोपेषियै संकलेसविसुद्ध
सहजदोऊकर्मचालकुगतिसुगतिजगजालमैंविसेषियै कारनादिभेदतोहिसूझतमिथ्या १
तमांहि ऐसोद्वैतभावग्यानदिष्टिमैंनलेषियै दोऊमहाअंधकूपदोऊकर्मबंधरूप दुहूंको
विनासमोषमारगमैंदेषियै॥४२॥ मोक्षपद्धतिरूपस०॥३३॥सीलतपसंयमविरतिदांन
पूजादिक अथवाअसंयमकषायविषैभोगहै कोउसुभरूपकोउअसुभस्वरूपमूलवस्तु
केविचारतदुविधकर्मरोगहै ऐसीबंधपद्धतिवषांनीवीतरागदेव आतमधरममैंकरमत्या-
गयोगहै भौंजलतरैयारागद्वेषकोहरैया महामोषकोकरैयाएकसुद्धउपयोगहै॥४३॥अ॥

घ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर ॥ सवइया ॥ सिष्य कहै स्वामी तुम करनी असुभ सुभ कीनी है निषेध मेरे संसे मन मांही है मोष के सधैया ग्याता देसविरती मुनी तिनकौं अवस्था तो निरावलंबनां ही है कहे गु रु करम कौ नास अनुभौ अभ्यास ऐसौ अवलंब उनही कौ उनपांही है निरुपाधि आतमसमाधि सोई सिवरूप और दौर धूप पुदगलपरछांही है ॥ ४४ ॥ अथ बंध मोक्ष स्वरूप कथन ॥ सवैया तेईसा ॥ मोष स्वरूप सदा चिनमूरति बंधमई करतूति कही है जावत काल बसै जड़ चेतन तावत सो रस रीति गही है आतम कौ अनुभौ जब लौ तब लौं सिवरूप दसा निबही है अंध भयो करनी जब ठानत बंध विथा तब फैलि रही है ॥ ४५ ॥ अथ मोक्ष मार्ग निरूपन ॥ सोरठा ॥ अंतरदृष्टि लषाउ अरु सरूप कौ आचरन ए परमातम भाव सिव कारन एई सदा ॥ ४६ ॥ अथ बंध मार्ग निरूपन ॥ सोरठा ॥ करम सुभासुभ दोइ पुदगल पिंड विभाव मल इनसौं मुकति न होइ नांही केवल पाइये ॥ ४७ ॥ अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथन सवईया ॥ कोऊ शिष्य कहै स्वामी असुभ क्रिया असुद्ध सुभ क्रिया असुद्ध अरु क्रिया सुद्ध तुम ऐसी क्यों न वरनी गुरु कहै जब लौं क्रिया के परिनाम रहै तब लौं चपल उपयोग धरनी थिरता न आवै तौ लौं सुद्ध अनुभौ न होइ यातें दोऊ क्रिया मोष पंथ की कतरनी बंध की करैया दोऊ दुहू में न भली कोऊ बाधक विचार में निषिध कीनी करनी ॥ ४८ ॥ अब ग्यान मोक्ष मार्ग है यह कथन ॥ सवईया ॥ मुकति के साधक कौं बाधक करम सब आतम अनादि कौ करम मांहि लुक्यौ है एते पर कहै जो कि पाप बुरौ पुन्य भलौ सोई महा मूढ़ मोष मारग सौं चुक्यौ है सम्यक सुभाउ लिए हिए में प्रगट्यौ ग्यान ऊरध उमंगि चल्यौ काहू पै न रुक्यौ है आरसी सौ उज्जल बनारसी कहत आप कारन सरूप ह्वै कै कारिज कौं ढुक्यौ है ॥ ४९ ॥ सवईया जौ लौं अष्ट कर्म कौ विनास नांही सरवथा तौ लौं अंतरातमा में धारा दोइ वरनी एक ग्यान धारा एक सुभासुभ कर्म धारा दुहूं की प्रकृति न्यारी न्यारी न्यारी धरनी इतनौ विसेष जु करम धारा बंध ११
रूप पराधीन सकति विविध बंध करनी ग्यान धारा मोक्ष रूप मोक्ष की करनहार दोष की हर

तौसैं मुद्रतरती॥४८॥ अब स्याद्वादप्रसंसा॥ सवइया॥ अमृतचन्द्र मुनिकौ टेके मैं किंत मोया
ऐसें जीव किकल मिथ्यातकौ गवलैंनै ग्यानपदगदकोदै आतमा अवध मैं अनन्तु वेद ना
तेके दूर्दैं देस्वलैनै यथावौ अपकरमकरपंनमनान धन रद भावधान अनमानटको सद
में तईतव मागरके ऊपरि कोति रजीव जिन्दकाति वान स्यादवादकै मव जन॥४९॥ अ
धक्कतथा विवरान क्रियावंतेतो॥सवइया॥ जैसे मतवानकौ कैकद आर कर औरत सेमु
दशानी विपरीति ताधर अदे अस्तुत करम वधकारन वपानें नानकृति किंदे अनुसरी॥
तिआवरतेदे अंतर स्तुहिति तई मूटता विसर गई ग्यानकौ उद्योत चननि मनहर उदौ
करनी सौतिन्नरंद आतम सरूपादै अडनौ अरंति रसको ककुकरन उदै॥५०॥ इतिश्री
समयसारको ध्रुनपापएकत्वकरनद्वार समाप्त॥ दोहरा॥ धुनपापकीएकता वरनीआ
गमअनूप अव आश्रव अधिकारकछु कहों अध्यातमरूप॥५१॥ अव ज्ञानवलवरनन
सवइया॥ जेते जगवासी जीवथावरजंगमरूप तेते निजवलिकनिरांमकलैतीनिकें मसुअ
भिमानी ऐसो आश्रव अगाध जोधारोपिरनवंत गदोनयामा छमारिकै नायैनि द्रवात
कै अवानक परमधाममान नाम सुतल मवावौ वलफारिक आश्रवपद्ध्यारनव नतरि
डार्यो ताद्धिनिरपियनारसी नमत करजोरिकै॥५२॥ अव विविध आश्रवुलक्ष्मान ग्यानव्रता
नवरनन सवैया तेईसा॥ दर्वितआश्रवजोकहियेजमपुग्गलजीवप्रदेसगरासे भावितआ
श्रव सोकहियेजहरागविरोधविमोहविकासे संमगपद्धतिसोकहियेजहदर्वितभावित
आश्रवनासे ग्यानकलाप्रगटै तेहिथानकअंतरवाहरऔरनभासे॥५३॥ अवग्यानलछ
नकथन॥ चौपई॥ जोदर्वाश्रवरूपनहोई जहभावाश्रवभावनकोई जाकीदसाग्यानमैंउ दि

हियै सो ग्याता निराश्रव कहियै ॥५४॥ अब ग्याताको समर्थपनो ताकौ वर्णन ॥ सवईया ॥ जेते मनन
गोचर प्रगट बुद्धिपूरवक तिन्ह परिनामनिकी ममता हरतु है मन सो अगोचर अबुद्धिपूरव
क ताउ तिन्हके विनासिकौं उद्यम धरतु है याहि भांति पर परिनतिको पतन करै मोषको जतन
करै तौ जल लतरतु है ऐसे ग्यानवंत ते निराश्रव कहावै सदा जिन्हको सुजस सुविचछन करतु
है ॥५५॥ अब ग्यानप्रभाव कथन सवईया तेईसा ॥ ज्यौं जगमें विचरै मतिमंद सुछंद सदा वरतै बुध
तैसे चंचलचित्त असंजत वैन सरीर सनेह जथावत जैसे भोगसंयोगपरिग्रहसंग्रह मोह वि
लास करै जह ऐसे रहै तत ग्यान अवारय जो है सम्यकवंत निराश्रव ऐसे ॥५६॥ अबच रूलरा
कथन सवईका ॥ पूरव अवस्था जे करम वंध कीने अब तेई उदै आइ नाना भांति रस देत है के
ई सुभ साता कोई असुभ असाता रूप दुहूं सौं न राग न विरोध समचेत है जथाजोग क्रिया
करै फलकी न इच्छा धरै जीवनमुकतिको विरद गहि लेत है याते ग्यानवंतकौ न आश्रव कहत
कोऊ मुद्धता सौं न्यारे भए सुद्धता समेत है ॥५७॥ अब राग द्वेष मल न्याय सुबोध ॥५८ अब राग
द्वेषफल कथन ॥ दोहरा ॥ राग विरोध विमोह मल एई आश्रव मूल एई करम बढाइकैं करे
धरमकी भूल ॥५९॥ अब ग्याता निराश्रव कथन ॥ जहां न रागादिक दसा सो सम्यक परिना
म याते सम्यकवंतको कह्यो निराश्रव नाम ॥६०॥ अब ग्याता विलास कथन ॥ सवईकण
जे केई निकट भव्यरासी जगवासी जीव मिथ्यामत भेदि ग्यान भाव परिनये है जिनकी सुदि
ष्टिमें न राग द्वेष मोह कहूं विमल विलोकनि मैं तीनौ जीति लए है तजि परमाद घट सोधि जे
निरोध जोग सुद्ध उपजोगकी दसामें मिलि गए है तेई वंधपद्धति विदारि परसंग डारि आपमें १२
मगन ह्वैकैं आपरूप भए है ॥६१॥ अब उपसमी क्षयोपसमी अवस्था कथन सवईया इकतीसा ॥

जेते जीव पंडित षयोपसमी उपसमी तिन्हकी अवस्था जौं लोहारकी सडासी है (षिन आग-)
षिन पांनी मांहि तैसें एक षिनमें मिथ्यात षिन ग्यानकला तासी है जौ लौं ग्यांन रहै तौ लौं सिथिल
चरन मोह जैसे कीले नागकी सकति गति नासी है आवत मिथ्यात तव नानारूप वंध करै
ज्यौं उकीले नागकी सकति परगासी है ॥८२॥ अथ सुद्धनय प्रसंसा ॥ दोहरा ॥ यह निचोर
या ग्रंथकौ यहै परम रस पोष तजै सुद्धनय वंध है गहै सुद्धनय मोष ॥८३॥ अथ जीव विछ- 2
सवर्णनं ॥ करम के चक्र मैं फिरत जगवासी जीव ह्वै रह्यौ वहिरमुख व्यापत विषमता अंत-
र सुमति आई विमल वडाई पाई पुग्गल सौं प्रीति छुटी माया सौं ममता सुद्धनै निवास
कीनौ अनुभौ अभ्यास लीनौ ... नौ चित समता ॥८४॥ अथ सम्यक प्रसं- [illegible]
सा कथनं ॥ सवैया ॥ इकतीसा ॥ जाकै परगास मैं न दीसै राग द्वेष मोह आश्रव मिटत नहीं बंधकौ त-
रस है तिहूं काल जामैं प्रतिबिंबित अनंत रूप आपहूं अनंतानंत तैं सरस है भावश्रु-
त ग्यान परवान जो विचार वस्तु अनुभौ करै जहां न वानीको परस है अतुल अखंड अविचल
अविनासी धाम चिदानंद नाम ऐसो सम्यक दरस है ॥८५॥ इति श्री समयसारको आश्रवद्वा- ?.
र समाप्त ॥ दोहरा ॥ आश्रवको अधिकार यह कह्यौ जथावत जेम अथ संवर वरनन क-
रैं सुनौ भविक धरि प्रेम ॥८६॥ अथ ग्यान वर्णनं सं० इका ॥ आतमको अहित अध्यातम रहि-
त ऐसौ आश्रव महातम अपंड अंडवत है ताकौ विसतार गिलवेकौं परगट भयौ ब्रह्मंडकौ
विकासी ब्रह्मंडवत है जामैं सब रूप जो सबमैं सब रूप सौं पै सबनि सौं अलिप्त आकास पंडवत है सोहै
ग्यांन भांन सुद्ध संवरकौ भेष धरै ताकी रुचि रेषकौं हमारी दंडवत है ॥८७॥ अथ भेद ग्यांन
ई. महिमा कथन सं० इका ॥ सुद्ध भेद ग्यान भ्रावा चित्त तैं दु विग्यान सुत्री छैन आरा अंतर ते हसु
तात विसातक रे जड चेतन रूप दुफार सो जिन्हके नरमें उपज्यों न रुचै तिन्हकों परसंगस

सद्दारा आतमको अनुभौ करि ते हरषे परषे परमातमधारा। अब सम्यक सामर्थता कथन।
सवैया तेईसा।। जो कबहूं यह जीवपदारथ औसर पाइ मिथ्यात मिटावे सम्यक धार प्रवाह बहै गुन
ग्यान उदै मुष ऊरध धावे तो अभिअंतर दर्वित भावित कर्मकलेस प्रवेस न पावे आतम साधि
अध्यातमके पथ पूरन व्हे परब्रह्म कहावे॥ ९॥ अथ सम्यकदृष्टि महिमा कथन॥ सवैया तेईस १
भेदि मिथ्यात सुवेदि महारस भेदविग्यान कला जिन्ह पाई जो अपनी महिमा अवधारत त्यागक
रै उर सों जु पराई उद्धत रीति फुरी जिन्हके घट होति निरंतर जोति सवाई ते मतिमान सुव
र्ण समान लगे तिनको न सुभासुभ काई॥ १०॥ अथ भेदग्यान महिमा कथन॥ अडिल्ल॥ भे
दग्यान संवर निदान निरदोष है संवर सो निर्जरा अनुक्रम मोष है भेदग्यान सिवमूल जगतम
हि मानीये जदपि हेय है तदपि उपादेय मानीये॥ ११॥ अथ स्वरूप कथन॥ दोहरा॥ भेद
ग्यान तबलों भलो जबलों मुकति न होइ परम जोति परगट जहां तहां विकलप न कोइ॥ १२॥
अथ भेदग्यान महिमा॥ चौपई॥ भेदग्यान संवर जिन पायो सो चेतन सिवरूप कहायो भे
दग्यान जिन्हके घट नांही ते जड जीव बंधे घट मांही॥ १३॥ अथ भेदग्यान महातम कथन।
दोहरा॥ भेदग्यान साबुन भयो समरस निर्मल नीर धोबी अंतर आतमा धोवे निज गुन चीर
॥ १४॥ अथ भेदग्यानको कर्तव्यता॥ सवैया ३१॥ जैसे रजसोधा रज सोधिके दरब काढै पावक
कनक काढि दाहत उपलको पंकके गरभमें ज्यों डारिये कतक फल नीर करे उज्जल नितारि
डारे मलकुं दधिको मथैया मथि काढे जैसे माषनको राजहंस जैसे दूध पीवे त्यागि जलको ते
से ग्यानवंत भेदग्यानकी सकति साधि वेदे निज संपति उछेदे परदलको॥ अथ भेदग्यानमो १
क्षमूलत्व कथन॥ छप्पय॥ प्रगट भेदविग्यान आपगुन परगुन जाने परपरनति परित्या
ग सुद्ध अनुभौ थिति ठाने करि अनुभौ अभ्यास सहज संवर परगासे आस्रवद्वार निरोधि करम १२
घन तिमिर विनासे छय करि विभाव समभाव भजि निरविकलप निज पद गहे निरमल।

विसुद्धता सूतसू थिरपरम अतीद्रिय सुष लहै॥ ७६॥ इति नाटिक समैसार को संवरद्वार समाप्त
दोहरा॥ वरनी संवर की दसा यथा जुगति परवांन मुकति वितरनी निर्जरा सुनौ तविक थसिक २
न॥ चोपई॥ जो संवर पद पाइ अनंदै॥ जो पूरव कृत कर्म निकंदै॥ जो अफंद है वहुरि न फं
दे सो निरजरा वनारसी वंदे॥ १॥ अथ समकित महिमा कथन॥ दोहरा॥ महिमा सम्यक ज्ञान
की अरु विराग वल जोइ क्रिया करत फल भुंजते करम वंधन हि होइ॥ २॥ अथ समक महि
मा कथन सवईया॥ जैसे रुप को उक सरूप करे नाव कर्म को नकौ कहावे ता सौ कौं रक है
रंक है जैसे वित्त धारिनी विचारे वित्त वारवाको जारहु सो प्रेम तरुता सो थितवंक है जैसे भा
इ वालि करु घाइ करे लालमाल जोनैंता हि औरको जादुपि वाकै अंक है तैसे ग्यानवंत नाति
ना ना करतूति वानै किरिको तिन्न मानै याते निकलंक है॥ ३॥ अन सवैया॥ जैसे निसिवासर
कमल रहे पंक ज कहावे पैं न वाके दिग पंक है जैसे मंत्रवादी विषधर सों गहावे गात मंत्रक ?
सकति वाके विना विष डंक है जैसे जीभ गहे चीकनाइ रहे रुषे अंग पानी मैं कनक जैसे से
काई सों अटंक है तैसे ग्यानवंत नाना रीति करतूति ठांनै किरिको तिन्न मानै याते निकलं
क है॥ ४॥ अथ ग्यान वैराग्य सक्ति वर्ननं॥ सोरठा॥ पूर्व उदे सनमंध विषे रोगवै समकि
ती करे न नूतन वंध महिमा ग्यान वैराग की॥ ५॥ अथ ग्याता की अवस्था॥ सवईया॥ सम्य
कवंत सदा उर अंतर ग्यान वैराग उभे गुन धारै जासु प्रताप लषे निज लक्षन जीव अजीव दसा २
निरवारै आतम को अनुभौ करि कै थिर आपु तरे अरु औरनि तारै साधि सुदर्व लहै सि
व सर्व सु कर्म उपाधि व्यथा वमि डारै॥ ६॥ अथ मिथ्या द्रष्टी अवस्था कथन॥ सवईया॥ जो
नर सम्यक वंत कहावत सम्यक ग्यान कला नहि जागी आतम अंग अवंध विचारत धार
त संग कहे हम त्यागी भेषधरे मुनि राज पटंतर अंतर मोह महानल दागी सुन हिये करत
ति करे पहि सो सठ जीव न होइ विरागी॥ ७॥ अथ मूढ क्रिया वर्ननं मा ह सवईया॥ मंध

वैचस्वैसुसपथ लपै जगमें विवहार सुपंथ। साधि निरंजन देइ सु सीषन लेइ अदंत। नग्न धरै
गफिरै तजि संग छकै सरवंग मुंत्रार समस्त। एक रहति करै सठ पै समुझै न अनातम आत-
मतत्ता॥५५॥ पुन मूढवर्णनं॥ ध्यांन धरै करै इंद्रिय निग्रह विग्रहसौं न गनैं निज नत्ता। त्या-
ग विभूति विभूति मडै तन जोग गहै भवभोग विरत्ता। मौंन रहै लहि मंद कषाय सहै बंधन हो
इन तत्ता॥ एकरतूति करै सठपै समुझै न अनातम आतम सत्ता॥५६॥ पुन मूढवर्णनं॥
चौपई॥ जो बिनु ग्यान क्रिया अवगाहै। जो बिनु क्रिया मोषपद चाहै। जो बिनु मोष कहै मैं सुषि-
या। सो अज्ञान मूढनि में मुषीया॥५७॥ अथ महामूढ॥ व्यवस्था कथन सवैया इकतीसा॥ ज-
गवासी जीवनिसौं गुरु उपदेस कहै तुमें इहां सोवत अनंतकाल बीते हैं। जागो ह्वै सचेत चि-
त समता समेत समेत चित केवल वचन जामें अक्षरस जीते हैं। आवो मेरे निकट बताऊं मैं
तुम्हारे गुन परम सुरस भरे करमसौं रीते हैं। ऐसे बैन कहै गुरु तऊ ते न धरै उर मित्र कैसे
पुत्र किधौं चित्र केसे चीते हैं॥५८॥ दोहरा॥ एते पर बहुरौ सुगुरु बोलै वचन रसाल। सैन-
दसा जागृतदसा कहै दुहूंकी चाल॥५९॥ सैनदसा वर्णनं॥ सवईया॥ काया चित्रसारी
में करम परजंक भारी मायाकी सवारी सेज चादर कलपना। सैन करै चेतन अचेतनता नीं-
द लीये मोहकी मरोर यहै लोचनको ढपना। उदै बल जोर यहै स्वासको सबद घोर विषै
सुषकारजकी दौर यहै सपना। ऐसी मूढ दसामें मगन रहै तिहुंकाल धावै भ्रमजालमें न पा-
वै रूप अपना॥६०॥ अथ जागृतदशा वर्णनं॥ सवैया॥६१॥ चित्रसारी न्यारी न्यारी पर
यंक न्यारी सेज न्यारी चादर भी न्यारी इहां झूठी मेरी थपना। अतीत अवस्था सैन निद्राव
ही कोउ पै न विद्यमान पलक न यामें अब छपना। स्वास औ सुपन दोऊ निद्राकी अलंग
बूझै सूझै सब अंग लषि आतम दरपना। त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागि ताले

दिष्टि मो जिकैं संताले रूप आपनो अथ ज्ञान स्वरूप शिष्य कथन दोहरा॥इहि विधि जे जागे पुरुष
ते शिवरूप सदैव जे सोवहि संसार में ते जगवासी जीव॥८२॥ आतम द्रव स्तुति कथन॥ चौप
ई तो पद लय है सो पद सेऊ अनुप जिहि पद परसत और पद लगे आपदा रूप॥८३॥ अथ सं
सार वर्ननं॥सवईया॥ जब जीव सोवे तब समझे सुपिन सत्त वादी झूठ लागे जब जागे नींद षोइ
कैं जागे कहै यह मेरो तन यह मेरी सो जता झूठ व मानत मरन थिति जाइके जाने निज मरना
तब समझे झूठ बूझे जब और अवतार रूप होइके वाही अवतार की दसा में फिरि यहै पेच याहि
सांति झूठो जग देष्यो हम रोइकें॥८४॥ अथ पाता की क्रिया कथन॥सवईया॥ पंडित विवेकी
लहि एकता की टेक गहि द्वंद अवस्था की अनेकता हरत है मति श्रुति अवधि इत्यादि विक
ल्प मेटि निर्विकल्प ग्यान मन में धरत है इंद्रियजनित सुष दुष सौं विमुष ह्वै के परम के रूप ह्वै कें
करम निर्जरा करत है सहज समाधि साधि त्यागि पर की उपाधि आतम आराधि परमातम करत है॥८
५॥ अथ ग्यान समुद्र वर्ननं॥सवईया॥ जाके उर अंतर निरंतर अनंत द्रव भाव भासि रहे पै सुभाव
न टरत है निर्मल सो निर्मल सु जीवन प्रगट जाको घट में अघट रस कौतुक करत है जामें मति
श्रुति औधि मनपर्जै केवल सुपंच धा तरंगनि उमंगि उछरत है सो है ग्यान उदधि उदार महिमा अ
पार निराधार एक में अनेकता धरत है॥८६॥ अथ पंमो समार्य अप्रासिक कथन॥सवईया॥ कोई क्रूर क
ष्ट सहे तप सौं सरीर दहे धूम्रपान करै अधोमुष ह्वै कै झूले है कोई महाव्रत गहे क्रिया में मगन
रहे वहै मुनि भार पै पयार कैसे पूले है इत्यादिक जीवन कौं सर्वथा मुकति नांहि फिरे जगमां
हिं ज्यौं वयारि के बघूले झूले है जिन्ह के हिये में ग्यान तिन्ह ही कौं निरवांन करम के करतार भर
म में न भूले है॥८७॥ अथ मूढ व्यवस्था वर्ननं॥दोहरा॥ जीन लयो व्यवहार में उकति न उपजै को
इ दीन भयो प्रभु पद जपै मुकति कहां सौं होइ॥८८॥ दोहरा॥ प्रभु सुमिरो पूजो पढ़ो करो

वैवस्वै सुन्तपंथ लैपै जगमें विवहार सुपंथा साधि निरंजन देह सु सीपन लेइ अदंथा नगांथरे
ग फिरै तजि संग छकै सरवंग मुलार समता एक रहै तिकरै सब पै समुझै न अनातम आता-
मसत्ता॥८५॥ पुन: मूढ वर्णनं॥ ध्यान धरै करै इन्द्रिय निग्रह विग्रह सौं न गनै निज नत्ता त्या
ग विभूति विभूति मडै तन जोग गहै तव जोग विरत्ता मौंन रहै लहि मंद कषाय सहै वधबंधनदे
हंतता॥ एक रहैं ति करै सबपै समुझै न अनातम आतम सत्ता॥८६॥ पुन: मूढ वर्णनं॥
चौपई॥ जो बिनु ग्यान क्रिया अवगाहै जो बिनु क्रिया मोषपद चाहै जो बिनु मोष कहै मैं सुषि
या सो अजान मूढनमें मुषीया॥८७॥ अथ मूढ व्यवस्था कथन सवैया इकतीसा॥ ज
गवासी जीवनि सौं गुरु उपदेस कहै तुमैं इहां सोवत अनंतकाल वीते हैं जागौ ह्वै सचेत चि
त समता समेत सुनौ केवल वचन जामै अक्षरस जीते है आवौ मेरे निकट बताऊं मैं
तुम्हारे गुन परम सुरस भरे करम सौं रीते हैं ऐसे वैन कहै गुरु तऊ ते न धरै उर मित्र कैसे
पुत्र किधौं चित्र के से चीते है॥८८॥ दोहरा॥ एते पर बहुरो सुगुरु बोलै वचन रसाल सैन
दशा जाग्रतदशा कहै दुहूं की चाल॥८९॥ सैन दशा वर्णनं॥ सवईसा॥ काया चित्र सारी
में करम परजंक भारी माया की सवारी सेज चादर कलपना सैन करै चेतन अचेतनता नीं
द लीये मोह की मरोर यहै लोचन को ढपना उदै बल जोर यहै स्वास को सबद घोर विषै
सुकारज की दोर यहै सपना ऐसी मूढ दसा मैं मगन रहै तिहुं काल धावै भ्रम जाल में न पा
वै रूप अपना॥९०॥ अथ जाग्रत दशा वर्णनं॥ सवैया॥९१॥ चित्र सारी न्यारी न्यारी पर
यंक न्यारो सेज न्यारी चादर भी न्यारी इहां झूठी मेरी थपना अतीत अवस्था सैन निद्रा व
हा कोउ पैन विद्यमान पलक न यामें अब छपना स्वास औ सुपन दोऊ निद्रा की अलंग
बूझे सूझै सब अंग लखि आतम दरपना त्यागी भयो चेतन अचेतनता भाव त्यागि ताले

दिष्टिसो जिनकैं संताजे रूप अपनो अवलोकन सुगुरु शिष्य कथन दोहा॥ इहि विधि जे जागे पुरुष
ते शिवरूप सदैव जे सोवहि संसार में ते जगवासी जीव॥१२॥ आतम द्रव्य स्तुति कथन॥ जो प
द सो पद त्यागहु रे सो पद सैंकु अनूप जिहि पद परसत और पद लगे आपदा रूप॥१३॥ अथ सं
सार वर्ननं॥ स० ३१॥ जब जीव सोवे तब समुझे सुपिन सत्य वा दोऊ झूठ लागे जब जागे नींद खोय
कैं जागे कहै यह मेरो तन यह मेरी सो जता झूठ मानत मरन थिति जोइ कै जानें निज मरन।
तब समुझे झूठ बूझे जब और अवतार रूप होइ कै वाही अवतार की दसा में फिरि यह है पे वयाहि
सो ति झूठो जग देख्यो इन टोइ कैं॥१४॥ अथ ग्याता की क्रिया कथन॥ स० ३२॥ पंडित विवेकी
लहि एकता की टेक गहि द्वंद अवस्था की अनेकता हरतु है मति श्रुति अवधि इत्यादि विक
ल्प मेटि निरविकल्प ग्यान मन में धरतु है इंद्रियजनित सुख दुख सौं विमुख है के परम के रूप ह्वै कैं
करम निर्जरतु है सहज समाधि साधि त्यागि पर की उपाधि आतम आराधि परमातम करतु है॥१
५॥ अथ ग्यान समुद्र वर्ननं॥ स० ३३॥ जाके उर अंतर निरंतर अनंत द्रव्य भाव भासि रहे पै सुभाव
न टरतु है निर्मल सो निर्मल सु जीवन प्रगट्यो जाके घट में अघट रस कौतक करतु है जामें मति
श्रुति औधि मनपर्यै केवल सु पंचधा तरंगनि उमंगि उछरतु है सो है ग्यान उदधि उदार महिमा अ
पार निराधार एक में अनेकता धरतु है॥१६॥ अथ ग्यान ... अभ्यासि कथन॥ स० ३४॥ केई क्रूर क
ष्ट सहैं तप सौं सरीर दहैं धूम्रपान करें अधोमुख ह्वै कें झूले हैं केई महाव्रत गहैं क्रिया में मग
न रहैं वहैं मुनि भार पै पयार के से पूले हैं इत्यादिक जीवन कौं सर्वथा मुकति नांहि फिरैं जग मां
हिं ज्यौं बयारि के बघूले हैं जिन्ह के हिये में ग्यान तिन्ह ही कौ निरवान करम के करतार भर
म में भूले हैं॥१७॥ अथ मूढ अवस्था वर्ननं॥ दोहरा॥ जो नर त्यो व्यवहार में मुकति न उपजै को
इ दीन त्यों ... पद जैपै मुकति कहां सौं होइ॥१८॥ दोहरा॥ ... सुमिरौं ... करो

विविधविवहार मोषसरूपी आतमा ग्यानगम्य निरधार ॥९९॥ अथ पर्याइनिरूपन ॥ सवैया तेईसा
काज विना न करै जिय उद्दिम लाज विना रनमांहि न झूझै डील विना न सधै परमारथ सील विना स
तसौं न अरूझै नेम विना न लहै निहचै पद प्रेम विना रसरीति न बूझै ध्यान विना न थंभै मनकी गति
ग्यांन विना सिवपंथ न सूझै ॥२००॥ अथ ग्यानमहिमा धारक अवस्था ॥ सवैया ३१ ॥ ग्यान उदै जिन्ह
के घट अंतर जोति जगी मति होत न मैली बाहिज दिष्टि मिटी जिन्हके हिय आतम ध्यान कला वि
धि फैली जे जड चेतन भिन्न लषै सुविवेक लीये परषै गुन थैली ते जगमैं परमारथ जानि गहै रुचि
मांनि अध्यातम सैली ॥२०१॥ अथ मोक्षप्राप्ति अवस्था कथन ॥ दोहरा ॥ बहु विधि क्रिया कलेससौं
सिवपद लहै न कोइ ग्यानकला परगाससौं सहज मोषपद होइ ॥२०२॥ ग्यानकला घट २ वसै
योग युगति के पार निज निजकला उदोत करि मुक्त होइ संसार ॥३॥ अथ अनुभव प्रसंसा ॥ कुंड
लीया ॥ अनुभव चिंतामनि रतन जाके हिये परगास सो पुनीत सिवपद लहै दहै चतुरगति वास
दहै चतुरगति वास आस धरि क्रिया न मंडै नूतन बंध निरोध पूब्ब संचित करम विहंडै ताकि न ग
नु विकार न गनु बहो तार न गनु तो जाके हिरदै मांहि रतन चिंतामनि अनुभौ ॥४॥ अथ ग्यान
दिष्टि सामर्थ्य साधन ॥ सवैया ३१ ॥ जिन्हके हियेमैं सत्य सूरज उदोत भयो फैली मति किरन मिथ्यात
मन नष्ट है जिन्हकी सुदिष्टिमैं न परचै विषमता सो समतासौं प्रीति ममतासौं लष्ट पुष्ट है जिन्हके
कटाक्षमैं सहज मोषपंथ सधै मनको निरोध जाके तनको न कष्ट है तिन्हको करमकी कलोल यह
है समाधि डोलै यहै यहै योगासन बोलै यहै मष्ट है ॥५॥ अथ परवस्तुको त्याग ताविसेषता क
थन ॥ सवैया ३१ ॥ आतम सुभाउ परभावकी न सुद्धि ताकौ जाकौ मन मगन परिग्रहमैं रह्यो है
ऐसो अविवेकको निधान परिग्रह राग ताको त्याग इहालौं समुच्चै रूप कह्यो है अब जिन
पर उपकार करिवेकौं काज बज्यो सुगुरु उपदेसको उमह्यो है परिग्रह त्याग परिग्रहकौ वि
सेष अंग कहिवेकौं उद्दिम उदार लहलह्यो है ॥६॥ अथ सामान्य विसेष कथन ॥ दोहरा ॥

सोभ जोग परखस्स सब यह सामान्य विचार विविध विसस नाना विरति यह विशेष विस्तार ॥७॥
अथ ग्यानी अलिप्त कथनं ॥ चौपई॥ सर्व कर्म उदै रस हुजे ग्यान मगन समवान भजे जे उरमें उ
दासीनता लहै लहियै चो गेह बुधपदि गहवंत न कहिये ॥८॥ अथ ग्यानी वांछक कथन सणं
जे जे मन वंछित विलास भोग जगत में ते ते विनासीक सब राखे न रहत हैं और जे जे भोग अभिलाष
चित परिनाम तेऊ विनासीक धारा रूप के वस हूवे है एकतान हुतं मांहि ताते वधा करे नांहि ऐ
से भ्रम कारज को सरूप वहत है संतत रहै सचेत परसौं न करे हेत याते ग्यानवंत को अवंछा
कहे हुजे है ॥९॥ अथ ग्यानी अलिप्त दृष्टांत कथन सणं३१॥ जैसे फिटकडी लोद हरडे की पुट वि
ना स्वेत वस्त्र डारीये मजीठ रंग नीर में ताणे रहे चिरकाल सर्वथा न होय लाल भेदे नहि अंत
र सपेदाई दे वीरमें तैसे समकितवंत राग द्वेष मोह बिनु रहे निसि वासर परिग्रह की भीर में
पूरव करम हरे नोतन न बंध करे जाचे न जगत सुख राचे न सरीर में ॥१०॥ अथ ग्यानी अबंध कथ
सणं३२॥ जैसे काहू देस को वसैया बलवंत नर जंगल में जाय मधु छत्ता को गहतु है याको
लपटाय वस्त्र और मक्षिका पंक बल्की आटसों अडंकित रहतु है तैसे समकिती सि
वसताको सरूप साधे उदै को उपाधि को समाधि सी कहतु है परिग्रह के सहज को सनाह मन में उ
छाह वाको सुष राह उद वेग न लहतु है ॥११॥ अथ ग्यानी अबंध कथनं दोहा॥ ग्यानी ग्यान मगन रहे रा
गादिक मल खोइ चित उदास करनी करै करम बंध नहि होइ ॥१२॥ दोहरा॥ मोह महा तम मल
हरै धरै सुमति परगास मुकति पंथ परगट करै दीपक ग्यान विलास ॥१३॥ ग्यानी दीपक कथ
नं सणं३३॥ जामें धूम को न लेस वात को न परवेस करम पतंगनि को नास करे पल में दसा
को न सनेह को सयोग जामें मोह अंधकार को वियोग याके पल में जामें न तताई नहीं राग क
रताई रंच लहलहै लहै समता समाधि जोग जल में ऐसी ग्यान दीपकी सिषा जागी अभंग
रूप निराधार फुरी पे दुरी है पुदगल में ॥१४॥ अथ ग्यान स्वभाव उपरि दृष्टांत कथनं ॥ सणं॥

जैसो है जो दुख तामें तैसोई सुख ताते सबैको कहवेकाऊको सुख ताउ नगहत है जैसे सरसप कऊ लौ।
विविधि वनेमाटी सो नहीं मैं नितित कऊ लरहत है तैसे ग्यानवंत नाना भोग परिगह जोग करत किलै
सन अग्यानता लहत है ग्यानकला दूनी होइ इंद दुन्न। सुनी होइ रुकनी होइ सो तिथि वनारसीक
हत है ॥१५॥ अथ स्यादवाद स्वरूप कथनं॥ सवइया॥ जो लौं ग्यानको उदोत तो लौं नहि बंध होत वरते मि
थ्यात तब नाना बंध होहि है। ऐसो भेद सुनिकें लग्यो तुं विषै भोगनिसों जोगनिसों उद्दिमकी रीति
तें विछोहीहै सुनु भैया संत तू कहै मैं समकितवंत यहतो एकंत परमेसरकी दोहाइ विषै।
सों विमुष होहि अनुभौ दसा आराहि मोषमग पटोहि ताहि ऐसी मति सोई है ॥१६॥ अथ ग्यानवै।
राग जुगपत वर्ननं॥ चौपई॥ ग्यानकला जिन्हके घट जागी ते जगमांहि सहज वैरागी ग्यानीम।
गन विषै सुषमांहि यह विपरीति संभवै नांही ॥१७॥ दोहरा॥ ग्यान सकति वैराग बल सिवसा
धे समकाल ज्यों लोचन न्यारे रहे निरषे दोऊ नाल॥१८॥ अथ मूढ कर्त्ता कर्म स्वरूप कथनं॥
चौपई॥ मूढ करमको कर्त्ता होवे फल अभिलाष धरे फल जोवे ग्यानी क्रिया करे फल सू
नी लगे न लेप निर्जरा दूनी॥१९॥ बंधे करमसों मूढ ज्यों पाटकीट तन पेम खुलै करमसों
समकिती गोरष धंधा जेम॥२०॥ अथ ग्याताको अकर्त्तव कथनं॥ सवईसा॥ जे निज पू
वकर्म उदै सरहैंगे जे दुषमें न विलाप करे निरबेर हिये तन ताप सहैंगे है जिनके दिढ आ
तम ग्यान क्रिया करिकें फलकों न चहैंगे ते सुविचछन ग्यायक हैं तिन्हकों करता हम
तो न कहेंगे॥२१॥ ग्याता वर्ननं॥ सवईया॥ जिन्हकी सुदिष्टिमें अनिष्ट इष्ट दोऊ सम जिन्हको।
आचार सुविचार सुभ ध्यान है स्वारथको त्यागि जे लगे हैं परमारथकों जिन्हके वनिजमें।
न नफा है न ज्यान है जिन्हकी समझिमें सरीर ऐसो मानियत धानको सो छीलक कृपा
नको सो म्यान है पारषी पदारथके साषी भ्रम भारथके तेई साधु तिन्हहीको जथारथ ग्यान
है॥२२॥ अथ संम्यकवंतको सांहस॥ सवईया॥ जमको सो भ्राता दुषदाता है असाताको

कर्मताकेउदैम्यरपन सादृसा॥ हुवै है सुरगविलासी त्यौं निवासी श्रीपतालवासी भवनिकौं।
तंनमन कंपछर हूउहै नरकोउ जासौं मागैं दुपियै सपत तेसौ डोलत निसंक त्यौं आनंदु।
लह्वउहै सहजसबीरजाको सासुतो सरीन्ग्रौ सौ ग्यानी जीव ग्रात्ज ग्र वाज्ज अचारजकह
उहै॥२२॥ अथ सप्त भय नाम दोहरा॥ इह भय परलोक भय मरन वेदना जात अनरक्ष्य
अगुपत भय अकस्मात भय भात॥२४॥ अथ सप्त भय लछन कथन॥ सवइया॥ दसधा परिग्र
ह वियोग चिंता इह भव दुर्गति गमन भय परलोक मांनियै प्रानन कौ हरन मरन भय कहांव
सोई रोगादिक कष्ट यह वेदना वषांनियै रछक हमारो कोऊ नाही अनरछा भय चोर भै वि
चार अनगुपत मन आनियै अनचिंत्यौ अबही अचानक कहाधौं होइ ऐसो भै अकस्मा
त जगत मैं जानियै॥२५॥ अथ इह भव निवारन कवत्त॥ छप्पै॥ नष सिष मित परवान ग्यान
अवगाह निरष्यत आतम अंग अभंग अंग परधन इम अकृत छिनभंगुर संसार विभव परिवार
भार जसु जहं उतपति तहं प्रलय जासु संयोग विरह तसु परिगह प्रपंच परगट परिषि इह लो-
क तव भय उपजै न चित ग्यानी निसंक निकलंक निज ग्यानरूप निरषंत नित॥२६॥ अथ परलो
क भै निवारन मंत्र छप्पै। ग्यानचक्र मम लोक जासु अवलोक मोष सुष इतर लोक मम नांहि
जिस मांहि दोष दुष पुन्न सुगति पद पायक दो कयं दितपांनि मे अपंडित सिवनायक इ
हि विधि विचार परलोक भय नहि व्यापित वरतै सुषित ग्यानी निसंक निकलंक निज ग्यानरू
प निरषंत नित॥२७॥ अथ मरन भै निवारन मंत्र छप्पय॥ फरस जीभ नासिका नैन अरु श्र
वन अछ इति मन वच तन बल तिनि मास उस्वास आउ थिति ए दस प्रान विनास ताहि जग म
रन कहिजै ग्यान प्रान संजुगत जीव तिहुं काल न छिजै यह चिंत करत नहि मरन
भै भवा नृजिन वरकथित ग्यानी निसंक निकलंक निजग्यानरूप निरषंत

दनाभयनिवारनमंत्र छपै वेदनवारो जीव जाहि वेदंत सो उ जिय यह वेदना अभंग सु तो मम
अंग नांहि विय करम वेदना दुविधि एक सुषमय दुतीय दुष दोऊ मोह विकार पुद्गलाकार ब
हिर मुष जब यह विवेक मन मांहि धरत तब न वेदना भय विदित ग्यानी निसंक निकलंक निज
ग्यान रूप निरषंत नित ॥२९॥ अथ अनरक्षा भयनिवारनमंत्र ॥ छप्पै ॥ जो सुवस्तु सत्ता सरूप
जगमहि त्रिकाल गत तासु विनास न होइ सहज निहचै प्रवान मत सो मम आतम दरब सरवथा नहिं
सहाय धर तिहि कारन रक्षक न कोई रक्षक न कोइ पर जब इहि प्रकार निरधार किय तब अ
नरक्षा भय नसित ग्यानी निसंक निकलंक निज ग्यान रूप निरषंत नित ॥३०॥ अथ अनगुपत भ
यनिवारनमंत्र ॥ छपै ॥ परम रूप परतक्ष जासु लक्षन चिन मंडित पर प्रवेस नहि तांहि मांहि
अगम अषंडित सो मम रूप अनूप अकृत अनमित अटूट धन ताहि चोर किम गहै ठौर नहि
लहै और जन चिंतवत एम धरि ध्यान जब तब अगुपत भय उपसमित ग्यानी निसंक निकलंक
निज ग्यान रूप निरषंत नित ॥३१॥ अथ अकस्मात भयनिवारनमंत्र ॥ छप्पय ॥ सुद्ध बुद्ध अवि
रुद्ध सहज सुसमृद्धि सिद्धि सम अलष अनादि अनंत अतुल अविचल सरूप मम चिद्विल
स परगास वीत विकलप सुष थानक जहं दुविधा नहि कोइ होइ तहं कछु न अचानक जब य
ह विवेक उपजंत तब अकसमात भय नहि उदित ग्यानी निसंक निकलंक निज ग्यान रूप
निरषंत नित ॥३२॥ अथ ग्यानी की अवस्था कथन ॥ छप्पय ॥ जो परगुन त्यागंत सुद्ध निज गुन
गहंत धुव विमल ग्यान अंकूर जासु घट मांहि प्रकास हुव जो पूरब कृत कर्म निर्जरा धार ब
हावत जो नव बंध निरोधि मोष मारग मुष धावत निःसंकितादि जस अष्ट गुन अष्ट कर्म अरि
संहरत सो पुरुष विचक्षन तासु पद बनारसी वंदन करत ॥३३॥ अथ अष्ट अंग के नाम ॥ सो
रठा ॥ प्रथम निसंसै जानि दुतिय अवंछित परिनमन तृतीय अंग अगिलानि निरमल दृष्टि

चेतै वर्गुन॥२४॥ पंच अकथपरदोष थिरीकरन वछमसहजे सनै मंवछलपोष अष्टम अंग
प्रभावना॥२५॥ अथाष्टम अंगलक्षन माह॥ स० इं॥ धर्ममैं न संसै सुभकर्म फलकी न इछा
असुभकौं देषि न गिलानि आनें चितमें सांची द्रिष्टि राषें काहू प्रानीकौ न दोष नाषें चंचलता-
तिथिति गनै वोध चितमें प्यार निजरूपसौं उछाहकी तरंग उठे एइ आठौं अंग जब जागे सा-
मकितमें ताही समकितकौं धरै सो समकितवंत वहै मोष पावे औ न आवै फिरि इहांसं २६
अथ चेतन्य नाटिक कथन स० इ०॥ पूर्व बंध नासै सो तो संगीत कला कासै नव बंध रुधि ता-
ल तोरत उछरिके निःसंकित आदि आठ अंग संग सषा जोरि समता अलाप चारी करै सुरता-
रिकै निरजरा नाद गाजै ध्यान मिरदंग बाजै छक्यो महानंदमैं समाधि रीझि करिकै सत्ता रंग-
भूमिमें मुकत भयो तिहुंकाल नाचै सुद्ध द्रिष्टि नट ग्यान स्वांग धरिकै॥२७॥ इति समयसा-
रकौ निर्जराद्वार समाप्त॥ दोहरा॥ कही निर्जराकी कथा सिवपथ साधनहार अब कछु बं-
धकौ कहौं अलपविस्तार॥२८॥ अथ बंध विदारन समकवर्नेनं॥ सवैया॥ ३॥ मोह
मद्य पाइ जिन संसारी विकल कीने याही ते अजानवान विरद वहतु है ऐसो बंधवीर विक-
राल महाजाल सम ग्यान मंद करै चंद राहु जोग हतु है ताकौ बल भंजिवेकौं घटमें प्रगट
भयो उद्धत उदार जाकौ उद्दिम महतु है सो है समकित सूर आनंद अंकूर ताहि निरषि व-
नारसी नमो करत है॥२९॥ अथ कर्म चेतना ग्यान वर्ननं॥ स० ३१॥ जहां परमातमक-
लाको परगास तहां धरम धरामें सत सूरजकी धूप है जहां सुभ असुभ करमकौ गढास तहां मोह फेर
के विलासमें महा अंधेर कूप है फेली फिरै घटासी छटासी घटामाघट नवीच चेतनकी चेतना दु-
हूकौं घाउ पछुप है बुद्धिसौं न गही जाइ वानीसौं न कही जाइ पानीकी तरंग जैसे पानीमें
गुपत है॥३०॥ अथ बंध निदान कथन स० ३१॥ कर्मजाल वर्गना सौं जगमें न बंधै ५८

बंधइ न कदाचि मन वच काय सौं चेतन अचेतन की हिंसा सौं न बंधइ जीव बंधइ न अउपयो।
ग विषइ विषरोग सौं कर्म सौं अबंध सिद्ध जोग सौं अबंध जिन हिंसा सौं अबंध साधु ग्याता वि-
षै रोग सौं इत्यादिक वस्तु के मिलाप सौं न बंधइ जीव बंधइ एक रागादिक असुद्ध उपयोग सौं
॥४१॥ अथ बंध निदान दिष्टि करन अवस्था॥ सवइया ३१॥ कर्म जाल वर्गना कौ वास लोकाकास मां-
हि मन वच काय कौ निवास गति आउ में चेतन अचेतन की हिंसा वसै पुग्गल में विषै भोग व-
रतै उदै के उरझाउ में रागादिक सुद्धता असुद्धता है अलख की यहै उपादान हेतु बंध के वढाउ
में याही तें विचछन अबंध कह्यौ तिहूं काल राग दोष मोह नांही सम्यक सुभाउ में॥४२॥ अथ
उदिम प्रसंसा सवैया॥३१॥ कर्म जाल जोग हिंसा भोग सौं न बंधइ पै तथापि ग्याता उदिमी वषान्यौ
जिन बैन में ग्यान दिष्टि देत विषै भोग निसौं हित दोऊ क्रिया एक षेत यौं तौ वनै नांही जैन मैं
उदै बल उदिम गहै पै फल कौं न चहै निरदै दसा न होइ हिरदै के नैन मैं आलसी निरुदिम
की भूमिका मिथ्यात मांहि जहां न संभारै जीव मोह नींद सैन मैं॥४३॥ अथ उदै अवस्था वर्न-
नं॥ दोहरा॥ जब जाकौ जैसो उदै तब सो है तिहि थांन सकति मरोरै जीव की उदै महा बलवा-
न॥४४॥ अथ उदै बल वर्णनं॥ सव० ३१॥ जैसें गजराज पर्यौ कर्दम के कुंड बीच उदिम अहूटै पै
न छूटै दुष दंद सौं जैसें लोह कंटक की कोर सौं उरझ्यौ मीन ऐंचत असाता लहै साता लहै
है संद सौं जैसें महा ताप सिर वाहि सौं गरास्यौ नर तकै निज काज उठि सकै न सुछंद सौं तैसें
ग्यानवंत सब जानै न वसाइ कछु बंध्यौ फिरै पूरव करम फंद सौं॥४५॥ अथ यथावस्था वर्ननं॥
चौपई॥ जे जिय मोह नींद में सोवै ते आलसी निरुदिम होवै दिष्टि षोलि जे जगे प्रवीना तिन्ह
आलस तजि उदिम कीन्हा॥४६॥ अथ यथावस्था क्रिया कथन॥ सव० ३१॥ काच बांधै सिर सैं
सुमनि बांधै पाइनि सौं जानै न गवार कैसा मनि कैसा काच है यौं ही मूढ झूठ में मगन झूठ

ह्रीकौ दौरै फूगौवातमानैं पैन जांनैं कहासांचै है मनिकौं परियछांनै जैसैं हरीऊगतमांहिसांव
का समुझि प्यान लोचनकी जाव है जं हांकौ तुवासी मोती नहांकी मरम जांनै जाकौ जैसौ सुख १
गताकौं तैहारूपनाव है ॥४७॥ अथयथाक्रियातवाफल ॥ दोहरा ॥ बंधवढावै अंधव्है ते
आलसी अजांन मुकतिहि हेतुकरनी करै तेनरउद्दिमवान ॥४८॥ अथग्यानवैराग्य सहकां
रत्ववर्नन ॥सवइया॥ जबलगजीवसुद्धवस्तुकौ विचारै ध्यावै तबलग नाग सौं उदासी सरवं
गहै तोगमैं मगन तवग्यांनकी जगति नांहि तोगअभिलाषकी दसामिथ्यातअंगहै तातैविषै
तोगमैं मगनसो मिथ्याती जीवतोगसौं उदासी सोसमकिती अतंगहै ऐसी जांनितोगसौं उदा
सी है मुकति साधौं यहै मनचांगा तौ कगैरी हीतु मंगहै ॥४९॥ अथपदार्थवचन कथन दो
हरा ॥ धरम अरथ अरुकाम सिव पुरुषारथचउरग कुधी कलपनागहि रहैं सुधी गहै
सरवंग ॥५०॥ अथ पदार्थव्यवस्था कथन सवइया ॥ कुलकौ आचारताहि मूरष धरमकहै
पंडित धरम कहै वस्तु के सुतावकौं येहकौ पजांनौ ताहि अग्यानी अरथकहै ग्यानी कहै
अरथ दरव दरसाउकौं दंपती कौ तोगताहि दुरबुद्धि कांम कहै सुधी कांम कहै अभिलाष
पवितचाउकौ इद्रलोक थांनकौ अजान लोक कहै मोष मतिमांन मोष कहै बंधके अभा
वकौं ॥५१॥ अथ पुरुषार्थ चतुष्क कौ अध्यात्मरूप कथन ॥ सवइया ॥ धरमकौ साधन जु वस्तुकौ
सुताउ साधै अरथकौ साधन विलिछ दर्वषट मैं यहै कांम साधना जु संग्रहै निराभपद सह
ज सरूप मोष सुधता प्रगट मैं अंतरकी दिष्टिसौं निरंतर विलोकै बुध धरम अरथ कांम मोष
निजघट मैं साधन आराधनकी सौंज रहै जाके संग [illegible]
अथ सुद्ध नय वस्तु सरूप कथन ॥ सवैया ॥ तिज [illegible]

सर्व कर्म उदै आइ रस देत है कोउ दुःखी होइ कोऊ अलप आयु मरै कोऊ उपजै कोऊ सुषी के
ऊ समर्थ है याहि मैं जिवावौं वाहि मारौं याहि सुषी करौं याहि दुषी ऐसी मूढ आप मानि
लेत है याही अहं बुद्धि सौं न विनसै भरम लियै है मिथ्या धरम करम बंध है उदै ॥५२॥ अ
थ मूढता कथन सवैया ३१॥ जहां लौं जगत के निवासी जीव जगत मैं सवै असहाइ कोऊ क
ऊ कौ न धनी है जैसी जैसी पूरव करम सत्ता बांधि जिन तैसी तैसी उदै मैं अवस्था आइ बनी है।
एते परि जो कोऊ कहै कि मैं जिवावौं मारौं इत्यादिक अनेक विकलप बात घनी है सो तो अहं
बुद्धि सौं विकल भयौ तिहुं काल डोलै निज आतम सकति तिनि हनी है ॥५४॥ अथ चारि प्र
कार जीव व्यवस्था कथन ॥ सवैया ॥ ३१॥ उत्तम पुरुष की दसा ज्यौं किसमिस दाष बाहिज
अभ्यंतर वैरागी मृदु अंग है मध्यम पुरुष नारिअर की सी भांति लियै बाहिज कठिन हिय
कोमल तरंग है अधम पुरुष बदरी फल समान जाके बाहिज सौं दीसै नरमाई दिल संग
है अधम सौं अधम पुरुष पूंगीफल सम अंतरंग बाहिर कठोर सरवंग है ॥५५॥ अथ उत्त
म पुरुष लछन ॥ स० ३१॥ कीच सौ कनक जाकै नीच सौ नरेस पद मीच सी मिताई गरवाई जा
कै गारि सी जहर सी जोग जाति कहर सी करामात हहर सी हौंस पुदगल छवि छार सी।
जाल सो जग विलास भाल सौ भवन वास काल सो कुटंब काज लोक लाज लार सी सीठ सी
सुजस जानै वीठ सौ वषत मानै ऐसी जाकी रीति ताहि वंदत बनारसी ॥५६॥ अथ मध्य
म पुरुष सवैया ३१॥ जैसें कोऊ सुभट सुभाइ ठग मूरी षाइ चेरा भयौ ठगनि के घेरा मैं रहतु
है ठगौरी उतरि गई तव ताहि सुधि भई पर्यो परवस नाना संकट सहतु है तैसै ही अना
दि कौ मिथ्याती जीव जगत मैं डोलै आठौं जांम विसराम न गहतु है ग्यान कला भासी भयौ
अंतर उदासी तथापि उदै व्याधि सौं समाधि न लहतु है ॥५७॥ अथ अधम पुरुष यथा स॥

नटत है॥६३॥ सवैया ३१॥ जैसैं मृग मत्त व्रषादित्य की तपति मांहि त्रषावंत म्रषाजल
कारन अटत है तैसैं भववासी माया ही सौं हित मांनि मानि ठानि भ्रम स्रम नाटक नटत है आ
गें कौं धुकत धाइ पाछें वछरा चवाइ जैसैं द्रिगनहीन नर जेवरी वटत है॥ तैसैं मूढ चेतन
सुकृत करतूति करै रोवत हसत फल षोवत षटत है॥६४॥ अथ मूढ विषै वर्ननं सवै
३१॥ लिये द्रिढ पेच फिरै लोटन कबूतर सौं उलटौ अनादि कौ न कहूं सुलटत है जाकौ फ
ल दुष ताही साता सौं कहत सुष सहत लपेटी असिधारा सी चटत है ऐसौ मूढ जन निज सं
पति न लषै क्यों ही यौं ही मेरी मेरी निसिवासर रटत है याही ममता सौं परमारथ विनसि
जाइ कांजी कौ परस पाइ दूध ज्यौं फटत है॥६५॥ ग्यानी मूढ व्यवस्था सवै॥३१॥ रूप की न
झांक हियें करम कौ डांक पीयें ग्यान दबि रह्यौ मिरगांक जैसें घन में लोचन की ढांक सौं न
मानै सदगुरु हांक डोलै मूढ रांक सौ निसांक तिहूं पन में टांक के मांस की डारी सी तामें
तीन फांक तीनि कौ सौ आंक लिषि राष्यौ काहू तन में तासौं कहै नांक ताके राषिवे कौं करै
कांक लांक सौं षडग बांधि बांक करै मन में॥६६॥ अथ मूढ विषयी वर्णनं॥ सवै ३१॥ जैसैं कोऊ
कूकर छुधित सूके हाड चाबै हाडन की कोर चहुं ओर चुभै मुष में गाल तालु रसना मसूढ
नि कौ मांस फाटै चाटै निज रुधिर मगन स्वाद सुष में तैसें मूढ विषई पुरुष रति रीति ठानै
तामें चित सानै हित मानै षेद दुष में देषै परतछ बल हानि मल मूत्र षानि गहै न गिलानि पगि र
है राग रुष में॥६७॥ अथ संसारी तथा मुनि व्यवस्था कथन॥ अडिल्ल॥ सदा करम सौं भिन्न स
हज चेतन कह्यौ मोह विकलता मानि मिथ्याती ह्वै रह्यौ करै विकलप अनंत अहंमति धा २
रिकें सो मुनि जो थिर होइ ममत्त निवारिकें॥६८॥ अथ मिथ्यात भाव व्यवस्था सवै ३१॥ असंख्या
त लोक परवान जे मिथ्यात भाव तेई विवहार भाव केवली उकत है जिन्हकै मिथ्यात गयौ

सम्पकदरसलेयो तेनियतलीनविवहारसोंमुकतहै निरविकल्पनिरुपाधिआतमसमाधिजे
सुगुनहोहमोषपंथकोंढुकतहे तेईजीवपरमदसामेथिररूपकैकैंधरमवमेधकेनकरम।
सोंरुकतहे॥६०॥ अथ शिष्यप्रश्नकथनं॥कवित्तछंद॥ जेजेमोहकरमकीपरनतिवंधनिह १
नकहीजमसब संतनतिन्नसुहवेतनसों तिन्हकोमूलहे तुकहोंअब केयहसहजजीव
कोकोतकेनिमित्तहे अगालदवसिसनवाहसिष्यप्रसमछत कहेसुगुरुउत्तर सुनुतहा।
॥७०॥ अथगुरुवचन॥स०३१॥ जैसेंनानावरनपुरीवनाइदीजे हेठउज्जलविमलमनि सूर
जिकरांतिहै उज्जलताभासेजबवस्तकेविचारकीजे पुरीकीझलकसोंवरनभांतिभांतिहै।
तैसेंजीवदरवकोपुगलनिमितरूपताकीममतासोंमोहमदिराकीमांतिहै भेदग्यांनदृ।
ष्टिसोंसुभावसाधिलीजेतहां साचीसुद्धचेतनाअवचीसुषसांतिहै॥७१॥ अथ संयोगिकस
तावबर्ननं॥स०॥३१॥ जैसेंमहिमंडलमेंनदीकोप्रवाहएकताहीमेंअनेकभांतिनीरका-
ढरनिहै पाथरकोजोरतहांधारकीमरोरहोति कांकरकीषांनितहांझागकीझरनिहै-
पोंनकीझकोरतहांचंचलतरंगउठे भूमिकानिचानतहांभोंरकीपरनिहै तैसेंएकआ
तमाअनंतरसपुदगल दुहूंकेसंयोगमेविभावकीभरनिहै॥७२॥ अथ आतमासरीर
लछनभिन्नकथनं॥दोहरा॥ चेतनलछनआतमा जडलछनतनजाल तनकीममता
त्यागिकैं लीजेचेतनचाल॥७३॥ अथ आतमा यथा॥स०॥ जोगेंकीकरनीसबगनतजो। ७
जागजानतजीवतजोई देहप्रमानपैंदेहसोंदूसरो देहअचेतनचेतनसोई देहधरैंप्रभु-
देहसोंभिन्नरहैपरछन्नलपैनहिकोई लछनवेदिविचछनबूझत अछनसोंपरतछ
नहोई॥७४॥ अथदेह यथा॥स०॥ देहअचेतनप्रेतदरीरजरेतभरीमलषेतकीक्यू . १

नहरतुहै॥६३॥ सवैया॥३१॥ जैसें मृगमत्तकी रषादित्यकी तपतिमांहि त्रषावंत मृषाजलु
कारन अटतु है तैसें भववासी मायाहीसौं हितमांनि यानि भ्रमसूम नाटक नतु है आ
गेकोधकत धाइ पाछेवजबरावत वाइ जैसें डिगनैहीन रजेवरी वरतु है॥ तैसें मूढ चेतना-
सुरूतिकर स्रुति करे रोवत हसत फल षोवत षटतु है॥६४॥ अथ मूढ विषे वरननं सग॥
२१॥ लिये दिढ पेच फिरे लोटन कबूतर सौं उलटो अनादि कोन केहूं सुलटतु है जाकोफ
लदुष ताही साता सौं कहत सुष सहत लपेटी असिधारासी चटतु है ऐसो मूढजन तिजसं
पति न लषे क्योंही योंही मेरी मेरी निसिवासर रटतु है याही ममतासौं परमारथ विनसि-
जाइ कांजीको परस पाइ दूध जैसे फटतु है॥६५॥ ग्यान मूढ अवस्था सग॥२१॥ रूपकीन
झांक हिये करमकौ डांक लिये ग्यान दबि रह्यो मिरगांक जैसें घनमें लोचनको ढांकसो न
माने सद्गुरु हांक डोले मूढ रांकसौं निसांक तिहूं पनमें टांकके कमासको डार सौ तामें
तानफांक लानिको सौ आंक लिषि राष्यो काज तनमें तासौं कहे नांक ताके राषिवेकों करै
कांक लांकसो षडग बांधि वांक करे मनमें॥६६॥ अथ मूढ विषयी वर्णनं॥स०२१॥ जैसें कोऊ
कूकर छुधित तसूके हाड चाबै हाडनकी कोर चहूं ओर चुभै मुषमें गाल तालू रसना मसूढ
निको मांस फाटे चाटे निज रुधिर मगन स्वाद सुषमें तैसें मूढ विषई पुरुष रति रीति ठाने
तामें चित सांने हित मांने षेद त्रषमें देषे परतछ बल हांनि मलमूत षांनि गहे न गिलानि पगि र
है राग रूपमें॥६७॥ अथ संसारी तथा मुनि अवस्था कथन॥ अडिल्ल॥ सदा करमसौं तिन्हस
हज चेतन कह्यौ मोह विकलता मांनि मिथ्याती ह्वै रह्यो करै विकलप अनंत अहंमति धा
रिकै सो मुनि जो थिर होइ ममत निवारिकैं॥६८॥ अथ मिथ्यातता अवस्था सग॥२१॥ असंख्या
तलोक परवान जे मिथ्यातता व तेई विवहारता व केवली उकत है जिन्हके मिथ्यातयोग-

सम्यकदरसनेयो तेनियतलीनविवहारसोमुकततहै निरविकल्पनिरुपाधिआतमसमाधिजे
सुधनहीनमोषपंथकोंढुकतहै नेईजीवपरमदसामेथिररूपह्वैकेधरमवमेधककेनकरम।
सोंरुकतहै॥८९॥अथतिनकाकथन॥कवित्तछंद॥जेजेमोहकरमकीपरनतिवधनिद
नकहीतमसब संननतिन्हसुद्धचेतनसैं तिन्हकोमूलहेतुकहेंअब केयहसहजजीव
कोकोतककेनिमित्तहैभूगालदपसिसनवाहसिष्पत्रमसृष्टतकहेसुथरूउनर सुन्तृतया
॥९०॥अथगुरुवचन॥सवइया॥जैसेंनानावरनपुरीवनाइदीजेहेवउज्जलविमलमनिसूर
जिकरांतिहै उज्जलताताबेजबवस्तकोविचारकीजेपुराकीझलकसोंवरनतांतिहै।
तैसेंजीवदरबकोपुग्गलनिमितरूपताकीममतासोंमोहमदिराकीमांतिहै भेदग्यानद्रि
ष्टसोंसुभावसाधिलीजैनहां साचासुद्धचेतनावचनीसुपसांतिहै॥९१॥अथसंयोगिकस्व
भाववर्नन॥सवइया॥३१॥जैसेंमहिमंडलमेंनदीकोप्रवाहएकताहीमेंअनेकभांतिनीरकी
ढरनिहै पाथरकोजोरतहांधारकीमरोरहोति कांकरकीखांनितहांझागकीझरनिहै
पौनकीझकोरतहांचंचलतरंगउठैभूमिकीनिचानतहांभौरकीपरनिहै तैसेंएकआ
तमाअनंतरससुद्धपुग्गलदुहूकोसंयोगमैविभावकीतरनिहै॥९२॥अथआतमासरीर
लछनभिन्नकथन॥दोहरा॥चेतनलछनआतमा जडलछनतनजाल तनकीममता
त्यागिकैंलीजैचेतनचाल॥९३॥अथआतमायथा॥३१॥जोजगकीकरनीसबठानतजो
जगजानतजोवतजोई देहप्रमानपैंदेहसोंदूसरो देहअचेतनचेतनसोई देहधरेप्रभु
देहसोंभिन्नरहेपरछन्नलखेनहिंकोई लछनवेदिविचच्छनबूझत अच्छनसोंपरतच्छ
नहोई॥९४॥अथदेहयथा॥सवइया॥देहअचेतनप्रेतदरीरजरेततरीमलपूतकीकूप

री व्याधिकी पोट असाधिकी ओट उपाधिकी जोट समाधि सौं न्यारी रे जिय देहकै सुषहांनि हु
लै परतौं हि लागत प्यारी दुर्हतो तोहि तजैगी निदांन पै तूहि तजै किन देहकी यारी ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥ सु
ग्यांनी सद्गुरु कहै देह षेह की षानि धरै सहज जड़ सदोषकौं करै मोषकी हांनि ॥ ७६ ॥ अब देह
वर्नन ॥ सवइया ॥ रेतकी सी गढी किधौं मढी है मसांनकी सी अंदर अंधेरी जैसी कंदरा है सैलकी
ऊपर की चमक दमक पट भूषनकी धोषे लागे भली जैसी कली है कनैलकी औगुनकी औ
ढी महा तैंडी मोहकी कनौंडी मायाकी मसूरति है मूरति है मैलकी ऐसी देह याही के सने
ह याकी संगति सौं ह्वै रही हमारी गति कोल्हूके से बैलकी ॥ ७७ ॥ पुनः सवैया ॥ ठौर ठौर काल
के फंद के सानिकि फंद ह्वा उनसों तरीजे सी धरा है बूरे लकी नेसु कधका किलगै ऐसे फा
टि जात मानौं कागदकी छरी किधौं बादुर है बेलकी स्वै रमवानि कानेसूरति सौं पहि
चानि करै सुष हानि अरु षानि वद फेलकी ऐसी देह याही के सनेह याकी संगति सौं
ह्वै रही हमारी गति कोल्हूके से बैलकी ॥ ७८ ॥ अब कोल्हूका बैलकी अरु संसारी जी
व समानरूप कथन ॥ सवइया ॥ पाटी बंधी लोचन सौं सकुचे दुबोलनि सौं कोचनि के सौं ना
वे दुषेद तनकौं बाहबो ही धंधा अरु कंधा मांहि लग्यो जोत वार वार आर सहै कायर है मा
नके भूष सहै प्यास सहै दुर्जनको त्रास सहै थिरता न गहै न उसास लहै छनको अपराधी
न घूंमै जैसे कोल्हूको कमेरो बैल तैसे सोई स्वभाव यांग जगवासी जनको ॥ ७९ ॥ अब जग
तवासी वर्षा ॥ सवैया ॥ जगतमें डोलैं जगवासी नररूप धरें प्रेतकेसे दीप किधौं तैरेकेसे
से घक देहे दासे पट भूषन अडंबर सौं नीके फिरि फीके छिनमांहि सांझ अंबर ज्यौं सहे हैं
मोहके अनल दगै मायाकी मनासौं पगे डाभकी अनीसौं लगे ओसकेसे कन हैं हैं धरमकी २
बूझि नांहि उरझि भरममांहि नाचि नाचि मरजांहि मरीकेसे बच्चे हैं ॥ ८० ॥ अब जगत अवस्था ॥

आहार विहार नहि अपरमत्त है सोइ ॥ ६६ ॥ अथ अष्टम गुनस्थान वर्ननं ॥ चौपई ॥ अब बरनौं
अष्टम गुनथाना नाम अपूरव करन बषांनां कछु कर्म मोह उपसम करि राषे अथवा कि
चित छय करि नांषै ॥ ६७ ॥ जे परिनाम भए नहीं कबही तिन्ह कौ उदौ देषीये जबही तब
अष्टम गुनथांन कहोई चारित कारन दूसरो सोई ॥ ६८ ॥ अथ नवम गुनस्थानक वर्ननं
चौपई ॥ अब अनवृत्ति करन सुनि भाई जहां भाव थिरता अधिकाई पूरव भाव चलाचल
जेते सहज अडोल भए सब तेते ॥ ६९ ॥ जहां न भाव उलटि अथ आवै सो नवमौ गुनथांन कहा
वै चारित मोह जहां बहु जीता ॥ सो है चरन कारन पद जीता ॥ ७० ॥ अथ दसम गुनथानव
र्ननं ॥ चौपई ॥ कहौं दसम गुनथान दुसाषा जहां सूक्षम सिव की अभिलाषा सूक्षम लोभ
दसा जहां लहिये ॥ सूक्षम संपराय सो कहिये ॥ ७१ ॥ अथ एकादस गुनस्थान वर्ननं ॥ चौ
अब उपसंत मोह गुनथानां कहौं तासु प्रभुता परवांनां जहां मोह उपसमै न भासै यथाष्या
त चारित परगट्या सै ॥ ७२ ॥ दो० जाहि फरस कै जीव गिरि परै करै गुन रद्द सो एकादसमी दसा
उपसम की सरहद्द ॥ ७३ ॥ अथ द्वादसम गुनस्थानक वर्ननं ॥ चौपई ॥ केवल ग्यांन निकट जहं
दु आवै तहां जीव सब मोह षिपावै प्रगटै यथाष्यात परधानां सो द्वादसम षीन गुन नामं ७४
सत गुनस्थान स्थिति कथन ॥ दो० षट सातम अठ नवम दस एकादस बार अंतमु
हूरत एक वा एक समै थिति धार ॥ ७५ ॥ दो० छीन मोह पूरन भयो करि चूरन चित चाल
अब संयोग गुनथान की वरनौं दसा रसाल ॥ ७६ ॥ अथ त्रयोदसम गुनस्थान वर्ननं ॥ स
३१ ॥ जाकी दुषदाता घाती चौकरी विनसि गई चौकरी अघाती जरी जेवरी समांन है प्रगट तयो
अनंत दरसन अनंत ग्यान वीरज अनंत सुष सत्ता समाधान है जामैं आउ नाम गोत वेदनी
प्रकति असी इक्यासी चौरासी वा पच्यासी परवांन है सो है जिन केवली जगतवासी भगवा
न ताकी जो अवस्था सो सजोगी गुनथांन है ॥ ७७ ॥ स ३१ ॥ जो अडोल परजंक मुद्राधारी सरव

कौ नमस्कार आवे की जे ॥८५॥ अथ नमस्कार कथन ॥ सवै ॥ जगतके प्रानी जितकै रह्यौ गुमानी
ऐसो आश्रव असुर दुषदानी महाभीम है ताकौ परताप षंडिवेकौं परगट भयो धर्मकौ धरैया
कर्मरोगकौ हकीम है जाकै परताव आगें भागे परताव सब नागर नवल सुषसागरकी सीम है
संवरकौ रूप धरै साधै शिवराह ऐसो ग्यांन पातस्याह ताकौं मेरी तसलीम है ॥८६॥ इति श्री स
मैसार ग्रंथ संपूर्ण ॥ चौपई ॥ तयो ग्रंथ संपूरन भाषा। वरनी गुनथानककी साषा। वरनन और कहां
लौं कहिये जथा सकति कहि चुप ह्वै रहिये ॥८७॥ लहिये ओर न ग्रंथ उदधिकौ ज्यौं ज्यौं कहिये
त्यौं त्यौं अधिकौ तातैं नाटक अगम अपारा। अलप कवीस्वरकी मति धारा ॥८८॥ दोहरा ॥ समैसा
र नाटिक अकथ कथन। कविकी मति लघु होइ तातैं कहत बनारसी पूरन कथै न कोइ ॥८९
अथ ग्रंथ महिमा कथन ॥ सवै ॥ जैसैं कोऊ एकाकी सुभट पराक्रम करै जीतै केहि भांति च
क्री कटकसौं लरनौं जैसैं कोऊ परवीन तारू भुजभारू नर तरै कैसैं स्वयंभूरमन सिंधु
तरनौं जैसैं कोऊ उद्यमी उछाह मन मांहि धरै करै कैसैं कारज विधाताकौ सौ करनौं तैसैं
तुच्छ मति मोरी तामैं कविकला थोरी नाटक अपार मैं कहां लौं याहि वरनौं ॥९०॥ अथ जीव म
हिमा कथन ॥ सवै ॥ जैसैं वट वृक्ष एक तामैं फल हैं अनेक फल फल बहु बीज बीज बीज वट है व
ट मांहि फल फल मांहि बीज तामैं वट कीजै जो विचार तौ अनंतता अघट है तैसैं एक सत्ता
मैं अनंत गुन परजाय पर्जामैं अनंत नृत्य तामैं अनंत ठट है ठटमैं अनंत कला कलामैं अनंत रूप रूप
मैं अनंत सत्ता ऐसो जीव नट है ॥९१॥ दोहरा ॥ ब्रह्मग्यान आकासमैं उडै सुमति षग होइ जथा
सकति उद्दिम करै पार न पावै कोइ ॥९२॥ चौपई ॥ ब्रह्मग्यान नभ अंत न पावै सुमति परोछ कहां
लौं धावै जिहि विधि समैसार जिनि कीनौं तिन्हके नाम कहौं अब तीनौं ॥९३॥ अथ कवि त्रितिय
कथन ॥ सवै ॥ कुंदकुंदाचारज प्रथम गाथाबद्ध करि समैसार नाटक विचारि नाम दयो है ता
हीकी परंपरा अमृतचंद्र भए तिन्ह संसक्रत कलस सवारि सुष पायो है प्रगट्यो बनारसी गृह

खे सिरीमाल अब किये हैं कवित हिए बोध ज्यों जव यों है सबद अनादि तासें अरक्ष अनादि ज २
वनादिक अनादि अनादि ही को सयो है ॥ ९५ ॥ अथ कवि व्यवस्था कथन चौपई ॥ अब कहु
कहों जथारथ वांनी सुकवि कुकवि की कथा कहांनी लक्षण हीन कवि कहावे सोई परमारथ
रस वरनैं जोई ॥ कल्पित बात हिये नहि आनैं गुरु परंपरा रीति बखांनं सत्यारथ सैं लीन रही
छंडे मृषावाद सौं प्रीति न मंडे ॥ ९६ ॥ दोहरा ॥ छंद सबद अक्षर अरथ कहे सिद्धांत बखांन जे २
इहि विधि रचना रचे सो है सुकवि सुजांन ॥ ९७ ॥ अथ कुकवि कथन चौपई ॥ अब सुनु कुक
विक हों जैसा अपराधी वक्र अंध अनैसा मृषा तावर सबद नैहित सौ नई उकति उपराजे वित-
सौं ॥ ९८ ॥ प्रांति लागत कुजामन आने परमारथ में भेद न जांने बानी जीव एक करि मंड जाक २
कि जड़ अंधपन सूझे ॥ ९९ ॥ बानी लीन भयो जग डोले बांनी ममता त्यागि न बोले है अनादि वां-
नी बानी जग मांहि कुकवि बात यह समुझै नांही ॥ १०० ॥ अथ बांनी व्यवस्था कथन ॥ जै-
सैं काल देसमें सलिलधारा कारिज की नदी सो निकसि फिरि नदी में समानी है नगर में गरे २
र फैलि रही चहुं ओर जाके ढिग बहै सोई कहै मेरो पांनी है त्यौं ही घट सदन में अनादि ब्रह्म
वदन वदन में अनादि ही की बांनी है करम कलोल सौं उसास की बयार बाजे ता सौं मेरी फनि
औ सो मेरी बांनी है ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ जैसैं मूढ़ कुकवि कथंग है मृषा पथ दौर रहे मगन अभिमां
न मैं कहै औरको औरा ॥ १०२ ॥ वस्तु सरूप लखै नहीं बाहिज दृष्टि प्रधान मृषा विलास विलो
कि कैं करे मृषा गुनगांन ॥ १०३ ॥ मृषा गुनगांन यथा ॥ सवैया ॥ मांसकी गरंथि कुच कंचन कल
स कहे कहै मुखचंद जो सलेषमा को घर है हाड के दसन आहि हीरा मोती कहै
ताहि मांस के अधर ओठ कहे बिंबफल है हाड दंड भुजा कहै कोल... नाला कही
के थंभ ता उरु कहै रंता तरु है यों ही झूठी जुगति बनावे...

कोवरहे॥६०४॥चौपई॥मिथ्यावंतकुकविजेप्रानी। मिथ्यातिन्हकीभाषितवानी। मिथ्यावंतसुकवि
जोहोइ वचनप्रवानकरैसबकोइ॥६०५॥दोहरा॥ वचनप्रवानकवि करैपुरुषहृदैपरवान दोऊअंगप्र
वानजो सोहैसहजसुजांन॥६०६॥अबनाटिकसमयसारकथाकथनचौपई॥अबयहबा
तकहौंहोजैसें नाटिकभाषाभयोसुऐसैं कुंदकुंदमुनिमूलउधरता अमृतचंदटीकाकेकरता॥
॥६०७॥समैसारनाटिकसुखदानी टीकासहितसंस्कृतवानी पंडितपढेदिढमतिबूझै अल्पमती
कौअर्थनसूझै॥६०८॥पांडेराजमल्लजिनधर्मी समैसारनाटिककेमर्मी तिनगरंथकीटीकाकीन्ही बा
लबोधसुगमकरिदीनी॥६०९॥इहिविधिबोधवचनिकाफैली समैपाइअध्यातमसैली प्रगटीज
गतमांहिजिनवांनी घरघरनाटिककथावषांनी॥६१०॥नगरआगरेमांहिविष्याता कारनपायभए
बहुग्याता पंचपुरुषअतिनिपुनप्रवीने निसदिनग्यानकथारसभीने॥६११॥दोहरा॥ रूपचं
दपंडितप्रथम दुतीयचतुर्भुजनांम तृतीयभगोतीदासनर कौरपालगुनधांम॥१२॥ धरम
दासएपंचजन मिलिबैठेंइकठौर परमारथचरचाकरैं इन्हकेकथानऔर॥१३॥ कबहूं
नाटिकरससुनहिं कबहूंऔरसिद्धंत कबहूंबिंगबनाइकैं कहैंबोधविरतंत॥१४॥चितजि
न्हा॥दोहरा॥चितकौराककुधरमधरु सुमतिभगोतीदास चतुरभावथिरताभए रूपचंदपर
गास॥६१५॥इहिविधिग्यानप्रगटभयो नगरआगरेमांहि देसदेसमहिविस्तर्यो मृषादेस
समहिनांहि॥१६॥चौपई॥जहांतहांजिनवांनीफैली लषैनसोजाकीमतिमैली जाकेस
हजबोधउतपाता सोततकाललषैयहबाता॥१७॥दोहरा॥ घटघटअंतरजिनवसै घटघटअं
तरजैनमतमदिराकेपांनसौं मतवालासमुझैना॥१८॥चौपई॥ बहुतबढाइकहांलौं
कीजे कारजरूपबातकहिलीजे नगरआगरेमांहिविष्याता बनारसीनांमलघुग्याता ४४
॥१९॥तामैंकवितकलाचतुराई कृपाकरहिएपंचौंभाई पंचप्रपंचरहितहियषोलै ते

॥ए६०॥ श्रीगणेशाय नमः॥ गजमुष सनमुष होत ही॥ विघन विमुष ह्वै जात॥ ज्यौं पग प-
रत पयाग मग पाप पहार विलात॥१॥ बांनीजू के बरन जुग॥ सुवरन कन परिमांन सु
कवि सुमुष कुरुषेत परि होत सुमेर समांन॥२॥ सत्व सत्वगुण को कि सत्य ही क
सत्ता सुत सिद्धि की प्रसिद्ध की सुबुद्धि बृद्धिमांनीये ग्यांन ही की गरिमा कि महिमा विवे-
क की दरसन ही कौ दरसन उर आंनीयें पुन्य को प्रकासु वेद विद्या को विलासु किधौं
जसु कौ निवासु केसोदास जग जांनीये मदन कदन सुत वदन रदन किधौं विघन विना
स कौ विधि पहचांनीये॥३॥ प्रगट पंचमी कों भये कविप्रिया अवतार सोरहसे अठावन
कार्त्तिक सुदि बुधवारु॥४॥ नृपकुल वरनौं प्रथम ही पुनि कवि के सब बंसु प्रगट कर
ऊं कविप्रिया कविता को अवतंसु॥५॥ अथ नृपवंसवर्णनं॥ ब्रह्मादिक के विनय तें
हरन सकल भुव भारु सूरजबंस करयो प्रगट श्रीरामचंद्र अवतारु॥६॥ तिनके कुल
कलिकाल रिपु कहिके रावमतिधारु गहिरवारु इहि ख्यात हुत प्रगट भये नृप वीरु
॥७॥ करन नृपति तिनके भये धरनी धर्म प्रकासु जीति सबै जगती करयो वारानसी नि-
वासु॥८॥ प्रगट करनतीरथ भये जग मे जिनके नांम तिनके अर्जुनपाल नृप भये मोह
नी ग्रांम॥९॥ गढ कुंडार तिनके भये राजा सीहनुपालु सहजइंद्र तिनके भये कहि के श्रा-
वन पकारु॥१०॥ राजा नौनिग द्यौ भये तिनके पुरन सालु नौनिगद्यौ के सुत भये पृथुज्यों
पृथीराजु॥११॥ रामसिंह राजा भये तिनके सूर समांन रामचंद्र तिनके भये राजा चंद्रसमां
न॥१२॥ राजा मेदिनिमल भये तिनके अर्जुनरूप श्रीनारायण को सषा कहै सकल भुव
रूप॥१३॥ महादांन षोडस दये जीति जगदि सब्यार चारौं वेद अठारहौं सुने पुरांन।

तिनके केसवदास अरिमद मर्दन मेदनी कीने धर्म प्रकासु॥१४॥ राजा

||६०|| श्रीगणेशाय नमः || गजमुष सनमुष होत ही" विघन विमुष ह्वै जात" ज्यौं पग प-
रत प्रयाग मग" पाप पहार बिलात ||१|| बानी जू के बरन जुग" सुबरन कन परिमान सु
कवि सुमुष कुरुषेत परि होत सुमेर समान ||२|| सत्व सत्व गुण को कि सत्य ही कि
सत्या सुत सिद्धि की प्रसिद्ध की सुबुद्धि वृद्धि मानीये ग्यान ही की गरिमा कि महिमा विवे-
क की दरसन ही को दरसन उर आनीये अन्य को प्रकास वेद विद्या को विलास किधौं
जसु को निवास केसोदास जग जानीये मदन कदन सुत वदन रदन किधौं विघन विना
सको विधि पहिचानीये ||३|| प्रगट पंचमी को नये कविप्रिया अवतार सोरह से अठावन
कार्त्तिक सुदि बुधवारु ||४|| नृप कुल बरनौ प्रथम ही पुनि कवि के सब वंस प्रगट कर
ऊं न कविप्रिया कविता को अवतंसु ||५|| अथ नृप वंस वर्णनं || ब्रह्मादिक के विनय तें
हरन सकल सुव भार सूरज वंस कस्यो प्रगट श्रीरामचंद्र अवतारु ||६|| तिनके कुल
कलिकाल रिपु कहि केसव मति धारु गहिरवारु कहि ष्यात जुत प्रगट भये नृप वीरु
||७|| करन नृपति तिनके भये धरनी धर्म प्रकासु जीति सबै जगती कर्यो वारानसी नि-
वासु ||८|| प्रगट करन तीरथ भये जग में जिनके नाम तिनके अर्जुनपाल नृप भये महो-
नी ग्राम ||९|| गढ़ कुंडार तिनके भये राजा सोहनपालु सहजइंद्र तिनके भये कहि केसा-
वनपकालु ||१०|| राजा नोनिगदेव भये तिनके हरन सोम जु नोनिगदेव के सुत भये पृथु ज्यों
पृथ्वीराजु ||११|| रामसिंह राजा भये तिनके सूर समान रामचंद्र तिनके भये राजा चंद्र समा-
न ||१२|| राजा मेदिनिमल भये तिनके अर्जुन रूप श्रीनारायण को सषा कहे सकल सुव-
रूप ||१३|| महादान षोडस दये जीति जग दिसि च्यार चारौं वेद अठारहौं सुने पुरान ||

तिनके केसवदास अरिमद मर्दन मदनी कीनै धर्म प्रकासु ||१४|| राजा

मनसुजेग्रांनु साहिसराइतसर्वदा अकबरसौं सुरतांन ३२ करजोरे ठाढे जहां अ २
वेदिसिकेईस ताहित हां बेठिकदई अकबरसे अवनीस॥३३॥ जाकेदरसनकौंगा
ये उघरेदेवकिवार उपजीदीपतिदीपकी देषतएकहीबेर॥३४॥ ताराजाकोराजु।
अब राजउजगतीमांहि राजारांनेराउसब सोवतजाकीछांह॥३५॥ तिनकेसुतगया
रहतए जेवेसाहिसंग्रामु दछिनदछिनराजसौं जिनजीतौसंग्रामु॥३६॥ नरपषंड
तुमनतए तिनकेतारथमाहि नरथनगीरथपारथे उनमांनउसबताहि ॥३७॥ सुतसो
दरनपरांनके जदपिबजतपरिवारु तदपिसरबइंद्रजीतसिर जोउराजकौता
रु॥३८॥ कल्पवृक्षसौंदांनदिन सागरसौंगंभीरु केसवसूरोसूरसो अर्जुनसौरन
धीरु॥३९॥ ताहिकछौवाकमलसौ गडुदीनोनपरांम विधिसौंसाधतबेठिके तुवपा
तिवांमअवांम॥४०॥ करयोअपारोराजके सासनसबुसंगीत जाकेदेषतइंद्रजौंइं
द्रजीउरमजीउ॥४१॥ बालवृद्धिकमबालसब रूपसीलगुनदृढ जदपितसोअव
रोधपट जाउपरमपरसिद्ध॥४२॥ राइप्रवीनप्रवीनअति नवरंगराइसुबेस अ
तिविचित्रनयनांतिउन जोवनलजातसुदेस॥४३॥ सोहुते सागररांमकी तानत
रंगतरंग रंगराइरंगचलितगति रंगमूरतिअंगअंग॥४४॥ जैत्रीत्योंवरसारिका
सप्तस्वरनिसौंलीन देवसतांसौदेषीये रायप्रवानप्रवीन॥४५॥ सत्याराइप्रवान।
सूत सुरतरुसुरतरंगजु इंद्रजीतितासौंबधो केसवदासजुदेउं॥४६॥ नरीकिं
नरीआसुरी सुरारहतिसिंहनाद नवरसनवधालगतिसौं जोजतिनवरंगराइ ४७
तैरवसुतगौरीसतसुत सूरतरंगतिलेषि वंदकलासीसोतिजे नयनविचित्रादेषि।
गंगौ

ष्ठतरीग्रामनसव उत्तमविप्रविचार॥२॥ जगपावनवैकुंठपति रामचंद्रनाम मक्ष
रामंडलमेंदए तिनैंसातसैग्राम॥३॥ सोमवंसयदुकुलकलस त्रिभुवनपालनरेस फेरि
दयेकलिकालडरि तेईतिनैंसुदेस॥४॥ कुलकुलवारुउदेसकुल प्रगटेतिनकेवंसु।
तितन्हाकेंदनंदसुत उपजेकुलअवतंसु॥५॥ तिनकेसुतजयदेवजग थापेदृढ़धीरा
ज तिनकेदिनकरुसकलसुत प्रगटेपंडितराज॥६॥ दिल्लिपतिअल्लावदि किनोकिर
पाअपार तीरथगवाससबतजन अकरकरेबहुबार॥७॥ गयागदाधरसुततये ति
नकेआनंदकंद जयानंदतिनकेतये विद्यासुतजगबंद॥८॥ तयेतिविक्रमुमिश्रतबति
नकेपंडितराय गोपाचलगढदुग्रपति अन्येतिनकेपाय॥९॥ तावसमुतिनकेतये तिनकी
बुद्धिअपार तयेकुरोत्तममिश्रतब षटदरसनअवतार॥१०॥ रामसिंघसौरोसकरि जि
नजीतीदिसिचार ग्रामबीसतिनकोदए रानापायपुषारि॥११॥ तिनकेपुत्रचत्रसिंहजग
किनोहरिहरनाथु नोवरषनतजिओरपै रहिनजैदेहाथ॥१२॥ तिनकोपतिपुरानकी
दानीराजारुद्र तिनकेकासीनाथसुत सोतिनबुद्धसमुद्र॥१३॥ पुत्रतयेहरिनाथकेस
ब्दतत्रसुतवेष सत्तासादंसंग्रामको जीतेगढअसेष॥१४॥ जिनकोमधुकरसाहिनृप ब
हुतकस्योसनमान तिनकेसुतबलरईतये प्रगटेबुद्धिनिधान॥१५॥ बालकतेमधुसाह
नृप बहुतकस्योसनमानु जिनपरिपूरन्योपुरानु तिनकेसोदरद्वैतये केसवदासकल्यानु
१६॥ भाषाबोलनजानई जिनकेकुलकेदास भाषाकवितोमंदमति तिहिकुलकेसवदा
स॥१७॥ इंद्रजीतितासोंकह्यो मांगउमधप्रयाग मांग्योसबदिनएकरस कीजैकृपासता

नजैहै कनककुलाकुलआधक त्यौंहीं छंदोलंग को सुनितसकेश्रुतिसाधक ॥२०॥ अथअले
कारहीनमतवर्णनं ॥ तोरति नाटक टोराकपोलनिजोरिरहै कर त्यौंनरहोंगी ॥ पानषवायो
सुधाधरपानकौं पानगहेतेसहीनगहोंगी केसवकुकिसबैसहिहौं मुषकुमिवछैयहपैनसा-
होंगी कैफिरिसुमनहेमुषमोहकौ आपुनिधायसैंजायकहोंगी ॥२२॥ धीरजमोचनलो
चनलोलबिलोकिकैलोककीलीकनछुटी फुटिगयेश्रुतिग्यानकेकेसवआंषिअनेकविवेक
कीफूटी छोडिदईसरितासबकांममनोरथकेरथकीगतिछुटी त्यौंनकरैकरतोबेबारक
ज्यौंचितपैंउहवारबधूटी ॥२३॥ अथअरथहीनसुकवर्णनं ॥ कौलकमालकलाकलका-
रालनिशालविशालनिवालथलीहै हालविहालनितालतमालप्रवालकबालकबालउता-
लीहै लोलबिलोलकलोलअमोलकलोलकमोलगलोलकलीहै बोलनिबोलकपोलनि
ढोलनिगोलकलोलगलोलकैलीहै ॥२४॥ इँआगनुनकोजैनैरसु असुकेसवजातिलंयु आँ
रथअपारथहीनकम इनकोतजौप्रसंग ॥२५॥ वर्नप्रयोगीकर्नकटु श्रुनदोसकउकविराज
शद्बअर्थपुनिरुक्तके छाडउसिगरेसाज ॥२६॥ देशविरोधनवर्नीये कालकलानिनिद
रि लोकन्यायआगमनिके तजौविरोधविचारि ॥२६॥ अगणमांनवर्णनं ॥ केसवगनुसुतन
वंदा आगनुअसुसनुरुआलि आरितातिगुनआगुनहै आरितातिजियजानि ॥२७॥ मगनु
नगनुलनिलगनु असुंयगनसदासुलजानि जगनुरगनसोसगनुको तगुनहीअसुनबा-
षानि ॥२८॥ मगनत्रिगुरुसुतत्रिलघु केसवनगनुप्रवान तगनुआदिगुरुआदिलघु य
गनुबषानुसुजान ॥२९॥ जगनुमध्यगुरुजानीये रगनुमध्यलघुहोइ सगनुअंतल
घुअंतगुरु तगनुकहैसबकोय ॥३०॥ अथगणागणदेवतावर्ननं ॥ महीदेवतामग ॥

नंकी नागनगनकों देषि जगतु जियजानो जगनको चंद्रलगनकों देषि ॥२१॥ सुरसु जोव
जगनको रगतु सिषिमय मांतु कातु समुझि यसगनको तगनु अकासु वषांन ॥२२
अथ गनागनफल छप्पय ॥ मित्र मित्र सुषदेइ नितनित आनंदकारी आगें आगादि नद्देइ सु
रछपसोषैकौरी केसव अफल अकासु कातु किलदेसउदासै मंगल वंद अनेक नागवजा
सुद्दिसकासै इद्द विधिकवि सबलै जानिजानि करुना अरुजाकों करे तजि सबं धअरु
दोषगनि सदासु तासु तफलफरे ॥२३॥ अथ दिगन विचारु ॥ जो केहूं आदिकवित्तकी अगनु
होइ वडताग तातैं दिगनु विचारु चित किजो वासु किनाग ॥२४॥ अथ दिगनु वर्णन ॥ मगनु ॐ
नगनु कौं मित्रु गनु यगन लगनितनि दास उदासीन जन जानीयै रसरिइके सब दास
२५॥ अथ दिगनु फलाफल ॥ मित्रतें जो होय मित्र बाढै बहु वुद्धि रिद्धि मित्रतें जो दास वासु युद्धतें
न जो नीयें मित्रतें उदासगन होतु गीत ... उदै मित्रतें जो शत्रु होइ मित्रबंध हानीयै दासतें जो मि
त्रगनकाज सिद्धि केसोदास तें जो दास सब जीव वसे मांनीयें दासतें उदास होत धन नास आस
पास दासतें जो शत्रु मित्रु शत्रु सों वषांनीयें ॥२६॥ जांनीये उदासतें जो मित्रगनु ... उद २
सतें जो दास ... ताइये होय जो उदासतें उदास तो न फलफल जो उदास होते सत्रु तो न सुषपाइये
शत्रुतें जो मित्रगनु ताहि तो अफलगनु सत्रुतें जो मित्रगनु दास आसु वनितो न पाइये शत्रुतें उदा
स कुल नास होत केशोदास शत्रुतें जो शत्रु नास नायक कौं गाइये ॥२७॥ अथ गनागनको उदाहरनु
राधाराधारमनके मनुपयो दै साथ ओषवदा ... कौं नसें कहा कोसको गाथा ॥२८॥ अथ अगना
को उदाहरनु ॥ कादाकहौं उमपाजने प्रानना थके मित्र कि रिपी ... जिताजगे ...
२९॥ इदाहरन उदाहरन प्रथम आवै ... केसव गुन अरु अगुन ...
अंथ अरुअंक वर्णन ॥ सं ... कौ आदि ... विं ... दीरघ ...

दे सब कोय ॥ ३१ ॥ दीरघ लच्छ करि पद सुपदा मुष जिहि गोर सोई लछ कहि लेषवो केसव कवि
विसिरमोर ॥ ३२ ॥ पदहि लेसु पद सबहि कौं सपिद हरिहो दहु केसु दरी मति मिवी ठ जैसे जीवन मु
रि अरु रसयो अंग लगाइ जागी ॥ अब थौं कि हि कारण केसव एउ विधा ठदै ऊध कछु ठी वसी वी ॥
माकर लोगनि के संग कीयउ वे वकतो दि अजोन उ बीगी ॥ ३३ ॥ संयोगी को आदि कौं कव कंक ।
वरन विचार केसवदास सब काससौं लघु करितादि निहारि ॥ ३४ ॥ तेरह अक्षर ग्रथमपद ग्रा
निस्यारह देहु तेरह अरु ग्यारह दोहा लक्षन एह ॥ ३५ ॥ आमल जुन्हाई देवदसुष गहीत
इ अन्हाइ सोतिन के सुष कमलनसौ देषि रहे कुमिलाइ ॥ ३६ ॥ अथ हीनरस वर्णनं ॥ वरनत को
सबदास रसु जहाँ विरसु है जाइ ताकवितसों हीनरस कहत सबै कविराय ॥ ३७ ॥ एक होय
अनुकूल जहाँ ठजो हे प्रतिकूल बरनत केसवदास नरस सोरसउ तहाँ समूल ॥ ३८ ॥ अथ रस
कविद्या यो ॥ देह षिदीन उधार है केसवदास तुक दान रमो उलेषहो दोनें बिनां ते गई हौं गई न
गई घरही ॥ फिरि जैहो गोहि उबेरु कियो कव कैहि उबेरु कीये बरनी की हरे हो बेरु के गारस
बेबकंगी अहो बेग्यो नबेग्यो तो तोरे न देहु ॥ ३९ ॥ अथ जतिभंगु वर्णनं ॥ ओर वरण के वरण जह
ओ स्वरण सौं लीन ॥ सो जतिभंगु कवित्त कवि केसव कहत प्रवीन ॥ ४० ॥ अधारिहि रि केसव मदु
न मोद न धनस्याम सुजान यौं व्रजवासी नारिका नाथर ट तहि न मोन ॥ ४१ ॥ अथ व्यर्थ लछण ए
क कवित्त प्रबंध में अर्थविरोध जु होइ पूरब पर अनमिल सबे व्यर्थ कहे सब कोय ॥ ४२ ॥ मरद्दो
गा ॥ सबरा उ संघारो नीज निद्रा रामु जि जो बाउ मरा उ बहु वसु मति लीजो मो मति कीजादी जो उ प्र
पनोदाउ को उनरिछुते रो सब जुआदि हेरो उमकहि यउ अति साधको कछु देहु मगाव कछु लषलगाव
कु देउ नधनी अगाध ॥ ४३ ॥ अपार्थ लक्षणं ॥ अर्थ न जाको समुझिये ताहि अपार्थ सुजानि ।
मत्त वारे उन्मत्त सिसु कैसे बचन बषानि ॥ ४४ ॥ पियलेत नरसिंह को देअति सुन्दर देह ऐरा ।

रसवतीनो लोकमें त्रिविधि कविनकेराइ मति उनि तीन प्रकारकी बरनत सब सुषपाइ॥१॥
हे उत्तम ते उरपारथ जे परारथके पथ सोहै केसवदास अधम ते नर संतत स्वारथ संजुत
गोहै स्वारथलौं परमारथ लोग निमध्यम लोकनिके मन मोहै नारथ पारथ मित्त सु ते परमारथ
चारथ हीनत को है॥२॥ कविरीति वर्णनं॥ सांची बात न जु वर्णही झूठी बरनन बानि एकनि वर
नियमको कवि मति त्रिविधि वषानि॥३॥ अथ सत्य बात को वर्णनं॥ मधुरि उ फुलही मालती व
नकुस कलफल कृष्णपक्षकी जोन्ह जो शुक्लपक्ष समउत्या॥४॥ अथ मिथ्या बात को वर्णनं॥ ज
हर वर्णत सिधु सब तहहर रतन नि तेषि सूक्ष्म सरवर जकहै केसवदास विसेष॥५॥ नैन
गंदे सरि स्तुचित मसजानि स्मियति बनाइ अंजुलि तरिपी वनकहै वंदु वंडिका पाय॥६॥ सा
वके कहत उदाहरनु बाटग्रंथ अपार कछु स्तते कहे कविकुलन वउर विचार॥७॥ अथ
नम को उदाहरनु॥ कंटक न अटके तफट उवरण बांधि बात ते न जान्तु उडि आगन न धारी
ये नेक लन लीज तम मलधार बर सत कोच न रुव उरंव चित मैं विचारीये केसोदास साव
कास परम प्रकास न उसारीये पसारिये न पियये विसारिये चलिये जु आंढि पदु तमही को ग
ट तमु पानु रोपि छोरा सेतपाटको उतारीये॥८॥ अथ वंडिकाको उदाहरण॥ रसन सकउ
घनसार हा के केसोदास कस मकलित बेसर ही छबि छाइसी मोतिनको सारी सिर कंवमाल
हार और रूप जोति हो ति हरि हेरति हराइसी॥ चंदनु चढायें चारु सुंदर सिंगार सब राषी
सुतसोता सुनि बसन बसाइसी॥ सारदा सी देषियत देषो जाइ केसोराइ गेंदी वज कुवरि
जुन्हाईमें आन्हाईसी॥९॥ अथ कविनियम वर्णनं॥ बरनत चंदन मलय ही हिमगिरि हीं भुज
पात बरणत देवनि चरण ते सिर तें मानुष गात॥१०॥ बरनत नारी नरनि तें लाज बोशनो

विन नृपऽगुनुसादसद्गुन कामुआवगुनमित्र॥११॥ अतिसलजयुतकुलवधू गनिकाग
नीतिलज्ज कुलटिनसोंकोविदकहत अंगअलज्जानलज्ज॥१२॥ कोकिलकीकलकूजिवो वा
रततदेमकमास बरपांकहरपतकहै केकीकेसोदास॥१३॥ दनुजनिसोंदितसुततमा आ
सुरेकहतवपानि ईससीससससिहाहिकी बरनतबालिकबानि॥१४॥ सहजसिंगारनिसुंदरी
कदपिसिंगारअपार तदपिबपानतसकलकवि सोरहहूसिंगारु॥१५॥ अबसोरहसिंगारु
वर्णनं॥ प्रथमसकलसुचिमंजनुअमलवासजावकसुदेसकेसपासकोसुधारिवो। अंगराग।
भूषनविविधसुपवासुरागुकज्जलकलिततोलोचननिहारिवो बोलनिहसनिमृदुचितवाचुरी।
चलनिचारु पलपलपतिब्रतप्रतिपारिवो केसोदाससविलासकरहुं बालारोषइविवि
धिसोरहसिंगारनिसिंगारिवो॥१६॥ महापुरुषकोप्रगटहीबरणतरूपसमानदीपथंत्र
गरिमजुकलससागरसिषप्रमान॥१७॥ गुनमतिवैरागरुभीरजुकोसागरु जागरुधवल।
धीरधर्मध्वजधाएजु पलतरुतोरिवेको राजेगजराजसमअरिनिजराजनिकासिंघसमगाएजु।
वामनिकोवामदेवकामनिकोकामदेवरनजयथंभराममंदवमनताएजु कासीमकुलकलसुजं
सदीपदीपकेसोदासकोकल्पतरुइंद्रजीतआएजू॥१८॥ मेघज्योंगंभीरवानीसुनतसयासपी-
तिसपत्रअरितरनिजवासज्योंनरउदै जाकेतजदेखतबलीककोंअनयधूंदेपिरइजैनतु-
सगज्योंहरउदै तोरिवेकोंगढतरुदोनुदैमितासरूपरापिवेकोंघारतिकिवारिज्योंभरउदै।
सतलकोइंद्रइंद्रजीतइंद्रजीतरघुगनजाकेराजकेसोदासराजसोकरउदै॥१९॥ इतिश्रीमतां-
सकलकोइंद्रइंद्रजीत...
विविधिरूपितरूपितायांकविप्रियायांकविब्रह्मावर्णननामअष्टमःप्रभावः॥ अथकविता
विविधिरूपितस्रूपितायांकविप्रियायांकविब्रवस्थावर्णननामअष्टमप्रभावः॥ अथकविता
लंकारवर्णनं॥ जदपिसुजातिसुलछनी सुबरनसरससुवृत्त भूषनबिननविराजई कवित
...मतकेप्रगविपुषम ... तेप्रतिपरिमोन वरमनसि...

तिता मित्र॥१॥ कविनि कहे कवितानि के अलंकार द्वै रूप एक कहे साधारनै एक बिसिष्ट स्वरूप।
॥२॥ अथ सामान्यालंकार वर्णनं सामान्यालंकार के चारि प्रकार प्रकास वर्ण वर्णन्तुर श्री भू
षन केसवदास॥३॥ अथ वर्णालंकार वर्णनं स्वेत पीत कारे अरुन धूमल नीले वर्ण मिश्रित के
सवदास कहि सात भांति सुभ कर्ण॥४॥ अथ स्वेत वर्ण वर्णनं॥ कीरति हरि हय सरद घन जोन्ह
जरा मंदार हरि हर गिरि अरु सूर ससि सुधा सौध घनसार॥५॥ बलबक हारा केवरो को
डी करका कास कंड काबरी कमल हिम सिकता नख कपास॥६॥ पांडु हाड निर्झर खपर चंद
न हंस मुरारि छत्र सत्य जुग दुग्ध बधू संप सिंधु उडमार॥७॥ सेष सुकृति सुचि सत्य गुन संतनि
मन हास सीप भुजंग तोडरा फटिक घटिका फेन प्रकास॥८॥ सुक सुंदरसन सुरसरि वारनि वा
जि समेत नारद पारद जलज रद सारदादि सब सेत॥९॥ कोनि के अति पति केसोदास गन पति
द सन ज्यों बसन ज्यों बसुमती कस्यो चारु है विधि कीनो आसनु सरासनु असमसर आसुन के कीनो
पाकसासनु उपारु है॥ हरि कर सेज हरिप्रिया कस्यो नकमोती हरि कस्यो तिलक हर राजकी
यो हारु है राजा दसरथ सुत सुनो राजा रामचंद्र रावरो सुजस सब जग को सिंगारु है॥१०॥
देह ज्यों तिहलधर कीनो निसिकर किर जगकस्यो नीबर बिमल विचारु है मुनिगन मन मानि उ
ज निज नेउ जानि संषसंषपानि रूप घउ अपारु है केसोदास सबिलास बिलसै बिलासनी नि
रूप रूप भउ हास उदय उदारु है राजा राम साहि सुत साहि बसंग्राम साहि रावरो सुजस
सब जग को सिंगारु है॥११॥ नाराइन कीनी मनि उर अबदात गति कमला को बनाना तनि सो
ता सुत सारु है केसव सुरनि के समार द सुदेस बेस नारद के उपदेस बिसद विचारु है सो
नकरिष बिसेषसी रम[illegible] सिपानि लेपि गंगा के तरंग देषि बिमल बिहारु है राजाराम सा

+निक्लत तथे द्विस्तुलसबे कियौ [illegible]
उराइजनाइकको ++३५

द्विसुतसाद्विसीसंग्राममसाद्विराद्वरो [illegible]
मततनु:ऊँरूको बिदंयोंसुतमायो ३ [illegible]
यो लिप्याकिधौंरूपेकेपानीपराज्ञ [illegible]
किजरा [illegible]
इककें [illegible]
रसंवेकिजराजसुरूपेके पोनीलिगायो [illegible]
वसाया त्तुस्योकिधौंकेसव व्याप्त [illegible]
३जस्योकिजराजरकेमरसोंपद्दिश [illegible]
रातिमैंवंडसोप्रकास्नद्दिकरत्रद्दे [illegible]
तोजलपरसत्रद्दे ब्रह्मलोकसारद्दा [illegible]
इश्ड्डीतस्तुकोडासुलोक लोकगाद्य [illegible]
पसैंपयसरसोद्दसिंकनमंकसव [illegible]
डलमनों त्रलंद्दिस्तापरीमरानवंति [illegible]
इकऊपदक्ष्युरिजसी द्विलिकाकि [illegible]
लतीसीफ्मठिकें।।३।।कानि [illegible]
मुद्दीत्रनीकालिरंदा जौ [illegible]
द्दिसारकोटद्दीनी [illegible]

तिन्हुकी लोपतिकै मुपमुति लपनोर लाहोर लहरि जैसी गंगकी॥२०॥ चंद्रमनि वंश्वृदि चारुता

विचारि वित्त चामर वांदनी वंद्वारि डारेहैं केतनास कुमुदु कुंड कंबुकंठी रवका चकामनीकटाक्षि

कमनीयताइतारे है पार दतार दमुनि सार दसर दघनघन साकुडी तिमल्जमांन मोरे है औसोज

मुजनरो जगत इंडी तिनकोविसद प्रता वचादजामोदंसहारे है॥२१॥ सरवर रकालि ताजं वे

डराक्ष्मां तसर वरराज है सनि वषांनि है सुरसरि सो सई समासिता लमालसिपकजिरे औरहै

रिश्रंगपटनागहै सरदकंधतघ तसारहार मोतितकेमहादानि इज्जातिविमलनिमाने है तेई

तेई कासी के तिलकति ल्लोक मांफि ते रोजसु जोतिहीको जलथलमाने है॥२२॥ अथपीतवर्णनं

हरिवाहन विधिहरि जटा हरीहर दहरिताल चंपक दीपक वीररस सुरगुरु मधुसुरपाल॥२

सुरगिर लोगोरोचना गंधकगोधनमुत्त चक्रवाक मन लिलसदा भ्रपरवान रैवु॥२३॥ कमलको—

सकै सवबसन केसरिक नकसतोग सारांमुपवपलादिसव पीतरिपीतपराग॥२४॥ मंगलहा

जुकरी रजनी विधियाही तें मंगलनाउधस्यो है दसरी दामनि देह सवारि उदंजदई वनुसालवसे

है रोवनको रविके उकी चंपक कालि में अंग वांमुतस्यो है गोरियुराई कोमेलुमिलकर हाइका—

के करद्राट्रक स्यो है॥२५॥ अथ कृष्ण वर्णनं॥ विधिरद्राआकासुआसि अर्जुनपंकजनु सांप नीलक

ठकोकंब सुनि व्यासविसासियाओ॥२६॥ रापस अगरलिपुर मुप श्यां हराजमृडरोर रामचंद्र रो

घनश्यापती सिंधअसुरतमचोरा॥२७॥ जमजमुनातिलतिल पलमनसिलसिजवीर नीलकर

वतनरकमसि मृगमदकजुलनीरा॥२८॥ मधकपनिसाश्रृंगाररस कालीसतेआकोल अपजा

सुरीय कलंककालि लोचनतारे लोल॥२९॥ मारगु आगिकिसानतर लोलुंचोलुडधूमोज विर

जजसोदांगीपिका कोकिलमद्वियीलोज॥३०॥ काककी चकवकामुमल केकी काककरूप

कलजल्हुदचलआदिदै कारेसम्यस्वरूप

भूरि रवीजल ऊंचे उठि आई। मानौ नायक ताल सन छुमसु। केसवदास अकास न माई। मेटि कैं पं
थ पछ्छन किधौं विधि रंन मई नवरीति बनाई। डम निविड़ नव नारि कान्ह मिलि किधौं सुर लोक सिधाई
॥३१॥ अथ नील वर्ण वर्णनं॥ इन्द्रनील बल जय नलिन व्योम अनिल अग्नि नवाल। कारक तम निद्र यत
रिके नील वरनि सुबाल॥४३॥ कंबु कुं कलमु और कुजं उरप्प उरमे चलि केवल दाई। केसव स्य
रिज अंबु निमंडल नेत्र मुताजल धार धसाई। संकर सैल सिला तल मध्य किधौं सुक की फिरि आ
वली आई। नारद बुद्धि विसारद हीय किधौं तुलसी दल माल सुहाई॥४२॥ अथ मिश्रित श्वेत कृ
ष्ण रक्त वर्ण॥ सिंधु रस हरि राक्षसगनि चंद्र विसुद्ध प्रदेषि अत्र कथा अकास विकानि कलस
मसितले षि॥४४॥ पयुक्त नरयत्रु मपयत्रु नागराज गजराज पयो रासि कवि सिंधु सौं अरु
चिति और हि लिषु॥४५॥ राजसिंह सौ बलुजानि हरि बलतरु अनंत। अर्जुन कहियें तसौं अरु
पारथ बलवंत॥४६॥ हरि गज तुरग जु सवजीयें हरि हसि तुरग जु जानि कोकिल सौं कालिं
दुक हि अरु कल हंस बषानि॥४७॥ कल नदी बर राहु सौं गंगा सिंधु बषानि नीरज विक सौं
दोब सौं अरु तुनी रकादानि॥४८॥ अथ स्वेत पीत राहु कवनं॥ सिव हि विसौं संतत तनि रजत अ
रु हेम स्वर्न सदैं सौं कहत अष्टापद करि नेम॥४९॥ सोमवक तुहिनाचल सौं कलधौत रजत अ
रु हेम तारकूटु रसपार विर मीत रिक हि करि पेमु॥५०॥ अथ श्वेत रक्त राहु कवनं॥ स्वेत वर्न सु
चि अग्नि सुवि सुर सोम हरि होइ पुष्कर तीरथ सौं कहत पंकज सौं सब कोइ॥५१॥ हंस रर विकर
नीये अर्क स्फटिक रवि मानु अदज संपम रसिज द्रुवो कमल कमलज जानु॥५२॥ इति श्री मा
न विविध भूषित भूषितायां कविप्रियायां शब्दालंकार श्वेतादि वर्ण्य वर्णनं नाम अष्टमः प्रभावः॥ अथ

लगनविरोधे॥२०॥ बालवेज्ञिकाबालससि हरिनपरूकरदंत कुटिलादिकएवनीय कप
टीकैउअनंत॥२१॥ तोरङगीदपतानुसुता अलसीबिलसी॥ निसिकुंजबिहारी केसवपोछ
ति अंचलुओरनि पीकसुलीकगई मिटिकारी बंकलगेकुचबीचनपच्चति देषितई हगहनी
उजारी मानौबियोगुबराजहन्यो जुगसैलकीसंधमेंहगवेडारी॥२२॥ अथत्रिकुणवर्णनं॥ स
कटसिंघारेबज्रदल हरकेनैननिहारि केसोदासत्रिकोनमहि पावककुंडविचारि॥२३॥
लोचनत्रिलोचनकेकेसवकितोकिबिधिपावककेकुंडसोत्रिकोनकोनीधरनी सोधीहेसुधारस
सुपरमपुनीत नृपकरिश्वरणहुसजुंदिसिकरणी॥ ज्वालसोजगतजगमगतसुमिरतामेंउ
कीजोतिहोति लोकलोकमनहरनी धिरथिरजीवजु चिन्होमियत जुगरहोतादोचकालुतजु
गलिजाइबरनी॥२४॥ अथसुरतवर्णनं॥ हरबेलननियुतअरु कुकुदकधरघअंग कुतीकं
लकुचअंडमति फंडककउससुरंग॥२५॥ परमप्रबीनअतिकोमलकृपालतेरे उरतेउदितवि
तलितिहितिकारीहै केसोरायकीसौंअतिसुंदरउदारसुतसजलसुसीलबिधिसूरतिसुधारी
है। कालसोंनबोलिजानेहसिनबिलोकिजानेकंचकीसहितसाधसूधीअैसवारीहै तेरेहो
कुचनि सकुचानिनसकतिओछिपरहियहरनप्रकृतिकोनेपारीहै॥२६॥ अथतोदुनगुरवर्ण
नं॥ नपककटाछसारडर्वबन मलसैलसुतीकुनजानु कुचनितंबगुनलाजमति रतिअतिगु
रुकरिमानि॥२७॥ सिंदकोदुधारअंनअन्यारेअनेककामसरजतेपरेषलबचनविरोप
चें चोटनबचतचोरकोनेलकपाटकोट तोननतोहरेललनारेनयअवरेषीचे केसोदासमां
त्रगदर्यैत उन प्रतिपहारकुलकुलकुवज्ररकुकनलेषिये तेहियलममेवर्मकपरकुसेहे
रहेपारिघनीघायउतिघायपेनदेषीये॥२८॥ अथगुरुलाजवर्णनं॥ रसिकप्रियायांयथा॥

KESHAV DAS.
KAVI PRIYA

६

नैपोछिमुजाकृतिनांछिक्र
परज्ञामेंअंजबुदे बजसे
कोमलवर्णनं॥पल्लवकुसुम
।विचारि॥२॥रसिकप्रिया
॥ऊवकगेरसजमृलमति
न॥२२॥सरनिकैमनसम
रहीठ॥२३॥केसौदासदार
नं देदजालजातरूपदादित
वीजुरीहै नैनन्कोधुराधुर



जाताकाथरधुरनयारनश्यागाका उदरकोवडवाअनलश्रेजं मानतु हौं ज्ञानउदांदाराहि
योकोन्ठत्रसीतागाकों॥२४॥अवनिश्चलवर्णनं॥सीतसरमतटसंतमन धर्मअधर्मतमि
श जहांतहांयेवर्नीये केसवनिश्चलचित॥२५॥कायमनोयवकोमतलेततमोदनमोदमदा
तवडीता केसववाउवदिकमवृठविपंत्तिनिडंसंगोधारजचेता दकलिमेंकरुनावजैनमन्यकोतु
गतेंसउसापरश्रेता येईतोसरडामंडलतेदनसरसती असउरधरेता॥२६॥अथवेवलवर्णनं॥ तरा
लउरंगऊरंगमन वांनरवलदलपांन लातलतिकेमतिसारजन वालककाउविधोन॥२७॥ ऊलू
टाकुटिलकटाक्षमन सपनोजोवनमीन पंजनअलिगजश्ववन श्रीदांमनिपवन ८
रमोंसवतलोल ललनालतानियरियंडवृसमीनमीनों मलडाद्रोंडाउदे सप
नेनचपनोईनुलिश्रेंनयंन अंनआकके रफ्तुउदं गाद्रियेधोंकोनगुन

फ

कछुनसरूपमोदकोमदलुदै चपलासीचमकतिसोहैचारुचित्तदिशिकान्हकेसनेकुवउदुल
केसोदलुदै॥१९॥अथसुषदवर्णनं॥पंडितउत्रपतिवली विद्यावडुनविरोगसुषदीफलअसि
लाषिकें संपतिमित्रसंयोग॥२०॥ दानमानधनजोगजयरागवागअरूप मुक्तिसोमसर्वज्ञता
रसुषदानिअनूप॥२१॥पंडितपुत्रसपूतसुधीपतितीपतिअमपरायनिनारी मानोसबैजनजानि
सबैगुनदानविधानदयाउरधारी केसवरोगदहीसोजुविजोगुसुलोगनिसौंरतिमैंसुषकारी सो
बकहैजगमांदिलहैजसुमुक्तियदैविधिवेदसुकारी॥२२॥अथदुषदवर्णनं॥आधिव्याधिअपं
अपमानरिन परघरभोजनवासु कन्यासंततिदुषिता वरषाकालप्रवासु॥२३॥पापपराजयवंध
बंदव सवतापुरपमितु वारनुनारीरूपविन अमदनसीलचरित्र॥२४॥ऊजनऊस्वामीऊ
गतियद ऊपुरनिवासिऊनारि परबसदारिदुआदिदे एउपदानिविचारि॥२५॥ वारनऊ
वालेचोर चाकरुचपलचित्तमित्रमतिहीनसुमस्वामीनरआनीये परघरभोजनऊबासुवासु
ऊपरतिकेसोदासवरषाप्रवासदुषदानीये पापनिकोअंगसंगअंगनाअनेगवसअपजसउ
तसुतहितचितहानीये मूढताबुढाईव्याधिदारिदुउढाई आधियदउनरकुनरलोकनवषा
नीये॥२६॥अथमंदगतिवर्णनं॥ऊलत्रियदासुविलासुवुध कामक्रोधमदमानि सनियुरुसा
रसहंसगज त्रियगतिमंदवषांनि॥२७॥कोमलविमलमनिविमलासीसषीसाथि कमलाज्यौलीने
हाथकमलसनालकें नूपुरकीधुनिसुनिभौरैकलिहंसनिकेचौंकिचौंकिपरैचारुचेदुवामर
ालके ऊवनिकेतारकुवतारनिसकुवलचकिरजातिकटितटिबालके दरैबोलतिबिलोका
तिहरैहरैहरैचलतिमनलालके॥२८॥ अथसीतलवर्णनं॥ मलयजदामकलादैसुप औरमित्र
मित्र पियसंगमधनसारससिऊउरुहहेमंतसीत॥२९॥रसिकप्रियायांयथा॥सीतलसमीरत

सवंड्खंडिकोनिवासरुकेसोदासऐसेंहोतोहरपडिराउहै०॥ अवतमुवर्णनरिछप्रताप
डरदवत तपतसविरहसंताउ सूरजिआगिवडोगिडयविलापापविलाप॥४१॥ केसोदास
नीदत्रमप्यासउपहासत्रासडपकोनिवासुविषसुषहगहोपर वाइकोवदनुवनदायाको
दहनुवडीवडवाअनिलज्वालजालमेंरहोपरें जीरनजनमजातयोरज्वरजारपरिम्रणश्रग
टपरिताउकोकहोपरें सहितपनतापपरकेप्रतापरघुवीरकाविरहवीरमायनसहोप
रें॥४२॥ अवस्वरूपवर्णनं॥ नलनलकवरस्वरैतियजुहरिस ज मदनाँवाहारि दमयति सि
तादिविय सुंदररूपविहारि॥४३॥ कोहेदमयतिइंद्रमतिरतिरातिदिनहोहिनुछवीलीछवि
नछीनजोसवारियें केसवलजातजलजातवेदवापैजातरूपवापुरेविरूपसेनिहारियेंप्रमा
दन निरूप निरूपमतो निरूपत्तसोचंदअवरूपकोविचारियें सीताजूकेरूपपरदेवताकुरू
पसेहेंरूपहीकेरूपकेतेंवारिडारियें॥४४॥ अवक्रूरस्वरवर्णन को छंद सांप असैंके अज
गरिपीकोलवधानि कालकाकवक हपलपर स्वानक्रूरस्वरजानि॥४५॥ कीलीतरसीताजी
लीरटिहैकीरटलातीस्यालतेंसवाईलुततांतेंतीतेंआगरी केसोदासतेसानिकोतामतीनंता
मेतासपरातेंघरासीधनिकूंटतेंउजागरी तडिनकीमाडामाडेऔडिनोरोनारिनकीवाकहै।
तदिवाकीवानीकाभाउकीकागरी सूकरीसकुचिसंकिउमकरीयांसाकितईफककोघरनि
कोहेमोहेनरनागरी॥४६॥ अवसस्वरवर्णवर्णनं॥ कलरवकेकीकोकिला सुकसारीकल
हंस तंत्रीकंठनिआदिदे सुरसूतडंकृतिवंस॥४७॥ केकनिकीकेकासुनिकाकेनमघतम
मनमनमथमनोरथपथरथसोहियेकोकिलाकीकाकलीनिकलितललितवागदमनहीअ
नुरागउरअवरोहियेकोकनिकीकारिकाकहेतसुकसारिकासोंऐसीहीदासनारिकाकोमा

मारिकाउमोहिद्हे सम्हाल बोलति मोमकीमाला उतारि बोलैंनंदलाल सोनऐसीबालकोहि
ए॥५८॥ अथमधुरस्वरवर्णनं॥ मधुरप्रियाधर सोमकर मांषनुद्राषसमान बालकबातें तो
तरी कविकुलउक्तिप्रमान॥५९॥ मधुवामिश्रीदूधघृत अतिसिंगाररसुमिष्ट उपमश्रुषपी
यूषगनि केसवसांचेइष्ट॥६०॥ रसिकप्रियायां॥ मारिकमात नदाडिमदाषन मांषनजूं सदा
वँ मेटिहगाई केसउपमयूषद्वौकी निंआईहोतो पदबोफिनुवाई तोरदुनच्छदको रसु स्वक बा
पिगए करिक्योंजुंदिगाई तादिनतें उनिराषिउगाइ समेत सुधावसुधाकिमिवाई॥६१॥ अथअ
अबलवर्णनं॥ पंगुगंगुरोगिबनिक तीतनपडुतजानि अंधअनाथअजादिसिसु अबलाअ
बलबषांनि॥६२॥ पातुनअघाउसबजग उषबाउतहे द्रोपतीकेलागपात षातहैं। अघानेहैं। के
सोदासनृपतिसुताकैंसतिताइतएचोरतैंयउरनुजवजूडूगजानेहैं। मांगनेउधारपाल दासनु
तसूतसुनाकावमहकौनपाव बेदनिबषानेहैं। औरनअनाथनिकोनाथकोऊरघनाथ उमं
तोअनाथिनकों हाथिदिविकानेहैं॥६३॥ अथबलवर्णनं॥ पवनुपवनुकोश्ब्रअरु परमेसु
रसुरपाल कामुतासुबालीहली बलिराजा सुभकाल॥६४॥ सिंधुवराहगयंदगुरु सेसुसती
सबनारि गरुडबेद्यमातापिता बलिअदृष्टुबिचारु॥६५॥ बालिबैंधोबलिराजबंधोकरसूलीके
सूलकपालबलीहै कांसुजस्योजगकालज्योलोवदिसद्धधस्योविषुहालहलीहै सिंधमथ्योकि
लवोलिनबीकहिकैसबइंद्रऊवालिचलीहै रामहकीहरीरावनवामहै बिजदूगएऊअधम
बलीहै॥६६॥ अथसांकरूववर्णनं॥ केसवचारिऊंबेदको मनक्रमबचनविचारु सांचोएकुश्री
हरिहरि फुगेसबसंसारु॥६७॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाउनठाउको गउबिलैहैं ताउ
तमाउन ध्रुवनुमितनुवित्तअनंतुविसंगनरेहैं केसवकामकीरामबिसारउऔर अकामनुको

मदिराहै बेतरे बेत्र अमें चिन अंत जु अंत कवों क अके लोई जैहै॥५८॥ अनदीवेकी को विकआं
जंन अगेर घोर ता दिपे अगावे गिलिजा हिकौं उग ज्ञ्है याके तोडर तेडरु डगनडग जडरिडर केड
रनियक डोडी ज्यों डग ज्ञ्है जैसे वमता सतें उदास हाय केसोदास केसौन तगत कहिका देकोंपग
ज्ञ्है फ़ गदेरेक, गज गराग्र को छहाई काम साचे को कियो है ताते सांची सोलगत है॥५९॥ अथ
आगति सदागति वर्णनं॥ आगति सिंक तरु ताल गिरि वापी कूप तडाग मदानदी नदपंकज ग ववनु
सदागतिजाग॥६०॥ रसिकप्रियायां यथा॥ पंथ नाथ कित पउमनोरथ॥ अथ दांन वर्णन॥ गोरी गि
री सुगर शविधिगिरा अहनि कोई स चिंतामनि सुरह ज्ञगा जगमाता जगदीस॥६२॥ रामचंद हरि
चंद नल परसराम कपहनें केसवदास दधिचहश्च बलिसिवतीपन्न करमुं॥६३॥ तोजविक्रमाजी
त नप अगदे करन धीरू दांन निसंक दांनदिन इंद्रजीत बलवीर॥६४॥ अथ गौरिको गिरसको
दांनु॥६५॥ पावक फनि विपतस मग्रम इ रूप वर्ग मयमांनि देत जुहै अपवर्ग को पारवतीपतिदां
नु॥६६॥ कांपित छो आउपतित पनहो ताप चढो सीरायें सारी नीरगतिन ई रजनी सकी अजा
जन उयो चाहै अन तु मलिन मुप गागिरही ताज मन मांनो मतवीस की यातीमे छवी लीलज्छ।
विसों चपाय हरि शुटि गई दान्नु छवि को रिसतें तीसकी केसोदास तें दीकाल का गेई कप्याये का
लसु नतश्रवन जगसीस एक ई सकी॥६६॥ अथ संभुको दांन॥ बाधक विविधि साधि त्रि विधि अधि
आधि वेद उपवेद वध वंधनु विधा नुहै जगपरवार पार करत अपार नरक जक परमपद याव उ
श्रमा नुहै भरूप भुरांन कहै भरूप भुरांने सवक्षरण भुरांण मुनिनिगम निदान है तोगवा नत गु
वान तगतिन तगवांत्रु की वे केसोदास तावें तगवान है॥६७॥ इंद्रजीतकोदानु॥ कोर ग तम फेत
धीत्यु सुधारें विधि वारि रडारि गिरि केसोदास तापे है घोर ग मवन कपोल फूल फूले ग डोलजं

१

उबल बलेषानु सुतनी पदें घटा घन नात घन घने घुघरानि नीरान ननाति खवपति श्रीति लाषे है सु
जैत दुलिहृदी द्दलिनविदारिवेकोंइद्रजी तद्दाथयोंद्दआर करिराषेंद्दे॥८७॥ अथगणेशकोदानु॥
उकंमनालनिज्यों नारिडारें सबकालकाविनकरालवे अकालदीद्दक्रषकों विपतिहरतद्दगिपामनी
पातसमपंकज्योंपतालमेलिपववेकनुपकों ज्वरिकैकलंकअंकनवसिसेस सिसमराषतद्देकेते
सदासकेवक्रपकों सांकरकोसांकरनिसनमुषद्दोतद्दीतोदसमुषजगजोवेगजमुषकों॥८८॥ अथ
बिधिको दानु॥ आसीविपराषसिनदेयलति देपताल सुरनि नरनि दियोद विश्वनिके त्रद्दे घिरबिरड
वनिको दानी हरिनिके सोदासदीविकद्दआरको ऊकाद्दाकद्दत्रद्दे सीतवाततेजतोइआवतसमयपा
कैति कालसोंननेंको जाइ ऐसी सकेसत्रद्दे अवनवजवकवजद्दोत दोजानिजऊ विधिद्दीकोदानोंसबुस
वद्दीकोदेत्रद्दे॥८९॥ अथसरस्वतीकोदानु॥ बानीजगरानीकी उदारताबषानीजाइ ऐसीमति ऊप
लउदारकोंनकीनई। देवताप्रसिद्धसिद्धरिषराजतपवृद्धकद्दिकद्दिद्दारेसबकद्दिकाननलई न
वीनतवर्तमानजगत्रबषानत्रद्देकेसोदासकैलंनवषानीकामपंगई॥९०॥ वर्षेपतिवारिमुषत्रव
कीर्ति र्षे पोचमुषनौति वर्णे पटमुषलदपिनई नई॥९१॥ अथपरसरामकोदानु॥ जोधरनीद्दिरनोंछद्दरी
वरजगपवराद्दछिडाइलईजु मानवदानवदेवनिकेजुबैपीवलक्यों कनद्दाषतईजु जालगिकेसव
ति मारछुतोंतवमारैवजीवनिद्दांजुमईजु सातसमुद्रनिमुद्रितरामसु विप्रनिबारअनेकदईजु॥९२॥
श्रीरामचंद्रजीकोदानु॥ षरणभूषणअरुप्रूरूपभूषनपरिछरणबतावेबेनरावआरउक्तिको वा
रसनदेतजिन दरसनुसमुफेननेंन नेननकोद्देबैन वांडितेड जुक्तिकों जानियदकेसोदासअन
दिनरामरामरटेउनडरत्तन सेषभूनउक्तिकों रूषदेइ आणिमोद्दिजुतदेइ गिरमांद्दितक्तिदेइ मद्दि
माद्दिनामुदेइमुक्तिकों॥९३॥ अथपरे वा॥ जोसतजग्यकरेकरिइंद्रकोसोप्रभुताकपिछतकोंकीनी॥

ईसदई न दयो दससीसहि लंक विभीषन त्यौं सँदी लीनी श्रीरघुनाथ की दान कथा कहि कौ बरनै रसअद्भुत लीनी जोगति ज्यौं रघुबीर तिनकी सब आथिकी सुकर ऊ करि दीनी॥१४॥ अथ बीरबल को दान॥ पावक के भुज पपावक के सब सोक के संपति ती सुप माँझ रूप के पाल हि फांसि अलोक के आउ अजुध ने जांति जमामैं बेद केसेरव डेडर के इफ की वकर्तोन लिके ऊरमामे फूफत हो बरवा ग विन बज। दारिद के दरबार द माँझे॥१५॥ इतिश्री कविप्रियायां सामान्यालंकार वर्णनं नाम दानवर्णन नाम पंचमः प्रभावः॥५॥ अथ भूमिभूषण वर्णनं॥ देस नगर बन बाग गिरि आश्रम सरिता ताल रवि ससि सागर भूमि के भूषन रितु सब काल॥१॥ अथ देस वर्णनं॥ रत्न खानि पसु पच्छि बसु बसन सुगंध सुदेस नदी नगर गढ़ बरनीये भाषा भूषित बेस॥२॥ आभि र अर भन बसन बहु या सुगा सुदांन सन सन माने आता बाहन बपानीये लोग लोग जोग तभी याग राग रूस भूत नमन नित भित सनता या भूप आनीय सांता उ राती रथ सरित सब गंगादिक के सोदा सभरण सरंभ गुन गानीये गोपा चल अस्थे भट राजा मनसिंह सु खुके देसन कोम नि मद्दिम ध्य देसु मांनीयै॥३॥ अथ नगर वर्णनं॥ खाई कोट अटा ध्वजा बापी कूप तडाग बारनारि असती सती बरनौ नगर सभाग॥४॥ चहुं ताग बाग बन मान ज्ञ सघन बन सो ताल सो माला हंस माला सी सरि भवर। ऊंच अटानि पताका अति ऊंची कौ सिक की फौनाभंग पेला पतर नतर आपने सुपनि आगें निदितन रिंद आर घर घर दे पियत देवता सनारीन र केसोदा सजा सुजहां केवल अदष्ट हाकी बारीयें नगर ओर औडछे नगर पर॥५॥ अथ बन वर्णनं॥ सुरभी इभ बन जीव बहु भूत प्रेत तय तीर भिल्ल भवन वल्ली विटप दव दवना दिक धीर॥ . . . . . . आस पास ओडछा के तास कोस उगार न्य नाम बन बेरीका अजी जेद विधि कै सोव फ दरवार नंद लितवा घयात रूव राज्ञ बज्ञ तिन्न कौ अता त्रंदे अमकी नमाविसीफि जाम बृतके सोद उमस्थि परसु प

कें

लषलेषातेषानुसुतनाषेहै घंटाघननातेघनघनेघुघरानि सैारानननातिखवपतिश्रीतिलाषेहै ड़ु
जेनदुलिद्र दीहदलिनविदारिवेकौं इंद्रजीतहाथयोंहुआर करिराषेहै॥६८॥ अथगणेसाकोदानु॥ न
उकमृनालनिज्योंतोरिडारे सबकालकाविनकरालवे अकालदीहडषकों विपतिहरतहिंपोमनी
पातसमपंकज्योंपतालपेलिपववेक तुषकों डरिकैकतंकत्र्यंक लवसिसेस सिसमराषतहै केश्रो
सदासकेवडषकों सांकरेकोसांकरनि सनमुषहोतहीतोदसमुषजगजोवेगजमुषकौं॥६९॥ अथ
बिधिकोदांनु॥ आसीविषराषसिन देवतनिदेपतालसुरनिनरनिदियोहवितनिकेउहै। थिरविरङ
वनिकोदानाहनिकेसोहासदीवेकहुओरकोऊकाहाकरउहै सीतवाततेजतोइआवतसमयपा
हँति कालसोंननेकोजाइ ऐसीसकेसेउहै अबतबजबकबजहांतहांजानिजड़ बिधिहाकोदानोसबुस
बहोकोंदेउहै॥७०॥ अथसरस्वतीकोदांनु॥ बानीजगरानीकीउदारताबषानीजाइ ऐसीमतिऊ
उउदारकौंनकोतई। देवताअसिद्धसिद्धरिषराजतपबृधकहिकहिहारेसवकहिकाहूनलई न
बालतवर्त्तमानजगउबषानउहैकेसोहासकेनंनबषांनीकाहूपैंगई॥७१॥ वर्षपतिबारिमुषउउव
कानि सोंपाचमुषनाँतिवर्णेषटमुषतदपिनईनई॥७२॥ अथपरसरामकोदांनु॥ जोधरनीछिरनींछहरी॥
वरजग्यबराहतिडाइलईसु मानवदानवदेवनिकेसुवपोवलक्योंकनहाथलईसु जालगिकेसवा
मारघुलोंलवपारषजीवनिहांसुमईसु सातसमुद्रनिमुद्रितरामसुविप्रनिवारअनेकदईसु॥७३
श्रीरामचंद्रजीकोदानु॥ भरणभरांणअरुपुरुषपुरानपरिपूरणवतावेवेनतावओरउगिकौं वा
रसनदेतजिन दरसनुसमुझैननैननेननकोदेवेंड आंडितेडद्युक्तिकों जांनियहकेसोवासअन
दिनरांमरांमरटउनडरउनसेषडनकक्तिकों रूपदेइ आणिमादिगुनदेइ गिरमादितक्तिदेह मंहि
मादिनामुदेइ मुक्तिकौं॥७४॥ अपरंवा॥ जोसतजन्मकरैकरिहइकोसोप्रभुताकपिकृतकोंकी

ईसदई न दयेद ससीसहि लंकथिति पत्र श्रीसंदीननी श्रीरघुनाथकी दानकृपाकहि को बरनें रस
अद्भुतनीती जोगति उरधरे तिनि की सुश्राथिकी सुकरे ऊकरेदीनी ॥५४॥ अथ वीरवलकोदानु ॥
पानके छेजन पपाकनके सवसोकके संपसुनी सुअमांम रूपके फालरिफांफि अोकके आउ अनुप
नजांनिजमांमें सेद केसेरवडेडरके डफकी त्रकसीरानिके ऊनमाने कृतदी वरवीरविजवज्र
दारिद के दरवार दमामें ॥५५॥ इतिश्रीकविप्रियायां सामान्यालंकारवर्णनं नामदानवर्णनं नाम पंचम
प्रताव: ॥५॥ अथ भूमिभूषणवर्णनं ॥ देशनगरवनवागगिरि आश्रमसरितातालउ रविसंसि सागर
भूमिके भूषनरितु सबकाल ॥१॥ अथ देशवर्णनं ॥ रत्नखांनिपसुपक्षवसु वसनसुगंधसुदेस नदीन
गरगढवरनीयै तायासुवित वेस ॥२॥ आछेआछे असनवसन वसुवासुपासु दानसनसनमानजाना
वाहनवषांनीयै लोगतेभजोगतभोवागरागरूपभूत त्रसननिवषित सुतायाभुवजानीय मातापु
रातारथ सरित सवगंगादि कथके सोदासमरणउरांग गुनगांनीथ गोपावलअस्मेढ राजामानसिंह
जुके देसनकीमनि महिमध्यदेस मांनीये ॥३॥ अथ नगरवर्णनं ॥ पाई कोट अटा धुजा वापी कूपत
डाग वेस्यानारिअसतीसती वरनोंनगर सताग ॥४॥ चन्द्रतागवागवनवीन जु सघनवेन सोनाल
सीमाला हंसमालासी सरिमवर । उंचे अटानिपताका अतिऊंची भकौ कि कफोकोनमांगयेला
पतरलतर आपनेसुपनिआगें निदितनरिंदि औरघरघर देषियत देवतासनारीनर केसोदा
सत्रासु जहां केवल अदृष्टहीकोवारीयें नगरऔर ओडछेनगरपर ॥५॥ अथवनवर्णनं ॥ सुरभि
ईनवनजीवजन्तु तनमेततयतीर तित्रतवनवल्लीविटप दववनवांदृष्टीर ॥६॥ केसोदास
आसपास औडछाकेतीसकोस ठेगारन्यनामवन्वेरीका अजीतेद विधिकेसोवककवरवानवा
लितवाघयानर्वराजवन्तित्रकोयता तंद्रे जमकीजमाविसेकि जामभूतकेफेद उमहिचषुप

उसुखु रिझै नाको मानु है अचल अनल बेत सिंधु सो सरित सुत संत के सो जटा जूट परम उजी
नु है ॥८॥ अथ पर्वत वर्णनं ॥ शृंग तुंग दीरघ दरी सिद्धि सुंदरी धाउ खग नर युत गिरि बरनि
औषध निर्झर पाउ ॥९॥ इंद्रजीतु कीने तेरे आरि कुल अकुलाइ मेर के समान आन अचलधरीनि
में सारो सुक हंस पिक कोकिला कपोत मृग केसोदास कल्पवृक्ष कलभ करी निमें फारे कल हार
टूटे राज पारि पट छूटे फूटे है सुगंध घट अवतरी निमें देषि जात सिषरा सिषर गति देवता से सु
दर कुबेर आकुंदरी निमें ॥१०॥ अथ आश्रम वर्णनं ॥ होम धूम धुत बरनीये ब्रह्मघोष मुनि वास ।
सिंहादिक आदि मोर मृग ईत सुत बैरि विनास ॥११॥ केसोदास मृग जब छेरुचो षि बाघनि नि
चाटत सुरति बाघ बालक बदनु है सिंघनि को सावक अचे कलभ करनि करि सिंघनि को आसनु
गयंद को रदनु है फनि के फनिन पर नाचत मुदित मोर क्रोध न बिरोध जहां मद नु मदनु है ।
वानर फिरत डोरे अंध तपसिनि रिषि को निवासु किंधौं सिवको सदनु है ॥१२॥ अथ सरिता वर्ण
नं ॥ जलचर हय गज जलज तट जप कुंड मुनि वास स्नान दान पावन नदी वर्णिजै केसवदास ॥१३॥
ओड छे तीर तरंगिनि बेतवे ताहि तरे रिपु केसव को है अर्जुन बाहु प्रवाह प्रबोधित रेव ज्यों रा
जन को रज मो है जोति जगे जमुना सी लगे जग लालित लोचन पाप विपो है सूर सुता सुत संग
म त्वंग तरंग तरंगित गंगसी सोहै ॥१४॥ अथ बाग वर्णनं ॥ ललित लता तरवर कुसुम कोकिल
कलरव मोर बरनि बाग अनुराग सों नवरत बवत चिकोर ॥१५॥ सहित सुंदरसन करुना
कलित कमला सु नविला सुमद नुमिति मानी बे सोहियै अपर्णरूप मंजरी मंनीलकंठ सुपद
रजके सोदास प्रगट असोक उर आनीयै रंता सोंस दल बोलै मंजुघोषा उरवसी है रुक्कलेसु ।
मन सुमन बहु बदानीयैं देवको दिवानु सो प्रवानु राइजु को बाग इंद्र के समान जहां इंद्रजीतु जा

नीयें॥१५॥ अथ ताल वर्णनं॥ ललित लहरि यगउद पउन सुरति समीर तमाल करत केलि
नें जो प्रगट जलचर वर एन्ज ताला॥६॥ आउ धरे मल औरनि के सब निर्मल काय कंग विहंग औनें
मंथित के परिताप हरे। द्वि जित न रुलत नुरु हतो रं देषक एकु सुता त्रवडा वड ताग तडा गनि
के चित चोरें ज्यों उत जीवनि हारिन कौं निज बंधनि के जग बधत औरा॥७॥ अथ समुद्र वर्णनं॥
उंगत रंग गंभीरता रतनागर जलजउ गंगा संगम दवत्रिय दरसन तसरस अनंत॥८॥ गिरवड व
नल हथ वज्र चंद्रोदय तें डोनि पंनग देव अदेव यह ऐसो सिंधु वषानि॥९॥ सेतु धरे धरत
महके सब जीव रचे विश्वे विलिजे ते चौदह लोक समेत तिन्हें हरि के प्रतिरामनिम चितचंन
सो वतनें उमूते ईन्ह मैं अनादि अनंत जगाधि हिएं तें देषक अद्भुत सागर की गति सागर हो
में सागर केते॥१०॥ रतिवित्तें तिपाय प्रद विपदाई सम सरीर के पाप वियोह है कि धौं के लव
के सपको धरु देव अदेवनि को मन मोह संत हियो कि वसे हरि संतत सोत अनंत कहक
वि कोहै चंदन नीर तरंग तरंगित सागर को उकि नागर सोहै॥११॥ अथ सूर्योदय वर्णनं॥
रा, रउदय ते अरुणता पय पावनता होइ संध्य वेद ध्वनि मुनि करें पंछ चले रत लोइ
॥१२॥ कोक कोकदेने सोक हर उपक कलय कुलटानि तारा औषधि दीप ससि सुकचो
रत महानि॥१३॥ कोकनद मोद करु मदनु वदनु किधौं दस मुप मुप कज वलय उमदाई दे
रोध कुअसाधु जन सोधकु तमोयत कि उदित प्रबोध बुद्धि के सो दास-पाई है पावन करन
पय हरि पद पंकजु कि जग मगो मानों जगमग दरसाई है तारापति ते जपति तारका तरु
किधौं प्रगट प्रतापकर हो का प्रभुताई है॥१४॥ अथ चंद्रोदय वर्णनं॥ ८
कृतम मानिनि कुलट निड: पु चंद्रोदय तें कुउवयति जलधि च

दास है उदास कमलाकर सौं कर सोषक अदोष तापतमो उन तानियै अमृत असेषु के वि
शेषितांई बर पत कोकनद मोद रूषपंकन विचारीयै परम सरूप पदुती सुष परूप रूप स।
सुषसु पद विडसु निउर धारीयै हरि है री हियमांझि हरि न हरिनैं नवं इमानवैं इमुषीना
रदनि हारियै॥२६॥ अथ वसंत रितु वर्णनं॥ वरनि वसंत सउ हप अति। विरह विदारन व
र कोकिल कलरव कलित वन कोमल सुरत समीरु॥२७॥ सीतल समीर सुत गंगा के तर
गसुत अंबर बिहिन वसु वासु कीलसउ है सेवउ मधुपगण गजसुषपरलैत बोलसुनिअ
षी होउ संउ वे असंउ है अमल अइदल रूप मंजरी सुपद रज रंजित असोक डप दे षत
न संउ है जाके राजदि सिभ्रूकुलेद सु मन सव सिव को समाजु कि धौं के सवव संउ है॥२८॥
अथ ग्रीषम रितु वर्णनं ताते तरल समीर सुष रूषे सरिता ताल जीव अबलजल बलअ।
कल ग्रीषम सकल रसाल॥२९॥ चंडकर कलित बलित वर सदागति कंद मूल फल फा
लद लनि को नासु है कौंच बीच बचे मीन व्याल विल कौतुक उडरद दरी निदिन सत को वि
लासु है घिर चिरजीवनि हिरन बन बन प्रति के सोदास मृग सिर श्रवतनि वासु है। धामन
बलधनु ष सोस सनि पांन सर रस वर समुद्र किधौं ग्रीषम प्रकासु है॥३०॥ अथ वरिषा रितु व
र्णनं बरषा बरन जन्द सवक दाउस्वात कमोर के उक कंज कदंब जल सोदामनि घन घो
र॥३१॥ सौं है सुरचाप बारु अमुदित पयोधर रूषन जस यजोति तडित तरनाई है डरि।
करी सुषमुषमा ससि कीनैन अमल कमल दल दलित नि काई है के सोदास प्रबल करेणु
कागन हरमुक तसुद सुबक अति सुषदाई है अंबर बलित मति मोहै नीलकंठ कूक केवर।
षा कि कालिका हरिष हिये आई है॥३२॥ अथ सरद रितु वर्णनं अमल अकास प्रकासु स

सि मुदितकमलकं उकास पंथीपितरध्याननृप सरदसुकेसवदास २३ विप्रान।
गीतायथा सीताको सदनुससिसदनुमदनुकरुवंदेनरदेवऊवजयवजदाईहै पावन
पदउदार लसंतिहंससुकुमारदापतिजलजहारदिशिरधाईहै तिलकचिलकचारु
लोचनकमलरुचिचऊरस्वऊरसुप जगजियताईहै अमलअंबरनीजलीनमीतपयो
धरकेसोदाससारदाकिसरदसुहाईहै॥२४॥ अथहेमंतरितुवर्णनं॥ तेलतूलतामोर
त्रिय तापतपनरतिवंत दीहरयनलघुदिंसुसुनि सीतसहितहेमंत॥२५॥ अमल
कमलदल लोचनललितगतिजारतसमीरसीततेहिंतदेहहूषदको चंद्रऊनयायोजा
इ चंदनचितयेजाय चंदनुनलायोजायप्रकृतिवऊपकी घटकाघटनिजातिघटिना
घरीहूघरीछिनछीनछविरविमुपसुषकी सीकरतुसारस्वेदसोहतहेमंतरितुकि
धौंकेसोदासप्रियप्रीतमविमुषकी॥२६॥ अथसिसिररितुवर्णनं॥ शिशिरसरससम
वरनीमे केसवराजारंक नाचतगावतरेंनदिन षेलतिहसतनिसंक॥२७॥ सरसअ
समसेर सरलिजलोचनविलोकिलोकलीकलाजलोपिवेकोआगरी ललितलतामबा
ज्ञानिजून्याचनवालेचिटउरनिजागेउमगिउजागरीपंअव अधरमधुपनिपीवतजं
स्वतिरुचिर पिकमरुतसुपसागरी इहिविधिसदागतिवासविगलितवासुरि
सीता किधौंवारिनागरी॥२८॥ इतिश्रीमनविविधभूषितभूषितायां कविप्रियायां सा
मान्यालंकारवर्णनंनामसप्तमःप्रभाव॥ अथराजश्रीभूषनवर्णनं॥ राजा
मोहितदलपितछत्र मंत्रिमित्रप्रयानगयरथ्यसंग्रामभूपत॥१॥ आषेट
विरहस्वयंवरजानि भूषितसुरतादिकनिकरि राजश्रीसुविधानि॥

अन्नाप्रतिज्ञा उन्नपत्त परमप्रतापप्रसिद्ध सासननासनशानशत्रुके बलबिबेकको ह।
द्धि॥२॥ दंड अनु ग्रदधीरता सत्यसूरता दान को प्रदेसत्रुत बरनाये उद्यमहमानिधान
धा॥ नगरनगरपरघनईसोगाजैघोरइतको नता तिना ति अघन अघीरको। अरिनगरी
नि प्रतिकरति अगमाम्पोनताके विविधाराजहांघोरी परपीरको सासनको नासनकरत
एकगंधासत्रुकेसोदासउमेति कं उगति सरीरको दिशिरजोतिये अजाति उजदानति
सौं ऐसो नीति राजनीति राजे रघुबीरको॥५॥ अथराजपत्नीवर्णनं॥ सुंदरसुषदपतिव्र
ता सुचिरुचिसीलसमांन इहिबिधिरांनी बर्नीयें सलजसुबुद्धिनिधांन॥६॥ माताजि
मपोषित पिताज्यौं प्रतिपालुकरै अन्नुजिम्मा मनकरत है रिहि वसौं सेयाज्यौं सहाय
करे दे तिहै सषाज्यौं सुषसुषरूज्यौं सिषावे सिषदेतु जिभरि जियसौं दासीज्यौं टहलकरे
देवीज्यौं प्रसन्नहै सुधारेपरलोकलोकनाह नातेबियसौं ब्याकेहै अयांनमद छिति।
केन्हनकहु इऔर सौं सनेहकरे ब्योकि ऐसी तियसौं॥७॥ कामकेहै आपने ह्वा कामरतिक
म साथरतिनरताकौं जराकैसें उर आनीयें अधिकअसाकहइंद्रइंद्रानी अनेगइंद्रो।
गवतिकेसोदा बेदनिबषानीयें विधिकं अवधिकानी सावित्री ह्योपदानी ऐसें सबब्र
ति पुरषउनमांनीये राजारामचंद्रजूसे राजनन अनुकूल सीतासीनपतिव्रतानारी।
उरआनीयें॥८॥ अथराजकुमारवर्णनं॥ विद्याविविधिबिनोदजुत सीलसहितआव
र सुंदरसूरउदारबिनु वर्निएराजकुमार॥९॥ श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां॥ यथा दानति।
केसौंलपरिदानके भ्रह्मारीदिनदानवारिज्यौं निदानदेषीयेसुतायकैं दीपदापनेकी अ।

यथा पत्रश्रुसंसकेसोदास द्विजगायकैं आनंदकेकंद सुरपालकसेबालकतें मरदार।
प्रियसाथमनवचकाईके देहधर्मधारीपैं विदेहराजजुसोराजराजतकुमार ऐसेदसरथ।
राईको।२०॥ अथ ओहितवर्णनं॥ ओहितनें हितवेदविधि सतसीलेंसुविप्रेंग उपकारसमा
न्यरिखु जासोजगतअनंग॥२१॥ कौनेऊरोहित मित जाकलाकेलोगा येगातपाकेजुपायेजम्म
लतसतअरिउरत्रासुहै जा तेजअजीतनरुपदेसदेसवङरूप औरकोनकेसोदासवउको
बिलासुहै तोसोदरकोधनुयनपगनुगोविसुयदपालुवडूंकोसुपसुयमांकोवासुहै।
केगएत्रसत्तरंमबडो धनधर्मधांसुकेवलवसिष्टकेप्रसादकोप्रकासुहै अबदलपतिवा
र्णतं॥स्वामीतगअ्त्रमजित सुधासेतापतिअर्हुत अनालसासयजनजिसो सुपसंत्राम
अजीत॥२२॥ ओफिदायो अतिआरसुपारसुकेसबसारबसाधसम्हरो सादससिंधा
बसिदसदाजलविक्रमपूरो सोहियेएकअनेकनिमांफि अनेकनएकविनारजरूरो।
राजतहैतिहिराजकोराजसुजाकोवमूमेंचमूपतिपूरो॥२४॥ अथछतवर्णनं॥ तेजवद
निजराजके भातिउरउपजेहिछोत ऑगितजांनहिसमपउन बर्नेञ छतअलोत॥२५॥
सारथरहितहितसहितविहितमतिकांमक्रोधमोहछोरलोभमदहीनेहै मानत्न।
अमीउपहिचांतिबेकों देसकालबुद्धिबलजांनिवेकोंपरमप्रवीनेहै अपतीऊकति
अतिऊपरीहै औरनकीउरिरुउरामतिलेलेबसकीनेहै केसोदासअरिदलदेसदेस
रामदेऊराजनकेदंपिवेकोंऊनेहगदानेहैं॥२६॥ अथमंत्रीवर्णनं॥ राजनीति रा
जरत सुचिसर्वज्ञकुलीनु छमीसूरजुससीलहुत मंत्रीमंत्रप्रवीत। ॥के ।

सेतु बारिधि बांधि का हा सयोरी यनि जो छिति छाई। सूरज को सुत बालि को बालक कौन तु
नील कहै यह बाई को हनुमंत कितो कव जो जस लंक पद जो रलई न दि जाई। लक्ष्मन रूप
न रूपन लंक सु राम वितापण को मति पाई ॥१८॥ अध्ध सु रोड़र जोधन सों कहि कौन करी
जम लों बकसी ल्यों कर्नु स्नु पाडु जरो न सों बेरु कैं काल बधे बरु का जे प्रताप सों राम का हो॥
बहु रो आरु अर्जुन नारि नम्या बतदी बल तरा ल्यों केवल केसव केसव कें मत रूत लखार
षपार धजा ल्यों ॥१९॥ अथ मंत्री मति वर्णनं ॥ पंच अंग गुन संग षट विद्या जुत दस च्यारि अ
गम संगम निगम मति ऐसे मंत्रि विचारि ॥२०॥ केसव मादक क्रोध बिरोध तजो सब स्वारथ धा
सिद्धि अनेसी भेद अभेद अनुग्रह विग्रह संधि कहौ विधि जैसी बैरिन को बिपदा अरु कैं
अरु तो कर मंत्रिन की गति ऐसी राघव ति राजनि देव निज्यों दिन दिव्य बिचारि विमान वने
सी ॥२१॥ अथ प्रयाण वर्णनं ॥ चौर पताका छत्र ध्वज डंड तिधकनि बज मांन जल थल म
य लंक पर ज रंजित वर्न प्रयान ॥२२॥ राघव की चतुरंग चमू चय को गनि केसव राज स
माजनि सूर तुरंगनि के उरफ़े मग तंग पताकनि के पट साजनि टूटि परे तिनतें मुगता ध
रनी उपमा बरनी कवि राजनि। बुंद मनों मुष फेन निके कि धौं राज सिरी अवे मंगल जाज
नि ॥२३॥ नाद कुरि धुन निसुरि तूरि बन झुरि गिरि सो पिभ जल लहरि रथ लगाय की केसो
दास आस पास गेर रेरा षिजन तिन की संपति सब आपने हाथ की उन्नत नवाई न
त उन्नत नवाई रूप सत्रु निको जिविका सुमित्रनि के हाथ की मुद्रित समुद्र सात मुद्रा नि
जमुद्रित कें आई दिसि दिसि भाजि जाति से नार घनाथ की ॥२४॥ अथ हय वर्णनं ॥ तरलतत

ताई तेज गति सुषसुपलक्ष दिनदेषि देससुदेससुलछने बरनौं बाजि विशेष॥२५॥ वामन
हीडपदस्तुनां क्यो नवुतादि कादानां केपद चारि थिर होतई हिं उहे छेकाछित औरतिथि
गंडिधापत्र कुंडली करउ लोल चित्तमो ललेउ दे मनकेसंगीत वीरवाहन समीरके
सैनैन निज्यौं नोते नेहके निकेउहे गुनगत वलित ललित गतिके सोदास जो सैं वाजीरा
मवंडु दिवनि कौं देउ दे॥२६॥ अथ गजराज वर्णनं॥ मत्तम दावत दाघमें मंद चलनि वल
कर्ष सुक्का मय ईत उंनसुत सुंदर सूर सुवली॥ जलके पगार तिजलदके सिंगार पर
दलके बिगार कर पुर पुरपारे रोरि दाहे गढ जैसे घन तट ज्यौं तिरत रन देषि देति आसिष
गिनेस नृके तोर मोरि विधि केसे बंधव कलिंदनंदसे अमंद बंदनं कोन्हुं डरत रवंदन काव
रुमोरि सूरके उद्दोत उदे गिरि से उदित अति औसे गजराज राजै राजा समर्थ धौं पोरि॥२८॥
अथ संग्राम वर्णनं॥ सेनास्वांन सनाह रज साह स सस्त्र प्रहार अंग सैतंग संघट्ट तट अंध
कबंध अपार॥२९॥ केसव बरनों जुध में जोगिन जात खुतरुद लसत यानक रुधिरमय स
रवर सरित समुद्र॥३०॥ श्रोनित सलिल नरवानर सलिल वरंगि रद्द नवंउ विभुविलिप।
तुज स्यों हे चवर पताका वडीवडवा आनउ सम रोग रिपुजा में केउ केसव विवा स्यो हे वजि
सुरवाजि सुरगज से अनेक गज तरसु सुबंध रंडु आम उनिदा स्यो हे सोहत सहित से
सु रांम वंड कं सल वजाति के समर सिंध सांवेम संसुधा स्यो हे॥३१॥ अथ आषेटक वर्णी
नं॥ खुरराब हरी बाजबज चाते सांन स्वांन सहरिव दिलैया तिन्ह जुत नीलनि वोल
पिसांन॥३२॥ वानर वाघ वराह मृग मातादिक वन जंउ बंधवधन वेधनि वरनि मगन्ना

पेटअनंत॥२३॥ तीतरकपोतपिककेकीकोकपारापतऊरेरकलिंगकलहंसगहिलायेहैं
केसवसरसत्तसीहगोसरोसरोसहितदाहककरनिपाससकरगहायोहै मकरनिभुर।
वेधिबांधिगजराजमृगसुंदरीदरीनितिन्हतांमनीनिताएहै रीफिरगुंजानिकेहारपहिरा।
यदेषेकांसुंश्रैसेरांसुकेकुमारदोऊआएहै॥२४॥ षेलनिकेषेलतेलमनमथमनओला।
सेलजाकेसेलगेंलगेलप्रतिरोकहै सेनानीकेसटपटस्वेदचितस्वटपटअटपटअति।
आ अतिअंतककेबोकहै इंद्रजूकेअकबकसंलुकेसकबकधातान्हकेधकबकके।
सोदासकोकहै जबरमृगजाकोरामकेऊमारस्वलेतबरकोलाहलहोउलोकालोकु
हो॥२५॥ अथजलकेलिवर्णनं॥ सरससरोसुरसुसोननतनिहियसोंपियमनोंफेलि गहिबोगतलषनु
नैं कों जलचरज्योंजलकेलि॥२६॥ एकदमयंतीऐसीहरेहंसिहंसबसएकहंसिनीसीबिसहा
रहियेरोहिये॥ लषनगिरतएकलेतबुडिबीचिरमीनगतिलीनहीनउपमांनटोहिये एकह
रिकंवलागिरबुडिजातिजलदेवतासीदगदेवताविमोहिये केसोदासआसपासभ्रमरभ्रमत
जलकेलिमेंजलजमुषीजलजैसोसोहिये॥२७॥ अथविरहवर्णनं॥ स्वासनिसांचिलाबढेरुद
नपरेवषेबालकारेपीरेहो उरुरा लातेसीरेगात॥२८॥ तुषपपास सुधिबुधिघटेंसुषनिजाउति
अंगडषहोतसुषसब केसवविरहसंग॥२९॥ रसिकप्रियायांयथा॥ बारबरजोमेंस
रससरसमुषीआरसीलेदेषिमुषआरसमेंबोरीहै सोताकेनिहोरेतेंनिहाराति नेंकहो
उहारीहोंनिहोरिसबकाहाकलपोरिहै सुषकेनिहोरेजुनमान्योसोतलीकरीकेसोर
रकासोंतोहिजोउमनमोरिहै नाहकेनिहोरेकिनमानहिनिहोरतिहोंनेहकेनिहोरें।
फिरिमोहिजुनिहोरिहै॥३०॥ उक्तंरसिकप्रियायांयथा॥ हरितशृंगारहेरातिदियोंह

हरत हारी हौं हरिन नैंनी हरिन कहौं लहौं वनमाली ब्रजपरि वरसत वनमाली रहु रि देषि केस
वकें सैं सहौं आउ घन घनस्यांम घन ऐसे होत घन घन निके द्यौं स घनस्यांम बिनु क्यौं रहौं हृदय
कमल नैंन देषि कें कमल नैंन होहुंगी कमल नैंन और हौं कहा कहौं ॥४१॥ त्यौ लिगयो सव सो सुं
रो समिटे सव के तम रैंनि वितानें को अपने पर के पहिचांनि तिज्ञांन तिनां हिनें सीत लता नें ना
के हिमें हपतां तु जला को लई सुनि ज्ञा कि कहीपरें बातें एक ही बार न ज्ञांनीयें के स वका हूंतें
सुपगई सुपसा तें ॥४२॥ मेघ के हो सैपें आसु उसा सनि साघनि सा रुविसा से नि वादी हंसा
गये उडि हंस नि ज्यौं चपला समनी दुग ईंगति गाढी चातकी ज्यौं पिऊ पिऊ रटें वढि ताप तरंगा
नि ज्यौं तन गाढी के सव वा की दसा सुनि हो अव आगि वि नांग नि वाढी ॥४३॥ अथ स्वयंवर व
र्णनं ॥ सवा स्वयंवर के आये मंडल मैं ... रूप पराक्रम वंस गुन वनि एराजा राजु ॥४४॥ मंड
ल मंच निकी नृप मंडल मंडित देषिये देव सतासी । दुंतिनि कोड ति देहकी दीपति त्यप्रनयो ति स
मित अतासी फूलनि की ... विअंवरकी छवि छत्रनकी छवि तक्षन तासी सोहति है अति सो यस्
यंवर आनन चंद्र भये सजतासी ॥४५॥ अथ सुरत वर्णनं ॥ सुरत सा उकी तांऊ रति मनि तरनि
तमंजीर हावतां वनहीं अंतरित अलज सलज्जु सरीरं ॥४६॥ केसोदास सव मन्ही उपजति
सयत्तीसु रोम रुचि स्वेद देह कंप दृगि हति है आनम्रि वाडि रुति वरण पदाति क्रम विविध
सवद हूं छि दान निलहति है कलित कपोन करसकनि सुमांन नन त्रानि स उकंर जयव्यार ति
स हति है त्यप्रन सुदेस हार हुपन सकल होति सपीन सुरतरीति समरु कहति है इति श्री
मन विविध रूपित रूपितायां कविप्रियायां सामान्यालंकार वर्णन राजश्री भूषन वर्णनं नाम
अष्टमः प्रभावः ॥८॥ अथ विशिष्टालंकार वर्णनं ॥ जाति सुभाव विभावना
उपेक्षा आक्षेप क्रम आसिष प्रियस्रु लेषा ॥१॥ अतिन्व ...

नियमंत सक्रम लेस निदरसनति बरनतं कविबुधिवंत॥२॥ अन्य अर्थके तवत है न्यासर
सुक्ष्म समांत और अ सुक्षेयुक्तकहि युक्ताउक्त समांत॥३॥ अन्य अर्थके न्यास विति रेक अपतते
उक्ति व्याजस्तुति निंदा अमित पर्यायोक्ति युक्ति॥४॥ सहित समाहित सम्मको ये बरनि सुसिद्धि
सुमित्र केसवदास प्रकास बस कहि असिद्ध विपरीति॥५॥ रूपक दीपक श्लेष लिका परिवृत्ति उपमा॥
चित्र ता यमक बिरूपनि रूपत कीजे मित्र॥६॥ अथ जाति लक्षनं॥ जाको जैसो रूप गुन क
हिजे तेही साज तासौ जाति स्वभाउ सब कहि बरणत कविराज॥७॥ पीरी रूपा रकी पिछौरी के
सो दास पारा भ्पा गअरु पारा एप न्हैया बडे रमोतिनकी माला बडे नैननां न्हीर रूकुटी कुटीवघ
नहिया बोलति हसनि मड्ड चलनि चितो सुवारि देषत न बनै पैं न कहत बनहिया सरयूके तीर
तारफेले रामरक्षबीर हाथे है तारराते राती यौं धनहि जा॥८॥ अथ स्तुताउवसैनं॥ मोरे गात पात
रान लोचन समात मुष ओर ओर जातिनकी बात अवरोहि ये हसति कहति बात फूल से फरत
मोत औ ज्यवदात राती रिपाम तुमो हिये श्यामल कश्र धूरि उठानी उठै गैठि धूरि ये सो लोगी उप
मां नटो हिये कोमहा को डलहा सोका के कूल उलहा सुलहि लही ललित लतासी लालसो हो
ये॥९॥ विताउवर्सनं कारज को बिन कारनही उदै होउ जिहि गैर तासौं कहत बिता वता कि
सवकविसिरमोरा॥१०॥ करणकरपानपाए के सो मुषवासु अधर अरुन रुविसधर सुधारे
है चित्रित कपोल लोल लोचननि करुनैके अमल फलकनि मोहि मारे है रुकुटी कुटिल जैस
तैसानकायें हो होति अजौ ऐसी आपके सो राज हेरि हारे है काहे को सिंगारि के बिगारति है
मेरी आली तेरे अंग सहज सिंगारे है॥११॥ कारजकोन कअनितें कारजहोंहि जसिद्ध जानो॥
यहै बितावना कारनअंडिप्रसिद्ध॥१२॥ नेकहूं कान वाइन बानी बनाई नवक्र तई है ओ च
आ विच्हूं काये बिनां किछु कीसारंगे बिन रांम भई है केसव कौनकी दानी कहो इहिवं दमुषीगा॥

पर हियहरन प्रकृति कोनें पारी है बारक बिलोकि बरबार सें बलनि कहै करति बरहि बसत्रै।
सी बीरि बारा है। एरी मेरी सषी तेरी के सें कैं प्रतीति कीजे हरि अनुरागी दृग करुनाननसारी है।
अथ बिरोध लछण॥ धें साधन कारन कि कैलें मद होय साधक कें सिद्धि केसवदास बषानीयें।
सु बिसेष परिसिद्ध॥२२॥ सांपकी कंकनु माल कपाल जटानि कें छुटे रहे जटी यातें षाल छुरी
नी छरीन छरीन उबेलि सु औरकी औरकहै विषमातें पारबतीपति संपति देषि कहिय यह केस
व संलमतातें आज नमागत तो षाति पारनि देत दई सुष मांगी का हातें॥२४॥ मैं मोगुन बोपित बो
पित बिरूपनेन लोकनि बिलोपक रिकोपकें निके तहै सुषबिष्ठतरे विषधर धरे मुंड मल
रूपित बिलुतिलुत प्रतनि समत है पावक पिता के सुत पावक ही को तिलक गावेगा तकामु
हा के कर्मनि केहै तहै जोगनि को सुठ सब जग को सकल सिद्धि केसो दासनि कों दासनिज्यों॥
देत है॥२५॥ वाजिन हो गजराज न हो रघपतिन ह्यो बलगा उ बहोनो केसवदास कवीर निति न
सु तुलि संदाघ हथ्यारनतोनो जोग्य नजांन तिम उनजाछु न उंउ न पावन घ्योन प्रवीनो रथ्य क्रूले
कनिको सुग वारिन एक बिलोकनि हो बस कीनो॥२६॥ रसिकप्रियायां यथा॥ अजकी कमा
रिका वेलीने सुक सारिका वै पढावे को ककारिका निके सब सबं निबाहि गारी रसोरी भ्योरी श्वे
स फिरे देवतासा दोरी आई चोरी चोरा वाहि। बिन गुन तेरी रक्रूटी कमान तोनि संधति कटाछि
बा नियह अचरिजु आहि एते मान ठाव ई तेरे को अठाव मनु पाठि दे हैं मारती पेंचक तीन नेंकि
ता हि॥२७॥ ववित आवे लिष्पो कछू सु है घांहन घांम अर्थ सु नारी वेदई करिजानउ परिरासु
२८॥ अर्थ उपेक्षालंकार वर्णनं॥ केसव औरही वस्तुमें औरें का जहं तर्क उतप्रेक्षा तासों कहैं
जिनके बुधि संपर्क॥२९॥ हरिको धनुष तास्यो लंका तोरा रावनको बंसु सब तोर्यो जैसें रथ
वं सवात है सत्रुनि के सेल सूलफल सहे रामसुत निके सोराइ कासों हिएए हरात है कांम

तीर धतेंमै पेनेतीरे तरुनांनिहुंकेलागीलागिउवटिपरतऔसेगातहै मेरे जांनजांनतिहै जो
तुकोउजोन कछुदेषतही तेरेनेंनमेंतुसेहैजात है॥२०॥अंकनशशंक नपयोधिकीवं
कनसुअंजनुतसंजनउरुजनी निजनारीको नाहिनेज्फलकफलकतितमपीनकानछति
शांह बजुनांहीस्वपकारीको केसौदपानिधानहेपियेविराजमांनमांनीयेशमांनराम वेउव
नवारीको लागतिहेकंवजाइ नागहगपालनिकेसोईलतएकिसोराइ कोरतितिहारीको २१
इतिश्रीमनविविधरूपणरूपितायांकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्षनंनामनवमप्रस्ताव॥९॥
अथआक्षेपालंकारवर्णनं॥ काजकेआरंभहीजिहिकीजतप्रतिषेध आक्षेपातासोंकहत बहुमें
विविवरनसुमेध॥१॥ तामसंकालवपांनीये लयोभूताबादोउ कविकुलकौतिककहतसव
प्रतिषेधउदोउ॥१॥ वरज्योहोंहरित्रिपुरहरवारककरिहुतंउ खुनजमदनमोहनमदनु हो
हागयोअनरंगु॥२॥ तातेंनारिनकोअई कोनजलमहुनंग कोजानेंकैहजाइकह शानन
पकेअंग॥४॥ कोविदकफ्तनकारसर लगतनतजतीआउ प्रतिपलतनतननेहको परिहनां
झसनाज॥५॥ अथआक्षेपनामकवनं॥ जेमअधीरजधीरजहि संसयमरनप्रकास आशिपध
रमउपायकहि शिष्माकेसवदास॥ अथप्रेमाक्षेपलक्षनं॥ जेमवपांनतहसिजहां उपजउकार
जसाध कहतप्रेमुआक्षेउमह तासोंकेसव साध॥७॥ज्योज्योवजवरजैमेंप्रानधमेरेप्रानऋ
गनलगाइजैहहआगेउपपाइबो त्योंत्योंप्रतिहसिरपरउपरकीवोकरेंआक्षिनकेऊपरपिलाइ
बो एकेंपलइतउतसाथतेंनजांनहानेजानेफिरेंहाथनिकहांलोंउनगाइबो उमतोकहततौ
रहें गांउकेंवलनअबथांडतएकेंसेउमेंआगेंउविधायवो॥८॥ अथअधैर्जाक्षेपलक्षनं॥ जेम
तंगतयजुनतजहउपजतसाविकताव कहतअधैरजकोउकवि यहआक्षेउसुताउ॥८
केसवजातबडेहीविदाकहि आएप्रियापहनेहनहेरी आउंमहावनकेजेकहेहसिवोज

है ऐसे बस्याइक हेरी सु कौ प्रतिउत्तर देइ सषी सुनि लोल छबि जो बिनतीयों उमहेरी सो है कहै हरि हारि
कै फिरि है दिन बासक लौं अनुवान रहेरी॥१०॥ अथ धैरजाछेप लछनं॥ काज करि कहिहौ बचन
काज निवारन अर्थ धैरज कौ आछेप यह बरनत बुद्धि समर्थ॥११॥ चलत रदिन बहुत बितात।
भये सकल चित कित चित्र चलत चलाई है। जाल हे ताक है कहा नांहि नें मिलति आ निजा निय है
छांडो मोहन बढत बढाई है। चले हो बनउ जो तो चालिये बेउर पिय सोवत हो जाइ यो छोडि जागोगे
हो आई है॥१२॥ अथ संसयाछेप लछनं॥ उपजाए संदेह कछु उपजउ काज बिरोध यह संस
याछेप कबि बरनत जिनको प्रबोध॥१३॥ उनन बिलतिक बिउसुरनि कलित गाइ ललित ल
लितगीत श्रवनन रवाइ है चित्रति हो चित्र निमें परम बिचित्र उमचित्रणी जो देषि नैननि निवारी
हो कामके बिरोधी मत सो धरि साक सषि बोधि रओधित के बासर गवाई हो केसोराय कीसों मो
हि यहै कबिन वाकी रसमें रसिक लाल मान क्यों षवाई हौ॥१४॥ अथ मरणाछेप लछनं॥ मरन
निवारन कहत जहां काजु निवारन होउ जानहुं मरनाछेप कबि जो जियबुद्धि उदोउ॥१५॥ न
केंकै किवार देय द्वार दरबार के सो हासन्यास पास रूर जनु ध्यावेगे छिन में छुवाइ लैहै क
परि छटानि आजु आंगनु पटाइ लैहौ जै सो मोहि तावेगो न्यारै नीर दांतै मुहो गोफ रो पाको षि
आवन न पावै पोनु पानियो न पावेगो माधो सु तिहारे पाछे मोहूको मरनमोहु आवन कहत सौं कैतो
कौन पैकै आवेगो॥१६॥ अथ आशिषाछेप कवर्णनं॥ आशिष पियकै पंथ के दीजे कछु छुइ आशिष
कौ आछेप यह कहत सकल कबिराइ॥१७॥ मधि मित्र पुत्र जनके सब कलत्र जन सोदर सुजन ज
न सट सुष साज सौं ऐतो सब होते जो पे है कुसल गात अब हौ चलौ कि प्रात सगुन समाज सौं कानो सु
प्रयांन वासुदेव मियो सु अपराध रहियो न पल आफ बषियेन लाज सौं होनक हो निगम कहत सक्क सब
तब राजनि परम हित अपने ही काज सौं॥१८॥ अथ धर्माछेप लछनं॥ राषत अपने धर्म कौ जहं कारजु
रहि जाइ धर्माछेप यहै सदा बरनत सब सुषपाइ॥१९॥ जो हो कहो रहिये तो प्रलुता प्रगट होति।

देतहोतिलालहिमदनो रावहिंसुकरहंतोउदासतावप्रीतमाय सावलवलङ्कंकमनोकलो
मजेवहनोकेसोराइकीसो उमसुनङ्कवबीलेलालबनैदीवतेङराजोपनोंदिरदन तेरोएम
पावोसिपउमहिंसुडोतपियउमहीवलतमोहिंजैसीकङ्कहतं॥२०॥ अवउपाउवे प्रुजउतो॥मो
नलोएकउपाउकरि रोकियेपियप्रस्थानुतासोंकहतउपाउको यहत्रांछप्रमुतात॥२१॥मोकाम
वेंहडकीजुवती हेरिगारीसमोनसुहागिलोडानें आमीकोगायोगुपालहमेवृंसिंयोउरआनमूने
सिमेरीअडावफोडेव वलोकिरहोजुकरमनतमोनें प्रेमनिहमनिआदिककमवनमनको
रूसुपहिवानें॥२२॥ चावसिष्याछेपलछनं॥ सुपहिनुपजिहिगाथांयं सिपदिसुपसिपदातिसि
प्याछेप्रकहोवरति छपदवारहवांनि॥ वेत्रछप्प॥ फूलीलतिकाललित तरुणतनफूलितरया
र फूलीसलितासुरगसरसफूलिसवसरवर फूलीकामिनिकामरूमकोरिकंतनिहजहि सुख
मोरोकलंकेलि फलिकोकिलकलङ्कजहि कहिकेसवअमफूलमहि सुलनिफलनिलाई यों
पिमआवलनकीकाव्वलें सुवतुनचेतचेलाई यों॥२४॥ वमापछप्प॥ केसवदासअकासअवनि
वासतिसुवासकरि वहतुपवनुगतिमंद गातमकरंदबुदधारि दिसिविदिसिनिछविलागनागत
रितपरागवर होतगंधहोग्रंधवधिरवीराविदसवर सुनिसुपदसुपदसिपसायपतिरतिसु
हसुपसापमें वरविरहनिवमुविशेषकारि सुकामविशेपवसापतें॥२५॥ जेठछप्प॥ एकनअ
मबहोतिऊनतजिपंवलतिलम आनिगुअंबुआकामन्नुवनिजरिजातिआगिसम॥ पथपकि
मदमुकिनसुपितसरसिंधरजोवतकोकोदरकरिकोमेउदरनरिकेहरिसावत पियप्रवन
जीवहदिविधिअवलसकलविकलजलथलरहत तजिकेसवदासउदासमतिजेवमांसन
वकहत॥२६॥ आसाढछप्प॥ पवननेकपरबेंडवेलनवजंत्यार चपलगति नवननामानिन
त्रमितमांनोतिनकोमति सुंनासीइहिमासहोतइकआसनमोसी उरमनकोकिनयहन
वैपंछियोंनिवासी इहिसमेंसेजसोवनलियोश्रीयहसाथश्रीयनामहू फ

साल्हवलि सुमेन सुन्यो फूलि गाय कौ॥२०॥ अथ श्रावन वर्णनं॥ केसवदास रितासकल मिलिमिलि सामक मनमोहै ते लि
न लता लपटाइ तरुन तें तुव नतन सोहै चितवपला मिलि मेघ चपल चमकति हि ओरनि मनु सावन कें
हे नेटि मनुमिकुल जतम सिमारति इह हिरा तिर व नरवनी यस वमन औ सत ले गिर मावन पियु मवनु कर नु।
कीक है गवन सुनि येन हिसावन॥२०॥ अथ भादों वर्णनं॥ घोरत घन चिहुं ओर घोष निर्घोष निमक हि धाराध
रधर धरति मुसल धार जल जंम हि झोलागन फंकार पवन फुकि फफकोरति बाघसिंघ गुंजरत पुंज
कुंजर तरु तोरत निशादिन विशेष पति शोभ मिरित जात सुबोलावो भाये देस पियु पविदेश ा विष्ठु स्वनादें नीन।
न शोभाये॥ अथ क्वार वर्णनं॥ प्रथम पिंड हित प्रगट पितर पावन घर आवे नवदुर्गा नर पूजि स्वर्ग अपवर्ग
नि पावे छत्र निदे लेन छत्रपति लेत जु बसुधा पंडित केसवदास अकास अमल जल ज जल डोलति मति फिति रवनी
यरवनि रजनी सुरचिर मार मन रंजरास रति कालि केलि कलपतरु क्वार मदि सुकंत न करिजु विदेस
मति॥२१॥ अथ कार्तिक वर्णनं॥ वन उपवन जल थल अकास दासं तदीप गन सुषमहि सुपसुपराति सुवास
लति दंपति जन देव चरित्र विचित्र चित्र चित्रत अंगन घर जगत जगत जगदीस जोति जगमगति नारि नर दि
न दान न्हान गान हरि जन धर सफल करि लीजे कहि केसवदास उदास मति सु कंत न कातिक की
जाये॥२२॥ अथ अगहन वर्णनं॥ मास निमें हरि अंसु कहत या सौं सब कोऊ स्वारथ परमारथ है देत नारथ मे
हदोऊ केसव सरिता सरनि फूल फूले सुगंधवर कूजित कल कलहंस कलित कलहंस नि के सुर दि
न परम नरम सीत न गरम कर मिलिमकरूम व पायरित सुनि प्रान नाथ परदेस कहि सु मारग सिर मार गनि
हि चित्त॥२३॥ अथ पौष वर्णनं॥ सीतल जल थल वसन असन सीतल अनुरोच क केसव अवनि अकास वा त।
सीतल असुमो धिक ते लत्त लता मो रतप न तापत नरनारी राज रंक सब छोड़ि होत इन हो अधिकारी
लघु घौं सदीह रजनि स विरह्यो तड सदडु परुसम यह मन कम वचन विचारि प्रियमेय निष्ठा इय
पोसमें॥२४॥ माघ वर्णनं॥ वन उपवन केकाकपोत कोकिल कल बोलति केसव फूले नवल बर तरे बजु नाइ
न फोलति मृगमद मलय कपूर धूरि कुसमर तद सौं दिशि ताल मृदंग उपंग सुनत संगीत गीत निश फेल ते।

णी वेद तीन ताप पर लोप पद ज्वर के तीनि सदेषि ॥१९॥ वेद वदन विधि वारिनिधि हरि बाहन भुज चार सेना अंग उपाय युग आश्रम वरण विचारि ॥२०॥ सुरनायक वारन वदन केसव दिशा वषानि वेउ स्वद्द र वना वसु वरण पदारथ जानि ॥२१॥ पंडु पुत्र इंद्रिय कवल रुद्र वदन गति वान जरूण पंच पुरान के पंच अंग अरु प्रान ॥२२॥ पंच बरग अरु पंचतरु पंच संधि परमान पंच शब्द पंचा गगनि कन्या पंच समान ॥२३॥ पंचभूत पातक प्रगट पंच जग्य जाय जानि पंचगव्य माता पिता पंचामृत नि वषानि ॥२४॥ कृत्तिस कोन षटु तर्क षट दर्शन रितु अंग चक्रवर्ति शिवपुत्र मुष सुनि। षट् राग प्रसंग ॥२५॥ षट्माता षट्वदन की षट गुण वर्ने जु मित्र आततायि नर षट गुनन जु षटपद मधुपक विचित्र ॥२६॥ सात रसातल लोक मुनि दीप सूर हय वार सागर सुर गिर ताल तरु अंग इतिक रतार ॥२७॥ सात छंद सातो पुरी सातौ वायु पताल चिरंजीव मुनि सात नर सप्तमात्रिका ताल ॥२८॥ जोग अंग दिगपाल बसु सिद्ध कला कुलचाल अष्टकाली अदि व्याकरनु दिगगज अष्ट विचारु ॥२९॥ अंगहार नवषंड रस बाधि निधि निधि जानि सुधा कुंड नाडिका नवधा भगति वषानि ॥३०॥ रावन सिर आरंभ के दश अवतार वषानि विश्वेदेवा दोष दश दिशादि दिशा दिशा जानि ॥३१॥ एकथल थित पै वसति प्रतिजन जीय एक रूप देशा देशा को धरतु है त्रिगुन कलित बहु बलित ललित गुन गुननि केयुग वत रूप कलित करत है चार जु पदारथ को लोलुचित नित देवी को पदारथ समूह को परतु है केसोदास इच्छा अमृत ले अमृत पंच भूति को प्रकृति नव भूति को भरतु है ॥३२॥ दशमें दुसुर सबेरम सिर नावे नित षट दरसन हु को सिर नाईयतु है॥ केसोदास भरी दर जुजानि को पालक पै सात हू पुरी सों भरी प्रेम पाईयतु है नायका अनेमन को नायक निगरनव अष्ट नायका न हूं सो मन लाईयतु है नवधा इन्द्र को रजन इंद्रजीत जू के दश अवतार हू को गुन गाईयतु है ॥३४॥ अथ आशिर्वाद वर्णन ॥ मात पिता गुरु देव मुनि कहत जु कछु सुष पाइ ता हू सो सब कहत है आशिष कवि कविराइ ॥३५॥ होइ धौं को अ चराचर मधुमत उसजाति अनु नमन को किन रु के नर नारि विचारि कैं वासुकर थल कोउ तहां को च गा अनुकि मृद अमृत उदासन अमित कि सीत कि सीत रा हां को सोवय केक बहु जिन केसव डाक उधौ

तउ दोस वह्नी कौं ॥२६॥ मलय मिलित वौमु कं कंमत कलित युत पाच कं कमम कलित युत पापक कमम।
[illegible] कलित लगत [illegible] जानता [illegible] निलागिरि ह लोग न के नैन ममं मन हर वि
[illegible] र ह्यपरग यपरपालिक
सुपा वपार और उर पर अवृतामकामरपुराउर॥२९॥ अथ पवालंकार वर्णनं॥ कपट निपट मति जाऽडा
द उपजे स्वर गेहीम ताहीमों सव [illegible]
गकी दीन कहै दीहडु कहिं हिये [illegible]
हियकाहा के मव नैन निसां वनिका जिहि पावक सुजपांये सपिरं वरक्त अरु लोग हम मन कालि
बेम फोने मुकायें॥२७॥ दोहा तीन अनुनीति वक्र आनन कामें अर्थ ऐपनां मता मोकें हद्व तिनकी
वृद्धि समर्थ॥२०॥ अथ हि अर्थ॥ धरत धरनी ईस सीस चरनों दकनि गा नतव त्रर मुपसव सुपदानी
ये कोमल अमल पद कमलों कर कमल कलित ललित गुन ध्यान उरों आनीये हिरतक निधुदांत
कारी वहलाद हित छिज पद उरधारी वेदन वषानीये केसोदास दारिद्र हरि केपि दारिवे कों एकनर
सिंघ के अमर सिंघ जानीये॥३१॥ अथ सर्थ॥ परम विरोधी अविरोधी ह्वै कहत सव दानन के दान
कवि के सव समान हैं अधिक अनत वआपु सो हतअनत संग अमरन मरन निरखि नि भावुहै
क्रीत नुजन कहत नित श्रीपति वसत हिय ताव तुहै गंगा जल जग कोनिदानु है केसो गह कासों कहै
केसोदास देषि रूद्र कि सम्रु कि अमर सिंह रानु है॥३२॥ अथ व त्रर्थ॥ दान वारि सुपद जनकों
जात नाव मारवर पत धनुगुन सरस सुहाए हैं नरदेव अव कर करम हरन पर रूप नपु केसोदा
सगाए हैं नाग धर प्रिय मानी लोक माता सुपदानि सोदर सहायक नवल गुन नाए हैं,
मुत्र अकरांगुकी परमरांगु किधौं केसोदास रानारांउ उर आए हैं॥३३॥ अथ पंचव
रसहंस मात गत मति सुपपावत संगीत मिति विविध वषानीये सुपद साफिनध
सुहत विदित जस केसोदास गानीये राजे हिं उराजपद्वयण विमल [illegible]

थमाँताबे ऐसो लोकनाथ के त्रिलोकनाथ सम नाथैं को नाथ के अनाथ नाथ जानीये ॥२४॥ अथ श्लेष प्र
भेद बर्णनं ॥ तिन में एक अभिन्नपद और भिन्नपद जानि श्लेष सु दुहि भेद के केसवदास बषानि ॥
२५॥ अथ भिन्नपद ॥ सोहत सुके सीन सुघोष उरबसी राजा राम मोहिबे को सूरति सहाई है का
लरव कलित सुरति राग रंग युत बदन कमल षटपद छवि छाई है भृकुटी कुटिल धनु लोचन कमल
सर सोदियत सुन तत्त सुपदाई है प्रमुदित पयोधर दामनी सी साथ नाथ कामनी ऐसी सेना काम सो
नावनि आई है ॥२६॥ पद ही में पद काटिजे ताहि भिन्नपद जानि भिन्न भिन्न पद तिके उपमा श्लेष ब
षानि ॥२७॥ अथ उपमा श्लेष ॥ रंभा रज केसौदास कूटति अरुण लाल प्रति लट अकनि ते अंक पस्य
त है सेना सुंदरिन के बिलोक मुखन्य नति किलकिं जाहि ताही को धरत है गाढे गहि आलही पि
लौना न्ति ज्यों तोरि डारे जग जय रज सबा स्वदको अरत है बार सिंह युव पाल आगनि बिसाल रितैरो
करवारु लोला सी करत है ॥२८॥ तिन में एक अभिन्न कहु अविरुद्ध सु जानि सु निविरुद्ध कर्मं श्ले
ष कहि नियम विरोधी आनु ॥२९॥ अथ अभिन्नरुद्ध ॥ प्रथम प्रयोगी यज्ञराज द्विजराज पति सुवरना
सहित निधि हित प्रमान है सजल सहित अंग विक्रम प्रसंग रंग कोसते प्रकास मान धीरजु निधा
नु है दान को दयाल प्रति भटनि को साहुकर कोरतिको प्रतिपालु जानत जहान है जात है बिली
न है जनाके दीन देषि राम बड़ जको दान किधौं केसव कृपानु है ॥३०॥ अथ विरुद्धरुद्ध ॥ कंतु कोनसु
ने कल बोलति कोकिल कामकी कीरति गावति सी कहि केसवदास प्रकास बिलास सबै बन सो
भिसि भावति है ॥३१॥ अथ बिरुद्ध कर्म ॥ दो रूक लगवत तेजवंत बलवंत अति द्विजन की बदन बा
षानी बात ऐसी है दोऊ जन भुन्यपाप द्विजनि के रिपबाम द्विजनको देषीयत सूरत सुदेसी है सु
भाव लहै वहै वहै व कामदेव प्रियके सो राह का सो उमकहै जैसी तैसी है बारुनी को राग दोउ सूर
ज करत असु उदो उजराज को सुदोउ यह केसी है ॥३२॥ अथ नियम श्लेष ॥ बेराग ह्वानन को के
ले सब काल जहँ कवि कुल ही के सुवरनु का हाउ है युरस्तेल गामी एक बालक बिलो कियत मा

मातंगनी ह्वै के मतवारे फैसे सो ज्ञ है। अरित ग्रगनपति देति है। आगम्यो गौंन ई गैनदी के सोदा सङ्ग
गति सी औ ज्ञ है। रंजो दशरथ सुत राजा राम चंद ज्ञम दिग विरुरान करे। ताको अभारात्मु है ॥४४॥

रायतजौ बोध, साउक तावनको गात ह्यनो धार करकरको ज्ञ रविलोचन सुथ सरा सदा जदि अदो
नी ॥४९॥ अर्थ दर्शनालंकार वर्णनं ॥ कोन ह्वै ऐंकैरते सउ अल अ सउ समान कहिजे शगट सुनि-
हर सेतु के सव दास सुजानि ॥५०॥ तेई करे विरुरजरा जनम राजेर जत नदी के लोक लोक तिअ
टत है जीवन जनम तिन नदी के धन्य के सो दास चोर निके पति सत दिन नि घटति है। तेई प्रभु पर
मप सिव सुंदमीकपति तिन ह्वा को नित शनुताई कोरत है। सूरज समान सोम मित्र जू छ आमित्र क
दसुपद मध्याप्तै सुउदै ह्वा ग्रम गुह ॥५१॥ अथ अदंकार अवर्णनं ॥ कोव छरोल मिलो द्विजता या
न कलह, पन जोविगा को लों अंतकरन मसो मघवारि पुतोरिका ह्वा नडरी जम लो लों औरफ ताप
के गात तिन्ह हरि जानति है ऊसरा तिन तो जों साउ सव दह यपाठ निके कर सूव नकेकर, २
जै ॥५२॥ अथ रसवतालंकार वर्णनं ॥ रसमय होय सुजानीये रसवतपरसपद॰

कोआछे ब्रुयद सगुफो करत प्रकास ॥ ५३ ॥ श्रृंगार रस वर्णनं ॥ आनति स्यारी निआंनक स्यैतवमेका
सुआनन आंनद्रकेसो ओ सेव कान ह्ज्ञान स्वरूप न जाइ कहौ म वुजातवतैसो जो वनजोत हापा
वत जात मनातरी स्व कआघात न लेसो जोवन सोतहीं जोनर हो त बिहा उ उमे व लि जात सुखा ता
कहोने कवे सो ॥ ५४ ॥ अथ रौद्र रस वर्णनं ॥ जिहि सर मधु मर्दि महा मरु मर्दन कीनो मास्यो
कर्कोट संग संघु हतिसं कजुलीनो । निःकंटक सुर कटक करयो केटन व बंध्यो पर उपर त्रि
सिराकं वंधत रूप खंड बिहद्यो जनकरन सिंघारु जिहि परसु प्रसंगते दास्यो तिहि बांन प्रांत
दशाकंध के सुकंव द सो ओचित करो ॥ ५५ ॥ अथ वीर रस वर्णनं ॥ कर आदित्य अष्ट जै नंद
नकरो अष्ट वसु रुद्र तिमोर समुद्र करो गंधर्व सर्व पस्तु चालि तअवेर कुवेर बलि हिंग हि देउ
इन्द्र अब । विद्याधरानि अविवुध करो विनि सिंधि संधि सब लेकरौं आदित्य कों दास दित अनिल
अनल मिलि जाहि डजात सूनि सूरज सूरज जगत ही करों आस ॥ सार मार बल ॥ ५६ ॥ अथ का
रुना रस ॥ उरि तें उडानि दास पुनीत सुनी गज अंज को अंजन गाढी तोरन तार न उरव जेव र
भावत भाटन गावत ठाढी केसव तान के गात उतार त आरति भातहि आरति बाढी । विश्व नम
गल मेत्रुपटे अरु देषिन बाल वधु ठिग ठाढी ॥ ५७ ॥ अथ भयानक रस ॥ राम की बाम जु आनी
चुराय के लंक मैं मीचु की बेलि बोई जु । क्यों रन जीति है जिन सों जिनकी धनु रेष न ना धकी म
इजु बास बिसे बलवंत जिते रजनी चर केसव रूप रई जु तो रिसरासन संकर को प्रिय सी
य स्वयंवर क्यों न लई जु ॥ ५८ ॥ बालि बल्यो न बच्यो परि षोरहि क्यों बचिहै तुम कौं निज घोरहि
केसव छोर समुद्र मथ्यो जिहि को सोन बांधी वैदे बार विषो रहि श्री रघुनाथ गनै असमर्थ न देखि
बिना रथ हाथि य घोरहि तो रो सरासन संकर को जिहि सोच कहा उवलंक न तोरहि ॥ ५९ ॥
अथ वीभत्स रस ॥ मिगरे नर नायक असुर विनायक राक्षसपति हिय हारि गए काहू न उबारे २
आरुण चढायो टस्यो न टास्यो तोतन ए नर राजि कुमार निआति सुकुमार निलै आए सीपजनक

अरु नंदमारे जए हित्तमार रिपितपतेजत जानि परें ॥६०॥ अद्भुतरस सों सिंधु विषपान्नो विष
पावकसी तातो कछू जे तेजहद नादसों पिताको अभय छोड़ो है। हुपताका देहने थ्यीहा पलड़सा
सतपस्योई पिसांतोपचिव सतनपछोड्यो है। पेटमें परिगतकोपारछु क्वाईसीऊ जब सबहा
कोचिधिबलचांनपछोड्यो है। जोपेतअनावतकोनाथहै तोरफनाव द्रष्यीकाहाद्गवकेद्रभे
रकरिछोड्यो है ॥६१॥ केसोदास वेद विधि साधहाव ताई आधि सवरीको कोने सुचि सिद्दतासिपाई
हि वेपधाराहरि वपेंद्यो ऐसे पजगतारकाहुकोनांसिपतारकपदाई है यारानसावानतका
यो है कयवमयासुगधि काकवहिमातिकनिकाञ्जकाई है पतितनपावनकरतानानंदनंदनसा
तनाकवहापति देवताकहाई है ॥६ अथ हास्यरस॥ वेठतिहै तिनमंद विकेहनको ऊमसांन
तिपंमप्याहे जानतहैं नतराज दमेताको डतकबार सरंगरंगी है स्यजेगी साधसवे सुपकीवत
नागकोकिसवजातिजगीहै नेदफाबात सुनेतें कछुवद मासकतेहू सक्यानलगी है ॥६२॥ अथ
शांतरस॥ देगोराजीवहैलेवहै प्रउहै सिगरे जगकोदिनदेयं आवतस्योचितऊ्यमंतडयसोंसु
पसरवतेसतपये राजुवेतकसुरमुकरं सवकाहेको केसव कासकरेये मारतेन्हारऊवारनहा
र सुतोसवकेसिरऊपरिहेये ॥६४॥ अथ अद्भुतरसारलक्षणं॥ ऐसे विज्ञानियेश्रावुंगहै ऐसे
वस्रवपानि अर्थांतरको ता सुयहै वारप्रकार स्रुजानि॥ तोरजंतो दयहाय वितंकरवाय जेको
मतकोरीकरेरो ताको ताके सवकोरहियेड पहोतमहा म्रकाहाइतहैरो केसोहुतेरो हियो
हरि मेरे हि छारितही तनछुतिउमेरो श्रुंकर्केथकमास्योजो बांधिकें जानततदमाई जायानतरो
॥६६॥ सुक अ सुक विरोधारिये ओरस अयुक्त सुक केसवदास वषानिजे चोथा सुमासुक॥६७॥
अथ सुकलक्षणं॥ जैसो जहां न सुहाइये तेसो तहां न आनि रूपसीलगुन युक्तवल ऐसे सुकव
पानि॥६८॥ गर्वगुरू को दीप डपित कलंककारि न्नपितनि सावरीति गरुतिन्नरऊ
कलनें जेने तें प्रवेंकफर के सोदास प्रतिमासमा मनिसरउहै कमलनयनकं
सामधनिका प्रतिवंध विष्का विरोपवेषकहि महहरउहै कमलनयनकी सां॥

वे कमुपी वंस्मातें न्याय दोजरत हे॥८०॥ अथ वस्तुका धौतरन्यास लछन॥ जैसो जहां न्रत्रीय तें
सो तहां जु होइ केसव ताहि अथ कें बरनत हैं सब कोइ॥७०॥ केसौदास होत मारमारी एसु
मार सिरी आरसी लद पिंडहि असीयहरा उरी अमल उवतासअ सललित कपोल तेरे अधक तमार
धरी हमनि तेवी उरी एहि यविक्ष कि जाति मिलवारवारी अनिवारी है उबावरी॥७१॥ अस्तुते सुलक्ष
नजहं क्यों तके सवदास यहे अप्रस्तुत कवि बरनत बुहि बिलास॥७२॥ पातका द्युति पांतनि
सों हारि मृग ओक स्त्र लनि तें डराये जु बाधवी तालनि को वधुरी र कानाथ के साथ बिलजरायेजु प
रफट तें कटे रिनके सवके संकुनारव जोमरा ये जु ताकी सदा लगें गारि स्यानि कोडाइत लोक्ष
गयाती रियजु॥७३॥ आंगकाली बाज है सुचितें इतवों कि उतें हम औचिले ई है मानि वेको वहइ
प्रति उत्तर मांती ये बातजु मान मई है रोपकारय बहे रसका रूपका है को केसव ग्रांफिदई है मान
ये ल्लाउ मनाहि सुनि इन नारि न इकिकोरी तिनई है॥७४॥ अथ व्युक्तालक्ष लछनं॥ इहे बात अनि मुज
हे कोसेतक जाइ तासों व्युक्ता व्युकहि बरणत कवि सुखपाइ॥७५॥ रसिकप्रियायां॥ सूलते स्क
लसू वासकवासनी ताकसों सतएनैन सनयो के सवबागमहावनसो छुरसी वढिजो फूल वेग्र
गदाग नेक अपार रनाहै रसोनि सिनाजघराकक्कंअनुरागे गारा सगात वारी दिससी सिंगरेई सिं
गार श्रृंगार सलागे॥७६॥ पायकी सिद्धि सदारिनहि छिनुकारति आजनी आजु कहे को रूपको ह
नजुसूतकना हैन सदावसा को संतत संतित फीको बेटी के रोजन रूपन रांउ के केसव प्रीति सो
दाप रती को फफंलाजद या अरिको अरु बांनन जाति सों जीतानतीको॥७७॥ अथ व्यतिरेका
लंकार लछनं॥ तामहि आनि ये नेद कछु होइ जु बस्तु समांन सो व्यतिरेक सुभांति कु बाकी सद
जपरिमांन॥७८॥ सुंदरसु पद अति अमल सकल विधि सदल सफल उवह सरससंगीत सें विबि
धसुवासयुत केसोदास आसपासें राजे जराजत न परम प्रतीत सों क लेई रहत होई वेहां को
प्रतिदिन दैतिकां भ्रतांनि सममांतकं अमांतसों लोचन बचन गति बिनेइ इतनोई नेछइ इतर व

रंगरूप लाल लई जाति मैं॥६१॥ गाइ बराबर धोम सेवमन ओनि वसवर हिय चलि जाई, कैसवकरा हिंद
नपितानि वरधर हिय हरी उनपाऊं वे सवरावर दीपति दिह बरावर कुवि पियूथि चढाई, ए अलिहूं
जो आसुंदर्यस्तें वडी उम आंप निद्दीको कराई॥६२॥ अथ अपकृति लछन॥ मनकी बस्तु उराइ
जद, और कहि ते बात कहत अपकृति सब कविया रौ चहित्र वद॥६४॥ सुंदर ललित गति बल
तिमवासु वासु अति सरस सुहति मतिमिर मनमानी है, अमलक आडपितन त्रुपन नि दूषित सुवरत
हरनमन मुर सुपदांनी है, अंग अंग मृट नावको प्रतावजानें को सुभावहा के तावरु विम विपुंड
वानी है, केसोदास दबी को कहे पिउमनों हि राज प्रगट प्रवीन राय जूको यह बानी है॥६५॥ कारी
सटकार केस नांनाकछु होंनी में ससोने तें सठांनी हृति दिपियत तनकी आ॥६६॥ बतेन वितानित्र
ति आगा आछी सुपक विता विलास मोद मतिमानको केसोदास क्यों अंतगपाइजे जो आवागन हिंसु
सतिउ सासीं साधसुजे रतरतनकी बेटाकाजे गोपीको विलोकी पारि नंद नाल नांहीं लोलललो चन॥
[illegible]
तिनु बखानीये कछु और की बात और नो कति यह जांनीयो बरनवत कविन अयात॥६७॥ दल
मानहि ज इजाडो वडो भय्यां मधुनो जलको हरदि कहि के सवबात यह व-
रधीर जको धरि है फल है फल नांहि कितो लउ हीके हि तो पहि नृपसा
हि हपसातन हि रहि कीर करी लको हा करि है॥६८॥ अंग अली भरी यं
सोन भारतरी जे जांनति हो पियनाता सीमनको गाज उतो सव सपन

षेलनटैंउलसी।जिनसौंजिनकेजियजातैं नेहकैनेहकेमांमलेंड आपुनीओंह्कीपरतीतिनकोजे॥ण॥ अ
वविधिकरणक्रिलछने॥ औरस्हीमेंकोजेअगट औरहीकोगुनदोषु उक्तियहैविधिकरनकी सुनतु
होउसंतोष॥ण॥जांनुकटिनानिस्फुलकंठपीवभुजामूलउरुजकरुजरेषाबङ्नातिकी दलितकयो
नरदलजितअधरस्कविरसनासतरसुरसमेंरिसातिहै लोटि२लोटिलपटतिबाचिरझ्लाडजंने।
तिनेतिबांनीहोतिरजातिहै अंगअंगआलिंगनपिडियतयोमतिकेसोतिनकेअंगअंगपीरतिपरति
है॥ण॥राजनारसाजनारलाजनारजयनारभूमिनारनवनारनांकेहीअटतहै प्रेमनारपननार
केसवविलोकिनारपतिनारहुतअतिसुधनिजरतिहै दांननारमांननारसकलसयांननारनाग।
नारघटनघटतहै एतेफूलनिऔंनाररांजतिहैरांमसिरजिहिंडगराधनिकेसीरषकुटउहै॥१०
मतमलोदसरथकेसबदेवनिकेघरिबाजोबधाई फूलिकेफूलनिज्योंबरषातरूकलिफलेसा
बहीसुषदाई औरबहिसालितासबसीतल धीरसमीरसुगंधसुहाई सबसुलोगबुटावतिहैं।
पिकेहारिदहेदहरारनिछाई॥११॥होहहसीऔरनिसुन यहअवलिजकीबात कांन्हवटावत
वंदनहिमेरनैनसिरात॥१२॥ दियोसुमारिनहांन नेउरकोसानंहस्यो डगपायेपुतिरांमु प्र
हितकेसवमिश्रपरि॥१३॥ अथविशेषोक्तिलछनं।विद्यमानकारनसकल कारहोंहिनसिद्ध
सोईउक्तिविशेषमय केसवदासप्रसिद्ध॥१४॥ कहुंसेडशनिरूपजंतेनटपासनउछनुआसनुद
रें सोदरसेनिडसासनसेसबसाथसमर्थभुजाअसकारें हाथीहजारनिकेवलकेसव अंचिवे
केपटकोफरुकारें द्रोपतीकोडरजोधनपैंतिनुअंगुलउघस्योनउघार्यौ रे॥१५॥ कहुंसुमाढ्य
द्रोणतहीजिनकोमनकामपैंजाललटास्यो नोमगदाहिधरैंधनुअर्जुनहरुतुरेंजिनसौंजमुहास्यो।
केसवदासपितामहसोधमसोचक्रीबलसेदिसिदास्यौं देषतहीतिनकेउरजोधनद्रोपती।
सारुहेसाधपसास्यो॥१६॥ बोईहैबानतिधानबिधानअनेमेंबहुजिनजारजईजु बोईहैबा
जबदैधनुधीरजुहीहहरा॥ जिनसुबजईजु बोईहैअर्जुनआवनहीजगमेंजसकोजिनबे।
।लिबईजु देषतिहीतिनकेनवकामनिनीकोहिनारिछिनाइलईजु॥१७॥ रसिकप्रियाया॥

सपें द्वारी सषी इरवाइ हारी कादंबिनी दामिनी दिपाइ हारी दिए अधरान की प्र ॥१८॥ कुलतो
नकुसबांनबनि काइ षउ बित अपार रा पिमरतपति रामुको मोनां हरत सुनार ॥१९॥ अथ
सहोक्ति लक्षनं ॥ दो ॥ निरहि सुन अरु सुनकछु कहि जे यह प्रकास सोई सहोक्ति सोधिहो बरण
केसवदास सिसुता समेत भई मंदगति लोचननि सों चलित ललित गति पाई है सोंह निका
हो भा तेरी हीग इकु टिल अति मेरा रांनी तेरा वांनी सुरत सु हाई है केसोदास सुषदास
हास पेई हीक टितु छीन चीन सु गिमन वाली छवि छाई है वारुबुद्धि बारन के साथ ही व
ड़ी है वीर कवनि के साथ ही सकुचित रआई है ॥२१॥ अथ व्याजस्तुति निंदालंकार बरनन ॥
स्तुति निंदा मह होइ स्तुति निंदा मह जानि व्याजस्तुति निंदा अहै केसवदास बषानि ॥२२॥
जहां साधक बाधक होइ तासों सब विपरीति कहि बरणत है कविजन लोइ ॥२३॥ स्तुति निं
दा रसिकप्रियायां यथा ॥ सीतल कूल लतिहारे नवु सतिव ढठमनजत ति सु ताता तन
जोऊ आपनो ज्यौं हीरा सो पूरा एहाथ ब्रजनाथ देको ते अकाथ साथ मेंनु अंसागन लेऊ ए
निपर के सोराइ उमैत भवाइ व है जकलगा नागी नम सु पन्नु सो गेऊ माडो सु प भांग छिनु छंत
निब वालि लाल औमैं हमावारति सों उमहानि वाऊ नेऊ ॥२४॥ अथ व्याजस्तुति निंदा वर्णनं
किसरीकसर कंज के उकी इला कमाल सुंघतन चंपक चमेली वा उरोरी है जानकी नंपास बो
न सुफि एती पास चा सगदी के सो पुस कोनी नय नमनत यते री है तैने कोनं सत की धामसहु
सवास हितें ब सिगई हरि वित क्यों मंचारी चोरा है सुनि दीन वेत आइ इहि हैत नो हि अर
तो सी गोरी गोकुल यवद हारी घोरी है ॥२५॥ जानी येत जाको मयामो हति मिले हि मो फि एकं
हाथ छत्र एक माय क्यो निहारीये परदार प्रियमत्तम तां सुता निगामिनी सिव स्के सो मुय
है मोहि कारावि आजतें आजादि राषें वरद विनोद लावें ए तमें अयाउ नृति केत्व बनि वार
थ राजनि केरा जा छांडि कीजे छातिल कुता हितीपम सों कन्याक हों छरस न...
अथ अनित लक्षनं ॥ जाहां साधवे तो गांवे साधक को सब सिद्धि

की अंतप्रसिद्ध ॥२६॥ आननसीकर सिक हिये कहि तो हितो तें अति आतुर आई फीको त्यो
मुष ह्वा षराउ क्यों तेरे पिया बकनाति बकाई. पीतम को पट क्यों पलट्यो अलि केवल तें रा प्र
तीत को लाई केसनी कों हो नायक सों रति नायका बात न हों बहराई ॥२७॥ को गने कर्मे जगम्म
नि सेनप साथ सबै दल राज ज्यों हा को जाने को षांन कितें सुरतांन सो आयो साहा बहा साहि
दिल्ली को औडछे आनि पर्यो कहि के सब साहि मफ कर सों सकजा को दौरिकें डलहरांन
सुजाति कर्यो अपनें सिर टीको ॥२८॥ अथ पर्यायोक्ति लछनं ॥ कोनउं एक प्रकार तें अनहि
करे सु होइ सिद्धि आपने इष्ट की पर्यायोक्ति सोइ ॥२९॥ षेलति ही सतरंज अली निसों तहां
नंद हरि आए किधौं काहू के बुलाए री लागे मिलि षेलन मिलि कें मन हरि हरि दैन लागे दो कछ
पु आपु मन लाए री उ विरुझाई निमिस ही मिस जित तित के सोराइ को सो दोऊ कर है छवि छाए
री विकट दिसि तें ह्वां ति न राधा जू के जल ज से लोचन जलद से के आए री ॥३०॥ अथ युक्ता
लंकार लछनं ॥ बुद्धि विवेक अनेक बल कहियेते सो रूप तासों कवि कुल युक्ता कहि बा
रन बरन त स्वरूप ॥३१॥ मदन बदन लेत लाज को सदनु देषि जदपि जगत जीव मोहिबे के
भी कोटि कोटि चंद्रमा समान वारि डारों जाको ब्रजराज आजु ह्वां लौं संयमी ऐसे तें रे सबिला
स मुष को सुबास सु सषी सुनि यउ आर सही सार सनि सों रमी मित्र देव द्विज जल लड ग्रं दंड दे
व को सब लज्जा को ताको कह्यो कोन बात की कमी ॥३२॥ इति श्रीमन विविध भूषण भूषिता
यां कविप्रियायां उक्तालंकार वर्णनं नाम त्रयोदश प्रभाव ॥१३॥ अथ समाहितालंकार लछ
नं ॥ होइ न क्योंहूं होत जहं दैव जोग तें काज ताहि समाहित नाम कहि बरनत हे कवि
राजु ॥१॥ रसिकप्रियायां ॥ छवि सों छबीली वृषभानु की कुमारी आजु रही हुती रूप मद मान
मद छकि कै ॥२॥ सात हूं दीपति के अवनी पति हारि रहे जीय में जब जानें बीस बीसे ब्रत भं
ग भए सु कह्यो अब केसव को धनु ताने सोक की आगि लगी परपूरण आइ गए घन स्यांम बिहां
ने जानुकी के जनकादिक के सब फूलि उठे तरु पुन्य पुराने ॥३॥ अथ सुसिद्धालंकार वर्ण
नं ॥ साधि साधि औरें मरे और लोग वे सिद्ध तासों कहत सुसिद्ध कवि जिनके बुद्धि समृद्धि ॥१

हलविसौफलफलरामे [illegible]
नातिनतीन [illegible]

[illegible]

॥ घोत घरघाविकावसाधित [illegible]

[illegible]

तद्वी मासवक [illegible]
नवकवृत्त क्रकला [illegible]
कविकनृपत [illegible]
रुवबाटिस्वत [illegible]

रहत सषी राजे राजहंस समीप सुषदानीये केसौदास आसपास सोरन के ओत घने घोननि के दे
व तोरन मत्त बषानीये होति जोति दिन जुन्हाई निसमो सहस गुनी सूरज सुषदवारु वेदमन मानि
ये रति को सदनु सुद्धसके नमदनु ऐसो कमल बदन जगजानकी को जानिये ॥१६॥ जहं कहि
ये अनमिल कहु सुमिल सकल विधि अर्थ सो बिसरौ कै कहै केसव बुधि समर्थ ॥१७॥ सोने की ए
कलता उलसी बन कौ बरनै सुनि बुद्धि सकेहु केसवदास मनोज महोरम ता हि फलै फल श्री फले
से कै फूलि सरोज रहो तिन ऊपरि रूप निरूपत चित्त चलै जु तापर एक सुबासु लता पर षेलत
बालक षंजन के हे ॥१८॥ रूप स्वाव जहं बरनीये कौन हि बुधि बिबेक रूपक रूपक कहत हे केस
वदास अनेक ॥१९॥ रसिकप्रियायां ॥ काहू सिता सित काहू नि केसव पाउर ज्यों उतरी न बिचारी ॥
२०॥ वाचि क्रिया गुन द्रव्य को बरनहु जो करि इक ठोर दीपक दीपत होत हे केसव कवि सिरमोर ॥
॥२१॥ दीपक रूप अनेक हे में बरने हे रूप मनिमाला तामें कहे केसव कवि सिरभूप ॥२२॥ वरषा
सरद बसंत ससि सुभता सोन सुगंध प्रेम पवन भूषन नवल दीपक दीपक बंधु ॥२३॥ इनमहं एक
कजु बरनीये कौन हो बुधि बिलास तासौं मनि दीपक सदा कहियत केसवदास ॥२४॥ प्रेम ह
रिन तेन हेरि हरि हरको सांहरषित मतेज छिदर उ हे केसौदास आस पास पर मपरकास सौं
बिलास निबिलास कहुं कहो न परत हे ताति लाति तामनी निलवनु कहें रूप उहे सुरभि सुलाप सु
नो[…] ताकौ धर उ हे मान हो समेत मानु मांननी निबस करि मेरी आली प्रेम नु दीप उकर उ हे
२५॥ दक्षिनु पवनु दरबे हस्त निबरण […] लोभन हुकर उलंग […] ताको परस ॥ केसौदास के
सर कुसुम को सतन कनत नूतन तिन को न सा हनि परउ तरु क्यो […] होउ ह सा ह ।
सबिलास बस चंपक कदम […] मिलि मालती सुबास दरु सीतल सुगंध मंद गति नंद नंद को सो पाव
उ कां हाते तेऊ लोरिबे को मान लहु ॥२६॥ आप्रमाला दीपक लछन ॥ सबै मिले जहं बरनीये देस
काल बुधि वंत माला दीपक कहत हे ताके भेद अनंत ॥२७॥ दीपक देह दसा सो मिलि सु दसा
मिलि तेज हि जोति जगी है वे जागि केयो ति सबै सम्रुफे लषु सो धि सुबै तो सुतता दरसा वे सो

नतारवेरूपकेरूपकौं रूपसो कामकलाउपजावे कामसुकेसवप्रेमवटावत प्रेमलेप्रांनप्रिया
ह्रिमिलावे॥२०॥रसिकप्रियायां॥ घनतुंकीधारसुतिमीरनकोसोरसुतिसुनिकेसवअलापअली
जनकोए॥२१॥अथप्रहेलिकालछनं॥वरनियेवसुद्दरायजदकौंनहुंएकप्रकार तासोंकहं
तप्रहेलिकाकविकुलबुद्धिउदार॥२२॥सोततिसलाईसमसिर उनसठिजोवनलेपि छप्पनपद
जांनअंतह्नां वीसवाजुवरदेपि॥२३॥सूर्यमंडलजांनिवो॥चरनअस्वारद्दवाजुदस यावनसतो
ईसमारतदेप्रतिपालकरि सोहतपारदसीस॥२४॥हरिरामकसरीरजांनिवो॥नवपसुनाऊद
वताहेपप्रतिहिमोद केसवसोईरापिहे इहजीतिकोदेह॥२५॥ देयंमुननमास्फजु पाग्नजुवतिज
नि चलतनतेकतहोरई वासुरगंतेनराति॥२६॥ वारजांनिवो॥केसवताकेनातंको आयरकहिये
दोह सुषेस्यनमित्रके उलटेउपनहोइ॥२७॥राजाजानिवो॥जातिलताफआपरह नानकहे
सबकोइ सुषेसुपसुपतछिये उलटेंअवरहोइ॥२८॥ दापजांनिवा॥ सवसुपचाहलागया जोपिय
एकहीवार चंदगहेंहेराह्नकौं जैजैउहिदरवार॥२९॥राजावीरवलकोदरवारजांनिवो॥असी
नरिदियाउसपि जिवजांनउसवकोय॥३०॥पीवल्याउततासुरस गतीसारीहोइ॥३१॥उअजा
निवो॥अथपरिहताजंकारवर्णनं॥ काऊजदथोरकछु उपजिपरहिंकछुओर तासोंपरिहतकहत
हे केसवकविसिरमोर॥३२॥रसिकप्रियायां॥ हसिवोलतहिजदसनजुकेसवलाजतगाव
तलोउतो वाउवतावतयेसवलेमनआनतहीमनमयजागो उजाकदेसुजतोसननेरेहिजांनिय
हेनहियेउमगो हरिस्योंनेकहीवपसारतहि अंगुरानिपसारनिलोइलगो॥३३॥ हासगहोस्जाना
वसुताअहिजुटिगईधरिधीरजताई पांनतपसुपतेनरुविरुचि आरसीदपिवाल्योयहवाई देप
रिसंतनमोहनकोमनु मोहिलीयोसजरनीसुषदाई लालउपालकपोलनपछततेरेदीयेसुमता
उविपाई॥३४॥जीयोदियोजिहिजोतिदई जगजाकीवडाई वडोसउजांने नाहिसावेरूमनावया
कायकैं केसवकोअरूरे रुवआंने आसो
कछुयहकाउहेजाकोरतो करियेसुरोकरिमांने॥३५॥इतिश्रीमनविविधलक्षणवधिताया॥
... वर्णने ... ३॥ अथानंका
... र तासौं

॥१॥ अथउपमानाम॥ संसयहेतुअस्तुतअति अद्भुतविक्रयांहि दूषनभूषनमोहमय नियमगुणा-
धिकजानु॥२॥ अतिसयउत्प्रेक्षितकहै श्लेषधर्मविपरीति निर्नयलाछनिकोपमा असंभावतामी
त॥३॥ बुद्धिविरोधमालाकहौं औरपरस्परईस उपमारेदअनंतहै मेंबरनेइककईस॥४॥ अ
थसंसयोपमावर्णनं॥जहांनहिनिरधारकछु रबसंदेहस्वरूप सोसंसयउपमासदा बरणतहै
कविरूप॥५॥ रसिकप्रियायां॥ खंजनहैमनरंजनकेसव रंजननैनकिधौंमतिजीकी० प्रानपियारे
कोम्हरलिपीकोण॥६॥ अथहेतोपमालक्षनं॥ होतकोनहोहेततें अतिउत्तमसेहीन ताहिसोंहि
हेतोपमा केसवकरहतप्रवीन॥७॥ अमलकमलकुलकलितगतिबेलिसो बलितमधमा
धवीकोपांतीये मृगमदमरदिकसरधूरिनूरिपेवाकेसरकोकेसवबिलासुपहचानिये जेलिको
वमेतिकस्विंपकसोकेलिसइसेवतीसमेसमतहैतकेतकोसोजानीये झिलिमिलिमालतीसों
आवजसमीरजबतबतेरेसुभ सुषबाससोंबषानिये॥८॥ अथअद्भुतोपमालछन॥ उपमाजाइ
कहीनहीजाकोरूपनिहारि सोअस्तुतउपमाकहौं केसवदासबिचारि॥९॥ रसिकप्रियायां॥
हरिहैक्यौंरूपनबसनछतियोवनकीवातिहोतिघोसऐसीरातिहै०॥ रसिकप्रियायां॥ तालमृदं
गनलोलतलेंइत्यादि०॥ अथअद्भुतोपमावर्णनं॥जैसीहोतिनहैगई आनेकहेनकोइ केसवऐसी
बरनीयें अद्भुतउपमा होइ॥१२॥ प्रीतमकोअपमाननिमाननिगांनसयाननरीफिरीजावें बंकबि
लोकनिबोलअमोलनि बोलतोकेसवमोहिबहावें हावहुंनावसुनाविनावके नावतिनावनि
चित्तचुरावें ऐसेबिलोसज्यो होइसरोजमेंतोउपमाभुपतेरकोपावे॥१३॥ अथविक्रियउपमा
वर्णनं॥ क्यौंहूबरनीये कोनहीएकप्रकार।विक्रियउपमाहोतहै केसवबुधिअनुसार॥१४॥
केसोदासनकुंदनकेकोसतेप्रकासमांनचिंतामनिबोपनासौं कपिकेसरससोत्तासारतेनिसा
रीसी सोंधकोसीसोधिदेहसुधासोंसुधारीपाउधारीदेवलोकतेंकिसिंधुतेउधारीसी आजिय
सोंहसिपेलवोलिवालिलेहलोलकालिऐसीग्वालिल्पाउकामकीकुमारीसी॥१५॥ अथदूषनउ
पमावर्णनं॥जहंदूषनगनबरनीये भूषनतायहराय भूषनउपमाकहतहै केसवसुमतिसु
नाव बुधिजनाहिबनाइ॥१६॥ रसिकप्रियायां॥ जोकहौंकेसवसोमसरोजसुधासुरभृंगनि
देहहहैदै०॥१७॥ अथभूषनउपमावर्णनं॥दूषनदूरिकराइजहं बरणतभूषनताउ भूषन।

उपमादोउदै केसवस्रुपदसुताउ॥९०॥ सुवेरण [illegible]
नीदै पावनप्रगटप्रतिद्विजनकोदेपियतदामतिदीप [illegible]
रघनिधांनीदादकलुकदपानीमांनीसवलुगडांनीदै [illegible]
मेरीगंगाकेसोपांनाहै॥१९॥ अथमदोपमालछन॥ [illegible]
दोसीमदोपमा कदवरनतकविराय॥२०॥ मेलतनी [illegible]
तांनवनसीवदै ओटतनअंवरतिडोलकोडिगंवरराज [illegible]
मेकनिकलिकलिकमितातजातमातवाराद [illegible]
समवंदमुमीवृदजंकेवंदत्सोंविंतवंदे॥२१॥ अथा [illegible]
ववनविशेष केसवदासप्रकासवस नियमउपमाग [illegible]
गजोगको अजोगरमहीकोथतुसा [illegible]
कोककुसो चंडसोसुवेरनतरामवदकी [illegible]
सुअरुकोमलअमलअतिसीताङ्काकामुपसाधिफवल [illegible]
भिकोपमालछन॥ अधिकनिजतेअधिकगुण [illegible]
मानेतोया॥२४॥विवरंगसेतरंगसंगएकदै श्रंतकदे [illegible]
मपै वैससंककेसादासएकारकंकवकतकद [illegible]
माविहसनीसप्रनतवे प्रतीतसे दे [illegible]
कीतसा॥२५॥ अतिसयोपमालछन॥ एककभ [illegible]
निदै कहत सुवुद्धि अनेक॥२ [illegible]
अरेपिये [illegible]
र [illegible]
तेरे [illegible]
[illegible]
[illegible]

॥१॥ अथ उपमा नाम॥ संसय हेतु अभूत अति अद्भुत विक्रया ठि दूषन भूषन मोहमय नियम गुणा-
धिक जानु॥२॥ अतिसय उत्प्रेक्षित कहै स्लेष धर्म विपरीति निर्नय लाछनिकोपमा असंभावता मी-
त॥३॥ बुद्धि विरोध माला कहौं औरं परस्पर ईस उपमा रेहु अनंत है मैं बरने इकईस॥४॥ अ-
थ संसयोपमा वर्णनं॥ जहां न निरधार कछु रहै संदेह स्वरूप सो संसय उपमा सदा बरणत है
कवि रूप॥५॥ रसिकप्रियायां॥ खंजन है मनरंजन केसव रंजन नैन किधौं मति जी को॥ पानप्यारे
को मुरली पी की॥६॥ अथ हेतोपमा लक्षनं॥ होत कौन हू हेत तें अति उत्तम से हीन ताहि सों हि-
हेतोपमा केसव करत प्रवीन॥७॥ अमल कमल कल कूल कलित गति बेलि सों बलित मधु मा-
धवी को पानीये मृगमद मरदि कपूर धूरि चूरि पिये बाके सर को केसव बिलास पद वानियें फेलि को-
वमेलि करि चंपक सों केलि सेइ सेवती समेत है तकेतकी सों जानीये छिति मिलि मालती सों
आवत समीर जब तब तें रे सुमन सुबास सों बखानिये॥८॥ अथ अभूतोपमा लछनं॥ उपमा जाइ
कहूं न ही जाको रूप निहारि सो अभूत उपमा कहौ केसवदास बिचारि॥९॥ रसिकप्रियायां॥
ठरि है क्यों भूषन बसन छति यो बनकी चोति होति यो सखी सारा ति है॥१०॥ रसिकप्रियायां॥ ताल मुरी
सुन लाल लै इत्यादि॥ अथ अद्भुतोपमा वर्णनं॥ जैसी होति न है गई आनेक है न कोइ केसव जैसी
बरनीये अद्भुत उपमा होइ॥१२॥ सीतन को उपमान निमान नि गांत सयानन री फिरी जावै बंकवि-
लोकनि बोल अमोलनि बोलतो केसव मोद हि बढावैं हाव नभाव सुभाव बिलास के तावति तावनि
चित्त चुरावैं ऐसे बिलास सरोरुह मैं तो उपमा सुपतीरकी पावै॥१३॥ अथ विक्रिय उपमा
वर्णनं॥ क्यों हू बरनीये कौन हू एक प्रकार। विक्रिय उपमा होत है केसव बुधि अनुसार॥१४॥
केसोदास कुंदन के कोस तें प्रकास मान चिंतामनि बोपन ता सौ रूपि केसर सलोना सार तें निसा-
री सी सौंधकोसी सोधि है सुधा सों सुधारी पाउ धारी देवलोक तें कि सिंधु तें उधारी सी आजिय
सों हसि पिय बोलि वालि लिहै लाल कालि ऐसी ग्वालि स्पा उ काम की कुमारी सो॥१५॥ अथ दूषन उ-
पमा वर्णनं॥ जहं दूषनगन बरनीये भूषन ताय दुराय दूषन उपमा कहत है केसव सुमद सु-
नीव बुधि जलाहि बनाइ॥१६॥ रसिकप्रियायां॥ जो कहौं केसव सोम सरोज सुधा सुर भूंगनि
देह दहै है दे॥१७॥ अथ भूषन उपमा वर्णनं॥ दूषन हरि डराइ जहं बरणत भूषन ताउ भूषना-

उपमाहोतहै केसवप्रगटमता॥१०॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हीसामहाममा कहवरनतेकाबरायो॥१०॥ पलतनपेलकशुद्धासीतदसतद्वारस्तुततनकोनगात
तांनवनसीवहै ओटतनअंवरतिडोलडिगंवरसेसंकरजोसवृरारिउपदेहकोदहै न्हलितनसा
येकतिफलिफलिक्रमितातजातपातवीराहनवातकासोकहै जातिजातिवंदगंददकेसववकार
समवंदमुषीवृदजंकेवदतोंवितेवहै॥११॥ अथतियमोपमालछना॥एकेउत्तजहवरनीयेमनक्रम
ववनविचार केसवदासप्रकासवस नियमउपमासुलेषि॥१२॥ कलितकलंककेतुअरिरोअगातता
गतेगको अजोगरोगमहाकोथतुसो उन्मतकोसरतउरनपेशतिदिनडनोदीहुचितनीतुछविछीनर
कोजउसी चंडसोसुकरनतरासवडकोडहाईसोममतिमंडकविकेसवकेसवक्रससा सुंदरसुधा
सुअसकोमतअमलअतिसीतानाकोमुषसपिकेवलकमलुसो सुंदरसुतासुअसा॥१३॥ अथअधिकाउपमा
धिकोपमालछना॥ अधिकनिरूतेअधिकगुणहाहोवरनीयतहोइ तासोउत्ताधिकोपमा कहतसा
यानेसोय॥१४॥ वेतरंगसेतरंगसंगएकहै अनेकहेसुरंगअंगएकपंकजगामीतसे एतिसपैअंकज
मपैवेससंककेसोदासएकलंकसंकवेकलंकहीकलतसे एपिएसुधाहिवेसुधातिषिसकेसेतु
ताबिद्धसतीतएतनीतवेडनीतसे देहियेदियेबिनाधिनादीएनदहिवेतएनदेहेनहोहिगनइद्रु
जीतसे॥१५॥ अतिसयोपमालछना॥एककहुएकहीविषे सदाहाउरसएक अतिसयउपमाहोय
तिहैकहतसुबुद्धिअनेक॥१६॥ केसोदासप्रगटप्रकाससोअकासमतिदेसुरकेसीसरजनीस॥
अवरेपिये घनघतडनजल अचलाअनल अतिकोमलकमलवजवरसिपिये पिये पुउरकण
रवकमांहितेंअमलजसुवसुधासुधातित्रियअधरमिलेपियें एकरससकलपजापागीतासीतासति
तेरोसोवदनतेंसोतोहिविधेंदपियें॥१७॥ म्यारोईअमानुमनमीनतिकेमतिपउसनहोरकेसीतज
नाहये पंनवांनवांनतिकोआनआवतोतिगवेवदोपदेमांतबिनुकेसेकंवताईया॥केसोदासहोव
लसगीअसंगरंगतिजरंगअंगअंगतिकेअंगनतिगाईयेसीत [illegible] ॥

पाइ हिन लिन पंजर टाही में पाइये ॥२०॥ अथ श्लेषोपमा समर्थ ॥ जहां स्वरूप श्लेष जु गिहै सब्द एक दो अर्थ
के सब ता सों कहत है श्लेषोपमा समर्थ ॥ २०॥ सगुन सरस सब अंग राग रंजीत है सुनु दसु ताग बडे ताग
पागपाइयें सुंदर सु वासु तन कोमल अमल मन मोडरा बरष झूलत ह रहु बढाइये ललित लालित बासु के
सोहा सरस बिलास सुंदरि सिंगार लाई गहकत लाइये या उरी को सालभाझ आउर कै नंदलाल चंपे के माला
लालो लो उर उरमाइये ॥२१॥ अथ धर्मोपमा लछनं ॥ एक धर्म को एक अंग जहां जानियत होइ ता हां सो
धर्मोपमा कहत सब ये नेलोइ ॥२२॥ ऊजरे उदार उर बासु कि बिराजमान हार को समान आन उपमा न टो
हिये सो हिये जटा निवी आंगा सुके जाल बंद कंदकला का से के सोराइ मनु मोहिये नषकै सी रेष चंद्र चंद्र
न सी वाकर जंज अंजनु सिंगार हो ग कल रसु बिरोहिये सब सुष सिद्ध सिवा सों है सि कलु के साध याचकस्यों पा
वक लिलार लागो सो हिये ॥२३॥ अथ विपरीतोपमा लछनं ॥ उर बस्य रेयुत निको तेई कहि जे हीन ता हि सो
विपरीतोपमा के सो कहत प्रवीन ॥२४॥ लुषित देहि दिगंबर नाहिने अंबर अंग नवीने हरि के सुंदरी सुं
दर मंदिर हरि द्रुरी निमैं मंदिर कीने देषि ये मंडित दंडित सो लज दंडि ह्वो असि दंड बिहिने राजन आइ
हजी ति के बेर कमंडल आडि कमंडल लीनो ॥२५॥ अथ निर्णयोपमा लछनं ॥ उपमा अरु उपमेय को जह
गुन दोष विचार निर्णय उपमा होत है सब उपमानि को सार ॥२६॥ एक कहै अमल कमल कमलछ
पसीता जु को एक कहै चंद मय आनंद को कंदरी होइ जो कमल तो रैनि मांझ मिलि कै बेरी चंद जो पै बासर
जं होतो छति मंदरी बासरी कमल रजनी सुष चंद सषि बासर रंजनी बिराजे लागि बंदरी देषे सुष
ताकु उन देषो ई कमल चंद ताते सुष सुषे सषि कमलनि चंद्री ॥२७॥ अथ लाछनिकोपमा लछनं ॥ लछना
लछि जु बरनीये बुद्धि बल बचन बिलास तासों लाछनिकोपमा कहि जे केसवदास ॥२८॥ वासों मृग
अंक कहै तो सों मृगनैनी सब बा सों सुधाधर उहि सुधाधर मानिये वह द्विजराज तेरी द्विजराजी राजे
वह कलानिधि उही कलाकलित बषानीयें रतनाकर के हो ऊके सब प्रकास कर अंबर बिलास कु
वलय हित जानिये वाके अति सीत कर उही सीता सीतकर चंद्रमा सी चंद्र मुषी सब जग जानिये ॥२९॥
अथ संभावितोपमा लछनं ॥ जैसो तातन संभवे तैसो कर उ प्रकास होति असंभावित तहां उपमा
केसवदास ॥ जैसे अति सीतल सुबासु मलय जमद अमल अदल बुधि पहचानिये जैसे कोने काल

वसकोमलकमलमदकेसोदासकेसोराइकंटकसेसांनिये सुंदरिसुलोचनैसुवचनिमुदंतितै
रेसुमआपरउरुपरुपमांनिये॥४१॥ अथविरोधोपमालछनं॥ जहांउपमाउपमेयसों आपसुमां
फिविरोध सोविरोधउपमाकहउ केसवजननदिप्रबोध॥४२॥ कोमलकमलकरकमलाकेउपन
कोकेसोदासहुपुनसरदससिपूईहै ससिज्योतिअमलअमउमसमनमयसीताकोवदनुहीको
होउपदाईहै॥४३॥ अथमालोपमालछनं॥ वदनमोदनकहौरूपकोरूपककेसोमदुवद
नुजैसेंज्ञादिजगमोहिये मदउवदवुकेसोसोताकोसदनुरूपनजैसोहैकमलरुचिलोचनति
पोहिये केसोहैकमलजैसोआनंदकोकंदसुतकेसोहेसुचंदजैसोउपमानटोहिये केसोहेसु
चंदवदकेसवकुअरकोवस्तुतिप्रानप्यारीजैसोतेरोमुपसोहिये॥४४॥ अथपरस्परोपमावर्णनं॥
जहांअतेउवपांनिये उपमाअरुउपमानि तासोंपरस्परोपमा केसवकहतसुजांनि॥४५॥ वा
रनवडेनहदितासिन्मटहसुसिहिवाधरेनउछिवंतनारिएननरसे अंगीनअनंगतनकजरेनमेह
मनमारउनमेरेरवधावरेनवरसे हुबरेनमोटेरंकराजाजकहेनहीहिमरनअमरुजलआ
पनेनपरसे वेदमंतनतेउकहुमास्यउकेसोदासहरिसुसेहेहरिहेरहरेहरिसे॥४६॥ को
किलसेअलिकलापनकरनीसोगिरसाकु म्यसुरोमसगराजसो असेवरणउलाहु॥४७॥ अथ
संकीर्णोपमावर्णनं॥ वंधुचोरबांदीसुनउ कलपहकप्रनुजानि समरिपुसोदरआदिदे इतकेत्र
बंधमांनि विधिकेसोवंधु किधौंवीरहासुरसकोकिकंदनकोवांदीकिधौंमोतितीकोमीहेकल
पकलपहंसकोकिआरनसिउविप्रय्यहिमगिरिमताप्रउप्रगटउनीहहै अमलअमीतसेंभंगा
कलरंगसमसुधाकोसहुहिरिप्रस्मअतीउहै दिशिदिशिहेसंदेशहेआपरमप्रकाशमानकिधौं
केसोदासरामवंकुसकोगाउहै॥४८॥ इतिश्रीमनविविधरुपणरूपितायांकविप्रियायांविशि
[illegible]
[illegible]
[illegible]

जियजोति हंसनि सुपनमनतावती तादिनैं ठकुरानि ॥३॥ सुरतापायातैं अधिक है हंसतापासौं हो
उ हंसनि सुषनयाकौं सदा सुषसुषतकरिले उ ॥४॥ भूषित जिन के सुषनति त्रिभुवनपतिके अंग ति
नके केसोदासकवि बरनतहै प्रसंग ॥५॥ जगकी देवी देवकें श्रीहरिहेऊ बषांनि तिनहरिकी श्री
राधिका इष्टदेवताजांनि ॥६॥ अथचरणोपमावर्णनं ॥ उपमाऔर समान सब इतनोहेउ बषांनि ।
जावकयुतपद बरनीये महदि संयुतपांनि ॥७॥ अतिकोमलपद बरनीये पल्लवकमलसमान
जलजकमलज्यौं चरनकहि करकहियलज प्रमान ॥८॥ राजुरजोयुतको प्रगट भावी दिशिकोता
तीग रंगरूपनिजावकबरनीये कोपरागअनुरागु ॥९॥ अथजावकवर्णनं ॥ कोमलअमलताकी
रंगसुमिकिधौंयुहसोतियउअंगनुकेसोलाकेसदनौंको अरुनदलनिपरकीनोकिधौंरुचिको
रजौल्यौंकिधौंरजोगुणराजीवकेराजीवकेगनको पलपलपल्लवकरतकिधौं केसोराजलागिरहो
पुरबानुरागुप्रियमनको एरीइषतांनुकीकुमारि तेरेपायसोहैजावककेरंगकेसुहागसोंतिगत
को ॥१०॥ अथचरणवर्णनं ॥ गंगाजुकेजनमअकंवकेप्रमानयेविजपिरसुरमंत्रआनंदबढावहीं ।
केसोदासधांमजलसीतसदैराकरसगटेएकपायकोटिकलपनासावहीं कोमलअमलरएसु
दरसुबासुरएकमलानिवासमनु तदपिलमावहीं पायोपरिलमपऊपदमनिपदमनितेरेपदप
दवीकोपऊपैंनपावहीं ॥११॥ अथचरणअंगुरीवर्णनं ॥ अंगुरीचंपककीकली जीवनस्रिगमांत
ताराहरविससिसूमन मनिगननषनिसमांन ॥१२॥ विछियावाकेअनोटकी तादिनउपमाआंनसोत
प्रातपतंगमान हंसअंसलनत्रांन ॥१३॥ चंपककली दलजंतीलली पदअंगुरीबालकीरूपरसेहैं सु
सुदेसलसैंनषयोजनु प्रीतमकेहगदेवबसेहैं बांकेअनोटबनेविछियानिबिभूषितजोतिजराइ
नसेहैं केसवसोम सरोजनिकपरिकोपिमनौं तनत्रांनकसेहैं ॥१४॥ अथनूपुरवर्णनं ॥ नूपुर
रसायेंत्रमन लोचनगुनगनहार जावजसपावकमध्य जामिकवंदनमार ॥१५॥ गतिनिकेहारकि
विहारिकपहारकहूं किधौंप्रतिहारप्रतिरतिकेनिलयके हंसगतिनायककिसूदगुनगारकै
किधौंवाणहरसकोऊमायकहेमयके केसवकमलकूलअलिकूलकूजितनसोंकिधौंप्रतिध्वनि ।

नितसुमतितनिचयको व्हाटकघटितमति स्पोमकाटिपगत्रु [illegible]

॥२६॥ अथ सेद्द रिवर्णनं॥ जे द्द रिजयके बनकलित केसवढा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] चकवाक घत्रुव जोनसम वरनितितेवनिपीन॥ [illegible]

मेरेवळवी रज कु बलद्दी द्दरतद्दे सोरतसु नातरसुतारंतो कोसदत [illegible]

तानिधरतद्दे कोटिरतिराजसिरताजकु नरराजकीसो [illegible]

नदकविसकलसक्क विस्नुषिआए सुडिनकी ऊंकलीकरत [illegible]

रवितवीर बाकवुक्यु चकमन सुंदर सुदरसनदरसनन नदीनंद [illegible]

वीनंद्द सबद्दीके मनतिमयतमनि व्हाटक्कोक [illegible]

वसकेतिकितरसनितेरकालतये वत्रे नितेचवकृत्नानदा॥ [illegible]

दास्त्राति अनदलक्रुनमान रामललानमधन आति [illegible]

कोकुगईतेसी सारकीदिवाइ अमीत्रि तुविक्तेर निमीनंद [illegible]

रकैसी संकत्रे कर रकक साविनुद्द संमुक सादानुमातल [illegible]

उद्दे कोतद्द सवारी तुपना तुकाक्रमा [illegible]

किसी कामवणवान बाढे द्दसिगार [illegible]

बेलि बकीत मिकिधौ कसोदसन [illegible]

वनकिपदिय सुंदर उदासुन [illegible]

अनवर्लनो वकवाक कवन्त [illegible]

वांनो॥२५॥ [illegible]

किधौं इंदराके मंदिरके इंदीवर हैं इमुषी सोरतसरस है आनंदके कंद किधौं आगहै अनंगही केरा
जितजु केसोदास बरस बरस है एरी मेरी कान्हाजु की प्यारी तेरे कुच किधौं रूप अनरूप जातरू
पके कलस है ॥२५॥ अथ भुजवर्णन ॥ कर पंकज पत्र वनि तुज विसबल्ली रिसुपास इन्दलता स्कि
ऊसमसर नयरू विकेसोदास ॥२७॥ केसोदास गोरे गोरे गोल कामस्लूल इन्दलता मनिकी खुङा मुज
ताई से उतारे हैं सोता सुषवर पतमांपनु सेपरसत दर सनकंवन सेकविन सुधारे हैं बलयब
लितबाज्ञ दे पिरी फिरहै नाज्ञ मानो मनपासिबेकों पासिए विचारे है मलिन मृनाल मुषपंकमेंउ
राए डषहै पो जाइ आतिन में छेक करि डारे है ॥२८॥ अथ कर लूपण बर्नन ॥ गजरा बिराजे गज मोति
नके अति निके जिनकी अजीत द्योतिकेसोदास गाई है बलय बलित बाज्ञ कंवन कलित मनि ला
लकी ललित पौंची पोचि न नवाई है सेत पित हरित फलकफकति लाल स्याम लसुमि तमेरे स्यामल
कों ताई है मांनो सूर सोमकी कलासकेलि आपनयों आपनयों आपने सषाकों सुषदाइ यदराई
सी २९॥ अथ नष अंगुरी वर्णन ॥ गोरी गोरी आंगुरी निराते सरू चिर नषबोर आतिपैने पैने बिरचिकी
ने है रतिजय लिषबेकी लेषनी सुरेष किधौं मीन रथ सारथी केनो दन नवीने है किधौं केसोदास
पंचबान जू के पाचो बान सकल जु वनाजिन बासि करि दीने है कंचन कलित मनि सुंदरी ललित किधौं
पियपरिजन मन दायक करि लीने है ॥३०॥ अथ मंहदी संजुत मानि वर्णन ॥ राधिका रूप निधान के पा
नि आनि मनो छिति की छवि छाई दीह अदीहन सूचम सूलम दीह गगोरी की दोरि इराई मंहदी
मय बिंदु घने तिनके मनमोहन को मनमोहनी लाई इंदु बधू अरबिंद के मंदिर इंदिरा को जनु दे
षन आई ॥३१॥ अथ कंठ वर्णन ॥ कंठ सुकंबु कपोत इति केसवदास समान पिविकनकी यह का बरन
त सकल सुजान ॥ सुरनर प्राकृत कवित रिति आरभटी सात्त्वकी सुतारती यो तारघमें तोरी की किधौं
केसोदास कलगांनकी सुजान तांनि संकता सों ब्वन विचित्रता किसोरी की बीना बेनु पिक सुरसोर
की त्रिरेष रेषमन क्रम बचन कि पियहित चोरी की अंबु साइ सोंमोहो अंबिका कृदे षि देषि अंबुजनयन
कं बुग्रीवा गोरी गोरी की ॥३२॥ अथ कंठ भूषण वर्णन ॥ लेत मोल लोलक कंठ कंचमाल जाति नांहि नेंन देषी
जाति गर्व ता गिके स्यांम सेत पीत लालकं बुक कैंव कंवमाल जाति नांहि नेंकहु रही सुजोति जागिके केसो

[illegible]

मति ह्वीरादसतस्समाना॥२०॥ [illegible]तिसुबुंधसुधाकधरकामल[illegible]दल[illegible]तिथमल
नेदे केसवसुवासुमंदहासस्रुतकोतकोनकामविभ्रमकुगेरकदु विंवहादिंदीनेदे सहमसुरेपा
अतिसुधासुधासुविरोषचतुस्वतरसुपरेमारविकीनेदे मांतोमेतमूनहरिताहकेनयनमतिगत

[illegible]

घसुघवासेवर्लेनं॥मदनकीविकासुपकजनदि मनमोहनी॥विलास।नेपटकपानीकपटक।
सुघसुघवास॥किधौंतयोउदितअनंगमकोदांगउरसुरतीअंगराग५

तवाउरी वमेली वारु फूलि रही फैलि वारु केसव प्रकास कर सुषको ।किधौं परिमल प्रेम फूल नावतंस
निको ।किधौं बर बानी बनमाला के बसुषको किधौं पायो प्रानपति हृदय कमल फूल्यो गंध बंधु कि सुग
धु सुषमुषको ॥४३॥ अथ मुषरागवर्णनं ॥ अरुणोदय राजीव में अंगराग अनुराग रूप तनु परतिराज
सों राजति सुषमुषराग ॥४४॥ केसोदास रागनि को कि अंगराग किधौं द्विज सेवत है संध्या नलीनोर
की अरुण रदन बज्र बदन हृदय किधौं बदई फल कफलक तब जोर की किधौं तापा तपन किम
ननिको वाक्यव कि बोरे लेउ चित्र बलि तेरो चितवोर की लागि रह्यो अनुराग नादि तेननिको किधौं रुचि
रा बी तेरी तरुनी तमोर की ॥४५॥ अथ रसनावर्णनं ॥ रसना कोमल बरनीयै कोविद अमल अलोल
केसव देवी रसन की सरस रसिक मडबोल ॥४६॥ देषत ही आधो पल बाधि जाति राधा सब राधाजू
की रसना सरूप केसी रानी है आछी रबातन की जननी सी जगमग मेरसनिकादि वा किधौं पविपदवानी
है केसोदास सकल सुबास केसी सेज किधौं सकल सुजान ताकी सषी सुषदानी है ।किधौं सुषकंजमें
सकति को नेस बैठ जस बिता की छबी ता को कविता निधानी है ॥४७॥ अथ बाणीवर्णनं ॥ बानी बीना
बेनु अलि सुक पिक किंनर गान सो तनसत बज अधर्मय केसवदास बषानि ॥४८॥ कामकी दुहा
ई सुहाई सषि माधुरी किधौ उरी को माउ ऐसी बात निआजाति है रमा राजधानी अनुरागन को बक्र
रानी मोहे दधि दानी कहि कोकिल लजाति है एरी मेरी हृज रानी तेरी बर बानी किधौं बानी जू की बीना
सुष सुषमें बजति है ॥४९॥ अथ कपोलवर्णनं ॥ मुकर मध्य के कपोल सम केसवदास प्रमान तिल प्र
सून तुली सम सुकनासिका समान ॥५०॥ किधौं हरि मनोरथ रथ की सुपाधि हमि मानस्वप्न सारथी की म
तिन सकित है ।किधौं रूपलपति की आसन रुचिर चिमिलि मग लोचन मरीचिका मराचि है ।किधौं स्रुति
कुंडल मकर सर केसोदास चित एतें चितवक बाधिकें चलत हैं गोरे गोरे गोल अति अमल अमोल तेरे
ललित कपोल किधौं मैन के मुकर हैं ॥५१॥ अथ नासिकावर्णनं ॥ केसव सुगंध स स्वांस हनिकी ग्रहा
।किधौं परमसिद्ध मूल सो तन सुबासिका ।किधौं मन नासि जमन नमीन की कबैनी किधौं कुंदन की सीमा
लालोल लोचन बिसालिका सुकता ललित छरी ललित मुकंद जू की ।किधौं सुरसेई तातिका सी कोपका
सिका चितवन रूपता के त्वंग तोय निधि लाके तोई कोतरंग कितरु सितेरी नासिका ॥५२॥ अथ मुषका

अथमुखकोफलतेंवर्णनं॥ केसवआनंदकंदफल सुधाचंदमकरंद मनमतंगकोदर्पगति नकनैताजगचंद॥ केसोदास सकलसुवासुकोनिवासुसषिकिधौंअरविंदमहिमुंदमकरंदको किधौंचंदमंडलमेंसोहतअसुरगुरु किधौगोदचंदहीकीपिठिसुतवंदको वादेंगुनरूपकामजिहिनिकल्यो किधौंरुपरुहैकलपवृक्ष आनंदकेकंदको नाकनाइकनिकतनीकोनकमातीनाकमांनेमनउरफिरत्योंहेनंदनंदको॥ अथनयनवर्णनं॥५४॥ लोचनवारुचकारसन चातुरचकतकुरंग अंजनयुतअलिकमसिपंजनकंजसुरंग॥५५॥ पियमनिफूलतकिधौंप्रेमरथसूतकिधौंतरमधसुतवधुवासुकेसुरंगहे चितवतचितचोर चितचोरसुपचंडकंचकार किधौंकामवजरंगहै वानमदरंजनिकिपेजुबकोषेलवेकोपंडनकिरंजनकर्णरकामदेवकेत्ररंगहै तौतासुरवीनमीनकुवलयरसलीनितलिनतीत किधौंनैनावकुरंगहे॥५६॥ अथअंजनवर्णनं॥ विषसिंगाररसमूलतम मरनपालकमात मनरंजनअंजनसवे वरनिकहततकविराज॥५७॥ किधौंरसराजरसरसितअतितकिधौंललितविरिपिविषवलितसंताडिकें किधौंयुगडीतवकाकं

[illegible]

रनतरमायलियककेस केसवकसमसमान॥६७॥पा[illegible]

जीतें

कालकूसो तासु पद जानियें तिनके तनकी जोति वंत अति केसव अनंतगति कैसैं कै आनियें मानो बामदे
वजू के बेर काम कांमदेव साधे सर साधि नांतें लघी उर आंनियें डडादि सजल लजरू कुटी कमांन ताने
नयनकटाछि बांन बेधत न जांनियें॥६५॥ अथ कर्ण लपण वर्णनं॥ कनदल सी सीते उर जनपता कम
नमीन सर संकर सु आकासके सोतनदी पतबीन॥६६॥ त्रिटिला षचित मनि मोदै नव नक बने का
नक कलस रूपिस रचिर रवन है तनदाभ तनती उरी तरल गति मनज्ञ पताक पीत पीडति पवन है का
लिंदी के कूल उर जाति जालके लिकदं कालकूंसरा है मेरे कालिके वदन है केसोदास सुंदरि श्रवन व
र सुंदरी के मानो मन ताल ते के ताउ ते तवन है॥६७॥ अथ लिलाट वर्णनं॥ कनक पट्टिका समक दूत
केसव ललित लिलार सो तन सो ताकी सता अर्धचंद्रमा वार॥६८॥ केसव असोक किधौं सुंदराल
कनके द्वार किधौं आनंद के वदन को सो ताको सुताउ किधौं अताको प्रताउ देषि मोहे हरि राउ सपि
नंदन सुनंद को चमकित वार रुचि गंगा को उलिन किधौं वक चोंधे चित मति मंद जं अमंद को सेज
दे सुहाग कि किं ताग को सता सुहाग ता मनी कोताल किधौं ताग वारू वंद को॥६९॥ अथ अलक वर्ण
नं॥ अलक चिलक सौं बरनीये स्याम लआमल सुपास अति चंचल अति चारु अति सूछम केसव
दास॥७०॥ केसव कसा किधौं अनंग को सुरंग सुषी लोचन करंगनी की चाल हटकाति है प्रियमा
न पास विवेकौं पासि सियसारी किधौं उपमा कौं मेरा मति तव तटकति है तरनि तनूजा षेलें तारा ना
थ साथ किधौं हाय परिमल को तरुनि मटकति है सुनि लोल लोचन नवल निधि नेह निकी आलिका
की अलक अलिक लटकति है॥७१॥ अथ मुष मंडल वर्णनं॥ अमल मुकर सो बरनीयें चारु चं कोमल समांन कि ये
द परिमांन॥७२॥ अद्नि में की तो गेज सुरनि देष्यो देज सिवसों कस्यो सतेज जाग्यो जुग चार्यो है
तपति में तप्यो तड जल उधि में जप्यो जब केसोदास वपुमास मास तविगास्यो है उडगन ईसु वेजु ईसु
उषधीसु तयो जदपि जगत ईसु सुधासों सुधास्यो है सुनि नंद नंद प्यारी तेरे मुष चंद सम चंद पैन
लयो कोटि छंद करि हारयो है॥७३॥ अथ केस पास वर्णनं॥ तोर चौर सेवाल तम जमुना को जल मेज
मोर पिच्छ सम बरनीयें केसव केस सनेह॥७४॥ कोमल अमल चल चीकने चिलक चारु चित ये
तें चिरु चकचौंधिय जु केसोदास सुनि दिच्छ बीली राधे छूटे तें सु ऐछ वानिका रे सटकारे है सुलावह
सदा सुवासु सुनिकें प्रकास उपहास नि रिबासर के कानो है सुकेसी वसु बास जाइ के अकास ले

उदपि अनेक चंद सी यती यें मोर पिछ जी सोए कुच्चं दुस पकृ पते रेके सपासा॥ ७४॥ अथ वेनी वर्णनं॥ औ
सी वेंनी वरनी ये केसवदास बनाय अति निसय मुनि भार अदि अलि अवली सुषमाइ॥ ७५॥ चंद उ
चदा एच्चारु कुंकुम लगाएँ पाछे कि धौं तिसिनाथ तिसितेद सेड राहद्दे किधौं चंद वंदन चिर के ची रस
पति समीप सुधानिधि सोधि सोधु लैन आई है किधौं रसराज रस केसौदास सदा सुरस मिलि अनुराग
रसधारा धाई है मिलि मालती की माल लाल डोरी गोरी सूदी वेंनी पिक वेती की त्रिवेनी सी बनाई है॥ ७६॥
अथ सिरबंदा वर्णनं॥ वेंदा वरनत सफल कवि केसव ललित सिंगार ताग सुहागन देस सम रवि
ससि उदित उदार॥ ७७॥ माग फूल सिर फूल सब वेंनी फूल बनाक रूसत मजग जोति जनु स्वरूज उ
गाट अनाय॥ ७८॥ मोतिनकी सरिसी सपारि सोहति हैं दिनांति चारु चंद्रमा की पधु घन मराल की
पांति॥ ७९॥ वेंनी पिक वेंनी की सुवेंनी नियतई सुद्दी कंचन कै सम सदि नीयननि पां दिये केसौदास फू
लि रही फूलिसी समफूल उति क्यों तनु मनु मेरो न्याय हरि मो दिये वेंदाजग मग उजनायजरया ताकी
जोति जी सोहै अजित उपमान आंन टोरदिये मानों हनि पाउ डेने पाउ धारि आए दो कसोदउ सुहाय सि
र ताअ ताउ सोहि ये॥ ८०॥ अथ अंगवास वर्णनं॥ सहज सुवास सरीर की आकर यन विधि जानु अति
अदिष्ट गतिउतिका हद देवता मां नु॥ ८१॥ कमल वदन कर नयन वचन कुच कमर कुरंग मउ कटाक्ष
विलास है रुकरी कदलि केमे वकस्तु गंध मय कुंदुन कलि की दंत वंदन कदा सुहै कुंकुम सरीर
कन कमानिको स्वेद नीर अंवर को केसौदास अंवर कोला सुहै मनकल्पन विधि किधौं रुद्द देवता अदि
ष्टगति उति काकि सहज सुवास है॥ ८२॥ अथ वसन वर्णनं॥ वसन सदै लि सिरुलस कायामाया मा
उ सोना सुरुतग सुहा अंगति लाजलाज को आउ॥ ८३॥ किधौं यह केसव सिंगार की है सिद्धि किधौं त
गकी सदेलीकि सुहाग को सुहाउ है जोवन को जाया किधौं माया मनमोहिवे की काया किधौं लाज की
किता जहां को आउदे लाभ लाप स्तांति न के पिय ही के अलिलाप लाय पदि पहिरे वनाइ किधौं कि
को सोना उहै मारी जरकसी जगमगाति सरीर किधौं त्रिमन जराउ ही की जोति कोंन राउ है॥ ८४॥ अथ स
कीर्ण रूपण वर्णनं॥ रसिकप्रिया यां यथा॥ चंद के सो ताप्रता उत्त कटी कूलांन औसी॥ ८५॥ अपरसंसल न
पण वर्नन॥ बिछिवा अनोट बाके घुघरी जराड जरी जे हरी छवीली छुद्र घंटिका की जालिका छंद रीउ
दारपांवी कंकन वे या चूरी कंठ कंठमाल हार पहरे शुपालिका वेंनी फूल सीस फूल मांग फूल का

सीफूलछुटि लाति लकनकमोतीबन्योबालिका केसोदासनीलबासुजोतिजगिमगिरही देहधरें देषि
यत मांनौं दीपमालिका॥ अथअंगदीपतिवर्णनं॥ कुंकुमकंचनकेतुकी चपलाचंपकचारु कमलकोस
गोरोचना त्रियतनदुति अवतारु॥८७॥ राधाके अंगगुराई सी औरगुराई बिरंचि बनाइ नदीनी केस
नुबुद्धिबिबेकसौं एक अनेकबिचारि नमेंहगदीनी बानिकतेसीबनी नबनाउतकेसबके संदे हैगई ही
नी लेत बके सरि कुंदनु केतकी चंपककेहुलहांमनिनीकी॥८८॥ अथगतिवर्णनं॥ राजहंसकलहंसस
म अतिगतिमंदबिलासु महामत्तगजराजसी बरनकेसवदास॥८९॥ किधौंगजराजनकीराज उ
हे अंकससी रचनि बिलासनिकी आरसुसजति है किधौं राजहंसनीकी संकासककेसोदास किधौ
कलहंसनीको लाजसीलगति है बलितअनंगलरु ललितसिंगारबेलि फलिफलि लिलवत चवफलनि
फलति है किधौंनंदलालके लोललोचनको श्रंषलाके तेरी लोललोचनी अलोल अतिगति है॥९०॥ अथस
मसमु लिवर्णनं॥ चंचकलाउडदामनि कनकसलाकी देषि दीपसिषा नषषिलता मालाबालादेषि॥
९१॥ तारासीकांकृतराइनसंगअचंचकलानिसचंचकलासी दामनिसी घनस्यांमसमीपलगेतन।
स्यांमतमललतासी सोनेकीसीकसीडरनचेते मिलेउरमेंउरहारसुतासी आधिकीउषधसीकहिकेस
व कांमकेधांममेंदीपसिषासी॥९२॥ महिमोहनीमोहतिरूपहिमारुचिकरी सदनमंत्रकीसिद्धिप्रेमकी
पद्धितसरी जीवनमित्र विचित्र किधौंजगजीवमित्रकी किधौंचित्रकीहत्तिलिअलिलाषचित्तकी कहिके
सवपरमानंदकी आनंदसकति किधौंधरनि आधारनृपतवधरणको राधानुविबाधाहरनि॥९३॥ हहि
विधिबरणों सकलकवि अविरलंघविअंगअंग कहियघामतिजीवंड केसवपायप्रसंग॥९४॥ इति
नखसिषवर्णनं॥ अथजमकालंकार वर्णनं॥ अव्यपेतव्यापेतअरु जमकबरनहुहेतु अव्यपेतबिनुअं
तरहु अंतरसोसव्यपेउ॥९५॥ आदिपद जमक॥ सजनीसजनीरदनिरषि हरषिनचितइमोर पिउ
पिउचाउकरटटउ चितवतिहरिकीओर॥९६॥ दूसरेपदकोजमक॥ मांनकरतिसषिकोनसो हरिउ
हेरउआदि मानुनेदकोमतलहे ताहिदेषिचितवाहि॥९७॥ तीसरेपदकोजमक॥ सोततिसोता आग
निय चहदिसतहयसार वारनबारनगुंजरत बिनुदीनसंसार॥९८॥ चोथेंपदकोअंतजमक॥
राधाकेसवकुवरको बाधाहरहुप्रवीन नेकसुनावजकारिका सोलनवीननवीन॥९९॥ आद्यंतजा
मक॥ हरिकेहरिकेवलिमनहि सुनि हषनानुकमारि गावहुकोमलगीतहे सुषकरिबारकबार॥

।त्रिपदजमक॥ सारसैननेंनीश्रुनि चंद्रचंद्रमुषदेषि सुनिरमनीरमनीयतरि तिनतैंदरिसुषलेषि १
द्विपदजमक॥ अलिनीअलिनीरजबसे पतितरवनीपतंग हेमनमनमनहरिबसा माधौराधासंग
॥२॥ द्विपदादि त्रिपदांतजमक॥ आउमनावतमानपिय मांननिमांननिहारु परमसुजानसुजानु
हरि अपनेंचितविचारु॥३॥ द्विपदचउपदादिजमक॥ जिनहरिसबकोमनहस्यो बामबामहगवा
हि मनसावाचाकर्मना हरिवनतीवनितान्हि॥४॥ उत्तरार्द्धजमक॥ आजुछबीलछबिवनी छैलि
ब्रलनकेसंग मिलीतरुनितरुनीनकर केसवकेसवअंग॥५॥ प्रथमद्वितियचउपदादिजमक॥ दे
षिग्वालउग्वालहि मनमनरसरथलीति येलनिवन सुंदरिगई गिरिसुंदरीदरीति॥६॥ प्रथमतृती
यचउपदादिजमक॥ परमानंदपरमानंदहि देषिवचनउपकेउ यहअबलाअबलोगिहै गज
हरिहरिकेकंठ॥७॥ द्विपदत्रिपदचउपण॥ कुंजिगयोसंग्राम सरसुसरसदेषि दिनुरघुनीरघुन
यतजि सूरतिरतिसषुलेषि॥८॥ चउपदजमक॥ नहितउरबसीउरबसी मदनमदनबसतजि सुर
नरवरतरवरतरु नंदनंदआसक्त॥९॥ द्विपदादिजमक॥ माधवराधिका पाएकोजकुमार भजि
कुमाधवनेमसौं गिरजाकोतरुतारु॥१०॥ आदिअंतजमक॥ सीयस्वयंवरमांहि जिन जुवतिन
देषेराम ताहितेतिनसबस्यिन तजेस्वयंवरधाम॥११॥ आदिनिरंतरजमक॥ पापतसतमों
कहतहि रामवंशवनीश निउशकलितदेषितैं विरहीविरहसमीप॥१२॥ आदिअंतरसां
तरजमक॥ जैसेंबूवेनवंशमा कमलाकलसनिलास ओसेंहीसुवसाधुपर कमलाफलनिवा
स॥१३॥ परमतरुसौं सोतिजे परमेसरअरधंग कलपलताजेसेंलसति कलपहचकेसंग॥१४
द्विपदादिजमक॥ अंगदेसमूलछिजे लछीलछसरूप अंगनमेंजेसेंलता अंगनांनिकेरूप॥१५॥
त्रिपदादिजमक॥ दांनदेतमौंसोतिजे दांनरतनकेहाथ दांनसहितमौंराजहु मत्तगलनिके
माथ॥१६॥ चउपदादिजमक॥ नरलोकनिराषतसदा नरपतिश्रीरघुनाथ नरकनिवारनतन
मतमुन नरबाहनकौनाथ॥१७॥ रूपकरउपकरतेदेह रूपकरिवरनेजांति जमकमुनोकवि
राजसब रूपकरिकहेदयांति॥१८॥ मांनसरोवरआपने मांनसमानहिवाहि मांनसहरको
मानजौं मांनसवरणतताहि॥१९॥ करणीवरणीजायक्यों सुनिधरनीकेईस रामदेवनरदेवम
ति रामदेवजगदीस॥२०॥ राजहंससंगदेवद्विज राजराजसुतमांनि विधिविधिधरम्यरू सुरसनि

सीफूल छुटि लोति लकन कमोती बन्यो बालिका केसोदासनी लवासु जोति जगिम गिर ही देह धरें देषि-
यत मानौं दीपमालिका॥ अथ अंग दीपति वर्णनं॥ कंकम कंवन केतुकी चपला चंपक चारु कमल को स-
गोरोचना त्रियतन ज्योति अवतारु॥८७॥ राधा के अंग गुराई सी औ र गुराइ बिरंचि बनाइ नवीनी केस
नु बुद्धि बिबेक सौं एक अनेक बिचारि न में इगदीनी बानि कतेसी बनी न बनाउत केसव केसे हैं कै गई ही-
नी लेत बकैं सरि कुंदनु केतकी चंपक केहु ल दामनिनी की॥८८॥ अथ गति वर्णनं॥ राजहंस कलहंस स-
म अतिगति मंद बिलासु महामत्त गजराज सी बरनत केसवदास॥८९॥ किधौं गजराजन को राज उ-
दै अंक ससी रवनि बिलासनि को आरसु सजति है किधौं राजहंसनी की संका सक केसोदास किधौं
कल हंसनी को लाज सी लगति है बलित अनंग लरू ललित सिंगार बेलि फूलि फूलि ल्हौ वता वफलनि
फलति है किधौं नंदलाल लोल लोचन को षषलाके तेरी लोल लोचनी अलोल अति गति है॥९०॥ अथ स-
म्मस्तुति वर्णनं॥ चंद्रकला उड दामनि कनक सला की देषि दीपसिषा उषषि लता माला बाला देषि॥
९१॥ तारासी कांकंतराइन संग अवंद कलानि सुवज्र कलासी दामनि सी घनस्याम समीप लगे तन।
स्याम तमाल लतासी सोने की सीक सी डरत बेठे मिले उरमें उरहार सुतासी आधि को उषध सी कहि केस-
व काम के धाम में दीपसिषासी॥९२॥ महिमोहनी मोहति रूप हि माह छिलरी सदन मंत्र की सिद्धि प्रेम क-
पद्धित मरी जीवन मित्र विचित्र किधौं जगजीवन मित्र की किधौं चित्त को हित लिस्यो अति लाष छितकी कहि के-
सव परमानंद को आनंद सकति किधौं धरनि आधार रूप सब धरणि को राधा जु विराधा हरनि॥९३॥ इहि
विधि बरणौ सकल कवि अविरल विविध अंग कहि यथामति जो यैं केसव पाय प्रसंग॥९४॥ इति
नखसिष वर्णनं॥ अथ जमकालंकार वर्णनं॥ अव्यपेत व्यपेत अरु जमक बरन जु देत अव्यपेत बिनु अं-
तरह अंतर सो सव्यपेत॥९५॥ आदि पद जमक॥ सजनी सजनी रद निरषि हरषि न चितई मोर पिउ
पिउ बाउक रटत छितवति हरि की ओर॥९६॥ दूसरे पद को जमक॥ मान करति सषि कौन सौं हरि उ-
हेर उ आदि मानु लेह को मन लहै ता हि देषि चितवाहि॥९७॥ तीसरे पद को जमक॥ सोलति सोला आग
निय यह दिसत हय सार बारन बारन गुंजरत बिनु हरि संसार॥९८॥ चौथे पद को अंत जमक॥
राधा के सब अंग बर को बाधा हरजु प्रवीन नेक सुना वजकारि स्या सो लनवीन नवीन॥९९॥ आद्यंत ज-
मक॥ हरि के हरि के बालि मन हि सुनि हषलानु कुमारि गाव जु कोमल गीत है सुषकरि बारक वार॥
॥१००॥

सीफूलछुटि लोति लक्खन कमोती बन्यो बालिका केसोदास नीलबासु जोति जगमगि रही देह धरें देषि-
यत मांनों दीपमालिका॥ अथ अंग दीपति वर्णनं॥ कुंकम कंचन केतुकी चपला चंपक चारु कमल कोस
गोरोचना त्रियतन दुति अवतारु॥८७॥ राधाके अंग गुराई सी औरगुराइ बिरंचि बनाइ नवीनी केस
नु छबि बिवेक सों एक अनेक बिचारि नमें दृगदीनी बानिक तेसी बनी न बनाउ त के सब के सं है हो गई ही
नी लेत बके सरि कुंदनु केतकी चंपक केहु लदांमनि नीकी॥८८॥ अथ गति वर्णनं॥ राजहंस कल हंस सम
म आति गति मंद बिलासु मदामत्त गजराजसी बरनत केसवदास॥८९॥ किधौं गजराजन को राज उ
है अंक सखी रचनि बिलासनि को आरसु सजति है किधौं राजहंसनी की संकास ककेसोदास किधौं
कल हंसनी को लाज सी लगति है बलित अनंग लरु ललित सिंगार बेलि फूलि फूलि लिलत बताव फूलनि
फूलति है किधौं नंदलाल लोल लोचन की अभिलाष केतेरी लोल लोचनी अलोल आतिगति है॥९०॥ अथ स
मस्त मूर्ति वर्णनं॥ चंद्रकला उड दामनि कनकलता की देषि दीपसिषा उनषिलता माला बाला देषि॥
९१॥ तारासी कांकल राइन संग अचंदकलानि सुचंदकलासी दामनिसी घनस्यांम समीप लगे तन।
स्यांम तमाललतासी सोने की सीक सी डरल चेते मिले उरमें उरहार प्रभासी आधिकौ उपमा सी कहि केस
व कांम के धांम में दीपसिषासी॥९२॥ महिमोहनी मोहति रूप हिमा रुचिरूरी सदनमंत्र की सिद्धि प्रेम की
पद्धित सरी जीवनमित्र विचित्र किधौं जगजीवमित्र की किधौं चित्र की चित्रति लिखि अभिलाषचित्र की कहि के
सव परमानंद की आनंद सकति किधौं धरनि आधार रूप लव धरणि को राधा हरि बिबाधाहरनि॥९३॥ रहि
विधि वरणत सकल कवि अविरल अवयव अंग अंग कहिये बामति जीवंत केसव पाय प्रसंग॥९४॥ इति
नखसिष वर्णनं॥ अथ जमकालंकार वर्णनं॥ अव्यपेत व्यपेत अरु जमक बरनि इंहेतु अव्यपेत बिनु अं
तरहु अंतर सो सव्यपेत॥९५॥ आदिपद जमक॥ सजनी सजनीरद निरषि हरषि नचित मोर पिउ
पिउ वा उ कर रटउ चितवति हरिकी ओर॥९६॥ दूसरे पदको जमक॥ मांन करति सषि कौन सों हरि उ
हेर उ आदि मानु नंदकोमलत है ता हि देषि चितवाहि॥९७॥ तीसरे पदको जमक॥ सोनतिसो नाग
निय यहि दिसत हृय सार बारन बारन गुंज रत बिनु दीने संसार॥९८॥ चोथे पदको अंत जमक॥
राधाके सब अंकवर की बाधा हरन प्रवीन नेक सुनाव जुकारि कृपा सोलन वीन नवीन॥९९॥ आद्यंत जा
मक॥ हरिके हरिके बलि मन हि सुनि हषरानु क्रमारि गाव कें कोमल गाति है सुष करि बार कवीर॥
॥१००॥

॥७॥ दिपदादि पदांतजमकं॥ आउमनावतथानापिय मानानमानानद्वारु परम भुजान भुजा न्त्र
द्दरि अपतंविऊदिवारु॥८॥ दियदव अपदादिजमकं॥ जिनद्दरिसवकोअनद्दत्यो वाम वांम द्दगवा
दि मतसावावाकामना द्दरिवनतीवनिताद्दि॥९॥ उत्तरार्द्धजमकं॥ आजाइवीजवृंदिकनो छोडि ३
[illegible]

[illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] सावित्र दातरततदजम दातमित्र [illegible] ॥५॥
[illegible] मत्तगजातिके
[illegible] नरकनिवारनतो
[illegible] जमकसुनोकवि
[illegible] मोतसनरको
[illegible] रामदेवनरदेवम
[illegible]

योमेंसुन्यो मनुहारीनोहरिहास वादिनतेंबनबनफिरे कोजांनेकिहिसास॥२८॥ द्वादस्याक्षरवर्णनं॥का
लबेरीनिकेंकहें बिसरीगोकुलराज मुषदेषीलैमुकरकर करीकेलैकलाज॥२९॥ एकादस्याक्षरवर्णनं
केसवसोंहैकालकी छरछुगयोसनेह तोरेतेंटुटेनही काहाकरेंअबजेह॥३०॥ दस्याक्षरवर्णनं॥लैवा
केंमनमांनकहिं कितकालपेंजात जबकोऊजियजांनिहै तबकेसोकैबात॥३१॥ नवाक्षरवर्णनं॥चिं
तुनिछुनेअंगारगन जाकोंकरीयेजोर सोऊजबजरेजिये केसेंजियेचकोर॥३२॥ अष्टाक्षरवर्णनं॥नैं
ननिनेंबसनेंकहें कमलनयननवनाम बालनकेंमनमोहिले बेचतमनमथहाथ॥३३॥ सप्ताक्षरवर्णनं॥
रामुकांमुरिवबसकरे विबुधिकांमबससाधि कामुरामुबरबसकरो केसवश्रीआराधि॥३४॥ षष्टाक्षर
वर्णनं॥ कांमुनाहिनेंकांमुके सबमोहनकेकांम बसकोनोमनसबनिको कावामाकावाम॥३५॥ पंचाक्षरव
र्णनं॥ कमलनयनकेनयनसें नेंननकोंनोकांम कोनकोनसोंनेमुकेमिलेनस्यांमुसबकांमु॥३६॥ चतुराक्ष
रवर्णनं॥ बनमालीबनमेंमिले बनीनलिनबनमाल नेंनमिलीमननमनमिली बेंननिमिलीनबाल॥३७॥ त्रिअक्षरव
र्णनं॥ लगालगीलोपेंगली लगेंलागलैलाल गैलगेलगोपीलगें पालागोंगोपाल॥३८॥ द्विअक्षरवर्णनं॥हरिहारि
राहीहस्यो हेरिरहिहीहारि हरहरहाहाहरो हरेंहरीहरिरारि॥३९॥ प्रतिपादेकाक्षरवर्णनं॥गो
गोगीगोंगंगांगं जजिजेजीजाजोजि रूरेरूरे रूररिर हाहाललंलंहोंहि॥४०॥ अर्द्धेकाक्षरवर्णनं॥केकी
केकाकीकाका कोलकाकोकक लोललालिलोलेलली लोलालीलालोलि॥४१॥ सकाक्षरवर्णनं॥नोंनी
नोंनीनोंनी नेनोंनेनोंनेंन नानानननंनानुनें ननुननंननेन॥४२॥ अथबहिर्लापिकाअंतर्लापिकावर्णनं॥
उत्तरवर्णनुबाहिरो बहिर्लापिकाहोइ अंतरअंतर्लापिकायहैकहै सबकोय॥४३॥ अहिरकोंने
विकलनकों जुवतिबसैंकिहिअंग बलिराजाकोंनेछल्यो सुरपतिकेपरसंग॥४४॥ वामन॥ अंतर्लापिका
वर्णनं॥ कौंनजातिसीतासती दईकोंनकोंतात कोनग्रंथबरनीहरि रामायनअवदात॥४५॥ अथप्रश्नोत्त
रवर्णनं॥ कुलरजाकोंअतिहस्यो हाजेकेसबदास तासोंकहोनरकहै बरनेबुद्धिविलास॥४६॥ नषतेंसि
षलोंसुषदेकेंसिंगारिसिंगारुनकेसवएकुबलो पद्दुराहमनोहरहारहिएहरिगात्रसुगंधसमूहसमो
दरसाइसिरीकरआरसीलेकपिकुंजरज्योंबहोनाचनच्यो सषिपानषवावतहिकिहिकारनकोअपिवाप
रिनारिरच्यो॥४७॥ हासबिलासनिवासनिज्योंकेसवकेलिविधानहुनिमें देवरजेवपितासुतसोंदरहैसु
षहीमहुवातसुनीमें लाजनलोजनरूषनलोंनलरेजसपावनवेदधुनीमें क्योंसबजामनिरोवतिकांमति

कंठकरेसुतमांनयनीमें नाजुनवोनितनेजनवोपरनारितोंकेसवक्योंलंतजोवे रूपअनुपम रूपं
रूपसीं नारदपारनद्दीश्रनगावे तौंनतरीसवसंपतिदंपतिश्रीपतिज्यांसुप्रसिधमेंसोवे देवसोदेवरू
पानसोउप्रसुकानदसासुदताजिहिरोवे॥४७॥ अथएकानेकोत्तरवर्णनं॥ एकन्दीउत्तरुमेंजाहा उत्त
रूपदअनेक उत्तरुएक अनेकपद्द वरणतसहितविवेक॥४८॥ काह्यानसज्ञानववदिकाह्याकुलि
गोपीमाहित काहादासकोनेंझुंसु कवितसुकह्यियतकोहित कोपारोंजगमांहि काह्याछउलोगसोंवे
कोवारकहकरे काह्यासंसारतावे कहिकाहिदिपिकाशनकपित आदिअंतदेकोसरत तवऊसर
केसवदासदीवसवेंहुगवेंसोताधरनु॥५१॥ मितें आदिकेवरनसद् केसवकरिअयासु उत्तरवस्त
समस्तसीं सांकरकेअनुसार॥५२॥ कोसुतअसुकांनसुवतिजाषनवसकीनी निमयसिदिसत्यामरान
कहिकौंतेंदीनी केसरायपडवंसवसतकेसेकेसवपुर बटसौंकहियडकाह्य नामजानअपनेउ
र कहिकौंनजननिजगतकी कमलनयनिसुछमवरनि सुनिदेवउरांतनिमकह्रीसनकादिकसंक
रूतरति॥५३॥ कोतिकोहैधरीधराभीरजधरमहितमारेंकहिसुतवलदेवजोरजवसीं जांवकहोनउज
गदासपहकेसोदासकोनेगायोरामायणुगीतसुतरवसीं जसअंगअंगदातनातिनसोकाह्याकाह्याक
तीमतवातनेहनवसें वामशामदरिकरिदेवकामनरिकरि मोद्दरंधकोनकांन कोनसासत्यामऊ सत
वसों॥५४॥ एकएकउत्तजिवरनकरूं सुगरवरनवमांनि उत्तरवसुसुगतागतति एकनमस्तुतिआंति॥५
केवेरसकेसेंईलंकाकाहेहोतपीतपटकेसोदास कौंनसातिकसतासेंजत लोगनिकोलोभवकोलोभ
लागवतजातेको अजातनकोनहैप्रीतिमकवरन कोनकोनीसत्ताकांनसुवतीअनी उजगगांवका
ह्युनीकालेतरेदेउजंगगतकाहेमोहेपसुकाह्यापरेतपीतइईरूजातनुवमुउकाह्यानवसोराग
ना॥५६॥ केसवदासविवारिकें तिनपदारथआंति उत्तरवसुसमस्तसों छवोगतागतजांति॥५७
केमदकोमभाद्नोप्रेमसुमुकहिपलोदेउपउमनुवजकमलाकेयांगेदसुनित मोहूतिकिहिसूगमत
॥५८॥ कांहावसउसुपसिद कवितकोउकवरनत किहिसिपिउमाउकह्यो कविकसवसद्वरन॥५९
उत्तरुवसुसमस्तसीं छवोगतागतआंति एकुद्दिअर्थसमर्थमति केसवदासवमांति॥६०॥ सोरवे
कुवबसहिकोपात कोककाह्यावजविधिकहै कोकहियेसुरतात कांमीदिउमुरउरसु॥६१॥ सार
मतरलछनं॥ तीनतीनआरवतिनको एकएकउत्तरखोति सासनोत्तरकहउदे अहिज्ञानमोदियत
शि॥६२॥

अथ प्रश्नोत्तर वर्णनं ॥ आपुन जे प्रश्नके तेई उत्तर जानु । इहि विधि प्रश्नोत्तर सदा करे सुबुद्धि निधानु ॥
६४ ॥ को दंडग्राही सुभट को कोसु कुमार रतिवंतु को कहिये सदा कोमल मन को संतु ॥ ६५ ॥ कालि
कहि सु जै आली कोकिल कंठ वदनी कहु कोक हि कांमी सदा कालीदा केलीका ॥ ६६ ॥ अथ गतागत ल
छनं ॥ उलटो सूधो वांचीये एकहि अर्थ प्रमांन कहत गतागत ताहि कवि केसवदास सुजानु ॥ ६७ ॥ मा
समसो हंस जे बन बीन न बीन बजै सुंद सों म सम मा मारलत्ता विन नावति सारदि सावति वनावनिता
लरि मा मानवही रही मोर दमो दर मोहि रही वन मा मालवनी वलि केसवदास सदा वसि केलि व
नी वलमा ॥ ६८ ॥ उलटो सूधो वांचीये औरहि औरहि अर्थु एक सबैयह में सुकवि प्रगट कै दोई अ
र्थु ॥ ६९ ॥ सैन न माधव ज्यौं रस के सब रेष सुदेष सुवेष समैं नैन वकात विजोतक नि कुचि वीर सबै ति
मका लफ लैं तैंत सुनी जस तारन सैं धरी धरधी रधरी ति सु कौं नव है मैंन मती युस्वा लव लैं सुत सोवन में
सरसी वलसों ॥ ७० ॥ अथ मंत्रगति ॥ अस्वगति ॥ त्रिपदा कपाट बंध ॥ जैसो सूधो पावत्यों मंत्रि अश्वगति
आंनि तासौं कहि यव मंत्रगति गोमूत्रिका सु जानि ॥ ७१ ॥ कांमधेनु देओं दि अरु कल्पवृक्ष परजंत ।
बरणत केसव सकल कवि चित्र कवित्त अनंत ॥ ७२ ॥ इहि विधि के सब जानियहु चित्र कवित्त अपार
बरणत पंथ बताइसें दीनो बुधि अनुसार ॥ ७३ ॥ सुवरणजुटति पदारथनि भूषन भूषित मांनि कवि
प्रिया ज्यौं कविप्रिया कविसंज्ञा वनि जानि ॥ ७४ ॥ पल पल प्रति अवलोकिबो सुनिबो गुनिबो चित्त कविप्रिया
या ज्यौं रचीयो कविप्रिया को मित्त ॥ ७५ ॥ अनिल अनल जल मलिन ते विकल मलिन तें निर्त कविप्रि
या ज्यौं रच्यो यो कविप्रिया को मित्त ॥ ७६ ॥ केसव सोरह भाव सुत सुबरन मय सुकुमार कविप्रिया
के जानियहु सोरह हि सिंगार ॥ ७७ ॥ इति श्रीमन विविध भूषण भूषितायां कविप्रियायां चित्रकवि
त्त वर्णनं नाम षोडस प्रभाव ॥ संवत १८०४ वर्षे शाके १६४० प्रवर्त्तमाने चैत्र सुदि सप्तमी रानौ श्री प
मषंडे व्हालारदे संश्री मोरवउरमध्ये उपाध्याय श्री ६ श्री किसनदासजी तत् शिष्य मुनि देवचंदेण लि
पिकृतं मस्ति ॥ सुभं तव तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ लेषकस्य चिरंजीवी ॥ श्री ॥

॥८५॥ अथवैराग्य॥ दोजीये कमंडलकेदानमहिमंडलीकोदोजीयेअरंगकेकुरंगछालाकहिकौ वीजीयेग
जराजकेबिराजबेकोंवंदाबनदीजीयेश्रवासकैनिवासगंगातटकौ कंचनसिंघासनकैबाघंबरआ
सनकैचंदनकाघोरिकैविभूतिसांउंघटकौं गुहिजीयजांनिकैंबिचारीयेबिहारीलालदोमेएककीजीये
पस्योनबीवतटकौं॥१॥ केदुरकौमनिकामंकौमकीजोलकेंदेदेबयूंवरअंवरआला केकरदेहविस्
तिकोवेडाकिकेजनचंपनकौवियबाला केदेईमीलवतीसुधर्मपतिकेरेहपावक पंचकजोबालाओर
उमोहनैकाहावतदेमृगनेनीकेदेमृगछाला॥२॥ श्रियनपुरांनबेदसाधिकेंनिषेधकारे बेदकुसोरीतिसेंस
बेसुगबाधादे निपटनिरंजनकेंसहजहमनेहनयो सोध्यानसोध्याविरोध्यानराध्याहे लागसबपंचल
येपंचपरपंचकाकेंपोटलीएपीकितजपाधिलोबेपाधादे॥३॥ कबकोकरतनितसोचबोकरतचितनिस
दिनहितचितलागीरहेजकरी अमृतकोपानितहांविषकोबखांनबाधकोविडारबिउरोकोनगहेबध
रो निपटनिरंजनकेंचमेकेहूतेहेतेतागएककटिअबदिमदिरपकरी टिकिरहेआवेजांमनाहिन
कोमलसोकामरामजीकोनांममेरेआधुरेकीलकरी॥४॥ वेकहेहमारेरांमवेकहेहमारेस्यांमवेकहे
हमारेनोमध्यपतरुपीकेहे वेकहेहमारेनाथवेकहेहमारेदत्तएकहेखुदाहमारेओरनांकेसीकेहे
निपटनिरंजनवेसवहीकेसाहिबकहतकहिनहारसुनतसुनीकेहे बिनपहचानेतेयावेकहेहम
मारेहरिसुहरिनहमारेहमहीहरिहीकेहें॥५॥ पांडेनयोतोलूरकनकोपढायोकरिपांडितमेंपांडकहु
कोनकोंपढावेगो पंडितनयोतोरहोमूरषजोपंडितकेपंडितमेंपंडिताईकियूंकाछापावेगो निपटनि
रंजनअज्ञाननिमेंहे अगम्यांनज्ञाननिमेंग्यानकथाकतीयककुनावेगो नयोहेस्वरूपतोकहूअ
कोदियावेरुपु आपकस्वरूपतोअरूपकहिआवेगो॥॥ पांडेकेपढनछांड्योरामजीकोतजनमांग्योक
हिसायोषादोवेंकेरेलागोबकवादकों कांहांतेरोरांमजाकोनेऊंतनांमसोतोसबनांमरुविवादिदेखिक
दिकों निपटनिरंजनवहमंदिरवहरांनोघंतवारनिकसोदेनलागोजगनादको रगनसेलेछोटदस
नथनपटकारेकाहेरनाकसकोंवाटेमहलादकों॥५॥ निपटमहलमंदिरभए काहहोतमगरूरदि
नांवारकोमिलहे चांतिधूरिकोधुरि॥६॥ मंदिरतिहारोसारोजमहोमंदिरमेंचंदिर निहारोनजिजे
होकितलोनसो कोनउनलागतहोकोनयनलागतहोकोनयनजागतहोकरतकछुहोनसो निपट
निरंजनबनायनरसाबितमूनायबेकोदेहकाजिधरिरह्योकछूकोनसोउमहतअम्बसुवबम
हेसोकछूउघेउवेजातहोसोस्वतहोकोनसो॥७॥ बयोकितलेंसुमध्योरह्योमाहिअयोविषजांहि
सुधोरसवारेपचोगहमेंजलियोलषिवांमरह्योनिपटाजगिकांमकेकोरे सयोहरिनांमनहीउलको
अथपंचलाएपरपंचकोदोरे स्योसुषकोसुपज्योडबमाहिकयोककुओरनयोकछुओरे॥८॥ जेहेजां
होजायअरेगानीबोहेरिनएहेंसुएकितएहेजोपेंजीवतनपायोहे देखोसोबिचारिअनदेख्योउपचारकु
हीआंघिनदेषायोकिधोंबातनबतायोहे निपटनिरंजनरह्योघटपुरिसकलबेदओपुरांनमिलियां

केंगायो है वैकुंठ वकौ बसैया प्यारे हि बैकुंठ वऔर बैकुंठ वका हाड सरो बनायो है ।।९।। बडो
पजोले बकोपा पई येपाजे फूलफल तोरिसुष डारेगो सो डारेगो बुडबो हमारे आयो तारिबो तिहारे
यो बूड बोजरूर बन्यो तारेगो सो तारेगो निपट निरंजन रह्यो सकल घट भरि देष्यो टेक आपको
तारेगो सो टारेगो सो हम तो है पतित उमपतित पावन हो पतित पावन तें हारेगो सो हारे
।।१०।। निकट निकट सब को कहै निपट कहै नहि कोइ अंतर पट जब नां रहे निपट निक
त बहोइ ।।११।। निपट निरंजन के नित्य गुन गाय प्रगट स्वरूप घट घट सब जानै है के दान के दा
ता हो सु दान बंध दीनानाथ अधम उधारन हो व्रत बजे जा है के करम तिहारे सब करम है
हारे करम है ति हारे पवित्र हारे जानि जा है के अपने ही कर्म करि जहां उतरो गोपार हो
किरतार किरतार जम का है के ।।१२।। निपट जगत में आयकें काह धरि रह्यो एरि सो ताक
बेपार को जविजाति है पंथ ।।१३।। हम हरि तजारे उमउ तजारे इत डारि उत डारि और कैती क
रि डारेगो हम तो हरि हारे पंथ तिहारे हि निहारे हारे तें हारी के संग हरि हारो गेपे हारोगे
पट निरंजन बनावन है बिचार ही के एक ही बिचार काहाड सरो बिचारोगे मो सो न पतित
रो तो सो न जगत जारो मोहि जिन तारो वैकुंठ वकुंठ बिगारोगे ।।१४।। वेरानेन वेर बैन बेरा बा
रवनी के चेन वेरी लपट परी सो ता कामनी अरु कंत में वेई रवि वेई ससि मीन मृगतामें सेई
वेई घन मो ताजरत नभंत में निपट निरंजन सकल कविया उराए यों हि पूछि हारे सकल
न के पंथ में हगरी ने देषिबे को प्रगट दिषाई देत देषा नें प्रगट काहा देषो गगर ध्रुम ।।१५।। तो
ते डारता के मारबे को केती बार यह सु निश्चय प्रतिरि समन धरे न नही अंगर सा जिवेदे वां गुनाम्म
य तो गके अकारज जाय तो गमें परे नही । निपट निरंजन प्रकोरन नां नायं वाम्ह ते सवे सुष
सों निमन उत रें नही पायो है परमे सर पाव पर बेको बार चाउरी सराहिये जो चाउरी कैरें न
।।१६।। बरल ता बरल धूरे बेमतार ले हिमो हि प्रेम उटदे हे प्रघम सुरफायले सो सो सो सरी
बी सबे से मेलि मृदि महि पटले प साध संगति हिनाइये निपट निरंजन है माया तो अर्च
रज्यों ज्यों निकरे आग नि तो तों सु रफाय ले एरे संत ज्यों लों छुटे पारो हो तहै अवारा जाय
तोर सा यनी का हाय ले ।।१७।। ए सो जि सा पां पनी रजा ने सुष्कि आपनी राम नाम लेबे
तो डी अल सात है उगली को वोक सब लोक बडी लरि बे को षा बे को षटरस सवाद हि सो षा
कदि बे को कपट निपट ने के हदे आनि बा जि बे को औगन अनेक जाल जाल चिलजवाउ
१ बात है तो न्याय के बनाय कहै फकीर सो हमन को आगे चलि जाउ है ।।१८।। आउ तो
जिआ सो वपो चकरे जा नेक हु को जाये सु का हा का हा कीजीए पारन उरान को ज्या

नकोतोअंत नांहि बांनीतो बिविधिसों तिकांहां चितदीजीये कविकीकलाअनंत छंदकोप्रबंधक्रू
ञ्जत रागतारसी लोकांहां थोरसपीजीये सोबातकोएकबात निपटबताएजांतसबतें सयांनोजो
पं रांमनांमलीजीए॥१९॥ जोदेमदमातोतोराउउररंककहादीनो हेजोदेहतो निर्दयअरुत्यकी
हा अंतेयकेजांने लेपदोअनपठोकाहाहित चितलगीतोतारीअरुलोकहा निपटनिरंजनके
विधिनांनिषेधकछू संबरसबम्हतबउंचनीचहेकाहा मित्रसेमिलनतबस्वर्गअरुनर्कके से
देषबोहेरसतबगोरोत्सावरोकाहा॥२०॥ महामदचकेहें अछकतें तिछकहोत निचककेच
के तेंघुमघकमतघुमारीको दिननिसनि सहिनयहे सुछिआवतहेसाव उपवारएहिसाहि
बखुमारीको निपटनिरंजनमुरनकोअमरनांमएकवार मारिदावआवेनछवारीको हेतो
मतिवारेउचेमदकोंनलेनहारोसुरकरि पिआलोखोरिरहोनछुमारीको॥२१॥ जेईहोतिआ
दिमतिलेईहोतिअंतगतिआस्त्रिं तमधिमेजमेलवेकोआयोहे एकलोछदासीतातेंबोलिबोव
नायोजगआमेंजगतयरूजोउत्तरमायोहे निपटनिरंजनवाएकमेंसकलकला ऊसरोविवा
रकहोकोनवेदगायोहे साहिबतोसेवकबिनांनकोऊ साहिबीहे साहिबसरूपआपसेवा
ककाहायोहे॥२२॥ आपअकायकेंबीहिरं नवावत वाकरसोवृदंनांमबिचारो फलचटाव
तबासनाछेगयो बोबसुदेवसदाअधिकारोघटबजायअयउगेदियायकेंजिमेगयोनिपटारस
सारो सेवकरेऊनितेवनजानत देवतेहारघरूजनहारो॥२३॥ निपटफोटकोफोटमेंतईल
टरकथोर बदलबदलसबबदगई नहानिपटकोगेर॥२४॥ देषतअनतऊपलहतनतेंकस्तु
म रूपकोत्वमनहे सोत्वमनमकोराको सीतघांमनांगेपायपोटनमरेउवायसंकटमिटायकी
यो वाकरसुवोराको अखकंनलह्योअलेष निपटनिरिहे षिहीनोधरूलेषतोऊजांनतन
बोराको मानसतेंदेवतयोतोहिसबजगनयो अजकंनलह्योतोलहेगोसिरलोराको॥२५॥ वक
रसेहुकरसेयाकरसेकूकरसेअरषविविश्रूसेगायबेलतेंसहे बांदरसेहूदरसेफूसचक
उधरसेसूकरसेसूकरसेबिलाउबकरीसेहे हंडफसेचंदकसेचिरियोगयंदलसेवसत
सकलमेकलनडारिबेसेहें जेसोकोकहोयतासेंतेसीरूपराषेनिपटजेसेंअमेंजेसेंमतुते
सेहीमेंतेसेहे॥२६॥ फाटोसोलगोटाकियेंहुटोसोपियालोहाथिकांधेपरिगोदरीसोवोघरसें
लहीहे जहांलगेलेषतहांअनकोनिवासनहीजांहांलगेप्यासतोहांनालाओननदीहे गेबके
फजांनेअरुगेबकेउजकसाघषस्वतो हजारकिसामनसपञसदीहे निपटनिरंजनप्यारे
मनमेंमगनरहो कुरनाफकारीतोदिलगीरीकिनबदीहे॥२७॥ पाथरकेनगवारेजोंजों हर